श्रीकविकुलशिरोमणि पं० गिरिधरदासरचित

जिसमें

श्रीविष्णुउपासकोंकी प्रीति के लिये गोलोकखण्डादि नवअंशों में श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराजका श्रीगर्गाचार्यमुखनिर्मित संस्कृत गर्गसंहिता और अनेक प्रमाणिक उत्तमोत्तमग्रन्थोंकी कथाओंका मूल सारांश लीलाविलास दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्तादि सुगम छन्दों में वर्णित है.

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

श्रीगणेशाय नमः ॥

गर्गसंहिता भाषा ॥

श्रीकविकुलशिरोमणिपण्डितगिरिधरदासरचित ॥

सो० कञ्ज सरिस अभिराम, पद ललाम घनश्यामके ।
हृदय करहु बिश्राम, देनहार सब कामके ॥
मम मन मनहुं मलिन्द, रहत पास तव चरणके ।
करहु कृपा गोबिन्द, राधारमण कृपायतन ॥
बल्लभ बल्लभ होहु, मेरे कछु करिकै कृपा ।
प्रकट करहु निज छोहु, जानि दास निज आपनो ॥
बिठ्ठल परम पवित्र, देहु दया करि दुरितहर ।
ज्ञान प्रेम द्वौमित्र, होइ सामरथ लखन की ॥
दो० बन्दिप्रथम गणनायकहि, गिराचरण शिरनाय ।
गर्गहिबन्दि अनन्दिउर, चहत कहन हर्षाय ॥
ब्यासनाम भगवानमुनि, सब बिधान गुणवान ।
तिन्ह कहँ बिनैबिनैबिनै, भाषत सहित प्रमान ॥
गर्गसंहिता यह कहि भारी । धरे जहां नवखगड सुधारी ॥
जाकहँ गावत द्रवहिं मुरारी । सो बिधान सबके हितकारी ॥

चहत करन तेहिमति अनुसारी। पावन करन चरित भयहारी॥
करहु कृपा खगपति ध्वजधारी। जामें होइ कथा यहसारी॥
एते छन्द कहौं बिस्तारी। जानहु ताहि याहि हितकारी॥
दोहा अरु सोरठा सुधारी। गुरु तोमर चौपाई प्यारी॥
तोमर तोटक की छबि न्यारी। अमृतध्वनि छप्पहू बिचारी॥
छन्द और मङ्गल बर भारी। अरु कबित्त अक्षरन सुधारी॥

दो० और सवैया जानिये, कुण्डलिया कहि नाम।
छन्दात्रिभङ्गी बसुकला, अहिप्रयात अभिराम॥

आगे कथा यथामति भाखौं। सबबिधान अमृतफल चाखौं॥
एकसमय श्रीगर्ग मुनीशा। नैमिषबन आये बरदीशा॥
लखि शौनकउठि शिष्य समेता। जोरि हाथ यह पूछेउ हेता॥
कहहु नाथ मोहिं आतमज्ञाना। जामें संशय रहइ न आना॥
सो सुनि कहेउ गर्गबर बानी। सुनहु साधु तुम कथा पुरानी॥
इक इतिहास कहतहौं भारी। जाके सुने न अघ अधिकारी॥
मिथिलापुर बर परम बिशाला। तहँ बहुलाश्व रहो भूपाला॥
इकदिन लखिनारद कहँ आवत। शीशनाइभे गाथा गावत॥

दो० कहिय कृपाकरि मोहिं प्रभु, हरिके जे अवतार।
केहिहित कितने भूमिभे, कितने अंश बिचार॥

नारद कह्यो सुनहु हरि सोई। रूप अनेक धरे जग जोई॥
सो सुनि भूप कहै यह बानी। संशय एक अहै अतिज्ञानी॥
निर्गुण जो सो किहिहितगुनलै। भये भूमि अतिआनँद मनलै॥
नारद कहत भये बर बानी। निज इच्छा प्रकटत हरि आनी॥
करिकै काज जात पुनि सोई। सबमहँ सबते न्यारो जोई॥
कहत प्रकार कई हैं यामें। परिपूरण के गुणचरचामें॥

अंश कला अंशांश बिचारो। पूरण अरु आबेश निहारो॥
परिपूरण तम जानहु सोई। कहत भेद हम यामहँ जोई॥
दो० कपिलकच्छपादिककला, भार्गवादि आवेष।
मरीच्यादि अंशांश हैं, अंश कहिय बिधिबेष॥
श्रीनरसिंह राममख स्वामी। नरनारायण खगपतिगामी॥
श्वेतद्वीप बैकुण्ठ निवासी। ये पूरण रबिसरिस प्रकासी॥
परिपूरण तम स्वयं सुजाना। श्रीगोलोक कृष्ण भगवाना॥
कोटिन ब्रह्मअण्ड के नायक। जानहु तुम नरनायक लायक॥
धरि नरदेह पुहुमि पर आये। कोटिन काज किये छबि छाये॥
अव्यय अहो कृष्ण अबिनासी। नमो निरन्तर घट घट बासी॥
करुणाकर अरु आनँदराशी। साधुहृदय बिज्ञान प्रकाशी॥
सुनि महीप मन मुदित महाना। बन्दि बिप्रपद बचन बखाना॥
दो० परिपूरण तम जानिये, कैसे केवल कृष्ण।
यह प्रभु मोहिं बखानिये, जानि दास कृत प्रष्ण॥
सुनि बिरञ्चिसुत अतिहरषाये। कहत सुनहु जो चहत सुहाये॥
भवको भार नशावन काजा। प्रकटे प्रभु यादवशिरताजा॥
पूरण अंश कला बिकला है। आबेशादि भाव सकला है॥
जामें सकल लीन ह्वै रहहीं। तेहि पटु परिपूरणतम कहहीं॥
एकअण्ड के जे शिरताजा। ते पूरण कहवावहिं राजा॥
सकलअण्ड अवनीके मण्डन। करहु कृष्ण रबितमभ्रमखण्डन॥
प्रेमबिबश कह नृप अकुलाई। मोहिंसों कब मिलिहैं मुनिराई॥
मुदितभये मुनि बुद्धिबिशारद। कहतमहतबचनहिंमुनिनारद॥
दो० तव हित द्विज हित देव हित, ऐहैं कृपानिधान।
धीरज धरहु धराधिपति, दीनबन्धु भगवान॥

जीभ पाइ हरिभजन न करई । चलत मुक्तिपथ अघखल परई ॥
सुनहु कृष्णको चरित नवीनो । कोलकलपमहँ जो कछु कीनो ॥
जबभो भार भूमिपर भारी । तब सो कम्पित गोतनुधारी ॥
रोवत अरु भाषत दुख गाथा । वेदनाथ पद नायो माथा ॥
त्र्यम्बक पासगये चलि धाता । सो बैकुण्ठ गये हरषाता ॥
बन्दिचरण भाष्यो इतिहासा । सुनि बोले हँसि रमानिवासा ॥
यह हमते न सधैगो काजा । चलहुकृष्णपहँ सुमनसमाजा ॥
सो अखण्ड अण्डनके मण्डन । सतचित सद्स्वरूप खलखण्डन ॥

दो० सुनिसुरसब बोले चकित, तुमते परप्रभु कौन ।
हम न सुना कबहूं श्रवण, दरशावहु श्रीरौन ॥

सुरनसहित तब बिष्णु सिधाये । बामन चरण छिद्रढिग आये ॥
सोई सरल सड़क सुरसगरे । कढ़िहिरन्य ते बाहुर अगरे ॥
ब्रह्मद्रवत तहँ बर दरशायो । निरखि उपद्रव दूरि परायो ॥
तामहँ लखे अनेकन अण्डा । अमरनको गो सकल घमण्डा ॥
ब्रह्मद्रव महँ लुढ़कहिं कैसे । गिरिके शिखर बिल्वफल जैसे ॥
तहँते बढ़ि अवलोकेउ बिरजा । बिरजागिरिजा श्रीहरिसिरजा ॥
तहँ सोपान सोहावन सोहैं । जो शोभालखि सूरज मोहैं ॥
तहां तेज अतिही दरशाना । चण्ड कोटि मार्तण्ड समाना ॥

दो० लोचन मूंदे सबन के, तब हरि आज्ञा पाय ।
अस्तुति अर्पि अनेकबिधि, चले देव समुदाय ॥

आगे जाइ अनन्तहि देखा । धवल बरण अति उन्नतबेखा ॥
सहस बदन प्रताप बल ओका । जासु उछंग लसत गोलोका ॥
बन्दि शेष कहँ कीन्ह प्रवेशा । माया करन लेश नहिं देशा ॥
द्वार द्वारपालक दरशाये । बेणु बेत्रधर श्याम सुहाये ॥

रोंक्यो सुरन पारषद जबहीं। ते सब कहत भये इमि तबहीं ॥
हरि हर बिधि आदिक सब देवा। आये करन कृष्ण पद सेवा ॥
तब मन्दिर महँ खबरि जनाई। तहँ ते एक सखी चलि आई ॥
शत शशिबदनी ताकर नामा। कह्यो सबनसन बचन ललामा ॥
दो० कौन अण्डके अहहु सुर, भाषहु अपनो नाम।
तब करिहौं मैं बीनती, भई मौन कहि बाम ॥
सुनि सुर चकित कहत भे बानी। हमतौ एक अण्ड जियजानी ॥
नहिं दूजे की कछु पहिंचाना। गूलर फल के जन्तु समाना ॥
सुनि अति हँसत भई सो बाला। कहत महतमति बचन रसाला ॥
ब्रह्मद्रव महँ कोटिन अण्डा। कोटिनमहँ कोटिन सुरझुण्डा ॥
जानै कौन कहां ते आये। पूछत तऊ न नाम बताये ॥
निजघर कर नहिं जानि ठिकाना। लखहु सुरन्हकी बुद्धि महाना ॥
हँसी करतलखि हरि यह कहेऊ। जहां बिष्णु बामन बपुगहेऊ ॥
पगते बिबर अण्ड बिस्तारे। तहँके अहहिं अमर ये सारे ॥
दो० सुनि त्रियभाषेउ कृष्णते, तिन की आज्ञा पाय।
पुरमहँ करहु प्रबेश निज, कहेउ देवतन जाय ॥
सो० चले लखत बर गैल, मुदित मगन मन देवगण।
श्री गोबर्धन शैल, देख्यो बन अति पुण्यप्रद ॥
छं० बनपुण्यप्रद देवनलख्यो गोपी बिहारहि सुन्दरी।
जहँ रासमण्डल परमयमुना बर नदी सुखमाभरी ॥
बृन्दा बिपिन सुन्दर सुबृन्दा कल्पतरु छत ना रहै।
पुनि परम बंशीबट बिराजत चारुगुण बिस्तारहै ॥
सुखपुञ्जकरत निकुञ्ज कुञ्जन माहिं गुञ्जत षटपदा।
अतिमत्तपत्तनबैठि लत्तनललकि धावहिंभरिमुदा ॥

कोकिलकरहिं किलशब्दकल अरुमोर शोर मचावहीं।
सरिनीर तीर समीर सुन्दर कीरभीर दिखावहीं॥

दो० बहुरि देव देखत भये, सुरभी के समुदाइ।
बिबिध बरण नूपुर चरण, शोभा कही न जाइ॥

अमृतध्व० सस्सस्ससस्सोहैं सुभग बब्बब्बच्छ अनेक।
पप्पप्पप्पयपानकरि छच्छच्छटकहिंनेक॥
दद्दद्वारि पलट्टहिं गग्गग्गो ढिग सारे।
घग्घग्घुघुरूलटकि कण्ठ झझझझझनकारे॥
थत्थत्थत्थन पिवहिं बहुरि ठट्ठट्ठमकैं।
डड्डड्डगरें डगन डगर बिच चच्चच्चमकैं॥
गग्गग्गैल अनेक रङ्ग कक्कर में बेनु।
बब्बब्बब्ब्योम लौं छच्छच्छाई रेनु॥
सस्सस्सिर पर मोर पंख दद्दद्दरशाई।
कक्कक्कमल कन्ध सुभग सस्सस्सरसाई॥
गग्गग्गुञ्जा गरे धरे डड्डड्डोलैं।
तत्तत्तान सुजान कृष्ण बब्बब्बोलैं॥

दो० श्याम पीत सित रक्त अरु, अमित रङ्ग की गाइ।
तिनके मधि सोहैं वृषभ, शीश शृङ्ग सरसाइ॥

सङ्ग सुभग डोलहिं गोपाला। श्याम स्वरूप अनूप रसाला॥
गावत सरसतान जस हरिकै। डोलहिं उरअति आनँदकरिकै॥
देखेउ भवन माहिं पुनि जाई। पद्मसहसदल इक अधिकाई॥
तामधि षोड़श बसुदल पुनिहै। सिंहासन ऊपर छबि गुनिहै॥
कौस्तुभरचित तीनि सोपाना। तहँ हरिसह राधिका महाना॥
मोहिनि आदि आठ बरबामा। बसुगुपालकहिआदिसिदामा॥

कोटिन छत्र चमर मुरछल हैं। व्यजन बज्रडांड़ी सह भल हैं॥
यहिबिधिलख्योराधिकास्वामिहिं। गरुड़ध्वजगुणज्ञगजगामिहिं॥
दो० राधा के कांधाधरे, हाथ बिश्व के नाथ।
बंशी करबर परमअति, प्राणप्रिया के साथ॥
जहँ कन्दर्प दर्प बिनु होई। पीताम्बर कटितट पर सोई॥
बनमाला छबि चारु बिशाला। उरश्रीबत्स सुलक्षण माला॥
कटिकरधनी घनीछबि होती। मणीबनी बिचाबिच बरजोती॥
यहिबिधि बिश्वनाथ ये सारे। कृष्णहि तहँ सानन्द निहारे॥
अतिआनन्द हृदयमहँ भीनो। लोचन महँ जल भरे नवीनो॥
प्रमुदित सबन दण्डवत कीन्हो। मानहुं मन माधव हरिलीन्हो॥
सो सुनि कह्यो जनक यह बानी। कृष्णहि देखि देव सज्ञानी॥
कीन्ह कहा कहिये मन खोले। जनकबचन सुनिकै ऋषिबोले॥
दो० लखत सबन बैकुण्ठपति, उठि भुज आठ प्रवीन।
अवतारी श्रीकृष्णमहँ, होत भये द्युति लीन॥
पुनि नृसिंह अति बिक्रमवारे। कोटि सूर्य सम तेजहि धारे॥
तुरतहि लीन भये हरि माहीं। नदी सिन्धुमहँ यथा समाहीं॥
श्वेतद्वीपपति पुनि चलिआये। सहसभुजा आयुध सरसाये॥
लाख अश्वके रथ पर चढ़िकै। त्रियपार्षदन सहितगुणमढ़िकै॥
भूमा भूमिकेर जो गाये। सोऊ कृष्णके माहिं समाये॥
तब रघुनाथ साथ लियलीने। लीनभये शोभारँग भीने॥
धनुधर कञ्ज सरिस चखवारे। कोटिन कीश साथ निजधारे॥
लक्षचक्ररथ तितनेइ घोरे। छत्रचमर शिरढुरहिं अथोरे॥
दो० अर्बुद रबि सम तेज धर, उर आनन्द नवीन।
सोऊ भगवत तेजमें, भये तुरन्तहि लीन॥

यज्ञ नाम हरि तब चलिआये। कोटि अर्कसम तेज सुहाये॥
संग दक्षिणा नारि सुहाई। कृष्णमाहिं द्रुत गये समाई॥
तब नर नारायण चलि आये। श्रुतिद्विजमुनिबपुघनद्युतिछाये॥
जटाजूट रबि कोटि समाना। मुनिगणसेवित ज्ञाननिधाना॥
सबके लखत समाये सोऊ। अचरज करतभये सबकोऊ॥
जानि कृष्ण कहँ सबके स्वामी। अस्तुति देव करहिं शिरनामी॥
छं०शिरनामि अस्तुति करतजय श्रीकृष्ण अव्यय श्रीपते।
मखनाथ राधानाथ गोपुरनाथ गोबर्धनधृते॥
परिपूर्ण तम प्रभु परम परमासहित मुनिमनमण्डनं।
यं ब्रह्म ब्रह्म बदन्ति योगी तं नतोस्मि अखण्डनं॥
लक्षण तथाबर बचनव्यङ्ग उतङ्ग बुधिते जानना।
तुम्हरो अहै पतिकठिन केशव सत्य यह करि मानना॥
कोउब्रह्म अरुकोउकाल अरुकोउसांख्य अरुकोउकर्मको।
मानहिं मुरारि मुकुन्दमाधव कोउ जाप कोऊ धर्मको॥
तव चरणसेवा परमश्रेयस्करण बिघ्नबिनाशिनी।
तव भक्ति मम उर रहो मांगत बारबार बिलासिनी॥
सब भूतपति सब आत्मसाक्षी सर्बमय भगवानहो।
हम शरण तव गिरिधरण जग अघहरण बरगुणखानहो॥
जो राधिका उर परमसुन्दर चन्द्रहार समानहो।
जीवन सरिस ब्रजगोपिका के गोपकुलके त्रानहो॥
गोलोकपति अभिराम पूरणकाम हम तव शरण हैं।
घनश्याम आनँदधाम अवगुण हरण जिनके चरण हैं॥
बृन्दाबिपिनपति अद्रिपति ब्रजपति सुपूरणकाम हो।
गोपाल बपुकृत नित्यचाउ बिहारलीला धामहो॥

राधापते परमायुते बंशीधरन छबि करनहो।
अरिदरन भवजलतरन आनँदभरन हम सबशरनहो॥
दो॰ सो सुनिकै श्रीकृष्ण प्रभु, देवन दुखित निहारि।
मेघ सरिस सुन्दर गिरा, बोले सुख निर्धारि॥
तुम सब अंश अंश करिहोहू। यदुकुल में सुरयूथप जोहू॥
मैं यदुकुल ह्वै भुविको भारा। हरिहौं करिहौं सुख बिस्तारा॥
द्विज मुख देह गऊ मम अहई। साधुहृदय तनसुर श्रुति कहई॥
ताते इनके रक्षण काजा। हम अवतरब भूमिसुरताजा॥
सो सुनिकै बिछोह पतिजानी। अतिब्याकुल राधा बिलखानी॥
मोहिं त्राहिकरि बोली बानी। तुम महिजात बारिसुतपानी॥
मैं नहिं जीहौं शपथ तुम्हारी। नाथ साथ ते तजहु न नारी॥
पुनि पुनि शपथसहित हम भाषा। जानहु जान जान अभिलाषा॥
दो॰ इमि कहिकै ब्याकुल भई, सो लखि कृपानिधान।
धीर धरहु भाषत भये, भवभावन भगवान॥
तुम सह हम चलिहैं महिमाहीं। करिहैं भलो सबनको ताहीं॥
सो सुनि कहतभई यह प्यारी। जहँ बृन्दाबन नाहिं मुरारी॥
गोबर्धन यमुना नहिं जाहां। मममनतनकलगतनहिंताहां॥
सुनि चौरासी कोस महीको। गिरि यमुना मनबृन्द सहीको॥
पठयो भूमिमाहिं सुखको ले। सबसुर सहित बिधाता बोले॥
हम अरु आप और सुरसारे। कहां होहिं का नामहिं धारे॥
सो सुनि कह्यो कृष्ण बर बानी। हम बसुदेव भवनमहँ ज्ञानी॥
देवकि उदर देव अवतारा। अहि रोहिणी गर्भ निर्धारा॥
दो॰ लक्ष्मी ह्वैहै रुक्मिणी, शिवा भानु सुकुमारि।
अवनि सत्यभामा कही, सत्या तुलसि बिचारि॥

लक्ष्मणा सुदक्षिणा बिचारो । बिरजा कालिन्दी निरधारो ॥
भद्राही ह्वैहै सो जानो । सुरसरिता मित्रबिन्दा मानो ॥
रुक्मिणिमें अनङ्ग अवतारा । सो प्रद्युम्न नाम निरधारा ॥
तहँ बिधि होहु तनय तुम ताके । नन्द द्रोण बसु होइहैं वाके ॥
धरा यशोदा अरु बृषभानू । होहिं सुचन्द्र नाम मतिमानू ॥
नारी तासु कलावति नामा । सो महि होइहि कीरति बामा ॥
तासु सुता राधिका सयानी । जानहु इहिप्रकार तुम ज्ञानी ॥
तब उपनन्द भवन श्रीदामा । सुबलतोक कृष्णार्जुन नामा ॥

दो० अंशुनाम मेरे सखा, ह्वैहै तिनके धाम ।
नन्द और उपनन्द सब, षट बृषभान ललाम ॥

बिधि भे कहत जोरि युग पानी । लक्षण मोहिं बतावहु ज्ञानी ॥
को बृषभान नन्द को अहहीं । सुनि यह बचन कृष्णप्रभु कहहीं ॥
गो पालहिं ताते गोपाला । भये वृत्तिते नाम बिशाला ॥
नवलख गऊ जाहि सो नन्दा । पञ्चलक्ष जेहि सो उपनन्दा ॥
दशलख गऊ जाहि बृषभाना । कोटि जाहि नँदराज महाना ॥
खर्ब कोटि जाके हैं धामा । बृषरबिबर कहि ताको नामा ॥
द्रोन सुचन्द नन्द बृषभाना । ह्वैहैं बसु एकाधि प्रधाना ॥
सुन्दरि यूथ ब्रजे सुत होई । सुनि बोले ब्रह्मा दुख खोई ॥

दो० कृपासिन्धु करुणा अयन, मैं यह भाषत प्रष्ण ।
लक्षण बरणहु यूथ को, सुनि बोले श्रीकृष्ण ॥

दश करोड़ को अर्बुद गावै । दश अर्बुद को यूथ कहावै ॥
गोपुरबासी डेउढ़ी दारा । सेज सवाँरहिं करहिं शिंगारा ॥
पार्षद बृन्दाबिपिन निवासी । कुञ्ज बसहिं गोबर्धन बासी ॥
इतके ये सब ह्वैहैं यूथा । यमुना अरु जाह्नवी बरूथा ॥

श्री बिरजा मधुमाधव बाला। ललितबिशाखासखीबिशाला॥
बसु षोड़श बत्तिस ये नारी। इनको यूथ होइगो भारी॥
श्रुतिरूपा ऋषिरूपा जानो। मखसीता पुलिंहिका मानो॥
मैथिलकौशल अवधनिवासिनि। ये अरु जे अनेक छबिरासिनि॥
दो० ये सबकहँ हम बर दयो, जब जब युग युग माहिं।
सब ह्वैहैं ब्रज गोपिका, पूर्ण मनोर्थ कराहिं॥
बिधिभे कहत सकल ये नारी। कौन पुण्य कीन्ही है भारी॥
कहिय मोहिं रमिहैं तव साथा। सुनिभे कहत राधिका नाथा॥
श्वेतद्वीप के हरि ढिग जाई। पूर्ब श्रुतिन बर गाथा गाई॥
ह्वै प्रसन्न बोले भगवाना। बर मांगहु जो तव मनमाना॥
श्रुतिन कह्यो सुनि लोक तुम्हारा। जोहै प्रकृति परे अबिकारा॥
मोहिं देखावहु सुनि शुभ बानी। लगे दिखावन सो पुरज्ञानी॥
श्रुति सब लखन लगीं पुर सोई। जहँ बृन्दाबन तरुतहँ सोई॥
सब बिधि बर बृन्दाबन नामा। गोबर्धन गिरि परम ललामा॥
दो० अति उत्तम सरिता जहां, कालिन्दी कहि नाम।
अति सुघाट रत्नन रच्यो, जासु घाट अभिराम॥
तहँ कदम्ब इक परम ललामा। तामधिकृष्णसुभगघनश्यामा॥
परम मनोहर रूप देखाई। कहेउ कि काह करौं सचुपाई॥
सुनि श्रुति कहत भई यह बानी। देखि रूप तव सकल लुभानी॥
अब हम चाहत देहु मुरारी। तुमपति अरुहम नारितुम्हारी॥
बिहरहिं यहि बन तुम्हरे साथा। सुनिभे कहत बिश्व के नाथा॥
दुर्लभ बर मांगेहु यह बाला। पै यह होइहि तुमहिं रसाला॥
तुम अस्तुति कीन्ही है भारी। ताते माथुर क्षेत्र मँझारी॥
बृन्दाबन महँ रचिहौं रासा। पूरण करिहौं सबही आसा॥

दो॰ यहि बिधि तेऊ होइहैं, गोपी गोकुल माहिं।
श्रुतिरूपा तिनको कही, और सुनहु मम पाहिं॥
त्रेता महँ सुधर्म जब छीनो। तब हम रामरूप कहँ लीनो॥
जनक स्वयम्बर बरधनु तोरा। सीय बिवाहि कस्यो गठजोरा॥
तहँकी तियमोहिं पियअभिलाषा। कामबिबशहँसि हरिगुणभाषा॥
मम भरतार होहु रघुराई। हम तब तिन्हैं कहा समुझाई॥
द्वापर महँ मिलि होइ बिहारा। तबलौं करहु धर्म ब्यवहारा॥
पुनि जब कीन्ह अवध पैसारा। कौशलपुरकी त्रियन निहारा॥
मनमहँपातिहित कियअभिलाषा। तब हम तिनहिं तथाबर भाषा॥
द्वापरमहँ मिलि करेहु बिहारा। एकबार सबकर निस्तारा॥
दो॰ मम नगरी की नारि सब, मनते करि मोहिं नाह।
आराधन करने लगीं, बैठि बारिके मांह॥
तेहि क्षण भई अनाहद बानी। सुनहुसकल शुभनारिसयानी॥
द्वापरमहँ पूरिहि मन कामा। अभिरामा श्यामा बरबामा॥
जनक बचन ते बनहिं सिधारे। सँगसिय अरु लक्ष्मण धनुधारे॥
तहँ के रहनहार मुनि जेते। कृष्ण स्वरूप उपासक तेते॥
गोप बेष के ध्यान समाने। तहँ हम राम स्वरूप दिखाने॥
तुरित खोलि हग बाहर देखा। दूजो रूप सुराम परेखा॥
जानि कृष्ण केरो अवतारा। बिबिधभांति अस्तुतिबिस्तारा॥
प्रभुके कहे द्विजन बरयांचा। मम बर होहु देहु यह सांचा॥
दो॰ राम कह्यो जो तुम चह्यो, यह दुर्लभ बरपर्म।
पै मेरे सतसंगते, होइहि सत्य अभर्म॥
एकनारि ब्रत मोहिं करि जानो। ताते हम निर्धार बखानो॥
द्वापरमहँ तुम ह्वैहो नारी। ममसँग केलिकरेहु तब भारी॥

तेऊ तहँ त्रिय ह्वैहै भाई। पञ्चबटी पुनि गे रघुराई॥
तहँ पुलिन्द तिय झषध्वज भारी। मरनलगी भइ ब्याकुल भारी॥
निजहित मरत जानिं रघुराया। ब्रह्मचारि बन बचन सुनाया॥
द्वापर महँ होइहहि कल्याना। भाषि भये द्रुत अन्तर्धाना॥
कपि सहाय लै हति दशशीशा। नरपद आइ भई नरईशा॥
सियहि काढ़ि मखकरन बिचारा। जातरूप तियकिय निरधारा॥

दो० घनी बनी सिय कनककी, मखमखप्रति अमरेश।
मम प्रेरित तिन्ह सबनमें, कीन्हो प्राण प्रवेश॥

रमण हेतु रघुबर ढिग आईं। तिन्हैं देखि भाषा नरसाईं॥
तुमहिं करब नहिं अङ्गीकारा। सुनि सब सियपहँ बचनउचारा॥
मोहिंत्रियबिरचि यज्ञ तुम कीना। अबनकरत किमि भोग प्रबीना॥
यामहँ होत पाप अधिकारा। निज मतलब की बातबिचारा॥
तब रघुबीर तिन्हैं बर दीना। द्वापर महँ तुम रमेहु प्रबीना॥
अबहिं न रमब धर्म कहँ लोपी। तब हम प्रकट गोप तुम गोपी॥
हे बिधि इहिबिधि बिबिधकिशोरी। अवतरिहैं ब्रज बीच अथोरी॥
रमासखी बैकुण्ठ रहन्ती। ह्वैहै ब्रजबर मोहिं चहन्ती॥

दो० मनुज असुर सुरसर्पकी, मोहिंपति चाहहि जौन।
बनिता सुख सनिता सकल, होइ बिधाता तौन॥

जब हम धरो यज्ञ बपुधारी। मोहिं मोहिं लखि तबसुरनारी॥
देवल मुनिहिं बन्दि कहँ सोई। तिन भाषा यह द्वापर होई॥
धन्वन्तरि जब प्राणहि त्यागा। तब औषधिन महादुख लागा॥
पतिहित तिन तपकीन्ह अपारा। ह्वै प्रसन्न हरि बचन उचारा॥
तिन्हन कहा पति होहु मुरारी। हरिभाष्यो ब्रजमें तुम सारी॥
लता होयकै करहु निवासा। बनिरामा पुनि रमिहौ रासा॥

हरिहि देखि बहुनारि लुभाईं। करतभईं तप पतिहित जाईं॥
नवभारति तब भईं पुकारति। होइहि जो तुम सकल बिचारति॥
दो० बनिबृन्दा बृन्दाबनहि, निबसहु बालाबृन्द।
तहां रमै हैं रास में, आनँद रासमुकुन्द॥
मत्स्यरूप लखि सिन्धुकुमारी। मोहिंबर बरन कियो तपभारी॥
पृथुहि देखि मोहीं बहुनारी। तेऊ सब ह्वैहैं मुखचारी॥
जब पृथु महिदोहन कहँ कीन्हा। तब नारिन पति हितकरिचीन्हा॥
अत्रिहि कहा मनोरथ जाई। तब बुझाइ बोले मुनिराई॥
मुनि गुनि कहा मनोरथ येहू। द्वापर होइ न कछु सन्देहू॥
जिन्हजिनपतिहितमतिआरम्भा। तेती तव त्रिय होइहैं अम्भा॥
नर नारायण मोहन काजा। अप्सरान पठयो सुरराजा॥
मुनिअच्युतगुणितिन्हपतियाचा। ह्वैहै सोउ सत्य मम बाचा॥
दो० बामन कहँ लखि सुतल त्रिय, कीन्ह नाहकी चाह।
दीन्ह परम बरदान तिन, सोऊ ह्वैहै ताह॥
संकर्षण लखि नागकुमारी। काम बिबश बर बर्यो बिचारी॥
भ्रात राम हित ह्वैहैं तेऊ। अरु तुम सुनहु सबन को भेऊ॥
प्राण शूर कश्यप बसुदेवा। बसु उद्धव ध्रुव देवक देवा॥
देवकि उदति दक्ष अक्रूरा। उग्रसेन मारुत अतिशूरा॥
धनद हृदीक बरुण कृतबरमा। गतप्राचीन बरहि बर परमा॥
अम्बरीष ह्वैहै युयुधाना। सात्यकि सो प्रहलाद सुजाना॥
दो० क्षीरसिन्धु शन्तनु नृपति, भग धृतराष्ट्र नरेश।
दिवोदास सो शल्यकहि, भीष्म द्रोण बसुभेश॥
ऊषा पाण्डु भूप अति आयू। धर्म धर्म अरु भीम सुबायू॥
स्वायंभुव मनु पारथ सोई। शतरूपा अनुजा मम होई॥

रविसुत करण भीरबर भेवा। अश्विन सुवन नकुल सहदेवा॥
बह्नि द्रोण धाता बाह्लीका। कलि दुर्योधन काल अनीका॥
शशि अभिमन्यु द्रोणसुत ईशा। इहिबिधि ह्वैहैं भट जगदीशा॥
रमासखी जे अहहिं सयानी। षोड़शसहस होव इहिरानी॥
इमि कहि कहत योगमाया ते। आज्ञा अनुवर्ती छाया ते॥
देवकि सप्तम गर्भ निकारी। दीजो तू रोहिणिमहँ डारी॥

दो० जब हम देवकि गर्भमहँ, आवैं उर हरषाइ।
तब यशुमति के उदर बर, बास करेहु तुम जाइ॥

तब बिधि बन्दि लोक निजआये। बसुधाकहँ बहुधा समुझाये॥
नृप जानहु कृष्णहि परिपूरन। सब सुरप्रकट चरनकी धूरन॥
रोम रोम रसना जो होई। कहि न सकै तौ हरिगुण कोई॥
मति अनुसार कहहिं कबि कैसे। नभखगउड़हिं तुल्यगति जैसे॥
कहि नृप किहिहितकियअवतारा। सुनिस्वयम्भुसुतसमुझिउचारा॥
कंसादिक खल मारण काजा। सुनि पुनि प्रश्न करतभे राजा॥
कौन कंस किमि बरणन तासू। तब बोले मुनि नारद आसू॥
कालनेमि दानव इकबारा। हरिसँग भिरो ताहि तिन मारा॥

दो० ताहिमृतक लखि शुक्रतब, भये जिवावत जाइ।
बहुरि बिष्णुसँग समरको, लाग्यो करन उपाइ॥

मन्दर ठाढ़ लगो तप करना। दिव्य सहस सम्बत इकचरना॥
बर मांगहु यह कहेउ बिधाता। तबभो कहत महतमनमाता॥
हरिहर तुमहिं आदि सुर जेते। यह ब्रह्माण्ड निवासहिं तेते॥
तिन्ह तेही इहि मारन काला। वेद भाल सुनि बचन निकाला॥
एवमस्तु मरिहो तुम जाते। जो पर यह ब्रह्माण्ड महाते॥
उग्रसेन गृह सो खल जायो। कंस नाम अरिगंस कहायो॥

करत बालपन मैं खेलवारा । मल्लन बर दै मध्य अखारा ॥
जरासन्ध भूपति तेहिकाला । दिग्जयहेतु कट्यो बिकराला ॥
दो० ब्रजते चालिस कोसपर, उतर्यो जीतनकाज ।
तज्यो कुबलयापीड़ कहँ, पुरप्रविश्यो गजराज ॥
दौरि दौरि द्विप दरै मकाना । कंस अखारा तेहि नियराना ॥
भागे मल्ल कंस तेहिकाला । पटक्यो गजहि फिराहिकराला ॥
भई कुबलयापीड़हि पीड़ा । पुनि गहि तेहिबीड़ासममीड़ा ॥
फेंक्यो चालिस कोस घुमाई । बिस्मय भयो मगधकर राई ॥
अस्ति प्राप्ति दोउ सुता बिवाही । दाइज महँ दीन्हों गज ताही ॥
अर्बुद हय गज लक्ष नवीने । दासि अयुत त्रिलक्ष रथ दीने ॥
तब भट कंस प्रबल मतवारो । दिगजीतन के हेतु सिधारो ॥
एकाकी प्रचण्ड बल छायो । माहिषमती पुरीमें आयो ॥
दो० तहँ नृपके सुत मल्लहे, शल तोशल चाणूर ।
मुष्टिक कूट सुपांच ये, समर शूर भरपूर ॥
तिनते कह्यो कंस यह जाई । करि करार कहुँ करहु लराई ॥
हारै होइ दास सो तासू । तुम द्वै तीन एक हम आसू ॥
इमि कहि कंस भिरो बलपूरा । पटक्यो प्रथम पुहुमि चाणूरा ॥
मुष्टिक कहँ मुष्टिक ते मारी । दीनो द्रुतहि धरणि पर डारी ॥
कूट कूट सम भोधरसाता । कूटो कंस ता हि पगघाता ॥
शलहि मल्यो शलभा यमजाई । काकतुण्डसी भुजन बढ़ाई ॥
मारि बाहुते भूमि खसायो । तोशलतोशकसरिस बिछायो ॥
पांचहु कहँ निज दास बनाई । गयो प्रबर्षन पर्बत धाई ॥
दो० द्विबिदहुते सुकरार करि, करत भयो अतिमार ।
बीसदिवस करि कीशरण, मारेउ महत पहार ॥

कंस ताहि ताऊपर माख्यो। मुष्टि प्रहार बहोरि पछाख्यो॥
बहुरि भोजपति नभमहँ जाई। दियो ताहितल मारि गिराई॥
बन्दर बन्दर गनसह टूटो। मुखते रुधिर फुहारे छूटो॥
तेहि करि दास बहुरिसो धायो। ऋष्यमूक ऊपर चलिआयो॥
केशीनाम दैत्य तित रहई। हयवपु तासु कौन बल कहई॥
जीति ताहि चढ़ि चलो नरेशा। गयो महेन्द्राचल भल्वेशा॥
गिरिउठाइ शतबार हिलायो। परशुराम तब कोपहि पायो॥
प्रबल सरिस लखि राम सरूपा। कीन्ह प्रणाम समय नरभूपा॥

दो० परशुराम बोले परुष, सरुष लाल करि नैन।
रे माछर क्षत्री अधम, तोहिं नेकु डर हैन॥

लै धनु यह चढ़ाउ तैं मोरा। नातरु काल होत अब तोरा॥
इहि हरि हरहि त्रिपुरहित दीन्हा। मैं क्षत्रिनहित तिनते लीन्हा॥
द्वैशतभार केर यह अहई। इहि उढ़ाउ जो जीवन चहई॥
सुनत तुरत तेहि कंस उठावा। ज्या चढ़ाइ शतबार बजावा॥
ताकर शब्द अब्द लौं पूरा। संभ्रम सहित भये सब शूरा॥
चलत भये दिग्गज तेहिकाला। ब्रह्मअण्ड लोकन सहहाला॥
धनुधरि कंस कह्यो शिरनामी। क्षत्री नहिं मैं दानव स्वामी॥
सो सुनि राम चाप तेहि दैकै। कहत बचन उर आनँद लैकै॥

दो० जा कर ते यह टूटिहै, ताकर तेरो काल।
कौन कोउसो कृष्ण बिन, हरिधनु गुनहु नृपाल॥

चलेउ नौमि पद जीतत देशा। कंस कराल कालसम भेशा॥
सिन्धु निकट अघ असुर निहारा। सर्प शरीर कीन्ह फुफकारा॥
ताहि घुमाइ कंस महि पटक्यो। भयो पिसान प्रान लै सटक्यो॥
अघहि जीति प्राची दिशि जाई। भिख्यो अरिष्टासुरसों धाई॥

बृषभरूप सो शिखर उड़ाई। कंसहि मास्यो क्रोध बढ़ाई॥
मारि मुष्टिकर गरदन मीची। जीतिगयो पुनिदिशा उदीची॥
प्राग्ज्योतिषपति भौमहि भाषा। उठहु वेगि हम रण अभिलाषा॥
नरकासुर तब अतिरिस भीना। लरहु हुकुम यह दैत्यन दीना॥
दो० प्रथम प्रलम्बासुर उठ्यो, कीनो अद्भुत युद्ध।
यथा मृगेन्द्र मृगेन्द्रसों, भिरै भयङ्कर क्रुद्ध॥
पटक्यो कंस ताहि गतिरूरी। धेनुक भिस्यो तबै गहि सूरी॥
पटक्यो कंसहि भूमि भवाई। तेहि उठि गह्यो भोजकुलराई॥
शतयोजन पर पटक्यो कंसा। भो अप्राणसम बाढ़ी संसा॥
तृणावर्त लैगयो उड़ाई। शतयोजन पर करै लराई॥
पटक्यो ताहि कंस महि माहीं। मानहु प्राण अहै तन नाहीं॥
उठि बक असुर चञ्चु निज फारी। चल्योकंसढिगअतिललकारी॥
मारु मारु बक बकत रिसावा। कंसहि तुरत कण्ठमधि नावा॥
कंस गलामहँ मारेउ मूका। तब सो ब्याकुल आतुरथूका॥
दो० बकुलाकहँ गहि कंस तब, फेंक्यो दूरि घुमाइ।
तासु स्वसा तब पूतना, लरन चली रिस छाइ॥
बकी बकी बहु करु रण मोसों। कह्यो कंस लरिहौं नहिं तोसों॥
प्रियसम लरहि न भट रिपु अग्नी। बक मम भ्राता तैं मम भगनी॥
नरक कंस कहँ प्रबल बिचारी। तासँग कीन्ह मित्रता भारी॥
शम्बर नगर भोजपति गयऊ। बर बिरतान्त बखानत भयऊ॥
सोऊ निज सम मित्र बनायो। शैल त्रिशृङ्ग शृङ्ग पुनि आयो॥
ब्योमासुर सूतो तित हूतो। मारेउ चरण कंस मजबूतो॥
ब्योम ब्योमलौं बढ़ि तेहि काला। निजगुणप्रकटभिरो बिकराला॥
कंस मारि सह सको न सोऊ। दास होइ पग बन्दे दोऊ॥

दो० पुनि मगमें हम तेहिमिले, सो मोहिं कीन्ह प्रणाम ।
पूछतभो करजोर दोउ, को जग में बलधाम ॥
तब मैं तेहि भाषत भयों, शोणितपुर तुम जाहु ।
तहँअरिकुलशशिराहुसम, बाणदनुज कुलनाहु ॥

कंस जाइ बिरतान्त बखाना । बाणासुरसुनि अतिहि रिसाना ॥
करगहि तरुमहँ पटकत भयऊ । सात पताल फोरि सो गयऊ ॥
बलिसुत कंसहि कहेउ बुझाई । याहि काढ़ि लै आवहु जाई ॥
जाइ तुरत तब तौन उठावा । सात पताल उठत उठि आवा ॥
शोर भयो भुवि ऊपर भारी । बाणकेश मे भिरत प्रचारी ॥
लरत उभय अजेय निरधारी । तुरत तहां आये त्रिपुरारी ॥
भाषेउ विना कृष्ण हे बाना । करिहै कोउ न कंस मदहाना ॥
दोउन में करवाइ मिलापू । गिरिकैलास गये चलि आपू ॥

दो० बाणासुर कहँ मित्र करि, कंस सहज सहजोर ।
वत्सासुर देखत भयो, दिशा प्रतीची ओर ॥

भिरि ताते जीत्यो महि भारी । दास भयो सो प्रबल बिचारी ॥
उग्रसेन आत्मज बलवाना । म्लेच्छ देशमहँ आइ तुलाना ॥
लखेउ कालकी सेना ठाढ़ी । कठिन कराल काल रँगगाढ़ी ॥
लक्षभार की गदा पकरिकै । आभिरे कंस काल रिसभरिकै ॥
तेहि क्षण यादव बर बलवाना । भयो कालके काल समाना ॥
पटकत भो महि कंस घुमाई । तबहि यावनी सेनाधाई ॥
गहिकर गदा तदा भट कंसा । लागेउ करन अरिनकी हिंसा ॥
कालयवन की सेना सारी । कालनेमि दानव ने मारी ॥

दो० बिभव यामिनी यामिनी, भोज मित्र अम्भोज ।
जीति चल्यो अमरावती, दूरि किये दुख चोज ॥

उच्चपाद अति दीरघ जानू। लघुकटि उर उतङ्ग परिमानू॥
वक्ष कपाट अंस अति पीना। भुजप्रलम्ब द्युतिदिपति नवीना॥
मुद्गर धनु असि कवच निषङ्गा। धरिकर चलो सुभट सब सङ्गा॥
शल तोशक मुष्टिक चाणूरा। कूट प्रलंब नरक कपि शूरा॥
तृणावर्त वृषभासुर केशी। खर शम्बर शर शोणित देशी॥
व्योम बत्स बक अघ बलवाना। इन्हनसहित सुरपुर नियराना॥
रिपु आगमन्न जानि पुरहूता। सुरन समेत भिरो मजबूता॥
तिन्हते त्रिदशन ते तिहिकाला। होत भयो अतिसमर कराला॥

दो० रणमहँ बज्र उठाइ कर, बासव धीर धुरीन।
तज्यो गंसगहि कंसपर, परम गर्जना कीन॥

तोटक॥ गहिमुद्गर कंसप्रहारतभो। महिके मधि बज्रहि डारतभो॥
तब खड्ग पुरन्दर मारत भो। न बचो यह शब्द पुकारत भो॥
सहिताहि गदा कर में गहिकै। मत भागु खरोरहु रे कहिकै॥
तजि दीन्ह सुरेशहि रोष भरो। गहिकौशिकताहितजो न डरो॥
कृत कंस कराल महारण में। भिरि अद्भुत कर्मकिये क्षण में॥
परिघा कहँ यादव हेरि हयो। शरनाह तवै गल चेत भयो॥
तब मारुत त्यागत बाण घने। रथ छाइ लयो अतिकोप सने॥
तेहि काटि अरीदल आड़तभो। शर छांड़त भो भय मारतभो॥
बसु रुद्र अदित्य सबै बढ़िकै। असुरान हत्यो रिससों मढ़िकै॥
लखि भौम बली अतिजोम भरो। निज नयनन भोगके रोगकरो॥
कटितोण तुरन्त तहां कसिकै। शर त्यागत घोर हृदै गसिकै॥
सुरके दलमें यमसों लसिकै। द्रुत धीर धकैत गयो धसिकै॥

दो० सुनासीर तब चढ़तभो, मैगल मत्त महान।
श्वेतबर्ण घनसरिस स्वन, उन्नत शिखर समान॥

चलेउ बितुण्ड हिलावत शुण्डा। गरजेउ कंस गुणी गुरुगुण्डा॥
लखत भयो इमि महत मतङ्गा। जिमि जलधार सपेद पतङ्गा॥
एकमुष्टि बारन कहँ मारा। झपट दूसरी क्रतुहि प्रहारा॥
गिरेउ इन्द्रमहि ब्याकुल भारी। तब द्विप चपल चलेउ चिक्कारी॥
नृप रिसाइ तेहि लीन्ह उठाई। फेंक्यो योजन लक्ष घुमाई॥
ऐरावत तहँते पुनि आयो। मारन चह्यो अतिहि रिस छायो॥
झट उठाइकै यादव पटका। ब्याकुल भयो प्राणजनुसटका॥
उठि पुनि लीन्ह पाछिलो रस्ता। गर्जेउ कंस कोपि रणमस्ता॥
दो० गहि वैष्णवको दण्ड कर, मेघसमान ननर्दि।
मर्दि सुरन रनआर्दि अति, जैसे कुपित कपर्दि॥
सो लखि सभय देवता भागे। खोलि शिखा बहु डोलन लागे॥
हम सब शरण भोजकुलराई। देवन हार जीति तुम पाई॥
परहिं पगन पर जोरहिं हाथा। दीनसरिस बहु गावहिं गाथा॥
धोती खोलि अनेकन दीनी। इमि सुरपुरी कंस जय लीनी॥
छत्र सिंहासन लै हरषाई। सुरपुर बिजय पटह बजवाई॥
कंस मुदित मथुरा चलिआयो। लाग्यो करन राजछबिछायो॥
कंस बिजय सुनि जनक महीपा। मुदित भये मनहीं कुलदीपा॥
बिधिनन्दन पग बन्दन करिकै। कहत सहत आनँद उरभरिकै॥
दो० मैथिल कुल पावन कस्यो, करुणाकर मुनिदेव।
हम से मनुज गृहस्थकहँ, कहां कथा को भेव॥
श्रीराधा कर भो अवतारा। सो मोहिं कहहु सहित बिस्तारा॥
सुनबे हित मम मन अभिलाषा। तब हँसि बचन बिप्रबर भाषा॥
धन्य तासु कुल जानहु भाई। जहँ तुमसे सज्जन नरराई॥
है कुल परम पुण्य पुल सोई। जहँ हरिकथा बारता होई॥

कथा सुनहु जो नाशति बाधा । जेहिबिधि जन्म लियो श्रीराधा ॥
बर बृषभान गोपबर सोई । कीरति नाम तासु तिय होई ॥
यमुना निकट रुचिर अतिमन्दर । सुन्दर सुता भई ताअन्दर ॥
घन छाये तेहि क्षण नभ आसा । शुभशीतल सरसात बतासा ॥

दो० भादों सुदी अठय दिवस, दोय पहर शशिबार ।
कीरति कुलकीरति भई, कीरति कीरति हार ॥

बृषरबि द्वै लख सुरभी दीनी । सुत ते सरस बधाई कीनी ॥
पलना माहिं झुलावहिं ललना । मृदुबोलनिरुनझुनमहिचलना ॥
नित नित बढ़त लड़ैती कैसे । शुक्लपक्ष के निशिकर जैसे ॥
श्यामाश्याम प्रिया अभिरामा । रामा हृदय करहु बिश्रामा ॥
यहिबिधि कह्यो जन्मसुखसाजा । सुनिहो कहा कहो नरराजा ॥
कह नृप भो यह जो अवतारा । कलावती सुचन्द्र आगारा ॥
कीन्ह कौन तप असफल पावा । सुनिसुनिगुनिपुनिबचनसुनावा ॥
नृपसुत भयो सुचन्द्र महीपा । बिष्णु अंश दिनकरकुल दीपा ॥

दो० तीनि सुता जनमत भई, जगतापितृ के धाम ।
कलावती अरु मेनका, रत्नदाम यह नाम ॥

जनकहि रत्नदाम सो ब्याही । सीता सुता सुतामनि जाही ॥
मैना गिरि हिमवानहि दीना । अति उत्साह ब्याहको कीना ॥
भई भवानी ताकी कन्या । जगत बिदितजगपावनधन्या ॥
दीन्ह सुचन्द्रहि आनँद भरिकै । कलावती कृष्णार्पण करिकै ॥
कलावती सुचन्द्र अनुरागे । गोमति निकट करनतपलागे ॥
सहस अब्द बीते तब बेधा । बरम्ब्रूहि भाषेउ अतिमेधा ॥
मुक्ति देहु मम तप अतितोली । कलावती तुरतहि सुनि बोली ॥
मोहिंपतित्यागि अन्यगतिनाहीं । तजहु न ताते निजपरिछाहीं ॥

दो० जो पति साथन देइहो, तौ ह्वैहै कल्यान।
पति तजि त्रियहिन आनगति, सत्य सत्य परिमान॥
कहा बिरंचि सत्य सब एहू। पै ममबर न बृथा सुनिलेहू॥
प्रमुदित करिकै भोग अपारा। भारतखण्ड लेहु अवतारा॥
राधा जब ह्वैहै तव कन्या। तब दोउनकी मोक्ष अनन्या॥
इमि कहि गये भवन मतिमानू। तेइ दोउ भे कीरति बृषभानू॥
नृप रबिदेव भानुके नन्दन। कलावती के बाप भलन्दन॥
कानकुब्ज पति सो नृपतासू। मखते प्रकट भई हरिसासू॥
कीरति नाम कीन्ह नरनाहू। बृषभभानु सों भयो बिवाहू॥
तासु सुता राधा जगजानी। जाके नायक शारँगपानी॥
दो० राधाके पितु मातुको, सुनिहै जो इतिहास।
ताके जन्म अनेक के, पाप होइँगे नास॥
अब तुमते महिपालमणि, कहत पुनीत प्रसङ्ग।
कृष्णजन्म बृत्तान्त सब, करन करोर उमङ्ग॥
सूर कहे ते बुद्धि निधाना। गर्गज्ञान मन्दिर भगवाना॥
मथुरामहँ महीप गृह आये। शोभा लखत परम सचुपाये॥
झूमहिंझुकहिंझनकहिंझलकहिं। गजसमुदाय खरे बहुबलकहिं॥
स्यन्दन तुरग सुरँग की भीरा। असि धनु शरन सजे सब बीरा॥
चारहु दिशा सुभट समुदाया। उग्रसेन नृप मधि दरशाया॥
शक्र सिंहासन लसत अशंसा। सेवहिं सुकुलकदेवक कंसा॥
गर्गहि देखि उठेउ नरपाला। बन्दे दोऊ चरण रसाला॥
सुन्दर सिंहासन बैठाई। कुशल प्रश्न कीन्हों हरषाई॥
दो० आचारज आशीश दै, उर आनन्द अमोल।
देवक ते बोलत भये, अति अमृत से बोल॥

सूर सुवन बसुदेव सुजाना। तिन्हहिं देहु तुम दुहितादाना॥
बर बर बर ताते नहिं बरहू। सम समधी बनि उर सुखभरहू॥
सुनि प्रमुदित चितातिलक पठायो। लै बरात सँग दूलह आयो॥
भो देवकि बसुदेव बिवाहू। सबको भयो चौगुनो चाहू॥
रथ चढ़ि चलत भये बसुदेवा। लिये दहेज अनूपम मेवा॥
सँगसोहत दोउ दुलहादुलहिनि। सरसतिप्रीतिपरम जनुसुलहिनि॥
सारथि भयो कंस अघधामा। करकोरालस ललितलगामा॥
हांकत कंस मेघश्वन हांकत। चलीसैन सँग तादिशिताकत॥

दो० अयुत द्विरद दासी सहस, लक्ष सुरथ हय चारु।
द्वैलख सुरभी देतभे, देवक अतिहि उदारु॥

भेरी शङ्ख मृदङ्ग नगारे। बाजन लगे शब्द अति भारे॥
चली सैन कछु कही न जाई। तेहि क्षण अद्भुत आपद आई॥
कंसहि कहत व्योम की बानी। यह निजमृत्यु बहिन करिमानी॥
यासु गर्भ अष्टम तव काला। सुनिगहि कोपकंस तेहिकाला॥
तजि प्रतोद कर धारि कृपाना। गहि कच काटन मनअनुमाना॥
भयो रङ्ग में भङ्ग उमङ्गा। चकित दुखित देखहिं चतुरङ्गा॥
मरत जानि तेहि नीतिनिधाना। आनक दुन्दुभि बचन बखाना॥
हे नृप हे यशधरन महाना। हे गुणज्ञ मतिमान सुजाना॥

दो० करुणाकर उर समुझिकै, करहु न ऐसो काम।
का कहिहैं लखिजीवसब, नहिं अवसर मतिधाम॥

अबला बाला भगिनी छोटी। बिन अपराध गहहु जनि चोटी॥
सुख महँ नहिं सुहात यह कैसे। दालिभात महँ मूसल जैसे॥
कछु न कह्यो सुनि पापनिधाना। मारिहि अवशि सौरि अनुमाना॥
बोले बहुरि बचन मतिमाना। जामहँ नेकहु आवइ ज्ञाना॥

रिपु यह नाहिं तवरिपु सुतयाको। जन्मतही लीजो तुम ताको॥
सो सुनि कंस हृदय मति रोची। दीन्ह तुरत तजि शोचिसकोची॥
तीन बचन दीन्हो बहनोई। भवनगई बरात पुनि सोई॥
राख्यो कैद कुटिल सरदारा। अयुत द्वारपर चौकीदारा॥

दो० एक सुता अरु आठ सुत, तिनहिं भये महिकान्त।
तासुसुनहु सब सुखसहित, अघहर बर बिरतान्त॥

प्रथम पुत्र बसुदेवहिं जायो। ताहि कंसमन्दिर पहुँचायो॥
देखि ताहि कछु दया बिचारी। बोले कंस शत्रुमदहारी॥
यह न काल मम अष्टम घाती। गृह लैजाहु तज्यो हम थाती॥
जब बसुदेव भवन निज आये। तब हम यह कंसहि समुझाये॥
पूछेउ कंस बन्दि मम चरना। याके मध्य मोहिं का करना॥
तब हम कहा सत्य निरधारा। गोप सकल सुरके अवतारा॥
गोपी बेद ऋचा करि जानो। यादव सब अवतारी मानो॥
यह देवकी देवकी नारी। जासु सुवन सब तव बधकारी॥

दो० इमि कहिकै मैं गृह गयो, सुनि अति कंस रिसान।
यादवगण के बधनको, करत भयो सामान॥

कीन्हों कैद बहिन बहनोई। शिलपरपटकिहत्यो शिशुसोई॥
भोजन कहँ बटभञ्जन लागो। सो लखि सबसन संशयपागो॥
उग्रसेन तब परम रिसाना। डाट्योसुतहि नृपति मतिमाना॥
पितुकर कंस नेक नहिं माना। तब यादवन कीन्ह घमसाना॥
उग्रसेन अरु कंसभटन सों। भयो समर धरमार रटन सों॥
मरे अमित भट आयुधधारी। शोणितसरितचल्यो कढ़िभारी॥
कंस गदा गहि रिसते पागो। जनककटककहँ कूटनलागो॥
छिन्न भिन्न करिदिन्न कठोरा। किन्न तिन्न हगके समजोरा॥

दो० मर्यो सबहिन कंस तब, अन्नहि यथा किसान।
मरे परे डगरे डरे, हरे हरे लै प्रान॥

मद्रिसैन सब कंस अभागो। पकर्यो पितहिं परमरिसपागो॥
मन्त्रिनसहित अहित निजचीन्ही। दृष्टि बन्दि की कैदी दीन्ही॥
सिंहासनपर आप बिराजा। लाग्यो करन बिश्वकर राजा॥
षट शिशु इमि अनुजा के मारे। गर्भ सातयें शेष पधारे॥
तब माया माया बिस्तारो। लै रोहिणी गर्भ महँ डारो॥
सबन भयो अचरज अधिकाई। भादों शुक्ल सर्प तिथि आई॥
बुध स्वाती मध्यान्त तराजू। उच्चभवन ग्रह पांच समाजू॥
बरषहिं सुमन बिबुद जल बिन्दू। प्रकटे जिमि परिपूरण चन्दू॥

दो० नन्द कीन्ह आनन्द अति, द्विजन दीन्ह लखगाय।
जातकर्म आचरत भे, बिप्रन देत बुलाय॥

देवल देवरात द्वैपायन। मैं वशिष्ठ गुरु ज्ञान परायन॥
मिलि मुनीश ये आनँद पागे। गये नन्द गोपति के आगे॥
पूजि तिन्हैं आसन बैठाई। पूछत ब्यासहि लखि ब्रजराई॥
अकस्मात शिशु भये अमोले। सो सुनि सत्यवतीसुत बोले॥
यह बसुदेव देवकी जायो। मायाले रोहिणि मधिनायो॥
आदिशेष अवतारहि लीनो। हरि इच्छा बालक बपु कीनो॥
धन्यभाग तव गृह हरि पायो। मैं तिनके दरशन हितआयो॥
मोहिं दिखावहु बालस्वरूपा। सुनिभे भवनजात ब्रजभूपा॥

दो० लै आये निज अङ्कमें, शोभा कही न जाइ।
जिमिजलनिधिकेगोदमें, शशिशिशुशुभसरसाइ॥
निरखि सरूपअनूपअति, मुदित ब्यासकुलभूप।
करतभयेअस्तुतिअतिहि, मगन प्रेम के कूप॥

छं० शेषं सुरेशं कामपालं हलधरं करुणाकरम्।
रामं रिपुघ्नं श्रीअनन्तं वासुदेवमजं परम्॥
कुवलै हगं दशसुतमुखं सितमूर्तिमद्भुत भूधरम्।
रेवतिपतिं हरि अग्रजं संकर्षणं यदुराट्वरम्॥
नीलाम्बरं बलभद्रमीशमनन्तमम्बुजधारिणम्।
भद्रबलं बलभद्रकं बल्वलबलीबधकारिणम्॥
कूष्माण्डद्विविन्धप्रलम्बधेनुककूटरुक्मानिकन्दनम्।
तालध्वजं कुरुशठगुरुं वसुदेवयादवनन्दनम्॥
करि कूपकर्णविदारणं कालिन्दिकर्षणतत्परम्।
महिमल्लयुद्धमहाकरं व्रजमण्डनं महिमाकरम्॥
गजनगरकर्षणमातिरूपधरं मुकुन्दमनामयम्।
बलिनं मुसलिनं देवहलिनं वितलिनं तलिनं स्वयम्॥
तमशेषरूपविशेषरूप नतोस्मि यादवबालकम्।
गोपालकं व्रजपालकं द्विजपालकं सुरपालकम्॥
बलदेवप्रीतिकरं परं अघहरमनूपमिदं स्तवम्।
श्रवणाद्विपठनाद्यर्थकथनाद्यस्य मुक्तिर्भवेद्ध्रुवम्॥

दो० इमि कहिकै गृह जातभे, सत्यवतीसुत व्यास।
अबउतकोमहिपालमणि, सुनहु सुचित इतिहास॥

हरि परिपूरण तन छवि छाये। श्रीबसुदेव हृदय महँ आये॥
तेजरूप भे सूर कुमारा। जिमि उदयस्थ सूर उजियारा॥
देवकि गर्भ बसे पुनि आई। ताके तन की कान्ति बढ़ाई॥
देखि कंस अति तेज बहिनको। कहत भयो घरमें सबहिन को॥
यह मम काल सत्य हम जाना। होतहि हरिहौं अरिको प्राना॥
चौकी घनी द्वार बैठाई। चल्यो भवन हरिध्यान लगाई॥

हे नृप होहि मोक्षपथ गामी। असुर भक्ति हठते शठ कामी॥
एक क्षणहु हरि ध्यान न भूला। धन्य असुर अस मति अनुकूला॥

दो० तहां स्वयम्भू शम्भु सह, साथ सकल सुर आय।
गर्भस्तुति लागे करन, निजनिज शीश नवाय॥

छप्पय जय जय जगदाधार, हेतु सब के सब स्वामी।
अवतारन आदी परम, विनतासुत गामी॥
बिस्फुलिङ्ग जिमि प्रकट, अग्नि ते होहिं समाहीं।
तिमि तुम परिपूरण, तमजग दूजो असनाहीं॥
जेहि ब्रह्म कहहिं योगी, सकल अक्षर अघ हरण।
वपुकृष्णकृष्णकरुणाकरन, जगव्यापकहमतवशरण॥
अंश अंशको अंश, कला बिकला अरु पूरण।
सब के स्वामी आपु, प्रकट है बिधि परिपूरण॥
कोटि अण्ड खण्डन, मण्डन करुणा के सागर।
नर वर परम पुनीति, नीति आगर नट नागर॥
करि परमकृपाप्रभुसबनपर, प्रकटे धनि गिरिवरधरन।
बिश्वनाथ प्रभु बिश्वगुरु, परमधाम हम तवशरन॥
जो योगी योजत, उरमें तब दुर्लभ दरशन।
कहि नहिं सकत पुराण, पुराणपुरुष अघमरशान॥
पद अरबिन्द मलिन्द, मोर मन सदैं रहै तहँ।
देहु दया करि दुरित, हरण यहदान सबनकहँ॥
गोलोकनिवासी जगतपति, राधापति बाधाहरण।
जयनन्दअनन्दनचन्दसम, हमचकोरसब तवशरण॥
कंसदरन नगधरन, सकल जगभरन हरनदुख।
कमलबरन युगचरन, परन कोमल सुवरन रुख॥

नरनभक्ति अनुसरन, सुभग आचरन चरनसुख।
धरन धरनप्रति दूध, हरन सुमिरन हर कुकलुख॥
तरनतरन द्युति भवतरन, बितरन सुखहितरनकरन।
शरनशरनतुम शरनबर, शरनशरन अशरनशरन॥
दो० इमिकहिबिधिदेवनसहित, बन्दि गये आगार।
सुमिरतकृष्णहिंमुदितचित, जानि परम अवतार॥
सो० इमि सुनिये महिपाल, जन्मकाल गोपालके।
भे शुभशकुन बिशाल, निर्मलनभअरुदशादिशा॥
छं० दशादिशानिर्मलमुदितउडगण भूमि मण्डलसुखछयो।
सागर सरित सोता सरोवर सबन उज्ज्वल जल भयो॥
शतपत्र दशशतपत्र अरु बसुपत्र फूले पङ्कजा।
भ्रमरा भ्रमे झूले भरे मद प्रकट प्रेम उतङ्कजा॥
शीतलसुगन्ध समेत जहँ चालत समीर सुहावनो।
भो प्रकटबालक बिश्वपालक शत्रुघालक भावनो॥
नवनगर सुन्दर बगरबर आरामप्रद आराम भे।
सुर विप्र सुरभी साधु बैष्णव सबनके मनकामभे॥
सुरदेहिं दुन्दुभि सुमनबर्षहिं मुदितजयजयभाखहीं।
महिभई उन्नत मुदित चिततरु सुमनतापरनाखहीं॥
गन्धर्ब चारण सिद्ध किन्नर सकल बिद्याधर तहां।
गावहिंबजावहिंहरषछावहिंमुदितनाचहिं दिवि जहां॥
नाचहिं अप्सरा हरष पसरा ताल आउज बाजहीं।
सुरबारतिय सुर भरतआनँद सुनत कोकिल लाजहीं॥
कछु मन्दमन्दफुही सुही जिमि जुहीसुमन सुहावने।
तिथिअष्टमी रोहिणि वृषलगन भादों भावने॥

निशिअर्ध हर्षनयोगबर संयोग सुख के बीच में।
प्रभु शौरि प्रकटे शौरिमन्दिर शौरिघरके बीच में॥
उरहार चार अपारछबि पुनि कण्ठकौस्तुभ बरमनी।
करपरकसे चूर कङ्कण कीटकी द्युति है घनी॥
शिरमुकुटसोहतजटित शोभा घटितपीताम्बरलस्यो।
बैजन्तिमालसुमालपङ्कजमालमधि मम मनबस्यो॥
कीलालसुतकेसरिसलोचनलालअतिहि बिशाल हैं।
शिरजुल्फ उन्नतकरनमनके कुल्फ परमरसाल हैं॥
सुखकरण सबते परम करपर बेणुबर कर धरत हैं।
सुरमधुरतान बधानते प्रभु मनहुँको मन हरत हैं॥
सुत देखिआतङ्कदुन्दुभी आनन्द कहँ अतिकरत भे।
गोनियुतमनते द्विजन दीन्ही हरषते उरभरत भे॥

दो० जानि जगत अभिराम गुरु, कृष्ण अनन्त अभेव।
हाथ जोरि पद बन्दिकै, कहत भये बसुदेव॥

त्रि० जगदीश मुरारी पावनकारी भवभयहारी ज्ञानमये।
परमेश्वरस्वामी खगपतिगामी चामीकरद्युति प्रकटभये॥
मणिउज्ज्वल जैसा रँगपर वैसा दरशततैसा ब्रह्मयथा।
ब्रह्माचतुराननशिवपञ्चानन स्कन्दषडानन जाहिकथा॥
करुणाकरनागर बिश्वउजागर आनँदसागर बिश्वपती।
बहुअण्डप्रकाशीआनँदराशीअविनाशीअतिबिमलमती॥
भवभयहारे शिशुबपुधारे पाहि मुरारे तव शरणं।
त्रासतमोहिंकंसा दानवअंसा नाशहुगंसा सुखकरणं॥

दो० तब देवकि करजोरिकर, बोली प्रमुदित बोल।
अजअव्यय आतमजकी, अस्तुतिअमलअमोल॥

तो० ज[illegible]कोटिन अण्ड अखण्डकरं, सुरभीपुरथानसुजानवरं ।
[illegible]धुमर्दन माधवदीनहिते, परमेश्वरपालकबिश्वपते ॥

दो० हतहु कंस भय मोर अति, दीनबन्धु भयहारि ।
सुनि गुनिकै परिपूर्ण तब, बोले मधुर मुरारि ॥

सुनहु समुद अपनो इतिहासा । सुतपा नाम आप तपरासा ॥
पृष्ठि नाम मम मातु प्रबीना । ममसमसुताहितअतितपकीना ॥
मन्वन्तर अनगिने बताये । तब हम पास तुम्हारे आये ॥
बर मांगहु निज जो अभिलाषा । तब तुम मुदित जोरिकर भाषा ॥
तुमसम हमहिं होइ सन्ताना । सुनि बिचार हम मनमें आना ॥
मम सम आन कौन जगमाहीं । हमहिं जन्मलीनो तब चाहीं ॥
प्रथमभये भगवान सुजाना । पुनि बामन अवतार बखाना ॥
तीजेबेर बहुरि हम आये । लै गोकुलहि चलहुछबिछाये ॥

दो० तव दुख जैहैं दूरि सब, मत कछु करहु बिचार ।
इमि कहि तिनके देखते, भये छोट सुकुमार ॥

नन्दभवन जनमी उत माया । शिशुहि शौरि पलना पौढ़ाया ॥
बेड़ी कटी कपाट खुलतभे । सोये चट चखहू न मलतभे ॥
शिरसुतधरशणि सरे तिहिं काला । फुही रसीली परत रसाला ॥
शेष सहसफण ऊपर आये । जान्यो शौरि श्यामघनछाये ॥
आगे हरि पुनि ताहि निहारा । बाटदीन पुनि पाट निवारा ॥
लखे नन्द गृह खुले किवांरे । सोये सिगरे मनुज निहारे ॥
शिशु सुताइ लै सुता सोहाये । भये पूर्ववत जब गृह आये ॥
कन्या कुँवरि केर बिज्ञाना । भो न यशोदहि मोद महाना ॥

दो० कहां कहां रोवनलगी, तहां बिचारि बिचारि ।
जागे चौकीदार सब, कंसहि कह्यो पुकारि ॥

सुनतहि कंस तहां चलिआयो । मांगत सुता देखि अकुलायो ॥
कह देवकी कृपा कहँ कीजै । बधिसुत सब इककन्यहु दीजै ॥
सुनि सो ऐंचि लीन्ह द्रुतलड़की । बिशद बरद बिबुधनकीबड़की॥
तुरतहि शिला देखि सम फड़की । पटकत कंस करन ते सड़की ॥
अष्ट भुजा रथस्थ नभ कड़की । कान्तिविधवहुतमुकसी भड़की॥
निरखि कंसकी छाती धड़की । सुञ्ज समान भई गति धड़की ॥
कहत गरजि रेकंस अभागे । भो कहुँ प्रकट काल तव आगे ॥
कहियोगिनिनिशिहितअतितड़की । बिन्ध्याचल के ऊपर खड़की ॥

दो० सुनत दीनमन कंस अति, भगिनी मन्दिर जाइ ।
बन्दि छोड़ाइ नवाइ शिर, कहत साधु मति ल्याइ ॥

हम अति पापी अघ के गाहक । मारे सुवन आप के नाहक ॥
यह सब करत काल हठि बाधा । क्षमहु कृपाल मोर अपराधा ॥
सुरन कहेते हम सुत मारा । तिनहूं गह्यो अनृत व्यवहारा ॥
मम रिपु कहूं भयो हम जाना । दुहुनकीन्ह सुनि रुदन महाना॥
बन्दि चरण पुनि रुदन सुनायो । व्याकुल सडर सदन तबआयो ॥
प्रात बुलाइ असुर समुदाया । सबन मध्य यह बचन सुनाया ॥
कौन सलाह कौन तदबीरा । सो सुनि कहत बीरकी भीरा ॥
हरिकी भय मति करहु नरेशा । तामहँ दुर्लभ बालक भेशा ॥

दो० गो द्विज सुर शिशु साधु कहँ, मारहु खोज कराय ।
सहित सहाय नशायगो, सत्य सत्य नरराय ॥

कंस कह्यो यह नीक बिचारा । करहु सबन कर अब संहारा ॥
सुनिते कामरूप बनि बनिकै । करनलगेअघअतिगनिगनिकै॥
गो द्विज देव साधु शिशु केरे । भव भय रदन काढ़िके रेरे ॥
हे नृप इत की कथा रसाला । सुनहु जहां जनमें गोपाला ॥

उत्सव भयो नन्द गृह जैसो। भूधर भाषि सकत नहिं तैसो ॥
सुनि सुतजन्म नन्द अनुरागे। उरमहँ अतिही आनँद पागे ॥
जातकर्म बिधिवत कहँ करिकै। द्विजन देतभे आनँद भरिकै ॥
दीन्ही बिधिवत सरस शृँगारी। गो दशलाख सबच्छ दुधारी ॥
दो० कोष भरे लौं हेममणि, अन्नन के करिकूट।
बिप्रन दीन्हों नन्द नृप, भई अलौकिक लूट ॥
बीणा शङ्ख मृदङ्ग नगारे। बाजहिं नर्तक नाचहिं द्वारे ॥
बन्दी मिलि बरणहिं तितताका। द्वार कनकघट ध्वजा पताका ॥
चन्दन बगर बगर महँ बगरो। महलन चहलपहलसुखसगरो ॥
गोसबत्स मणि माणिक माला। भूलत भूजर शाल दुशाला ॥
करमहँ भरि भरि कुंकुम थापे। रँगेरोम मधि केशर छापे ॥
नन्द द्वार आवहिं गो जूहा। मधि बृषकूदत आनँद जूहा ॥
गोसमूह मधि नन्द अगारा। को करि सकै बरण बिस्तारा ॥
बर बृषभानु कीर्ति लै आये। ब्यालचढ़े बिशाल सुख छाये ॥
दो० नन्द और उपनन्द तब, आये षट बृषभान।
भेंट करहिं धरि भेंट कहँ, गावहिं तान सुजान ॥
पहिरे पीत बसन बनमाला। गुञ्जा मोरपक्ष सुबिशाला ॥
बंशी बेत धरे सब ग्वाला। आये उर आनन्द रसाला ॥
हेरी देत बजावत ताला। गावत तान सुजान बिशाला ॥
शिर पर धरे दूध दधि गगरा। भस्यो गोपपति मन्दिर सगरा ॥
सबते मिलहिं मुदित नँदराया। गावहिं नाचहिं सुखसरसाया ॥
ग्वाल नन्दकहँ देहिं बधाई। आजु धन्य बासर नँदराई ॥
सुन्दर सुवन बयस बाढ़ि पायो। दुख सबहिन को दूरि परायो ॥
द्विवस आजु को देव दिखायो। बड़े भागते अवसर आयो ॥

दो० ब्रज अनूप आकाश में, उदयो पूरण चन्द।
सुनि अतिही आनन्दलै, बोले बाणी नन्द॥
तुम्हरी सब आशीश अपारा। भयो मोहिं इहिकाल कुमारा॥
सुनत नन्द के सदन बधाई। आईं सकल गोपिका धाई॥
उर उनके आनँद न समाई। गावत नाचत देत बधाई॥
शीश सुभग सुरंग सरसाई। बर मोतिन की मांग भराई॥
पग पैजेब जेब अति देती। करणफूल सोहत द्युति केती॥
सुन्दर सब शृङ्गार बनाई। गावत पुनि आनन्द बधाई॥
बहुतक नन्द भवन महँ आवैं। सुतपर तन मन रतन लुटावैं॥
केती पुनि पुनि लेत बलैया। वारि वारिकै तजैं रुपैया॥
दो० भीर भवन भारी भरी, शोभा अमित अपार।
कहत यशोदहि गोपतिय, उर आनँद बिस्तार॥
धन्य धन्य दिन है यह माई। जनमे कुँवरकन्हाई आई॥
कञ्चन कोष मढ़ाऊ थारी। सुनि भाषत मोहन महतारी॥
तुम्हरी कृपा भयो मम ढोटा। नातरु कर्म मोर अति खोटा॥
कहति रोहिणी ते नँदरानी। पूजहु इन्हैं बिबिध सनमानी॥
सुनि बलमात बात हरषाता। सबहिनसमदत प्रमुदितगाता॥
देत निछावरि अम्बर हेमा। प्रकट्यो परमपुरातन प्रेमा॥
कृष्ण जन्म सुख कह्यो न जाई। जयजय शब्द होत अधिकाई॥
दधिकाँदव कीनो भरि प्रीता। छिरकहिं दूध दही नवनीता॥
दो० बहुत गिरहिं दधिकीचमें, प्रेम प्रकट अधिकाइ।
नाचहिं मण्डल बांधिकै, शोभा कही न जाइ॥
मागध सूत पुराणिक काढ़े। गावहिं बिरद सरस सुखबाढ़े॥
तिनहिं नन्द बरषत में ऐसे। भादौं मास पुरन्दर जैसे॥

भुक्ति मुक्ति ऋधि सिधि समुहाई। डोलहिं घरन घरन नित धाई॥
सनतकुमार कपिल सुख ब्यासा। दत्तपुलस्त्य हसत पारासा॥
इमहिं आदि आये मतिसंची। हंसारूढ़ प्रजेश बिरंची॥
बृष चढ़िकै आये बृषगामी। रथचढ़िरबिगजचढ़िसुरस्वामी॥
यमचढ़ि महिष बायु चढ़िखञ्जन। जानधनदशशिमृगमनरञ्जन॥
अनल चले अजशिखि सेनानी। पानीपति झषशित खगबानी॥

दो० लक्ष्मी आईं गरुड़ पै, दुर्गा सिंह सवार।
गोस्वरूप महियानचढ़ि, आईं हरषि उदार॥
डोला चढ़िके मातृका, षोड़श आईं तत्र।
शिबिका पर बर योगिनी, चौंसठि चारु इकत्र॥

बृषभ चढ़े मङ्गल चलि आये। झषरर बुधबर बुधि सरसाये॥
जीव कृष्ण मृग पर आसीना। गवयचढ़े मृगसुवन प्रवीना॥
बनिठनिसानि सानि सुख सुर बैठे। ऊंट चढ़े ग्रह द्वै मुद पैठे॥
मूषक चढ़ि गणेश मुद पागे। मुदित नन्द अस्थल अनुरागे॥
देखि मुकुन्दहि बृन्द अनन्दे। पद अरविन्द सबन शुभ बन्दे॥
अस्तुति बहुबिधि करिछबिछाये। निजनिजसकलसदनसुरआये॥
नन्द तबै बहु भेंट सजाई। कंसहि जाइ दीन हरषाई॥
कह्यो सकल बिरतान्त सुनाई। आदर कीन्ह बिबिध ब्रजराई॥

दो० बहुरि मिले बसुदेवते, कुशलप्रश्न कहँ कीन्ह।
नन्द बिघन अतिहोइहै, यह बसु सुर कहि दीन्ह॥

नृप प्रेरित पूतना सिधाई। निजस्वरूप अतिदिव्य बनाई॥
श्रीनँद मन्दिर अन्दर जाई। निरखत तनरति जात लजाई॥
सबन रूप लखि गुन्यो कुलीना। मने न कीना आवन दीना॥
तुरतहि लीन उठाइ सुहावन। अङ्करारखि पयलगी पियावन॥

कालकूट कुच के मधि जाना। पीवत पीये पांचहु प्राना॥
मरी परी करि हाहाकारा। डगतभयो महिमण्डल सारा॥
चूर भये तरके तरु सारे। योजन डेढ़ अङ्ग बिस्तारे॥
ग्वाल ग्वालिनी लखि भयछाये। शिशुशिशुकहिकै आतुरधाये॥

दो० देखेउ क्रीड़त कुवँरकहँ, निशिचरिके उर बीच।
लीन्ह उठाइ लगाइ उर, तन दृग जल ते सींच॥
गोपी जन गोपुच्छते, गोपालहि लै अङ्क।
बर रक्षा करिबे लगी, बृहद बिघन के शङ्क॥

छप्पय॥ कृष्णचन्द्र भगवान, बिश्वपति शिरबर रक्षैं।
प्रभु बैकुण्ठ उदार, कण्ठकहँ श्रीबर रक्षैं॥
श्वेतद्वीप महीप, करन करुणाकर रक्षैं।
नवल नासिका यज्ञ, रूप आनँद भरि रक्षैं॥
दोउ दृग नृप केहरी, अरिअर्दन रक्षा करैं।
रसना कहँ रघुबंशमणि, खरमर्दन रक्षा करैं॥
अधर अनूपहि सरूपहि, नर नारायण रक्षैं।
बर कपोल सनकादि, वेद पारायण रक्षैं॥
शूकर श्वेत सुजान, भालकहँ सानँद रक्षैं।
सब भूतन ते मुनिबर, नारद सानँद रक्षैं॥
कपिल कृपालु महानमति, चिबुकमाहँ रक्षा करैं।
दत्त बिप्र अत्रीसुवन, उरनिबाह रक्षा करैं॥
कन्धमाहिं हरि धर्म, रूप गुणसागर रक्षैं।
हाथ जनार्दन देव, ज्ञान के आगर रक्षैं॥
कमठरूप हरि उदर, सकल अघनाशन रक्षैं।
भुजमहँ पृथु पृथिवी, प्रकट पृथु शासन रक्षैं॥

धन्वन्तरि बर बैद्यमणि, नवल नाम रक्षा करैं।
गुह्यमाहिं हरि मोहनी, सकल लाभ रक्षा करैं॥
कटितट प्रकट प्रताप, महान त्रिबिक्रम रक्षैं।
पृष्ठदेश महँ परम, रासबर बिक्रम रक्षैं॥
सत्यवती के सुवन, सुभग सुन्दर पद रक्षैं।
जानुमाहिं बलदेव, पराक्रम की हद रक्षैं॥
बृद्धरूप भगवान हरि, जङ्घ मध्य रक्षा करैं।
कल्की गुल्फ गुणज्ञबर, अतिअबध्य रक्षाकरैं॥
दो० कृष्णकवचयहदिव्यअति, चारहु फलदातार।
प्रथम बिष्णु बिधिते कह्यो, तिन शम्भुहि उच्चार॥
दुर्बासहि तिन दीन्ह यह, नन्दतियहि सो दीन।
करि रक्षा इमि दीनबहु, बिप्रन दान प्रवीन॥
इतने आये नन्दनृप,लखिसुनिगुनि भयपागि।
काटि तासुतन शस्त्र ते, आशु लगाई आगि॥
जरत सुगन्ध भई अति भारी। जनहुँ जरी बन चन्दनभारी॥
दीन्ह मातु सम गति भगवाना। दीनबन्धु प्रभु बुद्धिनिधाना॥
तब यह प्रश्न कीन्ह नरराई। को यह रही जु असिगति पाई॥
करत बैर उत्तम पद पावा। सुनि बिरञ्चिसुत बचनसुनावा॥
रत्नमाल बलिकी सुकुमारी। इच्छा किय बामनहि निहारी॥
ऐसे सुतहि पियायो दूधा। गुनि हरि तासु मनोरथ सूधा॥
ऐसहि होहु दियो बरदाना। माना ताते मातु समाना॥
बनि पूतना पूत मतिपूता। दीन्ह परमगति अतिमजबूता॥
दो० सुनहिं पूतना मुक्ति जे, परम भक्ति कहँ धारि।
कृष्णचन्द्रते ते मिलहिं, सत्य सत्य व्रतधारि॥

शौनक सुनहु चरित हरिकेरो। जाते पाप रहहिं नहिं नेरो॥
सुनि यह शुनकसुवन मुनिज्ञाता। बोले बचन बिहँसि हरषाता॥
कहा बिदेह प्रश्न पुनि कीन्हा। उत्तर अधिक कहा मुनिदीन्हा॥
कहत गर्ग उर आनँद ठयऊ। सुनि बिदेह यह पूछत भयऊ॥
धन्य भाग मम हे मुनिराया। साधु दरश अघ दूरि दुराया॥
कहिय कृपा करि सह बिस्तारा। पुनि का कीन चरित करतारा॥
सुनि मुनि पुनिपुनिहृदय सराही। कहत महत आनँद अवगाही॥
तीन मास के भये कन्हाई। यशुमति कीन्ही बिबिध बधाई॥

दो० अशन बसन भूषण कनक, दीन्ह द्विजनकहँ दान।
भृङ्गास्यो निज सुवन कहँ, पलना राख्यो आन॥

निकट बालकन कहँ बैठाई। काज करन हरिमाइ सिधाई॥
तहां रह्यो इक शकट पुराना। तामहँ दानव आइ समाना॥
उत्कच नामा कंस पठायो। बायु भूत मारण हितआयो॥
सर्व भूत पति भूपाहि जाना। भूतहि गुनि भविष्यअनुमाना॥
मारिचरण तेहि चूरण कीन्हा। तबसो दनुज दिव्यबपु लीन्हा॥
बन्दि चरण करि अस्तुति भारी। गयो धाम आनँद बिस्तारी॥
शकट शब्द सुनि ब्रजजन धाये। मातु पिता आतुर चलिआये॥
लरिकन ते पूछहि मतिमाना। कैसे भयद शकट भहराना॥

दो० कहेउ बालकन बचन तब, तव सुत चरणप्रहार।
गिस्यो शकट यहि भूमिपै, सत्य गोप सरदार॥

तिनके बचन न कोऊ माना। हरेउ दुरित हरशिशुको जाना॥
अङ्ग लाइ भेटे तन सूजा। दीन्ह दान बहुबिप्रन पूजा॥
सुनि बहुलाश्व बचन यह कहेऊ। उत्कचनाम असुर को रहेऊ॥
जो पद परसि परमपद पावा। द्विहिनिसुवनसुनिबचनसुनावा॥

हिरण्याक्ष कर सुत यह भारी। लोमश आश्रम गो अघहारी ॥
तरुन उखारन लागेउ रोसी। शापदीन्ह द्विजजगतनहोसी ॥
सुनि सो बन्दि चरणक्षबिछायो। करसंपुट करि बचन सुनायो ॥
करिय कृपा क्षमिये अपराधू। शठदिशिनहिंअवलोकहिंसाधू॥
दो० सुनि लोमश भाषत भये, अतिही आरत जोहि।
बैवस्वत मनुराज में, कृष्ण देहिं गति तोहि ॥
हरिप्रभाव ते सोउ गति पायो। चरित श्यामको सुनहु सुहायो ॥
अङ्कलिये सुत यशुमति माई। बैठी दिवस एक अँगनाई ॥
भयो भार मोहन को भारी। जननी दीन्हे अवनि उतारी ॥
आंगनमहँ धरि कुँवर कन्हाई। आय आपने मन्दिर जाई ॥
तेहिक्षण अतिप्रचण्डचलिआवा। तृणावर्त खल कंस पठावा ॥
लै गो हरिहि पूरि अँधियारी। सूझपरै नहिं हाथ पसारी ॥
आई यशुमति बिगत बवण्डर। बिनु गोबिंद लख्यो सो मन्दर ॥
खोजत बालक ब्याकुल भारी। उड़िगो मोहन कहत पुकारी ॥
दो० सुनि धाईं ब्रजगोपिका, ताड़त उर दुख पीन।
हा मोहन मोहन कहत, खोजत महत मलीन ॥
तृणावर्त लख योजन गयऊ। शिशुहि कन्धपर राखत भयऊ ॥
पटकन चह्यो क्रोध तन छायो। जगन्नाथ गहि गरो दबायो ॥
त्यागु त्यागु भो कहत अभागो। तुरत प्राणकढ़ि ऊरध भागो ॥
फिरेउ बहुरि हरि बदन समाना। गिरेउधरणितनशिखरसमाना ॥
फटी भूमि अरु शब्द अपारा। तापर गोपिन कुँवर निहारा ॥
तुरत उठाइ यशोदहि दीना। कहत बचन सब नारिप्रबीना ॥
तुमहिं प्रीति नहिं नेकु यशोदा। सुवन अकेल उतारेउ गोदा ॥
तोकहँ भयो अनोखो ढोटा। अपनो भाग लखत नहिं मोटा॥

दो० कहै यशोदा सखिनसों, कहा कहूंरी बीर।
शिशु भो भारी शैल सम, धरि न सकी तनधीर॥
गोपी कहहिं बचन समुझाई। तुमहूं बोलत बचन बनाई॥
कहँ शिशु सुमनसमान सुजाना। तेहि गिरिसों गरुकरतबखाना॥
तबहिं नन्द अतिकीन्ह बधाई। दीन्ह द्विजन कञ्चन हरषाई॥
तिहिक्षण लै कुमार निजगोदा। बहुत बार द्दृग कहत यशोदा॥
एक सुवन बहु दिन महँ पायो। तासु करमबिधि कहा बनायो॥
नित यह बचत कालके मुखते। अभय कहां चलि बसिये सुखते॥
तन मन धन जन सबसुतकाजा। कोउबिधिजीवै ब्रजशिरताजा॥
देवालय करिहौं हरिपूजा। सुतहिततजिममहितनहिंदूजा॥
दो० एक आंख अरु एक सुत, दोऊ एक समान।
ताहू में सुख ना सखी, कृपा करहु भगवान॥
ताक्षण द्विजगण आये ज्ञानी। ब्रजपति पूजित बोले बानी॥
नन्द यशोदा शोच न करहू। हम रक्षत मन नेकु न डरहू॥
इमि कहि लै पल्लव कुशपानी। छिरकि मन्त्र बोले बिज्ञानी॥
हरिहि ध्याइ उर आनँद पागे। रक्षा रुचिर करन तहँ लागे॥
दामोदर पदमातु समाना। उर बिष्टरश्रवा भगवाना॥
उरहरि नाभिपूर्ण तमआतिमाति। कटि रक्षहि कृपालु राधापति॥
पीत बसन उर पातु महाना। पद्मनाभ प्रभु उदर बखाना॥
पृष्ठ असुर अर्दन भुज गिरिधर। द्वारकेश शिर मुख मथुरेश्वर॥
दो० सब रक्षहिं भगवान तव, बुधि निधान सुरत्रान।
यह रक्षा जो करिहि नर, होइ आशु भयहान॥
लक्ष गऊ कञ्चन दशगूनो। रतन सहस नव एक न ऊनो॥
दियो द्विजन ब्रजराज उदारा। कीन्ही बिबिध जाति जेवनारा॥

जनक कहत सुनु अतिगतिपाई। तृणावर्त को हो मुनिराई॥
तब नारद सुमिरत सो कथा। बर बिरतान्त सहित सब यथा॥
पाण्डु नगरपति बैष्णवधर्मी। नाम सहसचन सुन्दरकर्मी॥
रेवातट सो करत बिहारा। लीन्हे संग सखी सुखसारा॥
लखि दुर्बासहि शीश न डास्यो। असुर होहु यह मुनि उच्चास्यो॥
ताते बन्दित बहुरि बखाना। देहैं मुक्ति कृष्ण भगवाना॥

दो० सोऊ तिनके शापते, कृष्ण कृपा कहँ पाइ।
गऊलोक गवनत भयो, श्याम सुनत सरसाइ॥

एकबार शिशु गोद उठाई। शीश दियो मसि बिन्दु लगाई॥
आनन ऊपर सोहत कैसो। शशिपर मनहुँ भृङ्गबर वैसो॥
पयहि पियावति मातु यशोदा। बाल बुलावति सुन्दर गोदा॥
तेहि क्षण हरि तहँ लीन्ह जँभाई। मुख मधि भई निहारति माई॥
बिश्वसकल नँदघरणि निहारा। मनमहँ संशय भयो अपारा॥
सुतके मुखमें जानि बलाई। भूतल गिरी यशोदा माई॥
उठी बहुरि मनमाहँ बिचारा। सूते हम यह सपन निहारा॥
हे नृप अहो भाग्य नँदरानी। नहिं रसनाते जाइ बखानी॥

दो० भूप कह्यो बसु द्रोण यह, कौन तपस्या कीन।
जाते ऐसो सुत भयो, सुनिमुनि कहत प्रबीन॥

बसु बसुमहँ जो द्रोण सुजाना। धरा तासु त्रियधरा समाना॥
सुतहित मन्दिर गिरिपर सोऊ। लागे करन कठिन तप दोऊ॥
अर्बुद बरष तपे तप भारी। बर मांगहु भाष्यो मुखचारी॥
तबते उभय उभय पदबन्दी। कहतउभय करजोरि अनन्दी॥
परिपूरण तुम कृष्ण कृपाला। तिनसम सुतमोहिंदीनदयाला॥
दोउनकर प्रणबर खगगामी। बरबर चहहिं हमें श्रियस्वामी॥

बिधि तब कह्यो कठिन बर येहू । होइहि पै न नेकु सन्देहू ॥
द्रोण नन्द अरु धरा यशोदा । भये खिलाये जिन हरि गोदा ॥
दो० नारायण हमते कह्यो, यह सिगरो आख्यान ।
शैल गन्धमादन शिखर, गुणनिधिकृपानिधान ॥
अब कह सुनिबे की अभिलाषा । तब बहुलाश्व बचनबर भाषा ॥
कृष्णचन्द्र अति रसिक रसीला । बहुरो कीन्ह कहा तिन लीला ॥
मुनि बोले सुनि नारद आरज । एक समय महँ गर्गाचारज ॥
शौरि पठाये गोकुल आये । नन्द अनन्दित शीश नवाये ॥
पूजि परम आसन बैठाई । बोले बचन बिहँसि ब्रजराई ॥
भे संतुष्ट पितर सुर मेरे । तव चरणारबिन्द के हेरे ॥
नामकरण लरिकन कर करिये । कृपा कटाक्ष प्रकट दुख हरिये ॥
सो सुनि गर्ग बखान्यो हेता । चलहु नन्द उठिकै संकेता ॥
दो० नन्द यशोमति सुतनसह, द्विजबर बिद्या कान्त ।
नामकरण कहँ करणहित, गे अस्थल एकान्त ॥
पूजि द्विरदमुख गर्ग सुहाये । सुन्दर तेहिक्षण बचन सुनाये ॥
नाम रोहिणीनन्दन केरे । कहत कछूकन अहहिं घनेरे ॥
रमैं सबन महँ सबन रमावैं । नाम राम ताते श्रुति गावैं ॥
सबकर शेष शेष ताही ते । बलधर ताते बल जग जीते ॥
यासु गर्भ संकर्षण भयऊ । ताते संकर्षण कहि ठयऊ ॥
नाम सुनहु अब अपने सुतको । सब बिधानसुख सुखमायुतको ॥
को कहिसकै नाम को पारा । पै कछु कहत बुद्धि अनुसारा ॥
नाम कामदायक फल चारी । सब ते श्रेष्ठ सकल सुखकारी ॥
दो० कमलाकान्त ककार सो, रघुकुल तिलक रकार ।
षटगुणयुत सुतद्वीपपति, सो सकार निरधार ॥

श्रीनरसिंह नकारकहि, यज्ञ अकार बिचार।
नर नारायण बिन्दु द्वै, कृष्ण पूर्ण अवतार॥
यह पूरण युग युग अवतारी। श्वेत रक्त पीरे तनु धारी॥
द्वापरान्त बपु श्यामल ताको। ताते कृष्ण नाम है याको॥
बसु इन्द्री तिहि नित्य चलावै। ताते बासुदेव श्रुति गावै॥
राधा जो बृषभानु कुमारी। सो इनकी अतिही प्रिय नारी॥
कह त्रैलोक्यनाथ भगवाना। परिपूरण तप तेज निधाना॥
इत उत अहइ समानसमीला। करिहैं उभय अतिहि हितलीला॥
ताते राधापति भो नामा। प्रकट भये पूरण जग कामा॥
धन्य भाग्य अब नन्द तुम्हारे। ऐसे बारे दृगन निहारे॥
यहि बिधान नन्दहि समुझाई। चले गरगमुनि परग बढ़ाई॥
यमुना तट मन आनँद पागे। बर बृषभानु सदन अनुरागे॥
बृषभ भानुसम भानु प्रकासा। शीश छत्र अरु पुस्तकपासा॥
यहि बिधि गर्गहि गोप निरेखी। उठे हृदय आनन्द बिशेखी॥
बन्दि पदन आसन बैठाई। पूजहि करत भये हरषाई॥
परिकरमा करि आनँद पागे। जोरि हाथ यह भाषन लागे॥
धन्य भाग्य मुनि आजु हमारे। तुम्हरे चरण सरोज निहारे॥
सुकृत कोटि जन्मनके जाहीं। दरशन होहिं साधु के ताहीं॥
दो० हे प्रभु मेरी कन्यका, कौन होइ पति तासु।
करि सुबिचार उदारमति, कीजै आसु प्रकासु॥
सो मुनिगर्ग मुदित सुख भीनो। करते बृषरबि कर गहिलीनो॥
गये कलिन्दी तट छबि साजे। गोपराज द्विजराज बिराजे॥
तब मुनि गर्ग स्वर्ग गुरु भ्राता। बोले बिहँसि बिचक्षणबाता॥
यह हम कहत गुरूमत कहियो। मनके मनहींमहँ चहरहियो॥

गोलोकेश कृष्ण गुण धामा। भये नन्दसुत पूरणकामा॥
ताते बर बर बर नहिं अहई। सुनिअतिमुदितबृषभरबिकहई॥
अहो भाग्य है यशुमति केरो। ऐसो आत्मज अक्षन हेरो॥
कहिय कृपाकर आनँद छाये। किहिहित कृष्ण धरापर आये॥

दो० सुनि गुनि उरमें गर्गमुनि, पुनि भे कहत उदार।
हरण हेतु भवभार के, कृष्ण लीन्ह अवतार॥

सो० राधा तिनकी शक्ति, पूर्णनमा आनन्द अति।
सबगुणगणकी पंक्ति, जाहि बखानहिं सन्तश्रुति॥

कीरति कहँ बृषभानु बोलायो। मुनिबरको सब कह्यो सुनायो॥
करिकै मतो सत्य अनुमानी। बोले जीव अनुज प्रति बानी॥
आपु कराइय मुदित बिवाहू। सुनिभे कहत गर्ग मुनिनाहू॥
हम न सकत यह ब्याह कराई। पै वह अस्थल देत बताई॥
बटभांडीर निकट महँ होई। अवधि इनन्हकी इच्छा सोई॥
तेहि क्षण मङ्गल साजहिं संची। जाइ करैहैं ब्याह बिरंची॥
जो सबते परदुर्लभ गायो। ताहि स्वबश ब्रजबासिन पायो॥
धन्य धन्य तुम सब ब्रजबासी। आनँदरूप भक्तिके रासी॥

दो० सो सुनि दोऊ मुदित ह्वै, जानि प्रभाव अपार।
पूछत भे श्रीगर्गसों, उर आनँद निरधार॥

राधाशब्द अर्थ मुहिं भाषो। सोसुनि गर्गकहन अभिलाषो॥
म्वहिं यह कथा कह्यो नारायण। गिरिबर परसु ज्ञान पारायण॥
रमा रकार अकार सुलीला। धराधकार आइ पुनि मीला॥
आबिरजाय मिलिकै है चारी। राधा उक्ति होत हरि प्यारी॥
चार शक्ति मिलि एक इकट्ठा। राधारासिक रूप की गट्ठा॥
राधाकृष्ण कहहिं जे प्रानी। तिनहिं न दूरसकलसुखखानी॥

सुनि कन्या को सुभग प्रभाऊ। भे अतिमुदित गोपकुलराऊ॥
गर्गाचारज सदन सिधाये। नृप बृषभानु मोद अतिपाये॥
दो० एक दिवस सुत अङ्कलै, गऊ चरावत नन्द।
गे चलि बटभांडीर तट, बृद्धबयस आनन्द॥
तेहि क्षण भो अधार कटुबाता। घनघेरे दिनमलिन दिखाता॥
तहँ भगवान कृपालु कन्हैया। रोवन लागे टेरि कै मैया॥
जनक कहे बहु नेकु न माना। तब हरि शरण कह्यो गोत्राना॥
तेहिक्षण भानुकोटि सम जोती। तमनाशत पायल द्युति होती॥
श्रीराधिका तहां चलि आई। सानँद तिनहिं लख्यो नँदराई॥
नीलाम्बर महँ तनु छबि कैसे। घनछपि झकत क्षपाकर जैसे॥
चूड़ामणि चूड़ापर छाजै। नीलशैल पर जिमि रबिराजै॥
उर महँ हारकतार सुहाई। नगअमोल द्युतिबरणि न जाई॥
दो० रूपराशि गुण आगरी, नवल नागरी बाल।
रूप अनूप उजागरी, पहुँची तहां उताल॥
उठि ब्रजनायक शीश नवावा। कहत बचन उरसुखअधिकावा॥
यह पुरुषोत्तम पति तव अहई। हे बृषभानुसुता श्रुति कहई॥
गर्गकीन्ह मोहिं गत सन्देहू। मम करते नितकर पतिलेहू॥
घर पहुँचावहु जहँ महतारी। रुदनकरतशिशुअरुअँधियारी॥
कह राधा मांगहु जो चहई। मोर दरश अतिदुर्लभ अहई॥
सो सुनि नन्द अनन्द महाना। बन्दि बन्दि यह बचन बखाना॥
यह मांगत दीजै दुख खोई। भक्तिचरण युगयुग जग होई॥
सो सुनिकै पुनि बोली राधा। तुमकहँ भक्ति होइ गतबाधा॥
दो० बन्दि चरण कहनन्द तब, गे गृह सहित अनन्द।
बटतट राजत राधिका, नन्दनन्द ब्रजचन्द॥

तहँ गोलोक भूमि तब आई। रतनमयी माणिक छबिछाई॥
बृन्दाबन भो दिव्य स्वरूपा। जातरूप के बृक्ष अनूपा॥
कल्पबृक्ष से पादप नाना। तापर करहिं कीर कलगाना॥
यमुना की सब सिढ़ी सुहाई। भई कनकमय रतन जड़ाई॥
गोवर्धन मणिमय दरशाना। निरझर दरी शृङ्गमयदाना॥
दरी जरी पन्नग तनु भारी। हरी हरी झाई महि पारी॥
भो निकुञ्ज सुख पुञ्ज सुभाना। मण्डप मण्डन मण्डित नाना॥
फूले सब तरु सुखद समीरा। कूजहिं केकी कोकिल कीरा॥

दो० घट अक्षत दुर्बादिया, दधि पूगीकी लाल।
सामग्री सब ब्याहकी, धरी तहां भूपाल॥

तबै किशोर भये मनमोहन। पीताम्बर कटितट अतिसोहन॥
बंशी कर महँ अति छबि प्यारो। मनमथ को मन मथिबे वारो॥
करते कर कहँ पकरि सुजाना। चले मुदित मण्डप अस्थाना॥
सिंहासन अति उच्च अपारा। बैठे तापर उभय उदारा॥
शोभित सुन्दर केशव कामिनि। जिमि सुमेरुपरघन सहदामिनि॥
जिमि चन्द्रिका चन्द्र के साथा। शोभित भानुसुता ब्रजनाथा॥
तेहिक्षण चतुर चतुरमुख आये। प्रमुदित चित्त न शीश नवाये॥
चारहु बदन लगे महि कैसे। झुकी डारमहँ श्रुति फल जैसे॥

दो० खड़ेभये करजोरि पुनि, भरे हृदय आनन्द।
अस्तुति तहँ लागे करन, जय राधा नँदनन्द॥

छं० राधा जगत अनादि अनादि कृष्ण भगवाना।
उभय सरूप अनूप हिरण्यकोटि के त्राना॥
जब जब जैसो रूप धरयो तुम कृपानिधाना।
तब तब तुम्हरे संग राधिका प्रकट सुजाना॥

जब आपभये गोलोकपति तब यह लीलाबालबर।
बैकुण्ठनाथ जब रूपधरि लक्ष्मी इनको नामबर॥
जब तुम रघुकुल तिलक भये तब यह बैदेही।
भूमा के अवतार नाम कमला अस्नेही॥
जब प्रभु यज्ञ स्वरूप दक्षिणा इनको नामा।
नर नारायण मुनिबर तहां शान्ति कहि बामा॥
ब्रह्मरूप जब तुम भये प्रकृतिरूप तब राधिका।
तुम सगुण तबै माया भई सकलकाजकी साधिका॥
चार रूप जब भये शक्ति तब चारि बिचारी।
जब गजराज बिराटधरा तब यह निरधारी॥
श्याम गौर द्वैरूप अहैं शिरमौर हमारे।
नन्दकिशोर सजोर वेदबन्दित निरधारे॥
गोलोकनाथगुणथोक प्रभु सताचित्तसुचित्तकृपाकरन।
जयद्वैतरूप अद्वैतप्रभु शरणशरण गिरिबरधरन॥

दो० सदानाथ गोलोक के, लीन्हों महि अवतार।
हुक्म होइ तौ करौं मैं, इत बिवाह उपचार॥

स० हरजूके कहे मुखचारि तबै सब ब्याह बिधानकरावतभे।
बरबेदी करीमधि अग्निधरी सुरुवा भरि आहुति नावतभे॥
बरमण्डप मण्डल मध्यलसैं दुलहा दुलही छबि पावतभे।
मुखचार उचारत मन्त्र सबै श्रुतिचार बिचार सुनावतभे॥

दो० सात प्रदक्षिण अग्नि की, कीन्हों राधाकृष्ण।
शोभा सिन्धु सुतीर्थ महँ, मग्नदुहिन अतिघृष्ण॥

पीढ़न पर दोउन बैठाये। तहँ ऐसो शुभरूप बनाये॥
हाथदुहुन के ग्रीव धराये। पांच मन्त्र हरिते पढ़वाये॥

तहँ बेधाबर बेद बिधाना। पितु सम दीन्हों कन्यादाना॥
कुसुम देव बर्षहिं तेहि काला। नृत्यहिं सकल देवकी बाला॥
बिद्याधर किन्नर अरु चारण। लागे जयजय शब्द उचारण॥
बीन मृदङ्ग शंख सहनाई। दुन्दुभि देव बखानहिं गाई॥
जयजय शब्द अब्द अतिहोई। बरषत कुसुम पुरन्दर सोई॥
दो० बर मांगहु ब्रह्महि कह्यो, मुदित कृष्णगोपाल।
भक्ति देहु याचतभये, श्रुति बिशाल श्रुतिभाल॥
एवमस्तु भगवान बखाना। कीन्ह दण्डवत प्रजा प्रधाना॥
गये भवन चलि मुदित बिधाता। तब चरित्र कीन्हों सुरत्राता॥
हरिकर कौर राधिका लीन्हों। निजग्रास भगवानहिं दीन्हों॥
करिकै यहि बिधि दूधाभांती। चले कण्ठ धरि भुजबर भांती॥
कर छोड़ाइ भागे भगवाना। कहेउ पकर मोहिं तबतैं जाना॥
रहे लताकी ओट लुकाई। राधा पकरि लीन्ह हरि जाई॥
मोहिं पकरि कहि बृषरबिकन्या। धाइचली चपला समधन्या॥
खोजत पाछे चले मुरारी। कहत दरशरस प्यारी प्यारी॥
पै न खोज राधा की पाई। आपुहि हँसत चली सो आई॥
दो० रमत राधिकारमन रुचि, शमन सकल सन्ताप।
रूप भवन रतिरण दमन, मदन मदन करिथाप॥
रास चौतरा पुनि चलि आये। रमन लगे दुख शमन सुहाये॥
नाना भाँति बिहार बिहारे। चले प्रिया सह नन्ददुलारे॥
कन्दर अन्दर उतरि कृपाला। कीन्हों रास बिलास रसाला॥
युगुल रूप ब्रज भूप अनूपा। सुन्दर सोहति सरस स्वरूपा॥
बारि धसे बिहार के काजा। बिहरत ब्रजरानी ब्रजराजा॥
शतदल कमल पिया को ताहीं। लै मोहन भागे जलमाहीं॥

इत सो बेणु बेत्र पटपीतहि। लै भागी निज जान सुबीतहि॥
माँगत ताहि पुकारि मुरारी। कुबलय देहु कह्यो यह प्यारी॥

दो० दोउन कहँ दोउन दियो, हियो कियो एकत्र।
चले मुदित भाण्डीरबट, लियो परम सुख तत्र॥

तहँ राधा कर कीन्ह शृँगारा। उरमहँ गुथे अनेकन हारा॥
चोटी गुही बसन पहिराये। अँग अँग भूषण परम बनाये॥
हरि शृँगार हित उठी लड़ैती। चली मुदित मन फूल बढ़ैती॥
तब मुकुन्द भे बाल सरूपा। तजि किशोर बपु ब्रजकुलभूपा॥
नन्द दियो जिमि तैसेइ छोटे। रुदन करत धरणी पर लोटे॥
सो लखिकै बृषभानुकुमारी। कीन्ह बिलाप ताप गहि भारी॥
लखि इमि तेहि मनमाहँ बिचारति। नभ भारत यह भई पुकारति॥
राधे अबहिं जाहु गृह आछे। ह्वैहै तब मनोर्थ सब पाछे॥

दो० सुनि राधा शिशु लै चली, गोकुल ओर अमन्द।
दीन्ह यशोमति गोद में, कह्यो कि दीन्हों नन्द॥

कहत भई यशुमति महतारी। धन्य धन्य बृषभानु दुलारी॥
बिसुई की तुम अति भय टारी। होइहि तव कल्याण दुलारी॥
बिदा भई यशुमति ते प्यारी। चली हृदय पति मूरति धारी॥
सरस प्रेम राधा बनवारी। सुनत पढ़त पावत फल चारी॥
राधा केशव विपिन निहारी। करि न सहित रबिसम तमहारी॥
करत केलि नँद सदन मुरारी। घुटुरुन चलत घुंघुरु झनकारी॥
कछु कछु कढ़त सुबोलवकारी। रास भारि सँग सुभगवकारी॥

दो० देखत बाल बिनोद कहँ, हलधरजननि यशोद।
मोद सहित आँगन फिरत, कबहुँ बिराजत गोद॥

कटि करधनी कनककी सोहै। जाहि देखि दामिनि द्युतिमोहै॥

ब्रजबालक मिलि लोटहिं अँगना। शिर चौतनी बनोकर कँगना॥
धूरि भरो तन सोहै सघना। बग पायल अरु उत्तम बघना॥
लावत कण्ठ कबहुं नँदरानी। चलत पकरिकरि अँगुरीकानी॥
कबहूं चलत दौरि कछु पगतें। गिरिके उठत धूरि भरि अँगतें॥
पीत झँगा तन सुन्दर सोहै। लखि टोपी गोपी मन मोहै॥
कनक रतन के भूषण भारे। अङ्ग अङ्ग द्युति दुगुन निहारे॥
लोटहिं धरणि पलोटहिं वारे। गहहिं छाहँ ब्रजराज दुलारे॥

दो० नँदरानी लै बालकहि, जात भई हरिपौरि।
डरिभाजे रोदन करत, पकरि लीन पितु दौरि॥

आवत जात रहहिं ब्रजनारी। एक बार आईं ते सारी॥
बोली बचन यशोदहि जोई। याहि दृष्टि कोउकी नाहिं होई॥
दोय दाँत अति सुन्दर आये। ऊपर के अतिही छबि छाये॥
दोउ मामा के ऊपर भारी। सो न याहि यशुमति महतारी॥
ताते सुत ते दान करैये। जाते दुख कहँ दूरि दुरैये॥
सो सुनिकै रोहिणी यशोदा। सुत हित दान दीन भरि मोदा॥
यहि बिधान दोउ ब्रजपति छैया। फिरनलगे ब्रज लखहिको गैया॥
सबल तोक मङ्गल श्रीदामा। इनसँग फिरहिं राम घनश्यामा॥

दो० एकसमय लालन सहित, ग्वालन कीन्ह बिचार।
बालन के घर जायकै, तालन खोलि अगार॥

खाहु दूध दधि माखन मट्ठा। चले शोचि सब लैकर लट्ठा॥
सब समाज सब होइ इकट्ठा। लूट्यो दूध कियो अतिठट्ठा॥
प्रभावती उपनन्द कि नारी। आई देन उराहन भारी॥
दधि की कमी न तुम्हरे हमरे। पै गुपाल सँग बालक सगरे॥
जब हम देत लेत नाहिं छोरा। पाछे आइ करत भँड़फोरा॥

जो कछु कहहु देइ तौ गाली। भो अब निपट कुचालीआली॥
ब्रजाधीश को है यह ढोटा। करत कर्म चोरी अतिखोटा॥
सुनि दोउ मात तात नँदराया। हरि हलधरहि बहुत समुझाया॥
दो० कोटि गऊ हमरे सदन, कमी न केशव नेक।
किहि हित चोरी करत तुम, निर्भय गहत कुटेक॥
तव सुत मम सुत भेद न अहई। खावै देहु जौन सो चहई॥
पुनि जो करिहै ऊधम वैसी। तौ मारहुँगी लखियत ऐसी॥
जब सो गई नारि चलि सदना। गे तब तागृह मोहनमदना॥
सून सदन अतिऊंचे भाजन। लखिबिचारकरिसाहितसमाजन॥
ऊखल पर इक ग्वाल चढ़ाई। ता कांधे ते चढ़े कन्हाई॥
लकुटि मारि इक छिद्र बनायो। बहत धार मुख पियत सुहायो॥
तेहि क्षण चली प्रभावति आई। भाजे सब इक गहे कन्हाई॥
गहिलै चली परम रिस बाढ़ी। मेघघटा सम घूंघट काढ़ी॥
दो० मातु मारिहैं जानि हरि, लीला करी रसाल।
बाल भये ता बालके, माया करि गोपाल॥
सो नँदरानिहिं टेरि बखाना। आज कीन्ह उत्पात महाना॥
मैं ह्यां ल्याई सुवन सुजानी। सुनिलखिहँसिभाषतनँदरानी॥
तेरो सुतकै मेरो बौरी। आज काल तोहिं कहा भयोरी॥
सो अम्बर उठाय अवरेखा। लाजत उरमहँ भई बिशेखा॥
चकृत कहत कहा यह ख्याला। चली भवन सकोचबश बाला॥
नन्द रोहिणी अरु नँदरानी। हँसत परस्पर संशय आनी॥
मगमहँ निज बपु धरि भगवाना। प्रभावती प्रति बचन बखाना॥
जो तैं पुनि गुण कहै हमारो। तो मैं ह्वैहौं खसम तिहारो॥
दो० सो सुनिकै निज गृह गई, सो अबला तेहिकाल।

घर घर दधि चोरत फिरत, माखन चोर गुपाल ॥
श्याम मनोहर सुन्दर गाता । बालचन्द्रसम द्युति सुखदाता ॥
बल बालकन सहित बनवारी । गोकुल गोकुल गोपबिहारी ॥
नव उपनन्द नन्द पुनि तेते । षट वृषभानु गोप अरु जेते ॥
धन्य भाग सबके नँदराई । जिनमहँ बिचरहिं कुँवर कन्हाई ॥
सुनि महिपाल कहै हरषाई । तिनके नाम कह्यो मुनिराई ॥
किये नन्द उपनँद वृषभानू । सोइसुनि कहत गूढ़ गुणज्ञानू ॥
श्रीधर शीश बिमल मय मङ्गल । रोगजीत सुरतापन अतिभल ॥
रङ्गवल्लि पति मङ्गल ऐना । ये नव नन्द दूसरे हैना ॥
दो० बीति होत श्रुति अग्निभुक, गोपाति श्रीकर शान्त ।
पावन साम्ब ब्रजेश ये, नव उपनन्द सुदान्त ॥
भार्गव शुक्र पतङ्ग नीतिवित । पुनि गोपेष्ट दिव्य बाहनहित ॥
ये षटवृषभ दिनेश बखाने । गऊलोक के सकल सयाने ॥
नन्द तहां के वेत्र धरैया । चौकी द्वाररूप अधिकैया ॥
ये उपनन्द बखाने जेते । बंशी मोर पक्ष धर तेते ॥
गोपुरके सुकोट बरदारा । है उपनन्द भूमि भरतारा ॥
ये षट जे वृषभानु गनाये । ते निकुञ्ज रक्षक महि आये ॥
हरि इच्छा सबको अवतारा । आइ भूमि सुख लीन्ह अपारा ॥
हिलिमिलिकीन्हकृष्णसँगक्रीड़ा । जे लखिभई सुरन कहँ ब्रीड़ा ॥
दो० प्रभुता इनके भागकी, हम कहि सकत न तात ।
सुचित सुनहु हरि सुयशकहँ, बहुरि भई जो बात ॥
माटी हरि खाई यक बारा । यशुदहि आइ अनन्त उचारा ॥
लै लकरी करपकरि बखाना । केहि हित मृदा भषी अज्ञाना ॥
मोहिं बलदेव कहा यह आई । तेरी सिगरी कान्ह ढिठाई ॥

सो सुनिकै भगवान बखाना । झूठ कह्यो बल सकल सुजाना ॥
ज्यों परतीति होइ नहिं माता । तौ मम लखहु बदन हरषाता ॥
लखनलगी मुख यशुमति सुतको । निरख्यो ब्रह्मअण्ड अद्भुतको ॥
सातद्वीप नवखण्ड निहारे । ब्रजगोकुल निज सदनसुभारे ॥
तुरतहि नयन मूंदि निज लीनो । सभय महत शङ्का उर कीनो ॥

दो० हरि मायाते बात सो, मायहि गई भुलाइ ।
इमिबिधि क्रीड़त कृष्णब्रज, लीला बरणि न जाइ ॥

एक दिवस उठिकै नँदरानी । आनि मथानी सुन्दर पानी ॥
दही मथन लागी परभाता । लखिलखिसुतहिमुदित अतिमाता ॥
नाचत सनमुख यशुमति ढोटा । बाजत किङ्किनि घुंघुरू छोटा ॥
मांगत माखन चाखन काजा । लाखन बात कहत ब्रजराजा ॥
दीन नहीं रिस कीन किशोरा । लकरी मारि कमोरी फोरा ॥
गहन लगी जननी हरिभागे । पाछे यशुमति बालक आगे ॥
जो योगी खोजे नहिं पावैं । सो कि यशोमति के कर आवैं ॥
तदपि भक्तबत्सल पकराये । गहियशुमतिबहुबिधिधमकाये ॥

दो० बाँधन लागी सो रसी, कसी कमर मनमाहिं ।
फँसी असी लखि जेवरी, हँसी कीन हरि ताहि ॥

जबै लपेटै तब सो छोटी । ब्याकुलजननिअवनिमहँलोटी ॥
तब उर दया दयानिधि ल्याये । आपहि ऊखल मध्य बँधाये ॥
बिधि बृषकेतु रमा मरयादा । कोउपर नहिं अस भयो प्रसादा ॥
जो यशुमतिहि भक्तिफल साधा । मुक्ति करहिं निजकरतें बांधा ॥
तिहि क्षण आईं सिगरी गोपी । देखि यशोमति ऊपर कोपी ॥
बोली बृद्धबधू प्रतिबानी । नँदरानी अब कह बौरानी ॥
हम गृह फोरहिं शिशु बहुभण्डा । तिनहिं न देत नेक कोउ दण्डा ॥

तुम ह्वै वृद्ध कौन मति कीन्हा। थोरे हेतु महारिस लीन्हा॥

दो० जहँ बालक तहँ पेखना, दृगन देखना मात।
दई दई नहिं त्वहिं दया, सुनहु निर्दयी बात॥

सो० अब छोरहु ते दाम, सो न मान नेकहु सुन्यो।
प्रविशी अपने धाम, गई बाम घनश्याम तजि॥

चले ताहि घिसिआवत गोहन। लगे बहुतशिशुगोहनजोहन॥
आये तूरन तीर यमुन के। तहँ द्वै तरु यमला अरजुन के॥
ऊखल ताके मध्य फँसाई। दामोदर द्रुत दीन्ह खसाई॥
तिन्हतें निकरि देव द्वै आये। दामोदर कहँ शीश नवाये॥
करि परिक्रमा करपुट कीने। कहत कथा निजआनँदभीने॥
हम अब मुक्त शापते पाई। देखि चरण तव कुँवर कन्हाई॥
दामोदर प्रभु कृष्ण कृपाला। नमो विष्णु केशव नँदलाला॥
इमि कहि सुर सुरलोक सिधाये। नन्दादिक तक धाये आये॥

दो० पूछन लागे शिशुनसों, उर आनन्द अभेव।
तिन्हन सत्य भाष्यो तबै, सबै तहांको भेव॥

सो सुनि नन्द सबन दै थोपी। शिशुहि सप्यार अङ्क आरोपी॥
पीजै सो गोपीपर कोपी। सबकी द्रुत कठोरता लोपी॥
भूप कह्यो सुनि कहिये सोऊ। कौन रहे ये पादप दोऊ॥
तब बिधिसुवन सुमुनि पुनि बोले। धनदसुवन ये भवन अमोले॥
मणिग्रीव नल कूबर नामा। गे बन नन्दन सँग बहुबामा॥
नग्न नहात रहे जल माहीं। नारद ऋषि आये चलि ताहीं॥
तिनहिं देखि नहिं कीन्हेउ लाजा। नारद दीन्हेउ शाप दराजा॥
मोकहँ देखु रहे तरु जैसे। ताते अवनि होहु तुम तैसे॥

दो० बिगत बरष शत ब्रज बिपिन, गोकुल यमुनातीर।

महाबिपिन महँ कृष्णकर, होइहिं मुक्त शरीर ॥
सोई रह्यो शाप अति भारी। भये बिटप सरिकूल मझारी ॥
कृष्ण कृपा ते सोऊ छूटे। कृष्ण भक्ति पुनि दोऊ लूटे ॥
एक दिवस हरि दर्शन काजा। आये अत्रिसुवन मुनिराजा ॥
दुर्वासा करिकै दुर्वासा। रमणरेत कर लख्यो तमासा ॥
नङ्गे शिशुन सहित गोपाला। लोटत दौरत चरित रसाला ॥
धूरि भरे तन खेलत मूकी। लखि मति भ्रमत भई मुनिहूकी ॥
ईश्वर करै न ऐसी लीला। गोपसुवन यह नहिं गुणशीला ॥
मोह भयो दुर्वासहि भारी। तब आये मुनि पास मुरारी ॥
दो० श्वास ऐंचि केशव हँसे, मुनि घुसिगे मुखमाहँ।
लखेउ घोर बन बिजन अति, तमतें छादित ताहँ ॥
व्याकुल फिरत भये गुणलीला। मुनिहिंएकअजगरपुनिलीला ॥
ताके उर ब्रह्माण्ड निहारा। कीन्ह तहां तप बैठि अपारा ॥
बरषकोटि शत दीन्ह बिताई। नैमित्तिक सुप्रलय चलिआई ॥
सात सिन्धु मिलि बसुधा बोरे। दुर्बासा ढूंढ़त सब ठौरे ॥
सहस बरष इहि भांति बिहाना। बहुरि एक ब्रह्माण्ड दिखाना ॥
ताके छिद्र पैठि अवरेख्यो। अण्ड दूसरो उत्तम देख्यो ॥
ताते निकसि चले जब बाहर। ब्रह्मद्रव देख्यो मुनि नाहर ॥
जामहँ लटकहिं कोटिन अण्डा। देखि दुखो द्रुत दूरि घमण्डा ॥
दो० पुनि बिरजातें उतरिकै, देखत भे गोलोक।
यमुना गोबर्धन बिपिन, अतिही आनँद ओक ॥
तब निकुञ्ज निवसे मुनिराई। लख्यो गोप गोपी समुदाई ॥
कइककोटि रबिसम द्युति भारी। देख्यो राधापति गिरिधारी ॥
पद्म परम पर राजत सोई। मुदित भये मुनिनायक जोई ॥

हँसि ठठाय पुनि बदन समाने । निकरिबहुधा नँदनन्ददिखाने ॥
लोटत शिशुनसहित छबिकेती । राजत रुचिर स्वर्ण बररेती ॥
जानि पूर्णतम शीश नवाई । बोले दुर्बासा मुनिराई ॥
बाल नवीन कमलसे लोचन । तन घनश्याम मदनमदमोचन ॥
सुन्दरि हसनि कसनि भृकुटीकी । मम मन बसहु लरनलकुटीकी ॥
दो० हरिउरहारिनखललित ऋति, मनसबको हरिलेत ।
हरितनयन तरु हरितमहँ, यमुनातट छबिदेत ॥
पूरणशशिसम मुख कच काले । पग पैंजनी माल उर डाले ॥
बलि समेत ऐसे जो स्वामी । हमसब शरणशरण खगगामी ॥
जो पढ़ि हैं यह ग्रस्तुति भारी । तापर करि हैं कृपा मुरारी ॥
इमि कहि मुदित सुमुनि दुर्बासा । बदरी बन कीन्हो निजबासा ॥
इमि नारद मैथिलहि सुनायो । सुनिश्रतिमोद भूमिपतिपायो ॥
कौनकथा सुनिहौ अब सांचे । तब शौनक मुनिनाह उवाचे ॥
कौन प्रश्न पुनि भूपति कीना । सुनि बोले गुनि गर्ग प्रबीना ॥
सुनि यह चारु कथा मिथिलेशा । पूछतभये प्रश्न तेहि देशा ॥
दो० महापुरुष श्रीकृष्ण प्रभु, परमाधरन ललाम ।
और चरित कीनो कहा, कहहु मोहिं गुणधाम ॥
सो सुनिकै अतिज्ञानविशारद । बोलत भये बचन मुनि नारद ॥
बृन्दारण्य खण्ड के माहीं । कहिहौं कथा अपूरब चाहीं ॥
राधहि कृष्ण खण्ड यह भाषा । तिनमोहिंकहाजानिअभिलाषा ॥
इहि गोलोक मध्य हरि गायो । तब गोलोकखण्ड कहवायो ॥
ब्राह्मण पढ़ैं ज्ञान अति पावैं । क्षत्री बधि रिपु राज बढ़ावैं ॥
बैश्य धनद सम होहिं सुजाना । अघगत होइ शूद्र सुनि काना ॥
जो इहि कहै सुनै चित लाई । सो गोलोक लोक महँ जाई ॥

यह गोलोक खण्ड की कथा। निजमति यथा तथा इहिकथा॥

दो० कोटिन अण्ड अखण्डपति, खण्डन खल पाखण्ड।
कृष्णकृष्ण कहि कृष्णकहि, पूरण कीनो खण्ड॥

सो० दायकबर फल चार, चरणचारु गिरिधरण के।
मम उर करहु बिहार, प्रेमकरण अघहरण के॥

इति श्रीभाषाप्रकाशेकृष्णप्रियेगिरिधरदासविरचितेप्रेमपथरचिते
गर्गसंहितायांप्रथमंगोलोकखण्डंसमाप्तंशुभमस्तु॥ १॥

अथ बृन्दाबनखण्डप्रारम्भः॥

सो० जलयमुना के तीर, रमत राधिका सँगलिये।
करि सुकृपा बलबीर, बास करहु मेरे हिये॥
नयन तिमिर अज्ञान, अञ्जन दैकै ज्ञानको।
श्रीगुरु कृपानिधान, दरशायो भगवानको॥

दो० बन्दिचरण तिनके उभय, सब बिधि सुखदातार।
गोकुलपति गोपालगो, करिय शुद्ध त्रातार॥
कृष्ण कृपाल दयाल प्रभु, अच्युत ईश अखण्ड।
सुमिरि कहत बहु अंडपति, यह बृन्दाबन खण्ड॥

गोकुल देखि उपद्रव भारी। नन्द कह्यो वह सभा मँझारी॥
सह बृषभानु नन्द उपनन्दा। तिनमहँ चन्द्र सरिस ब्रजचन्दा॥
परम उपद्रव है इत भाई। कहकीजै सो कहहु उपाई॥
सुनि सन्नन्द नन्द महँ बूढ़े। बोले बचन नीति आरूढ़े॥
इतते चलिये दूजे देशा। जहँ न उपद्रव होइ ब्रजेशा॥

तव सुत ब्रजबासिन को जीवन। ताते चलहु मुदित बृन्दाबन॥
मोहन ब्रज के प्राणअधारा। तिनपर होत उपद्रव भारा॥
बकी शकट आदिक बहु बारा। आई यह बारे परवारा॥

दो० बृन्दाबनमहँ चलिय अब, निर्भय करिय निवास।
बहुरि बास इतकीजियो, होइ दुरित जब नास॥

सो सुनि कह्यो नन्द हरषाई। कै योजन को ब्रज है भाई॥
सकल तासु को भाषहु ज्ञानी। सुनि सन्नन्द कहत भे बानी॥
यह माथुर मण्डल नँदराई। इकइस योजन में सरसाई॥
परम पवित्र अहै सुख साजा। याकहँ पूज्यो तीरथराजा॥
सकल बनन महँ बृन्दाबन है। परिपूरणतमको प्रिय घन है॥
बृन्दाबन बैकुण्ठ अधिक है। याके सेवन बिन सब धिक है॥
तहँ गोबर्धनबर गिरिराजा। कालिन्दी तट परम बिराजा॥
बृहत सान नन्दीश्वर शैला। षटयोजन प्रमाण सब फैला॥

दो० बृन्दारण्य समान जग, तीरथ अहै न अन्य।
मुनिब्रजेश भाषत भये, ठांव बतायो धन्य॥

कब ब्रज पूजेउ तीरथनायक। भाषहु सन्नन्दन सब लायक॥
बोले तब जब सोये धाता। प्रलय निमित्तकमहँ सुरत्राता॥
शंखासुर जीत्यो सुरजूहा। लैगो वेद प्रकट अघ ऊहा॥
तब हरि झषबपु धरि रिस पागे। श्रुतिहित लरन शंखते लागे॥
शंखशूल निज मच्छहि मारा। तेहि तजि चक्र बिष्णुमहिडारा॥
बहुरि आय कै मूका मारा। हरितेहि सुमन सरिस निरधारा॥
गदा हरिहि मार्‌यो ललकारी। बिष्णु तोरि ताहू कहँ डारी॥
कौमोदकी ताहि हरि मारी। ब्याकुल ह्वै पुनि उठा सँभारी॥

दो० तब सकोप भगवान हरि, तीक्षण चक्र प्रहारि।

धरते शीश धरा धरा, कर लीनो श्रुति आरि॥
दीनो बिधिकहँ ते सब बेदा। न्हाये आय प्रयाग अखेदा॥
यज्ञ कीन्ह अति आनँद लीन्हा। तीरथतिलक प्रयागहि दीन्हा॥
अक्षयबट शिर छत्र बिराजै। मोर्च्छनचलनयमुनजलछाजै॥
चमर गङ्गजल सरिस सुहाये। तीरथ सकल भेंट लै आये॥
गये धाम सब तीर्थ समाजा। भे प्रयाग इमि सबके राजा॥
तब हम ता ढिग गये अमोले। पूजित बिहँसि बचन यह बोले॥
बृथा तीर्थपति पदवी लीन्ही। सब तीरथन भेंट नहिं दीन्ही॥
ब्रजके तौ एकहु नहिं आये। तुम न नेक सो उरमहँ लाये॥
दो० सुनि मम बचन रिसाइअति, तीरथ सकल समेत।
गो प्रयाग हरि धाम द्रुत, प्रकट करन निज हेत॥
करि प्रणाम तहँ सहित समाजू। कहत बचनभो तीरथराजू॥
तुम मोहिं तिलकतीर्थकरकीन्हा। ब्रजके एकहु बसिनहु दीन्हा॥
सो सुनि बिहँसे रमानिवासा। मुखते मीठे बचन प्रकासा॥
हम नहिं तीर्थतिलक तोहिंदीन्हा। नहिंनिजघरकोमालिककीन्हा॥
सो निज निज मेरो अस्थाना। तुमते पूजनीय हम जाना॥
नाश प्रलय महँ तासु न रूरा। ममतालहि कह भयो गरूरा॥
सुनि तीरथन समेत प्रयागा। द्रुत माथुरमण्डल अनुरागा॥
पूजि सबन सह सदन सिधायो। सबते उत्तम ब्रज यह गायो॥
दो० कही कथा यह कोलहरि, महि मद मर्दन हेत।
अबै कहा सुनिबे चहत, भाषिय नीति निकेत॥
सो सुनिकै तब कृष्ण बखाना। किमिहरि हर्यो भूमिको माना॥
सो सब कहिये आनँदकन्दा। सुनि सन्नन्द कहत सानन्दा॥
जब बाराह भये भगवाना। महि धरि रदपर चले सजाना॥

देखि दशहु दिशि अबिरलबारी । बोली धरणि समय अनुसारी ॥
है सर्बत्तर बारि अथाहा । कहँ धरिहौ मम नाह बराहा ॥
कहत कोल जब बिटप दिखैहैं । तब हम तुमहिं तहां बैठैहैं ॥
सो सुनि बिस्मित भई बिबरणी । भाषत धरणधिरसों धरणी ॥
मम ऊपर सब जग दरशाना । दूजो अहै कौन अस्थाना ॥

दो० इमि भाषत निरखत भई, पाद पङ्क समुदाय ।
बिस्मित बसुधा बहुरि बर, बोली बचन बनाय ॥

कहां बृक्ष ये परत दिखाई । सुनि शूकर प्रभु कहत सुनाई ॥
यह गोलोक केर अस्थाना । माथुरमण्डल नाम बखाना ॥
प्रलय माहिं नहिं याकर नाशू । सत्य तुमहिं यह कीन्ह प्रकाशू ॥
सो सुनि धरा मानि निज धारा । ब्रजमण्डल महि सबते पारा ॥
ब्रज माहात्म्य सुनै नर जोई । सो ब्रजराज भक्त निज होई ॥
सुनि नृप नन्द कहत भे बानी । धन्य बृद्ध ब्रजमण्डल ज्ञानी ॥
गोबर्धन गिरिराज कहावत । पुनि यमुना अघ दूरि बहावत ॥
कहहु कथा इनके आवन की । सुनिसन्नन्दकहत गुनिमनकी ॥

दो० गजपुर महँ यह हम सुन्यो, पाण्डु भीष्म सम्बाद ।
गुणि गाङ्गेय कह्यो तबै, करन सकल अहलाद ॥

परिपूरणतम कृष्ण मुकुन्दा । चले भूमि तब आनँदकन्दा ॥
लखि राधा कर मन भो आधा । निजहित साधा कहत अबाधा ॥
चलन कहा हरि चलहु बखाना । राधा पुनि यह कह्यो सुजाना ॥
बृन्दाबन यमुना गोबर्धन । जहँ नाहिं तहँ न लगत मेरोमन ॥
हरिके कहे कोस चौरासी । आई महि माहि महँ छबिरासी ॥
शाल्मलि द्वीप द्रोण तित मन्दर । जन्मे तहँ गोबर्धन सुन्दर ॥
बिबुधन बिबिध सुमन बरषाये । मेरु आदि पर्बत सब आगे ॥

नौमि पूजि सिगरे हरषाता। बोले अदि अधिपप्रति बाता॥

दो० तुम गोलोक निवास किय, कृष्णचन्द्र सुखरूप।
परमकृपा करि होहु अब, सब शैलन के भूप॥

नाम तुम्हार भयो गिरिराजू। दिनदिन अचल प्रतापदराजू॥
धन्य धन्य सब गिरि के राई। हम सबदास आस अधिकाई॥
कहि गृह गे सब शैल समाजा। तब ते नाम भयो गिरिराजा॥
करत शैलकी सैल सुहाये। इकदिनतितपुलस्त्यमुनिआये॥
गोवर्धन गिरि श्याम निहारा। ऊपर तरु समुदाय अपारा॥
कन्दर अन्दर सुखद अपारा। बन्दरादि मृग करहिं बिहारा॥
झील समान झरहिं बहु झरना। खगमृगचरहिं मुदितदुखहरना॥
द्रोण पास मुनिबर चलिआये। गिरिपूजित यह बचन सुनाये॥

दो० अहो द्रोण तुम गिरिनमें, अहो परम सरदार।
दिव्य औषधी जूहधर, सुखद परम आगार॥

मांगत हम काशी के बासी। देहु गोबर्धन गिरिसुखरासी॥
केशव निर्मित शिवकी नगरी। बगरी मुक्ति फिरै जहँ सगरी॥
गङ्गा अरु बिश्वेश्वर जहँवां। मरतहि मुक्त होत नर तहँवां॥
तहँ मैं याकहँ धरिहौं भाई। हरषाई तप करिहौं जाई॥
सो सुनि भरि लोचन महँ बारी। बोले पर्बत द्रोण दुखारी॥
सुत सनेह अति पै मुनि भाषा। जाहुताजितद्विजअभिलाषा॥
सुनि सो गिरि आनन्द बिबर्धन। मुनिसों कहत भये गोबर्धन॥
योजन आठ लम्ब द्वै ऊँचा। चौड़चार किमि जाउँ समूचा॥

दो० कह पुलस्त्य तब बचन यह, चलहु बैठि मम हाथ।
काशी महँ बैठारिहौं, सुनि बोले गिरिनाथ॥

जहँ रखिहौ उठिहौं न तहां ते। करि करार लै चलिय इहांते॥

कीन्ह शपथ मुनीश कहँ मानी। राखब तब न उठेउ गिरि ज्ञानी॥
मुनि कर चढ़े पिता पद बन्दी। चले अद्रिशिरताज अनन्दी॥
कन्दुक सम लै चले सुहाये। ब्रजतब्रजतमुनिब्रजचलिआये॥
गिरिजाना पूरणतम स्वामी। सहित स्वामिनी अन्तरयामी॥
करि हैं बिबिध भांतिकी लीला। दान मान शिशु बपुदगमीला॥
जीवनमुक्ति ब्रजाहि इतपाई। मरन मुक्ति करिहौं का जाई॥
राधा केशव के पठवाये। हम यमुना ब्रज भूपर आये॥

दो० इमि बिचार अति भारकहँ, करत भये गिरिराज।
शपथभूलि मुनि धरिद्यो, भूपर भूधरताज॥

लघुशङ्का करबे हित गये। न्हाइ निकटचालि आवतभये॥
चलिये आशु कह्यो मुनिराया। करते पकर पकर ठसकाया॥
अचल अचल तित नेक न डोला। थाके मुनि आश्चर्य अतोला॥
हारि हृदय मुनिनायक ज्ञानी। कह्यो द्रोणनन्दन सों बानी॥
चलत न किहि हित भार अपारा। सुनिगिरिशुनियहबचनउचारा॥
आगुहि शपथ कीन्ह पुनि धरा। हम चलिहैं न त्यागि यह धरा॥
सुनि मुनि मेहनत बृथा बिचारी। बोले परम कोप बिस्तारी॥
कीन्ह न मम मनोर्थ दै चितहीं। ताते तिलतिल घट तू नितहीं॥

दो० इमि कहिकै मुनिबरगये, तबते हे ब्रजराज।
गोबर्धन नितप्रति घटत, तिलतिलगिरिशिरताज॥
जात अहैं गोलोक नित, इहि बिधि कलिपै भूप।
जबलौं गङ्गा अवनिपै, तबलौं शैल अनूप॥

सुनै जो अचल चरित्र महाना। ताकहँ सकल होइ कल्याना॥
इतकी कथा सुनहु नरराया। महिपै यमुनहिं कृष्ण पठाया॥
तहँ ते चली उतङ्ग तरङ्गा। मध्य मिलीं बिरजा अरु गङ्गा॥

तीनिहुं नदी होइ इक ठौरे। चलीं गऊपुरते भरि भौंरे॥
उज्ज्वल आप परत बर धारा। प्रमुदित हरि अज्ञा अनुसारा॥
भेदत मगकी सरिता सारी। चलीं मिलाये निजमहँ भारी॥
बामन चरण बिबर के माहीं। आई प्रबिशि सबन सह ताहीं॥
देखत ब्रह्मअण्ड थल केता। बिरजा गङ्गा सरित समेता॥

दो० बिष्णुलोक ध्रुवलोक अरु, ब्रह्मलोक सुरलोक।
भली भांति लंघत चलीं, सबलोकन के थोक॥

शैल सुमेरु शिखर पर आईं। तहँते बहुरि बेगसों धाईं॥
दक्षिण दिशि में जबहिं सिधाईं। तब गङ्गा तहँते अलगाईं॥
गङ्गा हिम गिरि ऊपर गईं। यह कलिन्दपर आवत भईं॥
कालिन्दी तब नाम कहायो। बहुरो बारि बेगते धायो॥
करतकलोललोल जिमि ताण्डव। आइलख्यो उत्तम बनखाण्डव॥
तहँ हरि पतिहित बर बपुधारी। यमुना करनलगीं तप भारी॥
दूजो नदी रूप ह्वै धाईं। ब्रजमण्डल तूरन चलिआईं॥
बृन्दाबन मथुरा अरु गोकुल। पूरणकियो कूल किलसो कुल॥

दो० कृष्ण हेतु कृष्णा तबै, गोकुल कीन्ह निवास।
रासके माहिं बिलासहित, सुख स्वरूप छबिरास॥

तहँते ज्योति नील जिमि इन्द्री। पश्चिमबाहिनिचलीकलिन्द्री॥
तबहिं प्रयाग मध्य चलिआई। मिलि गङ्गाके संग सिधाई॥
सागर मांझ होन चह न्यारी। गङ्गा ते बोली सुकुमारी॥
धन्य अहो गङ्गा जगपावनि। कृष्णचरण संभूत सुहावनि॥
हम गोलोक जात अब ऊपर। तुम पतिते मिलि बिचरहु भूपर॥
करत प्रणाम बिदा मोहिं देहू। गङ्ग कहत सुनि सहित सनेहू॥
धन्य धन्य यमुना हरि प्यारी। बिश्व मुक्तिप्रद पावनकारी॥

परिपूरण तुम प्यारी यमुना। दरशत जाके परसत यमुना॥

दो० हम हरिकी आज्ञा सहित, जान चहत पाताल।
आप जाहु गोलोक अब, काल बियोग कराल॥

करत तुमहिं हम दण्ड प्रणामा। अब ब्रजमहँ मिलिहैं अभिरामा॥
बहुरि मिलन हरि कृपाबिचारा। कहा सुना सब क्षमहु हमारा॥
इमि कहिकै पाताल सिधाईं। भोगवती यह नाम कहाईं॥
यमुना चलीं बेग दरशाईं। श्याम स्वरूप सरस सरसाईं॥
सात द्वीप अरु सागर साता। भेदत बिमल बारि भो जाता॥
बहुरि अलोकाचल महँ गईं। ऊरध चलत तहांते भईं॥
जाइ स्वर्ग तिनके दुख खोये। पापिन के सब पाप न धोये॥
देखत लोक थोक हरषाईं। मिली सुब्रह्मद्रव महँ आईं॥

दो० देव कुसुमबरषा करहिं, भाषहिं जय जयकार।
बहुरि गईं गोलोक कहँ, यमुना नदी अपार॥

सो० श्री यमुना को गान, करि हैं जे नर ध्यानधरि।
होइ परम कल्यान, सदा त्रान भगवान हरि॥

सुनि सन्नन्द बचन श्रीनन्दा। लैसँग सकल गोप सानन्दा॥
गोपिनसह रोहिणी यशोदा। चलीं सँवारि बैठि सहमोदा॥
संग सकट सुरभी समुदाई। गावहिं गायक बाद्य बजाई॥
रथचढ़ि सुतन सहित ब्रजनायक। बृन्दाबन आये सब लायक॥
बर बृषभानु सतिय रथ चढ़ि कै। सुता पालिकीपर सुखमढ़िकै॥
गायक गावहिं सुन्दर तानू। बृन्दाबन आये बृषभानू॥
नँद उपनँद बृषभानु सुजाना। सिगरे चले अनन्द महाना॥
सबन सहित उर आनँद छाई। बृन्दा बिपिन बसे ब्रजराई॥

दो० नन्दराय को कोटबर, श्रुति योजन बिस्तार।

मुदित बसे तामहँलसे, जहां घने प्राकार ॥
बृषरबि आदि गोप गण भारे। तिन्हके महल बिराजहिं न्यारे ॥
इहिबिधि निज निज धाम बनाई। कीन्ह निवास सुजन समुदाई ॥
रामश्याम लरिकन सँग लीन्हे। ब्रजमहि खेलहिं खेल नवीने ॥
लगे लोल अति बत्सचरावन। दोऊ दूरि जाहिं ब्रजपावन ॥
कबहुं कलिन्दी तट सरसाने। कबहुं जाहिं क्रीड़न बरसाने ॥
नवनिकुञ्ज महँ बिहरहिं मोहन। संग सखा अतिसुन्दर सोहन ॥
पीत बसन बँसुरी बनमाला। कमर किङ्किणी भ्रमर रसाला ॥
संग बने गोपन के छोरा। इमिब्रज बिहरत नवलकिशोरा ॥
दो० गुञ्जपुञ्ज उरमें लसत, कुञ्जनि कुञ्ज बिहारु।
कबहुँक लोटत भूमिमहँ, शिखीपक्ष शिर चारु ॥
बदनरदन द्युति कदनमदनमद। चलतपदन सुखसदन रूपहद ॥
एक दिवस नृप भोज पठायो। बत्स नाम दानव तितआयो ॥
बत्सरूप सीतहि हरि जाना। मारेउचरण असुर रिसिआना ॥
सटके ग्वालबत्स के छटके। झटके तिहि गोपाल महिपटके ॥
कपिथ माहिं मार्यो भगवाना। बछरा पछरा अवनि अप्राना ॥
कैत अशुद्ध गिर्यो भहराई। आइ बालकन करी बड़ाई ॥
सुरगणमिलिजयजयध्वनिकीन्हा। असुरहिकृष्ण परमपद दीन्हा ॥
सो सुनि मैथिल नायक ज्ञानी। बिशद बुद्धि बोले बरबानी ॥
दो० कौन रह्यो सो असुर जो, पाई मुक्ति ललाम।
सुनि पुनि गुनि भाषत भये, मुनिबर नारद नाम ॥
मुरुसुत हो प्रमील सो जाई। गृह बशिष्ठ के देख्यो गाई ॥
नन्दनि नाम निकन्दनि पापा। कामदुहा नित अधिक प्रतापा ॥
छलकरि असुर बिप्र बपुधारी। मांग्यो मुनिते लखेउ दुधारी ॥

कहत सरोष अरे छलकारी। बन्यो बिप्र बपु नीच मुरारी॥
अबहिं तोर पशु बिग्रह होई। सुनि भो बत्स प्रमीलक सोई॥
बन्दि चरण बोलेउ यह बाता। कीजै शाप बिमोचन माता॥
सुनि सुरभी सह नेह बखाना। द्वापर माहिं होइ कल्याना॥
हे नृप हरि प्रभाव सो बछवा। गो सुरलोक सुखी परतछवा॥

दो० एक दिवस बल कृष्ण सँग, बालक बृन्द सबच्छ।
यमुना तट देखेउ असुर, बकसुर दुर्जय दच्छ॥
सो गोपालकहँ गिलिगयो, भागे लखि सबग्वाल।
सुरन सहित तहँ आइकै, बज्र हन्यो सुरपाल॥

ताके लगे भई अति पीड़ा। पै न मरो न दृगन कहँ मीड़ा॥
ब्रह्मदण्ड ब्रह्मा तब हयऊ। मुरछेउ अवनि पै न असुगयऊ॥
तब त्र्यम्बक त्रिशूलनिज मारा। बककर एक पंख महिडारा॥
बायव्यास्त्र बायु तब मारा। पीड़ित भयो असुर सरदारा॥
यम निजदण्ड तज्यो रिसधारी। अस्त्र गिरयो न मरयो बकभारी॥
शतशर सूरज सरप प्रहारे। पै बकके नहिं प्राण पधारे॥
धनद कोपि असि कठिनचलाई। दूजो पंख दियो महिनाई॥
शशि निज शीतल शस्त्रप्रहारा। शीत त्रसित भो बकसरदारा॥

दो० अग्नि अस्त्रते अग्नि तब, मारयो अतिरिसिआइ।
रोम अङ्ग के जरिगये, मरि न गये बकराइ॥

बरुणपाश ते खैंचेउ ताहीं। टूटी फसरि रसरि गरमाहीं॥
गदा भद्रकाली तब मारा। मुरछि परयो बकबड़े प्रहारा॥
चेति उठो बसुधा ते बकला। शकल देखि कांपे सुर सकला॥
तुरत शक्तिधर शक्ति प्रहारा। काटि एक पग भूपर डारा॥
तब सकोप सो खेचर धायो। गर्ब सुरन को दूरि परायो॥

बक बक बकत बिकल सब भागे। देखि कराल महा डरपागे॥
तेहि क्षण सकल रुद्रगण आये। जय श्रीकृष्णचन्द्र की गाये॥
शारँग कह शारँग चर जानी। खान चलो बक रिस उरआनी॥
दो० सब देवन मास्यो सरुष, मस्यो न बक बल सींव।
जग जीवन जा उदर में, तासु जाय किमि जीव॥
सबकी इमि पुरुषार्थ निहारी। गरमहँ गिरिसम बढ़े मुरारी॥
तुरतहि काढ़ि चल्यो बक मारन। पटक्यो पकरि पूछ भवहारन॥
करन फारि मुख करण समेता। फेंक्यो दूरि सो कृपानिकेता॥
रम्भ खम्भ सिन्धुर जिमि फारे। तिमि हरिकीन्ह तुण्डव्यवहारे॥
ज्योति कृष्ण के बदन समानी। जयजय कहहिं अमर बरबानी॥
बिस्मित गोपन घर घर भाखा। मोहिं हरि आज कालतेराखा॥
बककी बरणहिं कथा सुजाना। कीन्ह कृष्ण यह कर्म महाना॥
सो सुनि अचरज पावहिं सिगरे। गुणगावहिं दुखदलते बिगरे॥
दो० तब बोले बहुलाश्व नृप, को सो दानव बिप्र।
बकरूपी बिभुते मिल्यो, बात बतावहु क्षिप्र॥
कह मुनि रह्यो दैत्य बलधामा। हयग्रीव सुत उतकल नामा॥
जीति सुरन क्रतु छत्र हिलायो। लाग्यो करन राजमद छायो॥
करि शत बरष राज्य यकबारा। गो सागरसंगम अघ भारा॥
जाजलि मुनि को आश्रम भारी। खानलगो तहँ मच्छ निकारी॥
लखि मुनिकहँ उपजी अतिदाया। कीन्ह मना बहुबार बुझाया॥
मानेउ सो न तबै रिस छाई। शापहि देतभये ऋषिराई॥
हो बकरूप मच्छ आहारी। कहतहि सो जैसो बपुधारी॥
सभय शीश मुनि पद पर नाई। बकबपु उत्कल बकत बनाई॥
दो० मैं नहिं यह जानत रह्यो, तब प्रभाव मुनिराव।

सरल सुभाव करिय कृपा, परत तुम्हारे पाव ॥
साधु संग सब बिधि सुखदाता । आपु ओर अवरेखिय ताता ।
पारस परसि होत स्वर लोहा । पैनहिं सो ताकीदिशि जोहा ।
गङ्गा न्हाय रह्यो अघ कहूं । कहँलों तुमते यह गुण कहूं ।
यह सुनिकै गुनिकै मुनि भली । पुनि भे कहत बिप्र जाजली ।
द्वापर अन्त भरमभू ताहीं । ब्रजमण्डल यमुनातट जाहीं ।
परिपूरणतम बत्स चरैहैं । तुमकहँ मारि तहां गतिदैहैं ।
सो बक भयो शाप कहँ पाई । दीन्ह मुक्ति करिकृपा कन्हाई ।
कोउ बिधि हरिमहँ मनहिं लगावै । हे नृप सो उत्तम गति पावै ।

दो० इक दिन हरि बालकन सह, चतुर चरावत धेनु ।
लख्यो यमुन तट दुरित इक, मुदित बजावत बेनु ॥

अघ अहि असुर कंस को प्रेरो । कीन्हे बदन कोश को घेरो ।
बैठे अचल गुहा सम भारी । पैठो शिशुदल बदन मझारी ।
सुरभी बल बछरा बनवारी । कन्दर अन्दर धसे बिचारी ।
ताकी लगी जबै अतिज्वाला । मुखमहँ बढ़तभयो गोपाला ।
शीश फोरि गो ताकर प्राना । मुखते निकरे श्रीभगवाना ।
काढ़िकाढ़ि सुरभी शिशु बच्छा । सबन जिवायो मुदितप्रतच्छा ।
जयजय सुरन्ह कीन्ह तेहि काला । सुनिबोले मुनिते महिपाला ।
कौन पुण्य यह मिल्यो हरीतें । असुर परमपद लहहिं घरीतें ।

दो० मुनि भाष्यो अघअसुर यह, शङ्खसुवन अतिदुष्ट ।
लरिकाईंते रह्यो खल, परम पाप ते पुष्ट ॥

हँस्यो बिप्र बसु बक्रहि जोई । दीन्ह सरोष शाप तब सोई ।
अजगर होसि अघी अघ नामा । तबसों तिनकहँ कीन्हप्रणामा ।
अष्टाबक्र दया अभिलाषा । द्वापर मुक्ति होइ यह भाषा ।

कोटि मदन मदकदन गोपाला। बधिहैं बनिकै तुम्हरे काला॥
अष्टावक्र शापतें सोई। पाई गति मुनि दुर्लभ जोई॥
बत्स बकुल अघकी गुनि कथा। यशुमति सभाकीन्हभरिब्यथा॥
सब बृषभानु नन्द उपनन्दा। रोहिणिआदि सकलत्रियबृन्दा॥
कीरति कहँ पति सहित बुलाई। बोली दुखित यशोमति माई॥

दो० कहा कहौंकित जाउँ अब, मोहिं न उपाय सुझात।
नित नित होत गुपालपर, नयो नयो उतपात॥

गोकुल तजि बृन्दाबन आये। तबहुँ उपद्रव नाहिं नशाये॥
यह बालक मम कह्यो न मानै। घूमत सब ब्रज भूमिहिं छानै॥
निगल्यो इक दिन दानव बकुला। सो पुनि पूर्ब पुण्यते निकला॥
आयो बत्स लरन अघ खायो। हरि प्रताप सोइ दुरित नशायो॥
सो सुनि नन्दराय सज्ञाना। मन बिचारि यह बात बखाना॥
गर्ग बचन सब दीन्ह भुलाई। मम सुत कह भय नाहिं छुआई॥
दान करहु संकट के हेता। यह है सकल दुखन को जेता॥
तब यशुमति भूषण धन बसना। अयुतबृषभ बहुगो सह असना॥

दो० सुत के सब भूषण सरस, सातधान नवरत्न।
सुतहित दीन्हे द्विजन कहँ, प्रमुदित कीन्हो यत्न॥

गो चारन लागे दोउ भाई। सँग सरसात सखा समुदाई॥
चारिहु दिशि सुरभी के गोला। हरिमुखमुदितनिहारिअलोला॥
घण्टा घुंघुरू घन घन बोलत। मुक्तागुच्छ पुच्छ छबिखोलत॥
शिर मधि रतन फूल शुभ सोहै। कनक सींग मधि बज्रजरोहै॥
शीशशिरोमणिसकलशिरोमनि। अरुशिखिशिखापिच्छगुच्छनिबनि॥
बच्छनि सहित स्वच्छ समुदाई। कोउ के शीश तिलक सरसाई॥
पीत रक्त सित हरित सियाहा। चित्रबरण सुचारु नरनाहा॥

पीता श्यामा कृष्णा हरिता। कपिला बहुला नाम प्रचरित
दो० यमुना धौरी धूमरी, गाङ्ग आदिको बृन्द।
तामहँ बलसह बेणुधर, राजत मुदित गुबिन्द॥
यमुना तट बहुलगे तमाला। निम्बु निम्ब बट कदम प्रयाल
जम्बु पनस कचनार सुकेला। कैत माधवी बेला बेला
पारिभद्र नन्दन मधु रथसे। बृन्दाबन सब बन के गथसे
जहँ गोबरधन धातु प्रहारा। झरत बारि मन्दार बहारा
चम्पक बैर पलाश अशोका। चन्दन देवदारु के थोका
अर्जुन अरु गुलाब परजाता। कुञ्जनिकुञ्ज नवल सुखदाता
कोकिल मोर करहिं किलकारी। गो चारत बनबन बनवारी
बृन्दाबन मधुबन बहुलाबन। कुमुदकामबनजहँतरुगणघन
दो० बृहत्सानु बर शैल जहँ, नन्दीश्वर के साथ।
कोकिल कुशबन भद्र बन, बिहरत श्रीब्रजनाथ॥
उपबन बरभाण्डीर सुताना। बंशीबट यमुना अस्थाना
नटबर बेष मुकुट शिर सोहैं। बंशी बेत्र बिबुध मन मोहैं
मोर शोर अतिजोर बणन हैं। नन्दकिशोर निरखि बिहरतहै
सांझ समय आवत जब आछे। लटकि चलत सुरभीके पाछे
गोरज राजत गोबिंद गाता। बंशी मधुर बजत सुरसाता
सो सुनि सुन्दर तान ललामा। धावहिं धाम धाम ते बामा
साकरि खोर ओर चलि आवत। हेरि हेरि हरि बेणु बजावत
सो लखिकै प्रमुदित ब्रज नारी। तन मन धनकहँ डारहिं वारी
दो० मदन सुमोहन गोपबर, इहि बिधि करत बिहार।
बालक बच्छ अनन्त सह, सुन्दरगुण आगार॥
सो० जब आवत निज धाम, करत आरती मातु तब।

करि ब्यारी घनश्याम, शयनकरत सुखअयनमहँ ॥
इक दिन गो चारत छबि छाये। ताल बिपिनमहँ माधव आये ॥
धेनुक भय कोउ सकै न जाई। एकाकी चलिगे बलिराई ॥
कसे कमरमहँ नील पिछोरा। पाछे चले खान फल छोरा ॥
तिहिक्षण दोय पहरदिन आयो। बलकरते गहि ताल हलायो ॥
तासु शब्द सुनि रासभ आयो। कंससखा धेनुक रिसियायो ॥
तुरतहि पिछलो चरण उठाई। मारेहु रामहि रोष बढ़ाई ॥
धावत देखि कोप अतिकीन्हों। खरकरपश्चिमपदगहिलीन्हों ॥
तुरत ताल ऊपर तब मारा। गिरेउ बिटप अतिलगे प्रहारा ॥
दो० सो गर्दभ उठि गर्दते, दवर्‌यो गहन बिचारि।
पकरि जकरि लीन्हो बलहि, घोर शब्द उच्चारि ॥
पटक्यो योजन एक घुमाई। उठि अनन्त तिहि तज्यो पराई ॥
चेति क्षणक महँ भो उठि ठाढ़ो। तीक्षण शृङ्ग चार शिरकाढ़ो ॥
परम भयङ्कर रूप बनायो। मारन ग्वाल गोलपर धायो ॥
सो लखि दण्ड श्रिदामा मारो। कठिन मुष्टि निज सुबल प्रहारो ॥
अंसु लकुटि अरु तोक पासते। अर्जुन दीन्ह ढकेल पास ते ॥
ऋषभ बिशाल चरण कहँ मारा। देवप्रस्थ थप्परहि प्रहारा ॥
कीन्हो सबन आपनी वारा। हरितिहि पकरि क्रोध बिस्तारा ॥
फेंकेउ द्रुत उठाय गिरि शृङ्गा। मुर्छित भयो असुर मन भङ्गा ॥
दो० उठि उठाइ लीन्हो हरिहि, निज शृङ्गन पर दुष्ट।
नभगो भगो सबेगसों, समर करन अघपुष्ट ॥
तहां कीन्ह रणरासभ भारी। महि महँ पटक्यो कोपि मुरारी ॥
पुनि उठि कठिन समरके चाहन। गर्जत भयो शीतलाबाहन ॥
गोबर्धन उखारि कै मारा। हरि सोइ ताहि प्रहार प्रहारा ॥

सो पुनि हरि पै मारत भयऊ । निज थल ताहि कृष्णधरिदयऊ ॥
पुनि खरगो जहँ राम खरारी । भागो पिछलो चरण प्रहारी ॥
तब बल पटकि पटाका मारा । झटकि प्राण सटका तिहि बारा ॥
करहिं अमरगण जयजयकारा । दिव्यरूप तब धेनुक धारा ॥
खरतन तें कटि श्याम स्वरूपा । बन्देउ बलहरि चरण अनूपा ॥

दो॰ तिहि क्षण रथ गोलोक ते, आयो दिव्य महान ।
लक्षपारषद सहस ध्वज, दशशत चक्रसुजान ॥

लाखचवर मुरछल बरव्यजना । दिनकर मुखी छत्र मनरतना ॥
होत शब्द घण्टा करभारी । सकुचत मनगति ताहिनिहारी ॥
बन्दि उभय भ्रातन के चरणा । गो गोलोक अमरद्युतिहरणा ॥
सबनसहित केशव घरआये । नारिन गाये नवल बधाये ॥
तब बहुलाश्व बखानी बानी । तिहि किमि मार्‍यो भूधरज्ञानी ॥
हरिण हत्यो गोपुर गो धेनुक । कथासकल मुनिजू कहियेटुक ॥
मुनि बोले गुणिकै मुनि आसू । बलिसुत नाम साहसी तासू ॥
दश सहस्र लै साथ जनाना । रमत गन्धमादन अस्थाना ॥

दो॰ तासु शब्द भारी भयो, भूप न बाज न गान ।
दुर्वासा नित तपतहे, ताहि भङ्ग अनुमान ॥

आये परम क्रोध ते छाये । चढ़े खड़ाऊं केश बढ़ाये ॥
क्रोधी कृशद्युति अनलसमाना । बोले अरे अधम अज्ञाना ॥
रासभ सरिस कर्म किय जाते । खरबपु बसहु ताल बन ताते ॥
चार लाख संवत के बीते । होइ मुक्ति यह सत्य प्रतीते ॥
बल तेहिं बध्यो कृष्णनहिं मारा । पूरब पर मन माहिं बिचारा ॥
सात पिढ़ी बैरोचन केरी । दीनबन्धु अपनी दिशि हेरी ॥
बल बिनु इक दिनगाय चरावत । हरि कालीह्रद तट भे आवत ॥

पशु पशुपाल पान करि पानी। परे प्राण परिहरि ते प्रानी॥
दो० तब हरि अमृत दृष्टिते, दीन्हों तिन्हैं जिवाय।
मन बिचार करि दूर अब, दुरित इहांकी जाय॥
सो० कटि कसिकै पटपीत, अति पुनीत नवनीत प्रिय।
सबके लखत अभीत, कूदे कालीह्रद बिषे॥
तासु सदन पगतलतें चूरण। काली उठो क्रोध करि पूरण॥
शतफन सरस बदन कहवाई। चल्यो तजत ज्वाला समुदाई॥
बांधिलीन्ह हरिको सब अङ्गा। परमकोप के बिवश भुजङ्गा॥
बामनसी लीला हरि कीन्हा। तबअहिसभयतुरतताजिदीन्हा॥
पुनि पन्नग धायो रिस छायो। पुच्छ पकरि हरि ताहि फिरायो॥
पटकत सर्प दर्प बिस्तारी। आय हरिहि मारी फुफकारी॥
तब हरि मास्यो तुरत तमाचा। ब्याकुल नटसम नटखट नाचा॥
पुनि बिषधर निज बदन पसारी। चलेउ चरण तब हतेउ मुरारी॥
दो० फनिहि फेरि मूका हन्यो, भो अचेत कालीय।
हरिचढ़ि ताके शीशपै, नृत्य बिबिध बिधि कीय॥
नट सम नटबर मुरली वारो। निजबश कीन्हो काली कारो॥
बरषहिं सुमन सु सुमन सँसारे। बाद्य बजावहिं यश बिस्तारे॥
तालदेहिं हरि शिरपर पगते। कीन्हमृतकसमतेहिअँगअँगते॥
नाग नारि ब्याकुल चलिआई। कहत बन्दि अतिदीनकि नाई॥
नमोकृष्ण गोलोक निवासी। अमित अण्डपति पूर्ण प्रकासी॥
राधापति ब्रजपति अति ज्ञाता। नन्द सुवन यशुमति सुखदाता॥
पाहि पाहि रक्षहु भगवाना। जिमिअहिप्राणहोइ नहिंहाना॥
दीनबन्धु पति दानहि दीजै। निजदिशिलखिकै कृपाकरीजै॥
दो० अहिशिर पर पगछापदै, उतरे दीनदयाल।

बासुदेव की कृपा ते, भयो व्याधि बिन व्याल ॥
काली कीन्ह दण्डवत भारी। सुनिकै बोले मुदित मुरारी ॥
रमणक द्वीप जाहु यह पदते। खगपति भय न होय ममपदते॥
अहि अच्युतहि पूजि चलिगयऊ। सहित कुटुम्ब रहत तहँ भयऊ ॥
हरिजल परन सुनत सब धाये। नन्दादिक व्याकुलचलिआये॥
निकसे देखि नवलनिज नैना। भयो सबनके उर अति चैना ॥
नन्द यशोमति हरष बढ़ाई। संध्या समय जानि ब्रजराई ॥
सोइ नींद महँ भये अचेता। तहँ हो बहुत बाँस को खेता ॥
रगरि दुसह दावा प्रगटावा। अर्धनिशा सबदिशा दिखावा ॥
दो० चटचट बोलहिं बाँसबहु, शिखि लटलागि अकाश।
व्याकुल नटबर तैं कहहिं, होन चहत सब नाश ॥
सुनिकै उठे दयाल मुरारी। दृगमींजत बोले गिरिधारी ॥
कहा अनल यह भाषत बानी। कहतसकलशिखिज्वालनशानी॥
गोपन के सिगरे दुख खोये। शीतल सुधादृष्टि करिजोये ॥
प्रातकाल परमानँद छाये। निजनिज सदनगोपबरआये ॥
तब बोले बिदेह हरिबल्लभ। जो पद योगीगण कहँ दुर्लभ ॥
सो पदभो काली शिरछापू। तिनकर सुकृत बखानहु आपू ॥
नारद कहा सकल सुखसाजा। स्वायम्भू मनुभे जब राजा ॥
बेद शिरोमणि तपत अपारा। बिन्ध्य शिखरपर तप आगारा ॥
दो० तहँ चलि आये हयशिरा, समुनि तपस्या काज।
वेदशिरालखि सो कुपित, बोले बचन दराज ॥
इत मत जपहु अहै मम धामा। का न तुम्हैं जग दूजीठामा ॥
अश्वशिरा सुनि अतिहि रिसाये। कहतबचन लोचन अरुणाये ॥
हरितजि भूमि न कोऊ केरी। बृथा बकत तैं मेरी मेरी ॥

लेत सर्पसम श्वास कराला । ताते रहिहि सदा तन ब्याला ॥
बेदशिरा सकोप कह ऐसे । कोकी करत काकसम कैसे ॥
होइहि तेरो काक शरीरा । आये बिष्णु जानि जनभीरा ॥
दोउन कहँ बहुभांति बुझाये । सुधासरिस सरसती सुनाये ॥
तुम दोऊ समभक्त हमारे । कीन्हो कलह बृथा अबिचारे ॥

दो॰ बेदशिरा तव शीशपर, जब परिहै मम पाँव ।
अहितब तोहिं न तार्क्ष्यभय, मुदित सदन निजजाव ॥

उरगहि कहि हरि मोद बढ़ायो । तुरगशिरा काकहि समुझायो ॥
होइहि तुम्हैं ज्ञान अधिकाई । कहिगे श्रीपति घर हरषाई ॥
नील शैल पर हयशिर नामा । भे भुशुण्डि बायस बुधिधामा ॥
रामभक्ति विज्ञानहिं पावा । रामायण जिन गरुड़हि गावा ॥
दक्षप्रजापति परम प्रबीना । ग्यारह सुता कश्यपहि दीना ॥
कद्रू भई रोहिणी तामैं । शेष राम है जनमे जामैं ॥
कद्रू के कुमार बहु सर्पा । बिषधर बली बृहदबर दर्पा ॥
बेदशिरा मुनि ताके जायो । काली नाम नाग कहवायो ॥

दो॰ कद्रू के पहिले सुवन, सहस बदन श्रीशेश ।
हे महीप तिनकी कथा, सुनहु सुचैन बिशेश ॥

एक दिवस नारायण स्वामी । कहेउ अनन्तहि अन्तरयामी ॥
महिमण्डल धर सकै न कोई । ताहि धरहु तुम निज मम जोई ॥
जग हित काज करहु यह भाई । सो सुनि कह्यो शेष अहिराई ॥
अवधि बखानिय धारण केरी । तब धारउ इच्छा यह मेरी ॥
तब हरि कहेउ अवधि जो चहहू । सहसनाम मम नित प्रतिकहहू ॥
होइ जाइ जब मम सब नामू । तब महिधरेहु करेहु बिश्रामू ॥
सो सुनि यह अनन्त उच्चारा । होइहै कौन हमार अधारा ॥

बिन आधार रहौं जल कैसे। चक्रपाणि बोले मुनि ऐसे॥

दो० मैं तुम्हरे तर कमठ हैं, करिहौं बर आधार।
धरहु धरणिधर धरणि कहँ, सुनि गहि हर्ष अपार॥

गे पाताल शेष सुख सींचे। तहँहूंते लख योजन नीचे॥
धरणीधर धरणीधर नीके। राजे राजे सकल अही के॥
शेष रहे अरु बिधि के भाषे। अहिगणअधोलोकअभिलाषे॥
अतल।बितल अरुसुतलमहातल। बहुरि तलातल और रसातल॥
कोऊ रमणकद्वीप सिधाये। जिन्हकहँ जहँसुख चारिपठाये॥
चाहत सुनन कथा अब कौना। मुनि बोले बिदेह बुधिभौना॥
रमणक निबसहि सर्प बिशेशा। किमि काली के शत्रु खगेशा॥
कहहु कथा करुणाकर सोई। बोले बिप्र प्रेम अति जोई॥

दो० रमणकमहँ ब्यालारि नित, तक्षक सहसन ब्याल।
देखि समय बोले सभय, सुनिये नभचरपाल॥

हरिबाहन कछु कृपा करीजै। बाँधि प्रमाण अहारहि लीजै॥
हमहुँ मरैं न उदर तव भरई। जामहँ नहिं यह देश उजरई॥
सुनि सो मान लीन्ह सर्पारी। नितप्रति कीन्ह एककर पारी॥
एक एकके जाहिं अगारा। बैठि खाहिं खग चारि प्रकारा॥
सर्पकाल काली गृह आये। खगपति बलि बलात सो खाये॥
पन्नगारि अतिरिस बिस्तारी। मारेउ चरण करण दुख भारी॥
मुरछिपरेउ तुरतहि महि काली। बदन बाय शत दौरयो हाली॥
परम कोशबश ज्वालामाली। ग्रसेउखगहिकालीजिमिकाली॥

दो० बहुरि पकरि पटके अहिहि, वैनतेय बलवान।
खग के द्वै पर सर्प तब, नोचिलीन नरत्रान॥
एक मोर अरु दूसरो, नीलकण्ठ भो होत।

विजया दशमी दिनदश, तिनको सब दुख खोत ॥

अमृतध्वनि छन्द ॥

बब्बब्बिनता सुत पकरि दद्दद्दल्यो घमरड ।
पप्पप्पन्नग डस्यो खग्खग्खगाहि प्रचण्ड ॥
झझ्झझ्झपटि झटक्कत धद्धद्धरनि पटक्कत ।
कक्कुपितदपट्टट्टक्कर मारि सटक्कत ॥
चञ्चुञ्च कराल लोल पप्पप्पदफफ्फन ।
भभ्भभ्भिरतत्तत्तन छेदन घग्घग्घघन ॥

दो० भागि चल्यो काली तबै, पाछे चले खगेश ।
सात द्वीप नवखण्ड में, भ्रमत भयाकुल भेश ॥

भू अरु भुवर स्वर्ग अस्थाना । महर सुतप जनलोक सुजाना ॥
आगे अहि पाछे अहिकाला । भयउ चक्र दुर्वासहवाला ॥
तब काली अधलोक सिधायो । काललखत उताल भयछायो ॥
शतमुख बन्दि सहसमुख चरणा । बे प्रमाण बिरतान्तहि बरणा ॥
धरणिधरण अनन्त जगनायक । कृपासिन्धु करुणाकर लायक ॥
शरण शरण भयहरण तुम्हारी । काल सरिस आवत ब्यालारी ॥
सो सुनि फणी मणीधर बोले । घनी बनीबुधि बिमल अतोले ॥
कहूं न होइहि तुम्हरी रक्षा । करिहैं खगाध्यक्ष द्रुत भक्षा ॥

दो० बृन्दाबन महँ मुनि रहे, सौभरि सो जलमाहँ ।
अयुतअब्द अतितप कियो, झखबिहारलखिताहँ ॥

करि इच्छा बिवाह तहँ कीन्हा । शतमन्धा सुता कहं लीन्हा ॥
तप प्रभाव अति बिभव बढ़ाई । श्वशुरमुदितभे निरखि निकाई ॥
तिनके आश्रम जाइ खगेशा । चाख्यो सफरी स्वाद बिशेशा ॥
देखि दयाधर बिप्र रिसाये । सरुष आप उठि शाप सुनाये ॥

इत जो ऐहौ पुनि कोउ जीवा। तौ तव जीव तजै तन सीवा॥
अभय तहां काली तुम जाहू। इहिबिधि कहा नाग कुलनाहू॥
सोसुनि कुटुंबसहित चलिकाली। रह्यो यमुनजल में धसि हाली॥
रमारमण रमणक पुनि भेजा। चल्यो मुदित थिरकरे करेजा॥

दो० यह हम सकल कथाकथ, तुम्हें सहित बिस्तार।
अब कह सुनिबे चहतहौ, मुनि कह भूमरतार॥

हरियश ते नहिं मन अकुलाता। जिमि अलिअब्जसुरसमनराता॥
बटभाण्डीर निकट हरि राधा। कीन्ह बिलास रासरस साधा॥
जब शिशुरूप भये भगवाना। तब राधहि नभगिरा बखाना॥
बृन्दाबन पुनि होइ बिहारा। सो सुख कहिये सुबुधि अगारा॥
सो सुनि सतचित बोले नारद। सुनिये नरपति नीति बिशारद॥
एकदिवस सखियन सँग सोऊ। ललिताललित बिशाखा दोऊ॥
आइ राधिकहि बचन सुनावा। जो तव मन मनमोहन भावा॥
सो इत नित आवत गोचारन। रहत जबै कछु निशा सधारन॥

दो० ता बिरियां चढ़िकै अटा, तुम क्यों देखत नाहिं।
सुनि सुराधिका इमि कहत, महत मुदित मनमाहिं॥

तासु चित्रद्युति आनहु आली। देखहुंगी अबहीं बनमाली॥
हरिकर चित्र दीन्ह तब हाली। कण्ठ लगायो बृषरबिलाली॥
काम बिबश शय्या पर सोई। सपन लख्यो मनमोहन त्योंई॥
बनभाण्डीर रच्यो जहँ रासा। चटक मटक लटकन मृदु हाँसा॥
उचटि नींद खोले निज नैना। लख्यो कहूं तित केशव हैंना॥
भो दुख जो सो कहो न जाई। जिमिजिमि सो शर्वरी सिराई॥
प्रातकाल झुकि झकत झरोखे। लखन लगी ललनारुख चोखे॥
गऊचरावत सखिन देखायो। राधाहृदय मोद अतिपायो॥

दो० बाढ़्यो जोर अनङ्ग को, उत्कण्ठा अधिकाइ।
कब मैं मिलिहौं मित्रसों, नेत्र नीर अधिकाइ॥
जब कढ़ि कृष्ण गये तब राधा। तुरतहि दुखित अङ्गभो आधा॥
अतिव्याकुल बृषभानुकुमारी। सकी न सो दुख भार सँभारी॥
सो लखिकै अपनो मुखखोली। ललिताललित बचनबर बोली॥
किहिहितअतिहिदुखितहौस्वामिनि।जोनिजपतिहिचहतगजगामिनि॥
होइहि सकल मनोरथ मोटो। केहिहित करतजीवकहँ छोटो॥
सो सुनिकै गुणिकै गतबाधा। बोलीं मधुर बचन तब राधा॥
जो न मोहिं मिलिहैं बनमाली। तौ नहिं प्राण रहै तन आली॥
सो सुनिकै ललिता चलि गई। कृष्णहि नवल निहारत भई॥
दो० जानि अकेले यमुनतट, ललिता चञ्चल नारि।
कहत भई तुम्हरे बिना, राधा दुखित मुरारि॥
जा दिनते तव रूप निहारा। पल नहिं कल नँदराजकुमारा॥
कटु फुलेल पवि भूषण बसना। गृह बन अरु माहुरसम असना॥
शशिग्रीषम रबि फूल सुताते। मिलिये माधव तातैं ताते॥
प्रणत आर्तिअर्दन तव नामा। करहु मनोरथ पूरणकामा॥
सुनिकै बिहँसि हुलासि भगवाना। सुधासरिस शुभबचन बखाना॥
धीरज धरहु तजहु मति प्रेमा। मैं मिलिहौं करिहौं सब क्षेमा॥
जिमि भाण्डीर तीर भो रासा। तिमि करिहौं बहुबार बिलासा॥
राधा मेरी प्राण पियारी। एकरूप द्वै तन निरधारी॥
दो० हम राधा दोउ एक बपु, नेक न है सन्देह।
पुनि मिलिहैं धीरज धरहु, हे ललिता गुणगेह॥
राधा कृष्णमाहिं जन जोई। भेद करहिं सब ज्ञानहिं खोई॥
तिनसमनहिंजगकोउअघकारी। इहि बिधान जब कह्यो मुरारी॥

तब ललिता राधा ढिग आई। कहत बचन उर हरष बढ़ाई॥
जस तुम चाहत तस भगवाना। सम चाहनासरस सुखमाना॥
पै मिलिबे हित करहु उपाई। पूजहु कोऊ देवहिं माई॥
सुनि अतिमुदितसोईअभिलाषा। चन्द्रानना सखीसों भाषा॥
मोहिं धर्म कोउ देहु बताई। जामें मिलैं नाथ यदुराई॥
कथा सुनी तुम गरग बदनते। कहहु श्रेय गुणि पुण्यसदनते॥

दो॰ सो सुनि उडुपति आनना, कहतसुमति अवगाहि।
तुलसी पूजहु श्रेय जग, यासम औरहु नाहि॥

दरशन परशन कीर्तन ध्याना। सिञ्चन पूजन नाम बखाना॥
रोचन रक्षा करन बिचारी। तुलसी नवधा भक्ति पियारी॥
जे नर करहिं भक्ति तुलसी की। हरिहुलासकर मन हुलसी की॥
तिनसम सत्य न नर जग दूजो। जिन हरिप्रिया तुलसिकहँपूजो॥
जिमि जिमि बृन्दाबढ़तअगारा। तिमि तिमि जारत पापपहारा॥
जब मञ्जरी पत्र दरसाई। अनघ मनुज हरिपद सरसाई॥
सब फल फूल पत्र फल पावै। जो तुलसीदल एक चढ़ावै॥
शत सुबर्ण की देवै भारा। ताको चौगुण रजत बिचारा॥

दो॰ इनहिं पूजि सो फल मिलै, तिनको कहिसक कौन।
जामहँ बृन्दा बृक्ष बर, यम न लखै सो भौन॥

जे तुलसी रोपहिं गृहमाहीं। तिनसम धन्य और जगनाहीं॥
तुलसी दहत पाप कहँ कैसे। तूलराशि कहँ पावक जैसे॥
पुष्करादि गङ्गादिक तीरथ। सुरहरिआदि बसहिं तुलसीअथ॥
मरतबार तुलसी मुख जाके। यमगण आवहिं पास न ताके॥
जा तन तुलसी चन्दन सोहैं। तादिशि पाप आप नहिं जोहैं॥
तुलसी तरुतर छाया माहीं। पिण्ड देहिं ताकी क्षय नाहीं॥

तुलसी गुण कहि सकै न कोई। चार पांच सहसानन सोई॥
तुलसी हरि पद राखै जोई। इच्छित बस्तु लहै जग सोई॥
दो० ताते तुम तुलसी तरुहि, पूजहु सहित बिधान।
ताप दाप तब बिवश ह्वै, रहिहैं श्रीभगवान॥
सो सुनि तुलसी पूजन काजा। द्रुत उद्योग कियो नर राजा॥
केतिक बनमहँ बनई क्यारी। शतकरकर मण्डल रुचिकारी॥
मणिमय परम मनोहर सोहै। देखि सुरेश सिंहासन मोहै॥
कनक केतु बहुबनक बनाये। चारु थावला थाप लगाये॥
इहिबिधि बिरचि बृन्दाकहँ थापा। पल्लव हरित निकन्दनि पापा॥
अभिजितनखतमाहिंकियोपूजा। गर्गप्रोक्त बिधान नहिं दूजा॥
मास मास अतिपूजि प्रबीना। इषुते मधुलौं पूरण कीना॥
जलपय ऊख दाख अरु कमला। मिसरी पञ्चामृत इकमिला॥
दो० एक बस्तु प्रतिमास यह, पूज्यो परम प्रबीन।
माधव प्रतिपद प्रथम पख, उद्यापन कहँ कीन॥
द्वै लख द्विज छप्पन पनकारा। भूषण बसन अनेक निहारा॥
लक्ष भार मोती के भारी। गर्गहि दीन राधिका प्यारी॥
कोटि भारभरि कनक नबीना। एक एक ब्राह्मण कहँ दीना॥
सो सब सुनहु भूमि भरतारा। मोती शत शतकञ्चन भारा॥
दिविमहँ देवन दीन्ह नगारे। जय जय भाषि प्रसून पवारे॥
चढ़ि खगेश तुलसी तब आई। पीत बसन भुज चारि सुहाई॥
मनमोहन मो मनहन प्यारी। हृदय मनोहर माल सुधारी॥
तुलसीरूप अनूप अतिलसी। उमा रमा अतिगिरा अतुलसी॥
दो० मिलिकै राधासों तबै, मुदित उदित जिमि चन्द।
श्रीबृषभानुकुमारि सों, बोले बिहँसत मन्द॥

मैं प्रसन्न तव ऊपर राधा। मांगिलेहु बर बर गत बाधा॥
तुमतौ हौ कल्याण स्वरूपा। पैहौं तुम कहँ देत अनूपा॥
होइहि सकल मनोर्थ तुम्हारा। पूजन बिधिसह कीन हमारा॥
सो सुनि बन्दि देवतहिं राधा। कहत मुदित लखि इष्ट अराधा॥
मोहिं गोबिंद चरण रति होई। तुम जानत मम मन है जोई॥
सो सुनि एवमस्तु कहि बृन्दा। गई बिदा ह्वै घर सानन्दा॥
जो बरदान दीन्ह यह तुलसी। सुनि गुनिकै राधा अतिहुलसी॥
सुनै राधिका चरितहि जोई। पुण्य तासु कहि सकै न कोई॥

दो० इमि यह कथा तुम्हैं कही, काटन कलुष कलेश।
सुनि सुनबे इच्छा गहत, कहत भये मिथिलेश॥

सुनि यह कथा मोद भो भारी। अब मो कहँ कहिये ब्रतधारी॥
किमि राधा हरि कीन्ह बिलासा। सुनि नारद यह बचनप्रकासा॥
तुलसी सेव जानि छबि छाये। बरसाने मनमोहन आये॥
करि स्वरूप सुन्दर युवती को। तैसोइ अभरण अम्बर नीको॥
नवकेसर उर हार हमेला। करणफूल कचमले फुलेला॥
लहँगा सारी चोली भारी। प्रबिशे बृषरबिधाम मुरारी॥
चार दुआरे उन्नत भारे। करिबर बहु झूमत मतवारे॥
घोड़े उज्ज्वल बरण अथोरे। भूषण धरे भरे सब ठौरे॥

दो० बृषन सहित बृषभानु गृह, बहुत गऊ के बृन्द।
जातरूप के आभरण, जातरूप आनन्द॥

इमि देखत अँगिरीं छबि छाये। अन्तःपुर महँ माधव आये॥
कनककपाट अजिर अभिरामा। ललनालोलसुललितललामा॥
बीणा ताल मृदङ्ग बजावैं। राधा प्यारी के गुण गावैं॥
उपबन आम कुन्द मन्दारा। दाड़िम केतकि निम्बनिहारा॥

मालति माधुरि माधुरि महकै। सुख स्वरूप समीर जहँ लहकै॥
पद्म पराग सुबास सुहाई। डोलहिं शिलीबदन समुदाई॥
कोकिल सारस सुवा मयूरा। रूराएव दशहुं दिशि पूरा॥
बारिज बने बारिजा नीचे। पहलसकलगुल जलते सींचे॥

दो० कोटिन तिय भूषण धरे, बसन बने बहुरङ्ग।
पास खवासी में खरीं, मुख प्रकाश सउमङ्ग॥

तिन महँ राजत बृषरबि कन्या। आतम हरिपद लगी अनन्या॥
तनक समीर समीर सुहाई। चारहु दिशा प्रगट सुखदाई॥
अति शोभा शोभा के आगे। लज्जति तातें चाहति भागे॥
छबिनिधि तहँ पहुँचे भगवाना। सुन्दरपन सबकेर ढपाना॥
नूतन नवला नारि निहारी। प्रमुदित भई सकल उरभारी॥
मुदित राधिका अङ्ग मलाई। सो छबि लखि सुररहे लोभाई॥
बहुरि कनक आसन बैठाई। राधा कहत महत हरषाई॥
तुम्हरो कहा नाम अरु ठामा। धनपवित्र कीन्हो मम धामा॥

दो० तुमसम सुन्दर रूप हम, कबहुं न देखा बाल।
तुमनिबसत सो धन्यथल, उदयसुभाग्य बिशाल॥

कहहु हेतु आवन को काहै। हम सब करब तुमहिं जो चाहै॥
तव स्वरूप हरि सरिस लखावै। नारि भेष ते अचरज आवै॥
तुम अब नित आवहु मम पासा। जामहँ होइ सकल दुखनासा॥
नन्दनँदन मम मनहिं चोरावा। तातें कछु जग मोहिं न भावा॥
जो तुम रहिहौ पास हमारे। नहिं देखैं दुख दशा हमारे॥
जो तुम नहिं ऐहौ मम पासा। तौदुख दशगुणकरिहिप्रकासा॥
सो सुनिकै राधाकी बानी। बोले सुन्दर बचन सयानी॥
[illegible] निवसत ग्रामा। गोप देवता है मम नामा॥

दो० तव स्वरूपको सुयशमुनि, ललिता मुखते बाल।
आईं देखन हौं तबै, तुम्हरे निकट उताल॥
देखि तुम्हैं मन मुदित हमारा। हमहुँ चहत नित दरश तुम्हारा॥
अहा कहा कहिये न कहाई। तोहिं लखि सुन्दर सुन्दरताई॥
हे नृप इमिदोउ मिले सुजाना। सखी स्वरूप कह्यो भगवाना॥
दूर भवन मम जैहौं आली। प्रातकाल कल ऐहौं हाली॥
सो सुनि मुरछिपरी सुकुमारी। सहि न सकी बियोग सो भारी॥
चकित सखी सब सो लखि धाई। सींचेउ चन्दन अतर मिलाई॥
जब कछु चेत राधिका आनी। गोप देवता बोली बानी॥
मोहिं गो गोरस शपथ अपारा। ऐहौं अवशि भाम भिनुसारा॥
दो० इमि कहि माया बालबपु, गोकुल आये श्याम।
पुण्यधाम अभिराम प्रभु, रूपनिकन्दन काम॥
बहुरि प्रात प्रभु तियतनधारी। आये जहँ बृषभान कुमारी॥
लखि उठि आसनपै बैठाई। बात बखानत कीरतिजाई॥
तुम आवत तब सुख मोहिं होई। तुम बिन दुख जानहिं सबकोई॥
मम सुख दुख तुम्हरे आधीना। सुखी करहु करि कृपाप्रबीना॥
सो सुनि सो चुपरही न बोली। खेद भेद कह कहा न खोली॥
गोपदेवतहि देखि उदासा। बृषरबि कन्या बचन प्रकासा॥
मातु कह्यो कछु कै कछु भर्त्ता। सो सुनि पुनि कटुबचनउचर्त्ता॥
सवति दोषकै अरु कोउकेरो। ऐसो देखि समय मनमेरो॥
दो० कै कछु आवत खेदभो, दूरि अहै आगार।
कहहु मोहिं किहि हेतुहै, बिबरन बदन तुम्हार॥
जो कछु चहो लेहु तुम सोऊ। गज हय अरु रथ पैदलकोऊ॥
असन बसन मणि मन्दिरसुरभी। जो चाहहु सो लेउ अरुरभी॥

तनहितधन लज्जाहित तनको। तीनहुं ते रक्षै मित्रन को॥
ये सब मित्रकाज हित अहहीं। जो कुमित्र कपटी है रहहीं॥
ताहि नरकहू नाहिं ठिकाना। सत्य बचन हम तुमहिं बखाना॥
सो सुनिकै भगवान कृपाला। बरबाला प्रति बचन निकाला॥
हम सखि बृहत्सानु जो शैला। दधिलै जात रही सो गैला॥
तहाँ साँकरी खोरि मैं आई। मारग रोंक्यो ढीठ कन्हाई॥

दो० अति निलज्ज मम हाथगहि, माँगत सबको दान।
मैं साचर्य चितै रही, कहत हृदय भय मान॥

मैं नहिं दैहौं गोरस तोहीं। सुनि अंगुठा दिखाइकै मोहीं॥
लै लाठी मारत भौ छटकी। झटकी मम मटकी महि पटकी॥
नन्दीश्वर तट नागर नटकी। निरखि ढीठता मैं द्रुत सटकी॥
कुटिल नन्दसुत हे ब्रजनारी। सतकारो कारो बिषधारी॥
तिनसों तुम कीन्हो है हेता। तजहु तुरित मम मानहु एता॥
निरमोही सो अहइ अशीला। तुम सुशीलपथ प्रीति अशीला॥
सो सुनिकै बृषभानकुमारी। कहत कोपि उरदुख बिस्तारी॥
जाहि अहर्निश हर बिधि ध्यावैं। कबहुँ दरश दरजे नहिं जावैं॥

दो० दत्त कपिल शुक आङ्गिरा, जीव गर्ग अरु ब्यास।
तप साजहिं नित दरशहित, योगी योग प्रकास॥

कृष्णआदि अज पुरुष कृपाला। लीला बपुधरि भे गोपाला॥
भुवको भारहरण भगवाना। तिहि असमूर्खकहतनहिंजाना॥
गोपालहि गोरज तन धारे। गोपरसन गोनाम उचारे॥
गोमति गोगति गोरति चहई। गोपातिकर सरबस गो अहई॥
जेहिलखि भे उनमत्त कपाली। भस्म रमाये नग्न कपाली॥
नीलकण्ठ है नाम सुनायो। मानहुँ हरिहि कण्ठ बैठायो॥

बल्लभकी कण्ठी जनु बांधी। वैष्णवभये सकलसुख साधी ॥
रमा शम्भु बिधि पार न पावा। शेश सहस्रबदन नित गावा ॥
दो० शकट सर्प खर बत्स बक, तृणावर्त्त बकभग्नि।
मुक्त किये द्वै तरुनकहँ, अच्युत अघबन अग्नि ॥
भक्तिहेतु लीलाकृत स्वामी। नमो कृष्ण बिनतासुतगामी ॥
चूड़ामणि सबके भगवाना। माधव केशव ज्ञाननिधाना ॥
मुक्ति देत सबकहँ श्रीनायक। ताहिकहतअसबचनअलायक॥
सो सुनि बोले केशव तबहीं। जो इत प्रगट होइ सो अबहीं ॥
तब तब होइहि बचन प्रमाना। कुन्दमकुन्दनतरु हम जाना ॥
सुनि बोली यह कीर्तिकुमारी। ऐहैं इत घनश्याम मुरारी ॥
जो हारै सो सब निज देई। हम तुमते करार अब तेई ॥
इमि कहि बन्दि हरिहि मनमाहीं। बैठी मूंदि दृगन निज ताहीं ॥
दो० लोचनमोचन करत जल, लखिकरुणानिधि श्याम।
बाम रूप तजि पुरुष भे, आनँद धाम ललाम ॥
लखि अचरज सब नारिन पायो। राधा तें मोहन यह गायो ॥
हे प्यारी केहरि कटिवारी। रूप अनेक मदनमदहारी ॥
तुम जन मोहिं टेरयो मैं आयो। तूरन बड़ी दूरते धायो ॥
तजी सकल सुरभी ब्रज माहीं। ग्वाल बालकहँ छांड़ेउ ताहीं ॥
बंशीबट मैं धायो आयो। केहिकारण तुम आशु बोलायो ॥
कहां अहै सो सखी सुजाना। सरतन किमिअनुसरतअज्ञाना॥
लखि नँदलाल मुदित चित राधा। बन्दे पद हृद प्रेम अगाधा ॥
इहि बिधि हरिको चरित अपारा। सुनत होइ भवसागर पारा ॥
दो० जनक भूप भाषत भये, इमि दै दरशन श्याम।
बहुरि रास कैसो कियो, मुनि कहु मानि मतिधाम ॥

माधव माधव मास महँ, मधुर माधुरी युक्त।
पांचै तिथि बृन्दा बिपिन, शशि तें दिशितम मुक्त॥
यमुना उपबन में बनवारी। रास रचायो रसिक बिहारी॥
आई गऊलोक ते भूमी। मणिमयकनकबनकबनिभूमी॥
दिव्यरूप बृन्दाबन धार्यो। हरित पता सहलता सुधार्यो॥
मन सोपान सहित बरपानी। रुचिर बिराजी रबिजा रानी॥
रतन धातुमय राजत शैला। निर्भर शृङ्ग बदरि सों फैला॥
तरुन तरुन सहनवल निकुञ्जा। कोकिलकिलकलकूजहिंकुञ्जा॥
पारावत शिखि सारस हंसा। पूरि शब्द सब नाशहिंगंसा॥
कहि न जाइ सरबरकी शोभा। जिहि लखिकै सुरसरबरलोभा॥
दो० उपजे बर अरबिन्द बहु, महकत अति मकरन्द।
मनहुं नदी हरि दरशहित, प्रगट किये दृगबृन्द॥
शीतल बहइ बयारि पियारी। तहँ बँसुरी बजाइ बनवारी॥
सो सुनिकै सिगरी ब्रजबाला। चलीं चतुर मरालकी चाला॥
द्वार द्वार शृङ्गार करैया। पलंग सँवार पारषद ऐया॥
गोबर्द्धन बृन्दाबनवारी। आईं आप सकल नवनारी॥
इहिबिधि इनके यूथ सुजाना। आये जहां कृष्ण भगवाना॥
यमुना यूथ बहुरि चलि आयो। नीलबरण अरु बसन बनायो॥
गङ्गा आईं यूथ समेता। अम्बर श्वेत अङ्ग छबि देता॥
आईं रमा यूथ निज लैकै। अभरण बसन धरे निरभैकै॥
दो० पुनि आईं मधुमाधवी, सुमन शृङ्गार सुहाय।
तिनकर यूथ अपार अति, सो न कहो कछुजाय॥
बिरजा यूथ लस्यो तहँ भारी। हरित बसन गोरी सब नारी॥
ललिता और बिशाखा माया। तीन यूथ औरहु चलिआया॥

इमि बसु षोड़श बत्तिस जूहा। मधि मोहन शशिके सम रूहा॥
राधा सहित रमत बनवारी। रूप रुचिर राजत रुचिकारी॥

क०। नूपुरनवलपग परमजरायनग, छरीगुणभरीधरी बाँसुरी समेत हाथ। काञ्चनीकमरकसी किंकिणी ललामलसी, देखिथोरी थोरी हँसी लाजरहै रतिनाथ॥ कुण्डलकपोलगोल राजत अमोल लोल, सोहत निचोलतन अतरसुगन्धसाथ। भृकुटीमटकतान खटकलटकजान, नटके समान चटचटकमुकुटमाथ॥

दो० यमुना तटत्रिय करझटक, हरिगे बिटप लुकाय।
चपल छबीली राधिका, गह्यो सुआँचक जाय॥

प्यारी अगरि चलीं हरिधाये। पकरि न पावत पैर थकाये॥
जहँ जहँ दुरत चन्द्रमुखवारी। पायल धुनि सुनिजात मुरारी॥
मोहन प्यारिहि पावत नाहीं। चाहत गहिकै ऐंचन बाहीं॥
जिमि दामिनिहि गहन घनधावै। तिमिश्यामाघनश्याम सुहावै॥
मकरध्वज रति लीन्हे सङ्गा। तिमि श्रीरङ्ग करत तितरङ्गा॥
सखिन मनोहर मण्डल कीनो। मधिमोहन मोहनिकहँ लीनो॥
केलि करति छबि लागति कैसी। कनकमालमहँसनिमणिजैसी॥
बेणु मृदङ्ग चङ्ग करताला। आवज ताल उपङ्ग रसाला॥

दो० यमुना महँ मोहन कियो, कोटिन भांति बिहार।
सुमनस डारहिं सुमन कहँ, जय जय जगदाधार॥
ललित लोल ललना लये, कालिन्दी कल्लोल।
कहिनसकतअहिराजछबि, उपमाअतिहिअमोल॥

बारि बिहारि बिहारी करिकै। गोबर्द्धन आये मुद भरिकै॥
तहां कन्दरा परम निहारी। रासकीन्ह सुखरास मुरारी॥
सिंहासनलखि अतिछबि देता। बैठत भे प्रभु प्रिया समेता॥

तहँसखियनअँखियनसुखकाजा। राजाकहँ सिंगारेउ राजा॥
इक इक अभरण अबलन दीनो। यमुना नूपुर नवल नवीनो॥
पायल दीन्ह जह्नुकी जाई। रमा दीन्ह करधनी सुहाई॥
मधुमाधवी हार अतिभारी। चन्द्रहार बिरजा रुचिकारी॥
ललिता अँगिया आगे राखा। गलबन्दहि दीनो बैशाखा॥

दो॰ कङ्कण एकादशि दियो, माया मुँदरी दीन।
बाहुबन्द चन्द्रानना, मधुमति बाजु नवीन॥

आनन्दादि सखी समुदाई। भूषण बसन दीन छबि छाई॥
बन्दी अरु ताटङ्कहि दीना।सखियनमिलिसबआनँदकीना॥
चन्द्रकला बेना अभिरामा। पद्मावती दीन्ह बरदामा॥
शीशफूल नग जटित नवीना। चन्द्रकान्ता बिनता दीना॥
बृन्दा बृन्दाबनपति जोई। बाकी भूषण दीन्हो सोई॥
इहिबिधि भयो शृंगार सुजाना। सो शोभा को सकइ बखाना॥
तब हरि सबन सहित छबि छाये। चन्द्रसरोबर आइ नहाये॥
क्रीड़ा कीनी बिबिध बिधाना। आये तबै सोम भगवाना॥

दो॰ सरसिज अरु शशिकान्तमणि, द्वै द्वै परम प्रवीन।
करुणानिधि कहँ भेट धरि,चन्द्रदण्डवतकीन॥

बहुलाबन बनवारी आये। मेघ मलार राग कहँ गाये॥
मन्दबतास चली तिहि काला। बरषतभयो सुखदकीलाला॥
भई तबै गरमी अति नरमी। हरषे कृष्ण अमानुषकरमी॥
ताल बिपिन पुनि लालन आये। कीन्हो रास रसिक छबि छाये॥
नृत्यत तहां भयो श्रम भारी। बोलीं हरिते सिगरी नारी॥
दूर अहैं यमुना हम प्यासी। कछुक उपाय करहु छबिरासी॥
तुम कर्ता भर्ता जग केरे। कीजै कृपा मनोहर मेरे॥

सो सुनि बेत्र अवनि हरि मारा। निकरी निर्मल जलकी धारा॥

दो० नाम बेत्रगङ्गा भयो, शीतल सुखद स्वरूप।
जा दरशन अघ कटतहैं, स्पर्शन हरिपद भूप॥

तहां बिबिध बिधि कीन बिहारा। बालन सहित गोपाल पियारा॥
कृष्ण कुमुदकानन चलि आये। तहँ प्यारी बहु पुष्प मँगाये॥
हरि शृँगारकी करी तयारी। रुचिर रचे भूषण ब्रजनारी॥
चम्पाकर कटिबसन बनायो। कानन कमल कुसुम लटकायो॥
पीत चमेली अङ्गन सोहै। कदम किरीट बिश्वमन मोहै॥
बर मन्दार जलज की धोती। तुलसीमाल अधिक छबि होती॥
इहि बिधान मोहन शृङ्गारे। बहुरि रासकी खरी कतारे॥
आवज बीना बेणु मृदङ्गा। मिले बजहिं सँग चङ्ग उपङ्गा॥

दो० भैरव मेघ मलार श्री, मालकोश हिंडोल।
दीपक सह षटराग कहँ, गावत गुणी अमोल॥

अष्टताल सुर सात समेता। तीन ग्राम गति लेत सुचेता॥
गावत हरिहि रिझावत गोपी। रास बिलास हासरस चोपी॥
माधव शशि की छटा अपारा। बनिता बल्लभ करहिं बिहारा॥
शीतल सरस समीर झकोरत। सुमन डारते झुकिझुकि तोरत॥
कुन्द कदम्ब मालती महकत। बकुलबदामकमलामिलिलहकत॥
केला कुटज पनस मन्दारा। पीपल श्रीफल निम्बु अनारा॥
आम करील दाख बट तुलसी। केतकिकेवड़ातनमिलिहुलसी॥
जामुन चन्दन बेला सोहै। चम्प चमेली कनइल जोहै॥

दो० बिबिधबिटप बेली बहुत, सुमन पत्र फलयुक्त।
दरश करहिं भगवान को, जानहुं जड़ बपुमुक्त॥

काम बिपिन महँ आइ मुरारी। करत भये मुरली धुनि भारी॥

सुनि सो मुरछि परीं ब्रजबाला । मोहिलयो मन नन्द को लाला ॥
थिरभे जङ्गम जङ्गम थिरभे । मरयादागत सब तिहिथरभे ॥
भो हरिचरण चिह्न तिहि ठावैं । जिहिलखिमनुजपरमगतिपावैं॥
बृहतसानु नन्दीश्वर के तट । बिहरत ब्रजमण्डल नागरनट ॥
भो अभिमान त्रियनको भारी । प्यारी सह तब दुरे मुरारी ॥
ब्याकुल भईं सकल ब्रजनारी । मुखते कहत हाय गिरिधारी ॥
कित गे प्रभु प्रणतार्तिनिवारण । रक्षहु करि सुकृपा जगकारण ॥

दो॰ जहां तहां खोजत फिरत, हाप्रीतम यह बैन ।
पूछत सब पादपनते, बिरह बिकल सुधि हैन ॥

जिमि धनपाइ होत अभिमाना । ताके नशे निपटही हाना ॥
तैसे प्रथम कीन्ह न बिचारा । अब हरि बिन यह हाल हमारा॥
सब गोपी दुखसागर धसीं । अति बियोग के कीचड़ फसीं ॥
ज्ञानी नृपति बखानी बानी । दुरे सु कैसे शारँगपानी ॥
बहुरि तिन्हैं किमि दर्शन भयऊ । सुनि नारद भाषन मन दयऊ ॥
हरि संकेत सुबट तट जाईं । कीन्ह शृँगार हृदय हरषाईं ॥
प्यारी प्रिय को कीन्ह शृँगारा । बहुरि चले उर हरष अपारा ॥
भद्रखदिर अरु बिल्व बिपिनमें । बिपिनकोकिला चारुसघनमें ॥

दो॰ गोपी हरिके चरण कहँ, देखत भईं सुजान ।
चिह्न तासु नरपालमणि, सुनहु सुचित सुज्ञान ॥

यव ध्वज चक्र छत्र घट निन्दू । माथियातिल अंकुश अघइन्दू ॥
पद्म वज्र झष धन बसुकोना । तीन कोण गोखुर अतिलोना॥
शंख नाभि अरु ऊरध रेखा । चिह्नित चरण श्यामकरदेखा ॥
सो रज शीश धरयो करि प्यारा । पुनि प्यारी के पदहिनिहारा ॥

चक्र अर्ध शशि अंकुश गदा। लवँग लता सिंहासन मुदा॥
छत्र और द्वै बिन्दु सुजाना। प्यारी के चरणहि पहिंचाना॥
बहुरि चलीं सिगरी ब्रजबाला। आईं कोकिल बिपिन रसाला॥

दो० तब हरि राधा ते कह्यो, आवत सिगरी बाल।
तुम कहँ हम कहँ पकरिहैं, ताते चलहु उताल॥

सो सुनि परम गरूरहि आनी। बोली कृष्णचन्द्र प्रति बानी॥
मैं अतिथकी सकत चलिनाहीं। तुम मोहिं भरमावत बनमाहीं॥
सुनि हरि गुना ताहि अभिमाना। पंखा कीन्हो कृपानिधाना॥
कहतभये करते कर थांभी। कछुक दूरलौं चलिय तहांभी॥
सुनि बोली मतिदेहु सवारी। भाषि पीठि कहँ फेरेउ नारी॥
तब हरि कहेउ चढ़हु मम कांधा। और सवारी है नहिं राधा॥
बैठे हरि लखि त्रियमन महँगा। तब राधिका उठायो लहँगा॥
आड़ जानि भे अन्तरधाना। मानदमन गुणनिधि भगवाना॥

दो० नाथ बिगत तब राधिका, कीन्ही उच्च पुकार।
व्याकुलअति धरणीगिरीं, हा ब्रजराजकुमार॥

रोवत तहां राधिकहि जानी। बिकल सकल बाला बहुरानी॥
कोऊ तनमें चन्दन लावै। कोऊ बैठी ब्यजन डुलावै॥
राधामुख सुनि हरिकीलीला। कीन्ह परमदुख झुण्डनमीला॥
करते पकरि कानकह डरहीं। परमदीन चित बिनती करहीं॥
बैठी सकल प्रेमते पागीं। गोपीगीतहिं गावनलागीं॥
सहित सकल सुरताल मिलाई। भजत अनन्य एक यदुराई॥

छं० लोकाभिराम मनुष्यभूषण विश्वदीप कृपाकरं।
कन्दर्प मोहन भक्त संकटहरण परमेशंपरं॥
आनन्द कन्द मकन्द नन्द कुमार गोकुल ...

गोविन्दप्रभु अरबिन्दलोचन रमापति धृति अतिक्षमा ॥
गो विप्र साधू केवरक्षक दुष्टअर्दन हे विभू ।
हरिपाहि पूरण परम परमाधाम परिपालय प्रभू ॥
गोपाल सागर मध्यमणि गोपालगिरिमहँ धातुवत् ।
गोपाल जल अरबिन्दवत् प्रभुपादपङ्कज पातुत्वत् ॥
राधाबदन पद्मालि राधाबदन चन्द्र चकोरवत् ।
राधाहृदय शशिहार करुणागार राधा प्रेमभृत् ॥
श्रीरासरङ्ग निवास गोपति प्राणपति परमामयं ।
कुरु कृपा कृष्ण कृपाल दीनदयाल परमेश्वरस्वयं ॥
अच्युत अनादि अनन्त अद्भुत अजर अमरपते प्रभो ।
श्रीकृष्ण बिष्णु मुकुन्द माधव ईश श्रीनायकस्वभो ॥
तव रहित प्राणपयान इच्छत दास रक्षा कुरुपते ।
आधार प्राणाधार बिश्वाधार गोबर्धन धृते ॥
सौदास नल श्रीराम बामहि पूर्व दुःख अभूद्यथा ।
तवरहित हेहितरूप ब्रजपति अधिकब्रज बालनब्यथा ॥
आरतहरण ब्रजबंशभूषण बिश्वपति केशव हरे ।
अवलोकि स्वदिशि सुजान सुन्दर कुरुकृपासुकृपाकरे ॥
श्रीकृष्णपति जगसाधुतेहिं अभिमाननहिं आश्चर्यहै ।
ममगर्बनाश्यो गुणप्रकाश्यो कुरुकृपा यह अर्य है ॥
जगबिदित पति है भक्तबत्सल सत्य कीजै नामको ।
गुणखान पापकृशानु बिश्वप्रधान अतिअभिरामको ॥
दो० इमि तिनकहँ रोवत निरखि, प्रकट भये घनश्याम ।
जिमि निहार ते दिवसपति, परमापरम ललाम ॥
मस्तक मकट मनोहर बेखा । गोपिन नयन पिये इमि देखा ॥

लपटीं अङ्ग अङ्ग महँ कैसे। तरु तमालमहँ बेली जैसे ॥
तिनमहँ नृत्यन लगे बिहारी। संग लिये जिन राधा प्यारी ॥
जितनी गोपी तितने हरी। यह अद्भुत इक लीलाकरी ॥
तिहिक्षण हाथ जोरि ब्रजबाला। भाषत सकल प्रेम की माला ॥
मोहिं तजि आप गये कितस्वामी। सुनि भे कहत पक्षिपतिगामी ॥
दधिसागर महँ हंस मुनीशा। करतवृद्ध तप लखि ममदीशा ॥
द्वै मन्वन्तर तिनकहँ बीते। तपकहँ करत सकलदुख रीते ॥

दो० दोय कोसको मच्छ इक, लीलिगयो तिहिकाल।
और मच्छ इक ताहिकहँ, निगल्यो आइ बिशाल ॥

मैं द्रुतजाइ असुर झषमारी। मुनिकहँ अरिते लीन्ह उबारी ॥
श्वेतद्वीप महँ मैं पुनि जाई। शयनकियो निद्रा चलिआई ॥
तब आयों मैं तुम्हरे पासा। सत्य कहत यह बचन खुलासा ॥
ममभक्तन कहँ दुख नहिं होई। मोरि प्रतिज्ञा जानहु सोई ॥
सो सुनि कहत भई ब्रजनारी। किमि कीन्हो तितशयन मुरारी ॥
सो स्वरूप मोहिं दरश करावो। तब हरि सोई बपु सरसावो ॥
आठ भुजा भे हरि तेहि काला। रमा भई राधिका रसाला ॥
क्षीरसिन्धु प्रकटो अतिभारी। लहर बहर कर कहर अपारी ॥

दो० शेष गेरुड़ी मारिकै, तहां बिराजे आय।
छत्रसरिस आनन सहस, मणिन जटित दरशाय ॥

तापर सोये कृष्ण अबाधा। लागी चरण चापने राधा ॥
लखि बन्दनाकीन्ह ब्रजनारी। मुदित भई मनमाहिं बिचारी ॥
कीन्ह जहां यह लीला भारी। सो अतितीर्थ भयो ब्रतधारी ॥
तजि सो रूप अपन बपु लीन्हा। कालिन्दीमहँ क्रीड़ा कीन्हा ॥
राधा करते कमलहि लैकै। हरि जलमाहिं दरे मख ह्वैकै ॥

लकुटी बेणु पिछौरी हरिकी। लै राधा जलअन्तर सरकी॥
हरि मांग्यो निज बस्तु न आनी। बारि बिबिध बिहरे सज्ञानी॥
दो० माधव माधव मास इमि, कीन्ह चरित्र पवित्र।
नेत्र सुफल भे त्रियनके, लखि छबि चित्रबिचित्र॥
बेणु बजावत मदन गोपाला। आये बन भाण्डीर रसाला॥
तहँ प्यारी कर बर शृङ्गारा। करते भये विश्वकर्तारा॥
राधा हरि शृंगार बनायो। फूलनको अति सो सरसायो॥
लोह बिपिन आये भगवाना। जहँसुगन्ध आवत बिधि नाना॥
बालन सहित रमण गोपाला। करत अनेक ख्यालके ख्याला॥
आलिसमूहमिलिबिधिचलिआवहिं।कलिकलिबैठहिंकुलकलगावहिं
तहँ बाधा प्रकटी इक जानो। दालि भात महँ मूसरमानो॥
शंखचूड़ इकसखा धनदको। यक्षबली बरपूरित मदको॥
दो० तासम नहिं संसारमें, गदाधरन क्षितिरौन।
सो मोते पूछत भयो, ममसम भट जग कौन॥
हम तब ताकहँ कंस बतायो। सुनि सो गदापाणि द्रुत धायो॥
मथुरा पुरी कंस ढिगजाई। बोलत भयो गर्जि नरराई॥
मोकहँ गदायुद्ध में जीती। होहु विश्वजित प्रकट सुप्रीती॥
हारि होहु कै दास हमारे। इमि प्रणकरि दोउ बीर गरारे॥
लक्षभार की गदा पकरिकै। रङ्गभूमि में भिरे अकरिकै॥
चटचटचटकत अबचतलागि झट। कटकट करत प्रकट भट रणनट॥
द्वै मृगपति समान रणकरहीं। गदागदा पर मारि उछरहीं॥
गदगद गदा लगत तन कैसे। बारिबुन्द गिरिबर पर जैसे॥
दो० बहुरि लगे मूका लरन, समर भयङ्कर धीर।
मूकहि मूकत अङ्ग जब, मूकहोत सहपीर॥

ऋषिकर दिवस भयो रणभारी। रिसकरिकरि दोउभिरहिंप्रचारी॥
फेंकेउ यक्षहि कंस उठाई। शतयोजननभदिशिरिसिआई॥
तिहि पुनि बारिजचूड़ उठाई। फेंक्यो ब्योम जोम अधिकाई॥
कंस आशु गिरि बदन सँभास्यो। चरणमारि तिहिधरणिपछास्यो॥
शंखचूड़ कंसहि तिमि कीना। इहिबिधि अभिरे उभयप्रबीना॥
तिहिक्षण आइ गर्ग गुरुज्ञाता। बोले यादवपति प्रति बाता॥
रण जानि करहु नफा कछु नाहीं। जीतहुगे कोउ नहिं महिमाहीं॥
तुम्हरे मूक लगे ऐरावत। दूर दुस्यो द्रुत सहित महावत॥

दो० याहि व्यथा कछु नहिं भई, सुनिये कारण तासु।
हर बर अहइ अजेय यह, ताते है न हरासु॥

यक्ष तुमहुँ जानि संगर करहू। यह अजेय तुमसम पुनि बरहू॥
सो सुनि मिले परस्पर दोऊ। मित्र भये जानहिं सबकोऊ॥
चलेउ यक्ष मग सुना सुजाना। गोपिनकरमन हरबर गाना॥
आसुरासु मण्डल महँ आयो। हरिहि निरेखि मातु हरषायो॥
राधाकन्ध बाहु छबि छावत। मुसकनि चोजमनोजलजावत॥
चारिहु दिशि ब्रजबालकतारी। बंशीअधर धरे गिरिधारी॥
जानि सबहिं शठ तूलसमाना। चलेउ पाप गहि हे नस्त्राना॥
तब नृपकहा कहा सो कीन्हो। जो भाषत अघ उरमहँ लीन्हो॥

दो० सो सुनिकै भगवान मुनि, नारद ज्ञाननिधान।
भाषत बारिज चूड़ अरु, बारिज कर आख्यान॥
ब्याघ्र बदन तन श्याम अति, ऊंचो चौदहताल।
तड़िताजिह्व अति भीमस्वन, देखि दुरीं सब बाल॥

हाहाकार करन अति लागीं। हरिहित्यागिदशादिशि अनुरागीं॥
बिधुबदना बाला कहँ लेई। चलेउ निशङ्क यक्ष जगजेई॥

रोवनलगीं सखी तब भारी। कृष्ण कृष्ण श्रीकृष्ण पुकारी॥
तब नँदलाल शाल तरु धारी। ह्वै बिकराल चले ललकारी॥
जहँ जहँ यक्ष दक्ष चलिजाई। तहँ तहँ पृष्ठ प्रत्यक्ष कन्हाई॥
ब्याकुल हिम परबत ढिग जाई। तजि गोपी कहँ बिटप उठाई॥
चलेउ कोपि हरिकहँ ललकारी। मार्‍यो शाल पुकारि बकारी॥
परेउ पुहुमि करि घोर चिकारा। उठिकै कृष्णहिं मूका मारा॥

दो० कृष्ण झपटि झट दपटिदटि, पटक्यो ताहि फिराइ।
कम्बुचूड़ अवनी गिरो, गो असु आसु पराइ॥

फोरि शीश चूड़ामणि तासू। लीन्हो रविसमान द्युति जासू॥
तासु ज्योति कढ़िकै अधिकाई। श्रीदामा के बदन समाई॥
कृष्ण रासमण्डल महँ आई। चन्द्राननहि दीन्ह हरषाई॥
दै मणि ताहि कृष्ण अनुरागे। रासरमण रमणिन सँग लागे॥
बिहरत बल्लभ आनँद छाये। सबन सहित बृन्दाबन आये॥
तिहिक्षण सकल लता त्रिय होई। आई बिहरन ब्रजपति जोई॥
लतायूथ सह रमत मुरारी। करुणाकरन भक्त भयहारी॥
रविजा तटपर प्रकट सुबासा। नृत्यत नटनागर सुखरासा॥

दो० राधाके सँग कृष्ण तब, लागे करन बिहार।
गोपीगण महँ मगन मन, सुखद स्वरूप अपार॥

बरषहिं सुमनस सुमन अपारा। मुखते जय जय करहिं उचारा॥
भैरव दीपक मेघ मलारा। श्रीहिंडोल मलकोस बिचारा॥
निजनिजसकलअलापहिंब्याला। नौढ़ा प्रौढ़ा मुग्धाबाला॥
जारधर्म करि कृष्णहि जोवैं। जन्म जन्म के सङ्कट खोवैं॥
कोउ हरि ते खेलत फुलगेंदा। कोउ पहिरावत हार सपेदा॥
कोउ करत अधरामृत पाना। कोउ आलिङ्गन करतसुजाना॥

कोउ सम्मुख नाचत बिधिनाना । कोऊ बाल करत कलगाना ॥
काश्मीर मुद्रित भगवाना । रमत रसज्ञ रास रुचि साना ॥
दो० कोउ बीणा मुरली पटह, चङ्ग मृदङ्ग उपङ्ग ।
झालरि झंझ बजायकै, गावहिं तिनके सङ्ग ॥
कोऊ नृत्यहिं हरिके सङ्गा । निजहितअतिजानहिं श्रीरङ्गा ॥
कोउ धीमे सुर गावहिं ख्याला । कोऊ कण्ठ लगावहिं लाला ॥
कोउकर बेसर कच अरुझायो । झटपट लटते ताहि छोड़ायो ॥
कोऊ मुँहमहँ नावति बीरा । कोऊ हरषति देखि शरीरा ॥
कोऊ कृष्ण कपोलहि छूवत । मानहुँ सुखके बीजहि बूवत ॥
कोउ आई हरि बेष बनाई । कहत कि हम तुमते अधिकाई ॥
कोउ राधाकर रूप बनाई । गाइ रिझवत कुँवर कन्हाई ॥
कोउ सबकी शोभा अवरेखै । कोउ केवल श्रीकृष्ण परेखै ॥
दो० कोउ मुनिसम ध्यानहि धरे, निरखत श्रीमुखचन्द ।
कोउ लटकत गहिकै लता, लखतललितनँदनन्द ॥
इहि विधान बिलसत भगवाना । गोपिन दीन्हे सुखबिधिनाना ॥
जो सुख भयो इनहिं महिपाला । सो दुर्लभ योगिन कहँ ख्याला ॥
अहो सुधन्य भाग्य इन केरे । निकट मुकुट मण्डित हरि हेरे ॥
तहां भयो इक चरित अनूपा । चितदै ताहि सुनहु सुखरूपा ॥
रहे महामुनि आसुरि नामा । नारद गिरि निवसत तपधामा ॥
सदा ध्यानमहँ मग्न सुहोवैं । नित प्रति हरिकी लीला जोवैं ॥
एकदिना नहिं सो दरशाये । तबसो मुनि अतिअचरज पाये ॥
व्याकुल लागे करन बिचारा । आज कौन अपराध हमारा ॥
दो० बदरीबन कहँ मुनि गये, करिकै दरश बिचार ।
नरनारायण नाहिं लख्यो, भो सन्देह अपार ॥

लोका लोकाचल पुनि आये। तहां शेष को दरशन पाये॥
श्वेतद्वीप पय सागर गये। तहां न विष्णुहिं देखत भये॥
पूछेउ पौरन ते हरि कितहैं। तिन्हहनकहानहिंजानतजितहैं॥
इहि विधान चिन्तत मुनिराया। कहा करउँ कछु उरनहिं आया॥
गै बैकुण्ठ हरिहिं अवरेखन। तहँ नाहिं लखे चारिभुज भेषन॥
पुनि मनमें बिचार तप ओका। सबते परे गये गोलोका॥
बृन्दाबन निकुञ्ज के माहीं। देख्यो कहूं कृष्ण कहँ नाहीं॥
पूछेउ ब्योरा तहां के जन ते। तिन्ह न तबै भाषा सो मुनिते॥

दो॰ बामन के ब्रह्माण्ड में, प्रभु लीन्हो अवतार।
सुनि सो इत आवत भये, आसुरि मुनि सरदार॥

कैलासस्थ शिवहि अवरेखा। कृष्ण ध्यान उर करत परेखा॥
नौमि हरहि मुनिबर यह बोले। आपु मोहिं भाषहु सब खोले॥
गोलोकादि अण्ड सब देखे। कहूं न कृष्णहिं नयन निरेखे॥
सो मुनिकैं करि ध्यान त्रिलोचन। बोले बचन भक्त भयमोचन॥
धन्य धन्य तुम वैष्णव भाई। हरि दरशहि चाहत मुनिराई॥
ऐसी बुद्धि जाहि उर आवै। सो द्रुत दरशन हरि के पावै॥
दीनदयाल बिश्व करतारा। असुर मारि मुनि हंस उबारा॥
रास करत अब रासबिहारी। बारह पक्ष करी निशिभारी॥

दो॰ यमुनातट नट बेषबर, नृत्यत श्रीब्रजनाथ।
हमहुं चहत दरशन करन, चलिकै तुम्हरे साथ॥

तो॰शिवआसुरिआनँदछावतभे। ब्रजमण्डलमें चलि आवतभे॥
जहँ दिव्यलता द्रुम जाति सबै। सहशीत सुगन्ध समीर फबै॥
ब्रजबाल तहां करबेत्र धरे। करि आड़ कह्यो यह बैन हरे॥
हम रक्षत हैं यह मण्डल को। नरजातनहै कोउ यों चलको॥

त्रिय हैं सब पूरुष एक हरी। जउँ चाहत देखन बुद्धि करी॥
यह मानसरोवर न्हाइ दोऊ। बनिकै त्रियजाहुन रोककोऊ॥
सुनि सो भव आसुरि न्हाइ भले। बनिता बनिकै भरि प्रेम चले॥
जहँ कञ्चन की धरणी बरनी। तरुकी सह फूलन डार घनी॥
शशिशोभित उज्ज्वल अम्बरमें। जिमिहीरधर्यो कोउ अम्बरमें॥
यमुना सरकी मणि हेम सिढ़ी। छबि तासु अनूप अपार बढ़ी॥
तहँ हेम चबूतर चारु बने। बर रत्न जड़ाउ के खम्भ घने॥
दशहू दिशि में भवरे दवरे। भवरे द्रुम बैठि करैं हवरे॥
तहँ मोहन सोहन राजत हैं। जिहि देखि मनोभव लाजतहैं॥
चहुँ ओर त्रिया बहु छाजत हैं। उरमें शशि के सम भ्राजतहैं॥
मुरली स्वर सात समेत बजै। शिर ऊपर चारु किरीट छजै॥
धनु के सम नोक बनी भ्रुकुटी। पट पीत धरे करमें लकुटी॥
पग नूतन नूपुर बाजत है। कटि किङ्किणि सुन्दर छाजतहै॥
मन मोहन से मनमोहनसै। लखिकै शिव आसुरि प्रेमफँसै॥

दो० बन्दिचरण बलबीर के, उभय सुमुनि त्रियरूप।
हाथ जोरि लागे करन, अस्तुति भूप अनूप॥

छं० कृष्ण बिष्णु योगीश जगत्पति देवदेव हरि।
दामोदर खगराज केतु परिपूर्ण कंसअरि॥
कञ्जनाभ नँदनन्दन कञ्जबिलोचन गिरिधर।
बासुदेव प्रभु हृषीकेश बिभु धरणि भारहर॥
जगदीश जनार्दनजगतगुरुसबतेपरप्रणतार्तिहर।
सबलोकथोकखालीकिये ब्रजबिहारकर बिश्वबर॥
कला सुबिकला पूर्ण अंश अंशांश भाग कर।
नम [illegible] अनेक [illegible]॥

गोवर्धन नग यमुनासरि बृन्दा कानन बर।
नित्य केलिकृत कोटि काममद हरण रूपधर॥
गोविन्द गोप ब्रजचन्द प्रभु राधा मनफन्दनकरन।
करुणाकर रूपरसालधर नटनागर हम तव शरन॥
दो० सो सुनिकै राधा सहित, बोले कृष्ण प्रवीन।
तीसबीस अरुदश सहस, संबत तुम तप कीन॥
ताते दर्शन भयउ हमारा। बर मांगहु करि उभय बिचारा॥
सो सुनिकै शिव आसुरि बोले। निजमनको बिरतान्तहि खोले॥
चरण शरण अरु भक्ति खुलासा। देहु मोहिं बृन्दाबन बासा॥
सुनि हरि तिन्हहिं दीन्हबरदाना। बृन्दाबिपिन रास अस्थाना॥
यमुना तट बंशीबट पासा। जहँ निकुञ्ज सुखपुञ्ज प्रकासा॥
आसुरि ईशहि तहां बसायो। भयो दुहुंन के मनको भायो॥
इहिं बिधि रच्यो रास भगवाना। गोपिन अतिसुखदीन्हसुजाना॥
निशि षटमास भई छबिछाई। पल समान सबातियन बिताई॥
दो० प्रात समय सिगरी गईं, निज निज गृहको बाम।
नन्दनँदन नँदघर गये, राधा बृषरबि धाम॥
यह हरिकेर रास अख्याना। सुनैं पढ़ैं लावैं जो ध्याना॥
अतिही चारु चारि फल पावैं। दुखअघ अवगुण धोइ बहावैं॥
अब कह सुनन चहत नरपाला। सुनिकै तिन यहबचननिकाला॥
जिहि २ कृष्ण कीन्ह असुनाहीं। ते ते लीन भये इनमाहीं॥
शंखचूड़ की ज्योति महानी। श्रीदामा के बदन समानी॥
कारण तासु बताइय आशू। होइ जासु फल संशय नाशू॥
सो सुनिकै मुनि बीनापानी। बोले पुनि बाणी गुणिज्ञानी॥
हम यह कथा बिष्णु मुख सुनी। तुम कहँ कहत गुनी उरगुनी॥

दो० राधा भूबिरजा श्रिया, हरिकी त्रिया सुचारि।
तामें राधा अति प्रिया, हिया प्रीति निरधारि॥
एक दिवस बिरजा के साथा। रमत रहे रुचिसों ब्रजनाथा॥
सुनि राधा यह अतिहि रिसाई। रथचढ़ि चली सौतिदिशि धाई॥
शतयोजन लांबो अरु ऊंचो। बनो कनकको सुरथ समूचो॥
कलश पताक ध्वजा मणिकेरे। कोटि भानुद्युतिदशदिशिघेरे॥
दश अर्बुद सखि संग सुहाई। बिरजा बामधाम चलिआई॥
श्रीदामा चौकी पर रहेऊ। मानेउ सो न बहुत बिधि कहेऊ॥
गोपिन केर शब्द सुनिभारी। अन्तर्धान भये गिरिधारी॥
नदी भई बिरजा नरराटा। कीन्ह कोटि योजनकर पाटा॥
दो० तब राधा घरमें गई, लखे न श्रीभगवान।
मम भयते सो बहिगई, नदी होइ अनुमान॥
सखिनसहितनिजभवनासिधारी। हरिपुनि तहँ चलिगयेबिचारी॥
भये पुकारत नाम सुनाई। धरि स्वरूप बिरजा तब आई॥
रमण करत आनँद अधिकाये। बिरजा सात सुवन तब जाये॥
एक दिवस बड़ छोटेहि मारा। सो माता ते शरण पुकारा॥
तिनहिं बुझावन मैं मन दीना। हरिभे अन्तर्धान प्रबीना॥
तब सकोपि दिय पुत्रन शापा। बामन अण्ड होहु तुम आपा॥
हरिते मोर बिछोह करायो। ताते मोहिं महत दुख आयो॥
लघुको जल नहिं पी है कोऊ। सात प्रकार सात तित होऊ॥
दो० सदा बिलगरहिहौ सकल, मिलिहौ परलैमांह।
भये प्रियब्रत सुरथते, सात सिन्धु नरनाह॥
लवण इक्षु मदिरा घृत जानो। दधि पय शुद्ध बारि परिमानो॥
लखयोजन ते दुगुन बखाने। द्वीप द्वीप पर ते सरसाने॥

हरि बिरजहि भाषेउ दुख गोई । तुम कहँ मम बियोग नहिं होई ॥
पुत्रन कहँ रक्षहुगी बिरजा । समयपायउज्ज्वलजलबिरजा ॥
एक दिवस हरिलै श्रीदामा । राधा सदन गये अभिरामा ॥
लखि निजगोल कपोल फुलाई । कहतबोल पतिनिदरि रिसाई ॥
जाहु तहां जहँ नूतन नेहू । किहि हितसों आये मम गेहू ॥
सो सुनि फिरत भये घनश्यामा । ठाढ़े रहे सखा श्रीदामा ॥

दो० राधा यह कृष्णहि कह्यो, नदी साथ नद होहु ।
सुनत सखा बोलत भयो, करि कमानसी भौंहु ॥

कोटि अण्डपति कृष्ण कृपाला । गो पुरबासी बुद्धि बिशाला ॥
तब श्री कोटि शक्ति कहँ करहीं । क्षणमहँ सबअभिमानहिहरहीं ॥
भो घमण्ड निज बश पतिपाई । सुनि राधिका कहत रिसिआई ॥
मात पितहि इमि भाषत पापी । होसि यक्ष द्रुत वृथा प्रलापी ॥
सुनि श्रीदामा कहत रिसायो । भलो बतावत नहिं उरआयो ॥
स्वबश नाथ गुनि करत कुद्रोहा । होइहितोहिं शतसाल बिछोहा ॥
दुखप्रद शाप दुहुंन को गुनिकै । आये कृष्ण कृपाकरि पुनिकै ॥
हे राधा मम जन सतिभाखा । होइबियोगअवशिलिखिराखा ॥

दो० पै न खेद उर करहु कछु, यह बरदेत सुमाइ ।
मासमास महँ मिलउँगो, जहँ रहिहो तहँ जाइ ॥

कोल कल्प महि जैहौं जबहीं । तुम कहँ शाप लगै यह तबहीं ॥
सखा यक्ष तुम भूतल होहू । एक अंशते अति बलसोहू ॥
ममहेलन करिहो तित मरिहो । तब सरूप निज उत्तम धरिहो ॥
इहि बिधि तिनके शाप कराला । सघनयक्ष गृह जनमेउ ग्वाला ॥
शंखचूड़ भो ताकर नामा । कंससखा अतुलित बलधामा ॥
ताते ताकी ज्योति नृपाला । श्रीदामा महँ मिली रसाला ॥

कृष्णचरण दुखहर अरबिन्दा । तहां बसहु मन मोर मलिन्दा ॥
बृन्दारण्य खण्ड नृप एहू । श्रुति फल पद सुप्रेम को गेहू ॥

दो० दलन सबल पाखण्डखलु, फलन कोटि ब्रह्मण्ड ।
कलअखण्डकिरपालभजि, भो बृन्दाबन खण्ड ॥
करण भरण बितरण तरण, बिहरण हरण उदार ।
शरण शरण गिरिबर धरण, नरन चरण सुखसार ॥

सो० कृष्ण कृष्णकहँ भाखि, कीन्हों खण्डअखण्ड अति ।
सत्य कृष्णपद साखि, तिनकी कृपा न मोर मति ॥

इति श्रीभाषाप्रकाशेकृष्णप्रियेगिरिधरदासबिरचितेप्रेमपथराचिते
गर्गसंहितायांद्वितीयंबृन्दावनखण्डंसमाप्तंशुभमस्तु ॥ २ ॥

अथ गिरिराजखण्डप्रारम्भः ॥

सो० गिरिधर गुरु गुणरास, दीनबन्धु आरत हरन ।
तिनहिं बन्दि सहुलास, गिरिबर खँड चाहत करन ॥

दो० धस्यो अंगुली अग्रपै, गिरिबर गिरिधरलाल ।
तिनहिंबन्दि बरणतपरम, नगपति खण्ड रसाल ॥

तब बहुलाश्व कहत भे ऐसे । कृष्ण धस्यो गोबर्धन कैसे ॥
जिमि करि करतें कमल उठावै । तिमि हरिकर कर शोभा भावै ॥
सुनि मुनि कहत भये सर कूजा । कातिक कृष्ण प्रथम दिनपूजा ॥
करहिं गोप सुरनायक केरी । सो सामग्री भई घनेरी ॥
नन्दन महँ नँदराज बिराजे । बहु पुरुहूत पुजाई साजे ॥
सो लखिकै भगवानउवाचे । पूजत काहि कहहु मोहिं साचे ॥
तब श्रीनन्दराय हरषाई । कहत बचन सुवनहिं समुझाई ॥

संक्रन्दन कृपालु सुरत्राता । वज्री भुक्ति मुक्तिके दाता ॥
दो० सो सुनिकै बिहँसत भये, दीनबन्धु भगवान ।
कहत आप कैसे कहत, बृद्ध सकल ब्रजत्रान ॥
इन्द्रादिक सुर देखिके माहीं । बसहिंकर्मफलपुनिनशिजाहीं ॥
स्वर्ग नरक भवसिन्धु कनारे । इत उत भ्रमत असुक्त बिचारे ॥
ब्रह्मादिक कहँ यह गति अहई । को कौशिककी कथनी कहई ॥
आपहि मुक्ति अहै नहिं जोई । दूजहि मुक्ति कि करिहै सोई ॥
तजि हरि और न मुक्ति उपाई । सत्य कहत हम हे ब्रजराई ॥
गो द्विज साधु अग्नि मुख देवै । तौ प्रभु पूजनको फल लेवै ॥
जे ऐसेई करहिं सुजाना । खुशी उसीतें श्रीभगवाना ॥
सोइ गोबर्धन गिरि बपुधारी । ब्रजमहँ राजत रासबिहारी ॥
दो० हरिके उरतें प्रकट नग, लाये बिधिसुत अत्र ।
तिनकी किन पूजा करत, बृथा भ्रमत अन्यत्र ॥
सो करिहै तुम लखत अहारा । मम मनतौ यह होत बिचारा ॥
करहु आप जो और सुहावै । सुनि सन्नन्द गोप गुनि गावै ॥
तुम सज्ञान सुजान कन्हैया । हरितजि गिरिकी करहु पुजैया ॥
पूजाकर तुम कहहु बिधाना । सुनिकै कहत भये भगवाना ॥
गिरिकी महि गोमयते लीपी । सामग्री सब साजि समीपी ॥
सहस्रशीर्षा मन्त्रहि गावैं । मानुष गङ्ग यमुनजलनावैं ॥
पञ्चामृत कपिला पय डारी । चन्दनचरचि बहुरि सरि वारी ॥
भूषण बसन फूल अरु माला । दीपावलि तनराग रसाला ॥
दो० भो परदक्षिण दण्डवत, करिकै बिबिध प्रकार ।
हाथ जोरिकै तब करै, यह मन्त्रहि उच्चार ॥
सो० जय वृन्दाविपिनाङ्क, कृष्ण छत्र गोपुर मुकुट ।

द्युति बहु कोटि मृगाङ्क, गोबर्धन गिरिपतिनमो॥
पुष्पाञ्जलि आरति सरसावै। घण्टा शङ्ख मृदङ्ग बजावै॥
गिरिके ऊपर गऊ खेलावै। तब अनाजको कूट बनावै॥
चौंसठ गिनिकै धरै कमोरा। पांच पंक्तिमधि भात अथोरा॥
छप्पन भांति भोगकहँ राखै। गो द्विज धेनु अग्निमुँहनाखै॥
खाय खवावै भोजन सारा। श्वपचहुकहँ प्रसादअधिकारा॥
जहँ गोबर्धन नहिं बर मन्दर। तहँ गोमयको बिरचै सुन्दर॥
तरु अरु सुमन सींकसह गाड़ै। बिबिध भांति के मङ्गल माड़ै॥
शैलशिला न कहूं लै जावै। जो अस करै सो रौरव पावै॥
दो० देवै पाथर भर पुरट, तब लेवै निःशङ्क।
इहि विधान पूजै गिरिहि, नरबर बुद्धि उतङ्क॥
शालग्राम यथा तिमि पर्वत। नर भवत्रास त्रसितकहँ सर्वत॥
गिरि पूजहिं जे सहित बिधाना। बिधि न सकहि सो पुण्य बखाना॥
बरष बरषप्रति पूजै जोई। जीवन्मुक्त जानिये सोई॥
सो सुनि नन्दादिक आनन्दे। मुदित होइ मनमहँ गिरि बन्दे॥
सब उपनन्द नन्द बृषभानू। पूजाकेर कियो सामानू॥
नन्दराय दोउ ढोटन लीने। संग गर्गगुरु आनँद भीने॥
चलीं उभय कुँवरनकी माता। अबलाअमित चलीं हरषाता॥
नन्द और उपनन्द सुजाना। सब बृषभान चले मतिमाना॥
दो० निज निज परिवारहि लिये, चलत शैल की गैल।
फैल रह्यो सुख गैलमहँ, दूरि किये दुख मैल॥
बर बृषभान त्रिया लै साथा। चले चढ़े गज उन्नत माथा॥
सँग सोहत सुरभी समुदाई। चले सजाई परम पुजाई॥
सहस बाल रबि ज्योति पालकी। चलीं राधिका प्रियालालकी॥

ललिता बिधुबदना बैशाखा। इनहिं आदि कोटिन सँगराखा ॥
सखीयूथमहँ कीरति कन्या। शोभित भई सकलद्युति धन्या ॥
बिरजा रमा माधवी नामा। कृष्णा गङ्गा बाम ललामा ॥
इनहि आदि सखि सहित समाजा। पूजन चलीं शैल शिरताजा ॥
बसु षोड़श बत्तिस ब्रजनारी। चलीं भवन सोहत तनसारी ॥

दो० मैथिल कोशलयज्ञ सिय, ऋषिरूपा श्रुतिरूप।
अवधनिवासिनि नारि सब, प्रमुदित चलीं अनूप ॥

अलना सखि बैकुण्ठनिवासिनि। श्वेतद्वीपध्रुवलोकबिलासिनि ॥
सिन्धुकुमारी औ मधुसारी। अरु अहिसुता सुतलकानारी ॥
जालन्धरी तहां चलिआई। अरु अप्सरा सकल सुखछाई ॥
बर्हिष्मती आदि सब नारी। चलीं सकल निजयूथ सुधारी ॥
सब गोबर्धन के ढिग आये। बाल जवान बृद्ध छबि छाये ॥
पहिरे बसन धरे बनमाला। लकुट बेणु बन धातु रसाला ॥
गिरिउत्सवसुनि गिरिशासिधाये। अहि लपटाये भस्म लगाये ॥
गिरिजा सहित प्रेम भरि पूरा। गर गर दरशात भांग धतूरा ॥

दो० बर बैष्णव चढ़ि बृषभ पर, हरकर डमरूबाज।
गमन सहित शिर गङ्गधर, गये जहां गिरिराज ॥

ब्रह्मर्षी सुरऋषी नृपर्षी। आवत भये शैल सुख पर्षी ॥
योगी सिद्ध बिप्र अरु देवा। आये लखन तहां को भेवा ॥
मेरु हिमादि अचल ये सारे। निजनिज दिब्यस्वरूपहिधारे ॥
लैलै भेंट भेंटके काजा। आयेगिरिसबजित गिरिराजा ॥
गोबर्धन भे स्वर्ण स्वरूपा। नगमहँ नगके शृङ्ग अनूपा ॥
दरी चारु छबि करी अपारा। इबिधिसबन नगनाह निहारा ॥
द्विजते सब पूजन करवायो। ब्रजबल्लभ बिधि सकल बतायो ॥

सब सामग्री राख्यो आगे। ठाढ़े जोरि करन मुद पागे॥
दो० नन्द और उपनन्द गण, बृषभूरज समुदाय।
गोपी गोप सचोप मिलि, नाचहिं हरष बढ़ाय॥
बरषहिं सुमनस सुमन सुजाना। प्रमदा सकल करहिं कलगाना॥
कहि न सकै कोउ शोभा सोई। भूप भई तेहिक्षण तहँ जोई॥
तेहिक्षण कृष्णरूप करि दूजो। प्रकटे तहँते जहँ तिन पूजो॥
श्यामस्वरूप बाहु बहु धारे। अन्नकूट भोजन बिस्तारे॥
खात जात अरु स्वाद बतावत। बोले बिहँसि प्रेम सरसावत॥
बरबर कहँ माँगहु ब्रजबासी। देत तुमहिं तुम आनँदरासी॥
ते सब कहत भये शिर नावे। यह सब भयो कृष्ण के भावे॥
दिन दिन गोधन बढ़ै हमारे। होइ भक्ति तव द्रोन दुलारे॥
दो० सुखीरहैं घनश्याम बल, ये ब्रज के दृग दोय।
बरष बरष प्रतिहरष सों, ऐसी पूजा होय॥
सो० सुनि नभजगमगज्योत, कहत महतबचनहि बिहँसि।
ऐसेइ होइ उदोत, कहि इमि अन्तर्धान भे॥
बर बृषभान सकल बृषभानू। सकल नन्द अरु नन्दप्रधानू॥
नव उपनन्द और ब्रजबासी। हलधर गिरिधर आनँदरासी॥
सिद्ध देव द्विज बगुधर शैला। बन्दि गिरिहि लीन्हे गृह गैला॥
कृष्ण चरित यह चारु अपारा। पर्वतपूजा सब सुख सारा॥
सुनै पढ़ै सो सब सुख पावै। कृष्णलोक छबि ओकसिधावै॥
मम मुखते सुनि दूजी पूजा। क्रतुके हृदय क्रोध अतिकूजा॥
संबर्तक घनगण बुलवाये। जोर घोर ब्रज ओर पठाये॥
करत नाद भरि सागर पानी। ब्रजपै चले भृकुटि निजतानी॥
दो० कृष्ण पीत पाण्डुर हरित, बीर बधू सम दक्ष।

केते नील बिचित्रबहु, चले धुनत निजपक्ष ॥
गज सम बुन्द लगे बरषावन । गरजि गरजि घनघोर मचावन ॥
धार सकल ससतीर समाना । बात उड़ावत बिटप मकाना ॥
तड़ तड़ तड़ित टूटि महि परई । अम्बर महँ कठोर कड़ कड़ई ॥
भयो भयङ्कर शब्द दिशन में । सूझि न बूझिपरै सो क्षन में ॥
सात लोक बिलसह अतिकम्पे । क्षुभित सिन्धु दिगकुञ्जर चम्पे ॥
आरत ह्वै सिगरे ब्रजबासी । बन्दे कृष्णचरण सुखरासी ॥
बारि बिमोचन करि लोचन ते । कहत बचन उरभरि शोचनते ॥
कृष्ण कृष्ण प्रणतारति नाशन । कृपाकरहु कृपालु दुखशासन ॥
दो० तुम्हरे भाषे हम गिरिहि, पूज्यो क्रतुकहँ त्यागि ।
रक्षहु अब यह कोपते, जाहिं कहां सब भागि ॥
सो लखि बिहँसि जनार्दन बोले । सुन्दर बचन कृपा करि खोले ॥
जिन खायो सो करिहिं सहाई । चलहु तहां ब्रजजन समुदाई ॥
जाइ कृष्ण गोबर्धन पासा । बाम बाहुते कीन्ह तमासा ॥
लघु अंगुरी पै शैल उठायो । जिमिगजशुण्डकमल सरसायो ॥
अरिके शीश बोझ धरि दीन्हा । जासु उपान तासु शिर कीन्हा ॥
बहुरि सबन तें कह्यो पुकारी । आवहु लै सँग गो नर नारी ॥
भो सुनि सकल गोप हरषाये । कृष्ण कहे गिरि अन्दर आये ॥
ब्रजबाला बछरा गो ग्वाला । मुखते भाषहिं जय नँदलाला ॥
दो० तब बहु बालक लकुटि लै, गिरिमहँ रहे लगाय ।
जामहँ हरिके हाथ ते, इत उत नहिं डगिजाय ॥
जब जल भयो बगल ते आवत । तब हरि भये शेष कहँ ध्यावत ॥
बैठे आइ शरीर सकेला । गिरिप्रमाण जिमि सागरबेला ॥
ऊपर राखो चक्र सुदर्शन । अतिद्युति करतवारिकहँकर्षन ॥

सातराति दिन बरष्यो बारी। प्रलय काल के समब्रत धारी॥
शक्र बक्र ह्वै गज चढ़ि धायो। सदलचक्रधर मैं रिसियायो॥
बज्र उठायो मारन काजा। ऊरध अचल रह्यो कर राजा॥
तब सब घनन सहित सुरराई। भगेउ श्वानसम दुमहिं दबाई॥
उये अर्क अम्बुद छितराये। सरिता शीतल पङ्क बिलाये॥

दो॰ निर्मल नभगत तिमिर दिशि, सुन्दर बहइ बतास।
खग मृग सब बोलन लगे, भो शुभ शरद प्रकास॥

हरिके कहे तबै नर नारी। कढ़े शैल तरते सुखधारी॥
शिशुन कहा यह हम न उठावा। तब हरि निजकर नेक दबावा॥
त्राहि कह्यो जब मरिबे लागे। बहुरि उठायो करुणा पागे॥
जब सब निकरिगये निज गैला। जहँ को तहँ तब राख्यो शैला॥
तब हरि सब ग्वालन ढिग आये। गिरिधर नाम परमप्रिय पाये॥
अक्षत गन्ध धूप अरु दीपा। पूजेहु कृष्णहि सबन महीपा॥
नन्द यशोदा बल अरु बूढ़े। सन्नन्दादि ज्ञान आरूढ़े॥
कण्ठमाहिं गिरिधरहि लगाये। आशिष दीन परमछबि छाये॥

दो॰ कोउ गावत नाचत कोऊ, चढ़े चौगुने चोप।
छबि छावत आवत भये, निज निज गृह सब गोप॥

पुनि सुमनसन सुमन बरषायो। नन्दनते नव बिबिध मँगायो॥
लागीं करन अप्सरा गाना। जयजय भाषहिं देहिं निशाना॥
निज सँग सब सुरयूथ लेवाये। तेहिक्षण तहँ चलि बासव आये॥
हरिके चरणन पर धरि माथा। अस्तुति करत जोरि दोउ हाथा॥

तोटक छन्द॥

जय पूर्ण पुराण कृपालु हरे। अखिखण्डन श्रीगिरिराज धरे॥
प्रकृती पर दैवत देवन के। परमेश्वर भेव सुभेवन के॥

अवतार धरे दश आप बरे । परिपूरण तामहँ कृष्ण परे ॥
खल कन्द निकन्दन हेतु सोई । जिमि भूतल धर्म प्रकाश होई ॥
ब्रजनारि निवास प्रकाश अती । भगवान अनेक हिरन्यपती ॥
झषकेतु बिमोहन बेणु धरे । बृषभानुसुतापति रूप बरे ॥
अज बिष्णु अनादि मुकुन्दप्रभो । सुरभीपुर नायक बिश्वबिभो ॥
अरिअर्दन अच्युत गुञ्ज गरे । जनआरत को सुख देत खरे ॥

दो० कृपा कीजिये दीनपर, जानि आपनो दास ।
तव मायाबश मैं कियो, यह कुकर्म अघरास ॥

जौन शक्रकी अस्तुति पढ़ई । सो नर भवसागर ते कढ़ई ॥
इमि कहि सुरनसहिततेहिकाला । बन्देउ चरण कमल गोपाला ॥
तब सुरनाथ कामगो पयते । करत भयो अभिषेक बिनयते ॥
नभगङ्गा जल भरि ऐरावत । निज शुण्डनते भयो चढ़ावत ॥
देव यक्ष किन्नर छबि छावत । मुदितभये सब अस्तुति गावत ॥
गिरिभे मुदित जानि अभिषेकू । सूखी घास रही नहिं नेकू ॥
हरि गिरि पर निज बरकहँ धारा । भयो चिह्न सो तीर्थ अपारा ॥
पदकर हैं तित चिह्न प्रबीना । परसत जाहि सकल अघछीना ॥

दो० ऐरावत के चरण को, चिह्न तहां नरपाल ।
सुरभी को पद देखियत, तितही परम रसाल ॥

नभगङ्गा को पानी जोई । भई मानसी गङ्गा सोई ॥
गोबिन्दहि अस्नान करायो । सो गोबिन्दकुण्ड कहवायो ॥
कोऊ काल जलसो पय होई । परसत अघकहँ करषत सोई ॥
बन्दि प्रदक्षिण करि क्रतु गयऊ । सुरंग सुमन बरषावत भयऊ ॥
जो यह सुनै कृष्ण अभिषेका । लहै दशाश्वमेध सबिबेका ॥
जो गिरिबर श्रीकृष्ण उठायो । सो सन्देह सबन कहँ आयो ॥

अति रिसाइ सब गोपी ग्वाला । जाइ नन्द ते बचन निकाला ॥
तव कुल कोउ नहिं अद्रि उठायो । तुमहूं शिल न सकत टसकायो ॥
दो० कहँअगकहँ सुकुमारअँग, लखि अतिअचरज फैल ।
शुन संगी भयते धस्यो, शुन सुक्तासम शैल ॥
गौर बरण तुम नन्द हौ, गौरि यशोदा बाम ।
परमबिलक्षण तवतनय, केहिहित भो अतिश्याम ॥
बल बल करै तो संशय नाहीं । शशिकुलछत्रशिरोमणिआहीं ॥
कासु तनय यह देहु बताई । करब जाति बाहर नत भाई ॥
सो सुनि बिकल यशोदा भारी । बोले बचन नन्द ब्रतधारी ॥
गर्ग बाक हम भाषब भाई । जामहँ संशय दूर पराई ॥
कमलापति रघुपति मति माना । श्वेत दीपपति नहरि सुजाना ॥
यज्ञ सुनरन नारायण जाने । आदिअखर मिलिकृष्णबखाने ॥
जहँ खटपूरण लीनहि पाये । परिपूरण तम सो कहवाये ॥
श्वेत लाल पीरे युगयुगमैं । भेकलिआदिकृष्णकलियुगमैं ॥
दो० बसु इन्द्री को कहत कबि, तासु देबि आधार ।
बासुदेव ताते बिदित, द्रब्य देव निरधार ॥
बृषरबि सुता राधिका जोई । तिनकी अहै नारि प्रिय सोई ॥
अमित अराडपति कृष्ण कृपाला । परिपूरण तम दीनदयाला ॥
भुवकर भार नशावन काजा । भये कंसअरि ब्रज शिरताजा ॥
बांचेउ गर्ग नाम की पत्री । नहिं क्षत्री यह पै नहिं क्षत्री ॥
ताते मोहिं न नेकु सन्देहू । सुनिपुनि सबन कहा गुनि येहू ॥
जब तव भवन गर्ग मुनि आये । सकल नाम के अर्थ बताये ॥
तब तुम हमहिं न दीन्हबुलावा । रहइनजाति मनुजछबिछावा ॥
इमि कहि सकल उठे रिसिआये । बर बृषभानु भवन चलिआये ॥

दो० राधाजनकहि देखिकै, जात जातमद गोप।
कोप तोप छांड़न लगे, करि सुख चोपहि लोप॥
हे बृषभानु तजहु नँदराजहि। गोपजाति ते छली दराजहि॥
बोले बृषभभानु यह बानी। कौन दोष ब्रजपति महँ ज्ञानी॥
गोपमुकुट मम प्रिय नँदराई। सुनि बोले ते दृग अरुणाई॥
सुनियत तुम चाहत सम्बन्धा। कबहुँ न करेहु भूलि असधन्धा॥
नँद संगी तुमहूं कहँ तजिहौं। पै न जातिमहँ कृष्णहि भजिहौं॥
पितु सम बपु नहिं बल बहुताई। सुनि बोले बृषभानु बुझाई॥
भाषत हम जीवानुज बानी। जामहँ होइ सकल भ्रमहानी॥
अमित अण्डपति गोपुरबासी। सबते पर प्रभु आनँदरासी॥

दो० भूके भार उतारिबे, आये बिधि के बैन।
कंसादिक कहँ मारिहैं, अच्युत आनँदऐन॥
कृष्ण केरि पटरानी जोई। मम गृह प्रकट राधिका सोई॥
होइहि इनको चारु बिवाहा। बट भाण्डीर निकट सउछाहा॥
श्रुतिमुख ताहि करैहैं आई। यमुना तट सब साज सजाई॥
ताते राधा हरिकी प्यारी। रमा उमा की करिबेवारी॥
हम आभीर सकल ब्रजबासी। गऊलोक के अहहिं निवासी॥
इमि कहि गये गर्ग आगारा। तब हम सत्य हृदय निर्धारा॥
बेद ब्रह्मजय अहइ प्रमाना। नतरु करहु जस तुम मनमाना॥
सो सुनि बिस्मित संशय छोड़ी। बोलत भये सकल मुखमोड़ी॥

दो० यह राधा हरिकी प्रिया, सत्य कहेउ बृषभान।
तव घर अब बैभव बहुत, शोभा सरस सुजान॥
यान सहस अरु कोटिन घोरे। डोली अरु गजराज अथोरे॥
कोटिन सुरभी हेम बिभूषित। मन्दिर सुन्दर दुखते दूषित॥

दिन दूनी बढ़ती दुख हरई। देखि तेज तव कंसहि डरई॥
कानकुब्जपति भये भलन्दन। सो तव श्वशुर दरिद्रनिकन्दन॥
तव सम बैभव नन्दहि नाहीं। कृषी करत गृह गऊ रहाहीं॥
जो परिपूरणतम सुत तासू। तौ मोहिं देहु परीक्षा आसू॥
सो सुनि बर बृषभानु बिचारी। मोतिमाल मँगवायो भारी॥
कोटिन दाम बड़ी अरु छोटी। भरि भरि राखी किस्ती मोटी॥

दो० सबके देखत दाम सो, दीन तहां पठवाइ।
अपनो चाकर साथ करि, कहि दीनों समुझाइ॥

ते सब राखि नन्द के आगे। शीश नाइ यह भाषन लागे॥
ब्याह योग लखिकै निजकन्या। बर बृषभानु गोपकुल धन्या॥
चारु रूप गिरिधर सो ढोटा। सात बरष को सुन्दर छोटा॥
अति उत्तम बिचारिकै जोरी। भये मुदित सम्बन्धहि जोरी॥
भेज्यो तिलक दाम भरि बहँगी। तुमहुं सुताहित साजहु सोहगी॥
है यह जातिरूप अनुसारी। बिस्मित भये नन्द सुनि भारी॥
लै सब सो यशुमति ढिग आये। लगे बिचारन संशय छाये॥
मुक्ता होइ बात तव रहई। अधिक नहीं तौ सम तौ चहई॥

दो० नतरु हँसी अति जगत में, कीजै कौन उपाइ।
कैसे बदन दिखाइये, ब्याह ब्याधि यह होइ॥

नन्द करत अति शोच महाना। अन्तरिक्ष आये भगवाना॥
शतमाला निज करन उठाये। खेती होत रही तहँ आये॥
इक इक काढ़ि हारते मोती। बोये सकल नखतकी ज्योती॥
नन्द तबै शतमाल सहेजा। धय्यो जमामहँ ते शतरेजा॥
शोचत औरहु हानि भई है। आह दई कस बिपति दई है॥
बस कै केशव लीन्ह उठाई। इमि चिन्तत आये यदुराई॥

सो बिरतान्त ब्रजेश बखाना। तबै बिहँसि बोले भगवाना ॥
हम केदार माहिं तेहि डारा। जामहँ उपजै तौन अगारा ॥
दो० सो सुनि नन्द रिसाइ कै, चले सुवन के साथ।
श्याम सोई थल लैगये, पकरि बबा को हाथ ॥
लखे बिटप कोटिन मोतिनके। हरित सुपल्लव शशिज्योतिनके ॥
लटकि रहे ललाम अति गुच्छा। लगतनखतलच्छासमअच्छा ॥
ता मुक्ता ते मुकता जानी। हरषे नन्द सुवन पहिंचानी ॥
कोटि भार शकटनि महँ भरिकै। भये पठावत आनँद करिकै ॥
दूत बृषभरबि सम्मुख आये। समधी को बिरतान्त सुनाये ॥
गोप भये गत संशय सारे। कृष्णहि पूरणतम निरधारे ॥
राधाकृष्ण एक द्वै रूपा। निश्चय सबन कीन्ह नरभूपा ॥
जहँ हरि मुक्त कीन्ह सो मुक्ता। भयो सरोवर सो छबि युक्ता ॥
दो० तहँ इक मोती दान कहँ, जो नर करत नरेश।
लाखगुणो पावत फलहि, उत्तम देश हमेश ॥
गिरिउत्सव जो सुनै सुनावै। मनइच्छित अबिरलफलपावै ॥
नृप तब कह्यो गोबर्धन माहीं। कहिये कितने तीरथ आहीं ॥
मुख्य मुख्य मोहिं कहिय बखानी। सुनिबोले गुनिकै मुनिज्ञानी ॥
तीरथरूप शैल यह अहई। बृन्दाबन गोगुरमहँ रहई ॥
गोपी गोप कृष्ण प्रिय सोई। पूरण ब्रह्म छत्र सम होई ॥
जेहि पूज्यो श्रीनन्दकिशोरा। कर धरि इन्द्र जोर कहँ तोरा ॥
राधापति परिपूरण स्वामी। कोटि अण्डपति खगपतिगामी ॥
लै अर्भकन जहां भगवाना। क्रीड़ा करत भये बिधि नाना ॥
दो० गङ्गा कहिये मानसी, जहँ नित श्याम बिहारु।
तहां कुण्ड गोबिन्द बर, चन्द्र सरोवर चारु ॥

सो० राधाकुण्ड सुजान, कृष्णकुण्ड नरत्रान पुनि।
कुसुमाकर परिमान, बहुरि कुण्ड गोपाल को॥
कृष्ण मुकुट तहँ देवै जोई। देव मुकुट पद पावै सोई॥
चित्र लिख्यो जहँ मदनगुपाला। चित्रशिला सो अहइ नृपाला॥
जहां बजायो शिला मुरारी। है बादिनी नाम अघहारी॥
जहँ हरि खेल्यो कन्दु बनाई। कन्दुक तीर्थ अहै सो भाई॥
स्वर्ग दिखायो जहँ घनश्यामा। लोटि तहां पावै हरिधामा॥
जहँ अम्बर गोपिन के चोरे। बसनतीर्थ सो सुखद अथोरे॥
तहँ इक दिन बनिता समुदाई। दधि बेंचत निरख्यो यदुराई॥
दो० नूपुर केरो शब्द सुनि, आगे ठाढ़े श्याम।
कर बंशी कटि पीतपट, लकड़ी लये ललाम॥
बोले ऐंठि अनङ्ग लजावत। मोहिं दधिदान देहु मनभावत॥
सुनत कह्यो ब्रजबालन ऐसो। दधिलम्पट गवाँर तू कैसो॥
यशुदहि जाइ कहूं तो मारै। सुनत कंस गहि नगर निकारै॥
बोले तब सकोप भगवाना। कहां कंस खल जियतअयाना॥
क्षणमहँ बांधि तेहि यमपुर देहैं। हम इतके दानी दधि खैहैं॥
भाषि मटुकि गहि झटकी पटकी। खायो गोरस नटसम लटकी॥
मटकी गिरे ग्वालिनी मटकी। भला भला कहिकै गृहसटकी॥
तब हरि लै मण्डली निकटकी। काढ़त डारि करन दधि टटकी॥
दो० छटकि चटकि सुन्दर लटकि, प्रमुदित राधारौन।
कदँब पलाश के द्रोन कर, गटकि गये द्रुत तौन॥
तहँ तरुमहँ निकरहिं नृप द्रोना। द्रोनतीर्थ बिश्रुति अघखोना॥
जो दधि देइ खाइ तित भाई। सो गोलोक परमपद जाई॥
आंख मिचौली खेली माधव। कौकिकतीर्थकहहिंतेहिमाधव॥

तहां कदँबखण्डी छबि छायन। नर लखि जाहि होत नारायन॥
जहँ शृङ्गार कीन्ह हरि प्रियको। सो शृँगारमण्डल प्रियजियको॥
जासु रूप ते हरि गिरि धारो। सो तित छप्यो नरेश बिचारो॥
बसु शत चार सहस कहि संवत। जैहै कलि तब गोबर्धनच्युत॥
स्वतःसिद्ध तब आकसमाता। कढ़िहैं गुफा बीचते ताता॥

दो० देवदमन श्रीनाथ अरु, गोबर्धनधर देव।
तिन्ह कहँ हरिजन कहहिंगे, बर बल्लभ पद सेव॥

जो करिहैं दर्शन श्रीजीको। तिन्हको जन्म हरिहु ते नीको॥
बदरीनाथ द्वारकानाथा। रङ्गनाथ पुनि श्रीजगनाथा॥
चार चार दिशि के पति गाये। मधि श्रीनाथ परम छबि छाये॥
पञ्चनाथ कलि पावन जोई। निरखे नर नारायण होई॥
चार नाथ दरशै नहिं श्री जी। ताकी यात्रा बृथा कही जी॥
श्रीनाथहि देखै जन जोई। पांच नाथ दर्शन फल होई॥
अरु ऐरावत पद तित अहई। परसि ताहि नर बर गति लहई॥
हरि कर चरणचिह्न बर तहँवां। लखिजनजातजगतपतिजहँवां॥

दो० इन्हहिं आदि तीरथ सकल, शैलगङ्ग प्रति आहिं।
जेहि दरसे परसे परम, गति कहँ मानव जाहिं॥

तब नृप कह्यो गोबर्धन माहीं। तीर्थ अङ्ग प्रति कौन रहाहीं॥
तब नारद नामक मुनि ज्ञाता। बोले बर बिदेह प्रति बाता॥
हे नृप ब्रह्मसरिस गिरि केरे। अङ्गन हैं प्रमाण करि नेरे॥
सब दिशि अहैं असंशय होहू। कहत सहित प्रमाण हम तोहू॥

छं० मण्डल बर शृङ्गारकेर गिरि कर मुख नरपति।
अन्नकूट जहँ कीन्ह देत शोभा थरसो अति॥
नयन मानसीगङ्ग नासिका चन्द्र सरोवर।

चिबुक कृष्णको कुण्ड अधर गोबिन्द कुण्डबर ॥
रसना राधाकुण्ड किल ललिताकुण्ड कपोलकहि।
कुसुमाकर पुनि कनपटी कानकुण्ड गोपालचहि ॥
मुकुट चिह्न जो प्रकट सोई गिरिमुकुट मनोहर।
ग्रीवबादिनीशिला चित्रशिल शीश नृपतिबर ॥
कन्दुकतीरथ कोष बसनतीरथ कटि जानहु।
द्रोनतीर्थ हरिपीठ उदर कौकिक पहिंचानहु ॥
उर कदम्बखण्डी परम मन सुचिह्न हरिचरणको।
शृङ्गारमण्डलीजीवगनिइमिसमुझहुगिरिबिरनको॥
दो० गोपद ताके पक्षहैं, हरिकर चरण सबुद्ध।
गजपदमहँ सबकेर पद, तामहँ गिरहु प्रसिद्ध ॥
पुच्छकुण्ड सों पुच्छ है, बत्सकुण्ड बल सोध।
शक्रसरोवर कामकहि, रुद्रकुण्ड गिरि क्रोध ॥
धनदतीर्थ उद्योग सो, यम तीरथ हंकार।
ब्रह्मतीर्थ सुप्रसन्नता, इमि नग अङ्ग उदार ॥
परम मनोहर अघहर सारे। गिरिके अङ्गमाहिं बिस्तारे ॥
गिरिबिभूति जे सुनहिं सुजाना। ताकहँ होइ सकल कल्याना ॥
हरिके उरते प्रकट गिरीशा। परम पुण्यप्रद हे नरईशा ॥
कीन्ह प्रश्न तब भूभरतारा। किमि हरिउरते गिरिअवतारा ॥
तब नारद बोले बरबाता। प्रफुलित नहिं उर हरष समाता ॥
गऊलोक की उतपति सुनिये। पै अघकी अतितस्कर गुनिये ॥
पुरुष अनादि कृष्ण परिपूरन। बहुगुणप्रकृतिरहितश्याम ज़तन॥
दो० स्वयंज्योति अणिमाजगत, परम निरन्तररूप।
जहँ न काल चालत कबहं, श्रुति जेहि भाषत भूप ॥

मायागुण न रह्यो जगमाहीं। मन चित अहंकार यह नाहीं॥
इच्छा सोइ साकार बिचारा। प्रथम शेष जानहु अवतारा॥
तिनके संग भयो गोलोका। जेहि लखि नाहिं पापके थोका॥
अमित अङ्ग प्रकटे सउमङ्गा। दक्षिणपग ते निकरी गङ्गा॥
बामचरण अँगुठा ते यमुना। प्रकट परस जेहि परसत यमु ना॥
भयउ गुल्फते कनक जराऊ। दिव्य रासमगडल नरराऊ॥
समाचार जित पादप नाना। जहँअलिअवलिकरहिंकलगाना॥
नवनिकुञ्ज जङ्घा ते भयऊ। जिनहिंदेखि भवसंशय गयऊ॥

दो० बृन्दाबन भो जानुते, सब बन को शिरमौर।
उरते लीलासर भयो, पुनर्जन्म को चौर॥

कटिते धरणि रोमते बेली। प्रकट कृष्णमनइच्छित केली॥
भये नाभि ते पङ्कज राजा। जो जल को छबिदेहि दराजा॥
बायु बिचलिते निकरो सुथरा। जङ्घा ते द्वारावति मथुरा॥
करते श्रीदामादिक ग्वाला। नन्द भये मणिबन्ध रसाला॥
करतल ते उपनन्दन जानो। भये कन्ध ते षट बृषभानो॥
मनते भई गाय नरपाला। बुधि ते बृन्दाबिपिन रसाला॥
बाम अङ्गते श्री भू बिरजा। लीलाचारि त्रियहिहरिसिरजा॥
लीला सोइ राधा कहवावै। सबते हरिहि जौन अति भावै॥

दो० प्रकटी राधा हस्त ते, ललिता आदिक बाल।
अवरहु रोमन ते भईं, सो जानहु नरपाल॥

इहि बिधान गोलोक बनाई। निबसे प्रिया समेत कन्हाई॥
करत बिहार अनेक प्रकारा। परिपूरणतम परम उदारा॥
एक दिवस निर्तत रस रासा। चारु झकोरत पवन सुबासा॥
बरमालती चहूं दिशि महकत। यमुनलहरतट लहलहलहकत॥

ताल मृदङ्ग चङ्ग धुनि होई । सो शोभा कहि सकै न कोई ॥
भौंरे बहु दौरे बौराने । राधापतिहि स्वबश करिजाने ॥
करि कटाक्ष उत्तम अति प्यारी । कहत एक बर देहु मुरारी ॥
सो सुनि बिहँसे कृपानिधाना । कहत बचन सुख गहत महाना ॥

दो० तुमहिं कहा नाहिं देइहै, अहो चैन की ऐन ।
तजि संशय मांगहु सकल, कह्योप्रिया सुनि बैन ॥

बृन्दाबन निकुञ्ज के माहीं । रास योग कोउ सुथल इहाहीं ॥
बिरचहु अति रमणीक मुकुन्दा । जामहँ जाइ दूरि दुखद्वन्दा ॥
सोसुनि हरिनिज उरहि निहारा । जानि अङ्ग महँ सबते प्यारा ॥
सबते लखत सुनहु नृप तुरते । सजल तेज भो निकसत उरते ॥
बढ़त भयो सो शैल समाना । रतन धातुमय बरदरशाना ॥
बकुल कदम्ब अन्य तरु लागे । निरझर झरहिं दरी के आगे ॥
बढ़त चल्यो सो परम प्रयोजन । लांबो गयो कोटि शतयोजन ॥
सहस शीश उन्नत दरशाई । योजन शतलख केरि उँचाई ॥

दो० कोटि दिवाकर सरिस द्युति, सकल रतन अरु हेम ।
योजन कोटि पचीस द्वै, उन्नत ताको नेम ॥

गोबर्धन शत शृङ्ग कहायो । बहुरि बढ़त हित सों उमदायो ॥
तब व्याकुल गोलोक निहारी । तापर कर मार्‌यो गिरिधारी ॥
कितनो बढ़िहै ये अब भाई । लोक रहै कै जाइ नशाई ॥
मुदित भई तेहि लखिकै राधा । नित्य तहां बिहरत गतबाधा ॥
कृष्णतनय बपु कृष्ण सुजाना । जगमगनगअघठगजगजाना ॥
द्वीप शाल्मली में गिरि द्रोना । तागृह प्रकटे श्याम सलोना ॥
ब्रजमहँ तिहि पुलस्त्य लैआये । सो हम पूरब तोहिं सुनाये ॥
[illegible] गोलोक समाना । महिमहँ बढ़िहै शैल महाना ।

दो० ताते दीन्हो शाप यह, तिल भरि घटहु मुनित्त।
यहि बिधान तुमतें कह्यो, शैल कथा सत चित्त॥
सुनहु एक इतिहास सुजाना। जाके सुने होइ अघहाना॥
बित्त नाम द्विज कोउ इकराजा। आयो मथुरा हो कछु काजा॥
फिरिगृहचल्यो काम निजकरिकै। शनै शनै उर आनँद भरिकै॥
गोबर्धन कर असम उठायो। चिकनो छोट लखि मन भायो॥
मगमहँनिरख्योनिशिचरकाला। षटभुज तीन चरण बिकराला॥
उरमहँ मुख कर भरकी नासा। सात हाथकी जीभ निकासा॥
ओठ तीन करिके अतिमोदे। दन्त चोटकर बाहर खोदे॥
तिहिलखि बिप्र डरयो मनमाहीं। कीन्ह बिलापसकयो चलिनाहीं॥
दो० निशिचर धायो खान हित, तब द्विज सो पाखान।
मार्‍यो राक्षस दुष्टकहँ, तासु सिधार्‍यो प्रान॥
श्यामस्वरूप कमल से लोचन। भयोनिशाचर जगदुखमोचन॥
कुण्डल मुकुट बेणु बनमाला। बेत पीतपट परम रसाला॥
कामदेव को मोहनहारो। बोलो बचन बन्दिपद प्यारो॥
धन्य बिप्र तुम अतिहितकारी। राक्षसपनते देह निकारी॥
परसत अस्म भस्म भो पापू। नतरु जन्मभरि हो परितापू॥
सुनि द्विज कहतभयो यह बानी। मोहिं सामर्थ्य भयो यह ज्ञानी॥
पाथरकर फल भाषहु भाई। बोलो अमर हरष कहँ पाई॥
यह गिरिराज कृष्णकर रूपा। दरशन करत तरत नरभूपा॥
दो० गन्ध सुमादन शैलपर, करत यात्रा जोइ।
फल ताते शतलक्ष गुण, गिरिके दर्शन होइ॥
छप्पय मनुज जाहि केदार माहिं तप करै अपारा।
मंवत पांच सहस सोद फल गिरिदरश बिचारा॥

एक भार जो कनक मलयगिरि ऊपर देई ।
इतनाको फल कोटि गुणित मासामहँ होई ॥
पर्बत मङ्गल प्रस्थपर पुरट पुरुष जो देतहै ।
मुक्तिहोत सो शैल यह चौगुन देत सुहेतहै ॥
ऋषभकूटगिरि बहुरि कोलगिरि जो नर जाई ।
सुबरण सींग मढ़ाय कोटि संकलपे गाई ॥
होत पापते मुक्त पूजि सुर पितर सुजाना ।
ताते इत लख गुनो होत दै इक गोदाना ॥
पुण्यक्षेत्रमहँ पुण्य जो करै मुदित तप पालतानि ।
ताते इत बहु गुणित फल सबते उत्तम शैलभानि ॥
सत्य शैल ऋषिमूक देवगिरि मूक पहारा ।
जहँ यात्रा करि तरै जगत हम सत्य उचारा ॥
गोबर्धनकी फेरि करि लख गुण फल लेई ।
श्रीगिरि बिद्याधर सर माहिं न्हाहिं जन जेई ॥
तपकरि फल सतयागको तौन लहत है महतमति ।
पुच्छकुण्डगिरिराजमहँइकदिन फलसतलाखसाति॥
ब्यङ्कटगिरि अरु बिन्ध्याचल कृतस्वानु बिप्रबर ।
जहँ करि शत नर परम कुलिश धर ॥
करि सुएक सोइ यज्ञ गोबर्धन पै छबि छाई ।
नाक नाकपर राखि लात हरिपुर सो जाई ॥
चित्रकूटमहँ जाइकै न्हाइ रामनवमी दिवस ।
अक्षय तृतिया जाइ गिरि पारिपात्र दिबिकेहबस ॥
कंकुभगिरिमहँ अचलाऋषि तिथिपरसहि सज्जन ।

गोदावरि गुरुसिंह कुम्भ केदार नहाना।
पुष्कर पुष्य नक्षत्र फाल्गुन नैमिष जाना॥
कुरुक्षेत्र बिग्रहन में चन्द्रग्रहण बारानसी।
मधुपुर जहँ जन्माष्टमी करत राति अघकीनसी॥
हरिबासर कार्त्तिक के मधि अति पुण्य स्वरूपा।
सूकरक्षेत्र नहाय पुण्य सो अक्षय रूपा॥
खण्डव बन द्वादशि दिन दिनकर मकर प्रयागे।
कार्त्तिक पूनो के दिन बटबटेश अनुरागे॥
वैधृत में महिष्मती अवध नगर रघुबर नवमि।
अहहिं पुण्य अक्षय सकल ठौर ठौरमहँ हरिनवमि॥

दो० स्नान दान मख श्राद्धको, होत सकल फल जौन।
दर्शन महँ गिरिराज के, नर पावत बर तौन॥

जो नर गोबिन्द कुण्ड नहाई। हरि सायुज्य लहै द्विजराई॥
सतनृप पशू सहस हयमेधा। मानससरिस मनहिं अतिमेधा॥
तुम दर्शन पर्शन किय नगको। को अस बड़भागी नर जगको॥
मोसम होन कोऊ अघहारी। शिला परसि यह दशा हमारी॥
सुनि बोले द्विज बिस्मित बानी। पूर्ब जन्म महँ तुम को ज्ञानी॥
कहो कथा सो उत्तम ताता। सिद्ध सुनत बोले बर बाता॥
हम हैं बैश्य धनी सुत पापी। द्यूत निरत खल साथ सुरापी॥
सदा देत रण्डिन कहँ लडुवा। मेरे मित्र रहे सब भडुवा॥

दो० एक दिवस मातहि पितहि, हम मार्‍यो बिष देइ।
कीन्ह शीश बिन नारि निज, कर असि तीक्षण लेइ॥

लै गणिका कहँ धन सब साथा। पुरते निकरि गये द्विजनाथा॥
बारबधू बधि कूँआ डार्‍यो। सहसन जनभरि लालचमार्‍यो॥

शतव्रतधर द्विजगनि बधिडारे। क्षत्रिय बैश्य शूद्र बहु मारे॥
गो शिकार हित कीन्ह पयाना। काटेउ सर्प गये कढ़ि प्राना॥
यमगण मोहिं बांधेउ अरु मारा। मुद्गर पाश कृपाण कुठारा॥
ककुम्भि पाक मन्वन्तर एका। कल्पत प्रेमहि अङ्गहि सेंका॥
नरक लाख चौरासी माहीं। इक इक अब्द रह्यों मैं ताहीं॥
तब मैं कोल भयों दशबारा। सात जन्म केहरि कर बारा॥

दो० जन्म सहस बिषधर भयों, सत्य सुनहु द्विजदक्ष।
अब कठोर बन महँ भयों, राक्षस भयद प्रतक्ष॥

शूद्र शीश चढ़ि मैं इत आयो। चहत रह्यों बृन्दाबन जायो॥
कृष्ण बरण भुज द्वै छबिभारे। कृष्णपार्षदन मारि निकारे॥
जब तुम मोहिं छुआई बटिया। तब मम ऐसो रूप प्रकटिया॥
इतनेइ कहत महतरथ आयो। अयुतअश्वध्वजसहसलगायो॥
घन समान ध्वनि करत सुजाना। गऊलोक ते आइ तुलाना॥
द्विजके लखत सुरथ चढ़ि सोई। चलेउ कृष्णपुर अतिछबि होई॥
तेज बढ़ो कछु कहो न जाई। दशहु दिशाप्रकाश अधिकाई॥
कृष्णलोक सो आयो राजा। जो सबते पर परम बिराजा॥

दो० बिप्र मुदित फिरिकै बहुरि, गिरिकहँ पूजेउ जाय।
गुणि प्रभाव आनँद भरे, इहि बिधान नरराय॥
यह मैं कह्यों महीपमणि, शैलराज को खण्ड।
जाकहँ पढ़ि सुनिकै मनुज, सुखते रहत अखण्ड॥
करहिं कानते पान जे, बिश्वत्राण को गान।
नन्द सरिस सानन्द सो, रहत सत्त्व परमान॥

सो० धारि कृष्ण को ध्यान, कह्यो शैल आख्यान यह।
पुरयो श्रीभगवान, ज्ञान न कछु मम बुद्धिमहँ॥

अथ माधुर्यखण्डप्रारम्भः ॥

सो० करत कोटिब्रह्मण्ड, अतिअखण्ड करुणाकरन।
कहत माधुरीखण्ड, बन्दि प्रथम गिरिवरधरन ॥
दो० खड़े माधुरीलतन में, मधुर माधुरी खानि।
श्याम परमपर माधुरी, धरन माधुरी जानि ॥
जनक महीपति बचन निकाला। श्रुतिरूपादि भईं जे बाला ॥
तिनकर मोहिं कहिये इतिहासा। सुनि बिरञ्चि सतगिरा प्रकासा ॥
श्रुतिरूपा ब्रजमें सब जाईं। गोपभवन गोपी कहवाईं ॥
बृन्दासखिहि तिन्हहि यह भाषा। प्रभु पूजहिं मेरी अभिलाषा ॥
बृन्दा तिन्हहि दीन्ह बरदाना। तिन्हके भवन जाहिं भगवाना ॥
एक दिवस आधी निशि गये। हरि तिन्हके गृह आवत भये ॥
उठि प्रमुदित पूजेउ श्रुतिरूपा। कहत कृष्णते बचन अनूपा ॥
केहि हित आज अबेर लगाई। ताहू में अतिव्यग्र कन्हाई ॥
दो० कृष्ण कह्यो जो जासु हित, सो न दूरि त्रियबृन्द।
नभदिनकर कहँ लखिउदित, इत फूलत अरबिन्द ॥
मम गुरु दुर्बासा इत आये। हैं भाण्डीर निकट छबिछाये ॥
परब्रह्म बिधि हरि हर गुरु हैं। गुरु सब ते जहान में गुरु हैं ॥
तिमिर अज्ञान अन्ध जगहेरी। किय भल ज्ञान सलाका फेरी ॥
गुरु समान जग अहै न कोई। सकल देवमय गुरुतन होई ॥
ताते हम तित गुरुकहँ पूजी। आये इत अबार नहिं दूजी ॥
सो सुनिते सिगरी शिरनाई। कहत महत संशय उर छाई ॥
परिपूरणतम के गुरु जोई। दर्शन करन चहत हम सोई ॥
अबहीं जैहैं हे गिरिधारी। आधी निशा और पदचारी ॥

दो० मध्यनदी यमुना अहै, कैसे ह्वैहैं पार।
सो उपाय मोहिं भाषिये, बोले नन्दकुमार॥

जाइ कहौ यमुना ते नारी। जो जन्मे ते हरि ब्रह्मचारी॥
तौ मोहिं राह बीच में देहू। गोपी चकित भईं सुनि एहू॥
करन लीन्ह कञ्चन के थाला। साजे छप्पन भोग रसाला॥
चलीं तहां ते सिगरी बाला। कह्यो नदिहि जो कह गोपाला॥
यमुना तबै मध्य मग दीन्हा। बालन गवन बिप्रढिग कीन्हा॥
बट तट लख्यो जाइ दुर्बासा। कीन्ह दण्डवत सहित हुलासा॥
बैठीं घेरि सकल श्रुतिरूपा। राख्यो निजनिज थाल अनूपा॥
प्रथम खाहु मम यह सब कहहीं। सहित प्रसाद प्रसादहि चहहीं॥

दो० इमि सबकहँ लखिकै कह्यो, दुर्बासा मुनिनाथ।
परमहंस मम बृत्ति है, खात न अपने हाथ॥

तुम डारहु जो इच्छा होई। बायो बदन भाषि इमि सोई॥
निज निज थाल उड़ेरहिं नारी। सब समात लखि अचरजभारी॥
जो जो नावा सो सो खावा। मुखमहँ कोटिन भार समावा॥
कन्दर अहै मनहुँ त्रिय जाना। भानुमती के कुम्भ समाना॥
खाली थाली लै सब नारी। खड़ी भईं उर बिस्मय भारी॥
हाथ जोरिकरि मुनिहि प्रणामा। बोलीं बचन सकल ब्रजबामा॥
मुनिमग नाहिं जाहिं किमिपारा। आईं जिमितिमि सकलउचारा॥
यमुना अहहिं मध्य महँ ज्ञाता। मुनिगुनिगुनिमुनिमनकहबाता॥

दो० जाइ कहहु तुम भानुजहिं, मेरे ऐसे बैन।
आशु राह जो देइ है, परम सत्य की ऐन॥

दुर्बासा दुर्बा जल त्यागी। जो कछु खात न अरु बैरागी॥
तौ मग मोहिं देहु हे यमुना। मुनिते सकलचलीं भरिश्रमुना॥

देख्यो मगहि आपगा सोई । कह्यो कह्यो अत्रीसुत जोई ॥
बाटदीन गवनी सब बाला । आइ बहुरि निरखे गोपाला ॥
बैठीं सकल श्याम के पासा । निज सब संशय कीन्ह प्रकासा ॥
हम पायो दुर्बासा दरशन । कहिनजातकछुबिस्मयपरशन ॥
जैसे गुरु तैसेई चेला । तैसोइ छली यमुनजल रेला ॥
तुम्हरे सँग बहु कोटिन नारी । कैसेकै कहिये ब्रह्मचारी ॥
दो० कुम्भकरण के सम भषे, मुनि मन अमित अनाज ।
दुर्बाहारी किमि कही, सुनि बोले ब्रजराज ॥
अहंकार आदिक गुणहीना । निष्कलङ्क निरुपाधि नबीना ॥
अच्युत सर्बगपर भगवाना । मोहिंजानहु यहसत्य सुजाना ॥
तैसेइ अहहिं साधुजन मेरे । इन्द्रीजित गतराग बड़ेरे ॥
तजै प्रपञ्चहि परिडत सोई । सगन तत्त्वमसिकै महि होई ॥
ज्ञान सरिस पवित्र जग माहीं । और बस्तु है एकहु नाहीं ॥
तिनहिं न लगै कर्म जग कैसे । घृत घट महँ जल बिन्दू जैसे ॥
इच्छा एकहु नहिं तिन माहीं । सन्त खवाये ते तरवाहीं ॥
तव इच्छा दुर्बासा खायो । पै न तिन्हैं कछु भूंख सतायो ॥
दो० सो सुनि गत संशय भईं, श्रुतिरूपा महिपाल ।
याहि बिधान इनकी कथा, भाषी भली रसाल ॥
ऋषिरूपन कर चरित अपारा । सुनहु भूप अघअर्दन हारा ॥
बङ्गमाहिं मङ्गल इक गोपा । नवलख गो तहँ सब दुख गोपा ॥
तहँ नृप कछुक काल कहँ पाई । सिगरी सम्पति आशु नशाई ॥
भूप लीन्ह कछु चोरन चोरा । इहि बिधि नष्टभयो चहुँ ओरा ॥
जाते धनहिं होत है पाऊ । हे नृप कहा हवाल सुनाऊ ॥
पांच सहस त्रिय ताहि सुहाई । तामहँ लाखन कन्या जाई ॥

ते सब ऋषिरूपा नरपाला। मनते मङ्गल कहत बिहाला॥
कहां जाउँ कहँ करउँ खुलासा। अशनहुनहिंतहँकहँधनआसा॥

दो० ताते कोऊ भूपकहँ, सौंपै सुता समाज।
निज हित कछु करि लेइगो, येतौ खाहिं अनाज॥

मथुराबासी इक जय नामा। तहँ आयो महि फिरत ललामा॥
जय गुपाल करि जय गोपाला। मङ्गल ते यह कह्यो हवाला॥
नन्दराय सम कोउ जग नाहीं। सुनि मङ्गल चलिगयो तहांहीं॥
तिन कहँ सुता सौंपि सब दीन्ही। भाषिकथा निज बिनती कीन्ही॥
राखेउ नन्द बिदा तेहि कीन्हो। कन्यन रहन हेत गृह दीन्हो॥
ते सब रहन लगीं हरषाई। कृष्ण होहिं पति यह उर आई॥
करत भईं यमुना को सेवन। आइ कह्यो तिनते बर भेवन॥
बर मांगहु जो इच्छा होई। सुनि पदबन्दि कहत भईं सोई॥

दो० कृष्ण होहिं पति देहु यह, मोकहँ भानुकुमारि।
एवमस्तु कहि सो गई, तिनकहँ मिले मुरारि॥
ऋषिरूपा की इमि कथा, तुम कहँ कही पृथीस।
मैथिल गोपिन की सुनहु, सुखप्रद बिश्वेबीस॥

दश हयमेध पुण्यप्रद कथनी। रघुबर बर मनमथ मनमथनी॥
ये सब जन्मी ब्रज महँ जाई। भवन नन्द नव के नरराई॥
ममपति कृष्ण होहिं यह काजा। मारगशीर्ष प्रथम दिनराजा॥
कात्यायनि कहँ पूजन लागीं। उठहिं प्रभात सकल मुदपागीं॥
न्हाइ यमुनजल हरिगुण गावत। चारु मृदाकी देवि बनावत॥
बसन बिगत इकदिन जलमाहीं। न्हाति रहीं हरि गयउ तहांहीं॥
तिन्हके सिगरे बसन उठाई। बैठे कृष्ण कदँब पर जाई॥
ते सब देखि लजात उघारी। शीत बिबश कम्पत ब्रजनारी॥

दो॰ मांगत मोहन यह कह्यो, आवहु कढ़िकै नारि।
तब तुव अम्बर देउँगो, नातरु रहहु उघारि॥
सो॰ जलमहँ कँपत सशीत, प्रात समय शरमातलखि।
हँसे चोर नवनीत, तब बनिता बोलत भईं॥
क॰ नन्दजूके नन्द ब्रजचन्दहौ अनन्द कन्द, अम्बर हमारो जलमाहिं डारि दीजिये। दासी निज जानो गुणरासी उरदया आनो, अबलाको जानि ऐसी रारि नाहिं कीजिये॥ सुनै जो निसंस कंस ध्वंस करै गंसगहि, गोपबंस अवतंस सत्य यों पतीजिये। कँपत हमारे अङ्ग मोरपच्छ वारे प्यारे, पाथरहू पाथ होत आप ना पसीजिये॥
दो॰ हरि बोले जो अहहु तुम, दासी तौ कढ़ि आइ।
लेहु बसन सब मांगिकै, सब संकोच दुराइ॥
सो सुनि ते सब हृदय बिचारी। कर कुच भग के ऊपर धारी॥
निकरीं सकल प्रेम पहिंचानी। अम्बर दीन्ह दिगम्बर जानी॥
सारी पहिरि पहिरि निज सारी। ठाढ़ि भईं प्रमुदित ब्रजनारी॥
लज्जित तिनहिं देखि गोपाला। अतिरसालमुखबचन निकाला॥
जेहि हित देवी कहँ आराधा। होइहि सो निश्चय गतबाधा॥
दोय दिवस महँ यमुना तीरे। रास करौंगो धीर समीरे॥
इमि कहिकै गृह गये मुरारी। सुन्दरि सिगरी सदन सिधारी॥
अब कौशला नारि अहवाला। चितदै सकल सुनहु महिपाला॥
दो॰ रघुबर के बरदान ते, कौशिलकी त्रिय आइ।
ब्रजमहँ नव उपनन्दसों, ब्याही गईं सचाइ॥
गुण कौशल सब कौशल नारी। तिन्हनि जयार कियो गिरिधारी॥
नेह बढ़ायो पतिहि बिसारी। तिन्ह ते ठट्ठो करत मुरारी॥
अञ्चल गहत देखि मगमाहीं। आलिङ्गत आनँद सरसाहीं॥

कृष्ण कृष्ण भाषहिं सब बनिता। मत्तसमान प्रेमरस सनिता॥
महि जल तेज वायु नभमाहीं। देखत हरिहि रहित कछु नाहीं॥
आठ भाव ते पूरित सोई। प्रेम त्यागि गति और न कोई॥
परमहंस सम ह्वै तजि घरको। पूछत फिरहिं सकल नटबरको॥
जड़ चैतन्य केर नहिं ज्ञाना। कृष्णत्यागि मुखकहत न आना॥

दो० जब मग मिलत मुकुन्द प्रभु, लेत कण्ठ महँ लाइ।
आतुर मुखचुम्बन करत, प्रेम बिबश नरराइ॥

एक कृष्ण तन्मय सब भामा। तजि प्रभुदरश और नहिंकामा॥
तिन्ह को भाग्य लहै को पारा। त्यागेउ सकल बिश्वब्यवहारा॥
अतिपवित्र मति जानहु ज्ञानी। धरणिधरन नहिं सकहिबखानी॥
योगसांख्य कर्ता अरु कर्मा। इनते कृष्ण मिलहिं यह भर्मा॥
श्रीभगवान भक्तिबश अहहीं। प्रेम बिबश हरिकहँ श्रुतिकहहीं॥
जो शिवबिधिसपनेहुँ नहिंपावा। सो ब्रजनारिन नाच नचावा॥
अवधनिवासिनि जितनी नारी। तिन्हकी कथा सुनहु ब्रतधारी॥
सिन्धुदेश महँ चम्पक नगरी। बिमल भूप सो पालत सगरी॥

दो० नेता जेता बिष्णुजन, बिमल बिमल मतिमान।
परमपवित्र महीपमणि, पुरी चाम्पिका त्रान॥

तेहि षट सहस भईं बरनारी। रूपराशि गुणगणन सँवारी॥
पै न रहो कोऊ संताना। चिन्ता बिमलहिं भई महाना॥
याज्ञवल्क्य मुनि इक दिन आये। भूपति पूजि तिन्हैं बैठाये॥
चिन्ताबश बिमलहि अनुमानी। याज्ञवल्क्य बोले बर ज्ञानी॥
किहिहित शोच करहु भूपाला। है न कोऊ तोहिं कष्ट कराला॥
बोले बिमल जोरि युगपानी। अहहु आप सब जानत ज्ञानी॥
पै भाखत जो आप बखाना। मोकहँ है न एक सन्ताना॥

सुनि मुनि धरिध्यानहि दृग बोले। राजहि सुखद सुभग बच खोले॥
दो० सुत न एक तव करम महँ, पै कन्या शतलक्ष।
काल पायकै होइहै, बिमल कहत मुनिदक्ष॥
सुत बिन देव पितर ऋषिकेरो। रहत ऋणी यह शोच घनेरो॥
सुत बिन सुख न होत है ज्ञाता। याज्ञवल्क्य मुनि बोले बाता॥
करहु न खेद सुता निजसारी। कृष्णहिं दीजो नीति बिचारी॥
ताते तीनिहुं ऋण मिटिजैहैं। मुक्त सहित कुल तुम्हरी ह्वैहैं॥
तब नृप हरष कह्यो बरभेशा। हरि प्रकटैंगे कौने देशा॥
कैसो रूप किते दिन बीते। याज्ञवल्क्य मुनि कहहिं सप्रीते॥
द्वापर अन्त होइ हरि सांचा। रहै अब्द जब शत दश पांचा॥
यदुकुल मथुरा महँ अरिकर्षण। भाद्र कृष्ण आठै बुध हर्षण॥
दो० अर्धरात्रि रोहिणि नखत, बृष सुलग्न अँधियार।
देवकि अरु बसुदेव गृह, बासुदेव अवतार॥
होहिं काठते अग्नि समाना। रमाचिह्न तनश्याम सुजाना॥
श्रुतिभुज पीतबसन बनमाली। दीजो ताहि सुता गुणशाली॥
इमिकहिमुनिनिजभवनासिधाये। बिमलाबिमलमति सुनिहरषाये॥
अवध निवासिनि यह बर पाई। कन्या भई भूप गृह आई॥
जानि तिन्हैं सो उर अभिलाषा। दूत बोलाइ बचन यह भाषा॥
मथुरा जाहु शूर सुतधामा। देखहु तिनके सुत घनश्यामा॥
कैसो तिनकर अहइ स्वरूपा। पीत बसन भुजचारि अनूपा॥
तबहिं दूत मथुरा चलि आयो। पुरबासिन ते बचन सुनायो॥
दो० सो सुनिकै बिरतान्त सो, तेहि लैगे एकान्त।
कंस डरन ताते कह्यो, लागिलागि क्षितिकान्त॥
शौरि सुवन सब कंस मरायो। कन्या इक तेहि व्योम पठायो॥

आनकदुन्दुभि दुखित इहांहीं। पै कोउ ते पूछेउ अस नाहीं॥
जो यह खबरि कंस सुनि पैहै। तौ द्रुत कारागार पठैहै॥
अतिहिअधम निसंश अघकारी। साधु बिप्र दुखदायक भारी॥
जनम्यो कंस हंसकुल कागा। बिष्ठाहारी पतित अभागा॥
सो सुनि दूत चम्पिका जाई। बोलेउ बिमल चरण शिरनाई॥
तहँ बसुदेव दीन है भारे। तिन्हके सब सुत कंस सँहारे॥
एक सुता सोउ ब्योम सिधाई। इहिबिधि तहां खबरि हम पाई॥

दो० बृन्दाबन महँ जब गये, देख्यो ढोटा एक।
फिरत रह्यो कोउ गोपको, संग गुवाल अनेक॥

उर श्रीवत्स कण्ठ बनमाला। द्विभुजश्याम तन परम रसाला॥
सुनिकै बिमल कीन्ह अफसोसू। जात और भुजकर गुनि दोसू॥
मुनि न झूठ भाषहिं जगमाहीं। कहो करिय संशय की नाहीं॥
इतनेहिं में भीषम कुरुराजा। आये तितहि बिजय के काजा॥
तब नृप बिमलामिले बाढ़िसुखसों। लाये भवन प्रीति की रुखसों॥
भेंट राखि भीष्महि बैठाई। बोले बिमल बिमल मति ल्याई॥
याज्ञवल्क्यमुनि मोहिं बखाना। शौरि भवन ह्वैहैं भगवाना॥
मथुरा महँ औरै कछु सुनेऊ। समुझि समुझि संशयउरगुनेऊ॥

दो० तुम बसु उत्तम धनुषधर, जितइन्द्री गाङ्गेय।
परमपरा बर पूज्य प्रभु, ज्ञाननिधान अमेय॥

सो सुनिकै शन्तनू कुमारा। बोले बिहँसि बुद्धि आगारा॥
हे नृप गूढ़ चरित यह अहई। सुना ब्यासते हम सब इहई॥
सुरहित असुर निकन्दन हेतू। भये शौरिगृह यदुकुल केतू॥
अर्धनिशा बसुदेव उठाई। नन्दभवन दीन्हे पहुँचाई॥
लाये सुता भवन मतिमाना। माया मोहगई अपमाना॥

सोइ गोपाल वपु बृन्दाबनमें। रहैं वर्ष ग्यारह ब्रजजनमें ॥
कंसहि मारि प्रकट तब ह्वैहैं। तुम्हरी ये सब कन्या जैहैं ॥
सो सब ब्रजबनिवासिनि अहहीं। पूरब बरते हरि कर गहहीं ॥

दो० इनकहँ तिन्हहिं बिवाहेहु, इमि कहिगे कुरुबीर।
दूतहि बिमल पठायउ, मुदित जहां बलबीर ॥

सो० सो देख्यो हरि जाइ, एकाकी बृन्दाबिपिन।
पदपर शीश नवाइ, बोल्यो चाकर बिमलकर॥

तो० परिपूरण माधव ब्रह्म स्वयं। बृषभानु सुता पति ज्ञानमयं ॥
द्विज देव पुराण स्वभक्तहिते। करुणाकर कृष्ण उदारमते ॥
जगनायक कंस बिनाशन हे। गुणराशि महा गरुड़ासन हे ॥
ब्रजबासिन बालन धन्य अहैं। जनको बनको बर भाग्य कहैं ॥
प्रकटे जहँ माधव दीन हिते। पग पावन आपगकूलकृते ॥
मनमोहन धर्मनिधान प्रभो। सुरभीपति सुन्दरशील स्वभो ॥
बहु अण्ड बिमण्डन नीरदभा। करुणाकर चन्द्रसमान प्रभा ॥
दरशो हम बिश्वहि दुर्लभ जो। तजिकामसबै घनश्याम भजो ॥

दो० सिन्धुदेश चम्पापुरी, तहां बिमल भूपाल।
भक्ति तुम्हारी बिमलमति, जानहु दीनदयाल ॥

तुम्हरे हित बहु मख जप दाना। कीन्ह धरम धरणीश सुजाना ॥
ताकहँ कन्या कोटि मुरारी। जाइ देहु दर्शन भयहारी ॥
श्रीसम सो स्वरूप की खानी। दृढ़ तव चरण भक्तिरससानी ॥
बरहु तिन्हैं दुख हरहु कृपाला। पुरकहँ पावन करहु दयाला ॥
नृप बहु बिनय कीन्ह करजोरी। जाइ चम्पिका लहिय किशोरी ॥
सुनि अतिमुदित भये गिरिधारी। क्षणमहँ गये अकाश मुरारी ॥
रतगत दूत सहित भगवाना। बिमलयज्ञ सुन्दर दरशाना ॥

श्रीवत्साङ्क श्याम बनमाली। पीताम्बरधर परमाशाली॥
दो० देखि बिमल उठि बिमलमति, कृष्णहि सहित अनन्द।
पस्यो चरण जय जय कस्यो, मुदित निरखि नँदनन्द॥
सिंहासन पर हरि बैठाई। बैठे बिमल चरण शिरनाई॥
सुता निरेखहिं चढ़ी झरोखे। बोले कृष्ण भक्ति परितोखे॥
हे नृप हौ तुम चाहत कहा। सो सुनि बिमल बन्दिपद कहा॥
ममममनअलि अम्बुजतवचरणा। निबसै यह दीजै दुखहरणा॥
इमि कहि दै सब कन्यादाना। धन गृह कोष राज सामाना॥
आत्मसमर्पण हरिकहँ करिकै। त्यागो प्राण ध्यान कहँ धरिकै॥
जयजयकार भयो तहँ भारी। सुमनस फेंकहिं सुमन भँझारी॥
नृप श्रीकृष्णरूप कहँ पायो। रबिते अधिक तेज सुखछायो॥
दो० चढ़िखगेशपरतियनसह, कृष्णहि कीन्ह प्रणाम।
तुरतहि गो बैकुण्ठ सो, बिमल बिमल बरधाम॥
लै सबकहँ हरि आनँदछाये। क्षणमहँ श्रीब्रजमण्डल आये॥
काम बिपिन राख्यो भगवाना। तितने मन्दिर बर सामाना॥
जितनी श्यामा तितने श्याम। नितप्रति बिहरत सबके धाम॥
तिनके रास पसीना भयऊ। नाम बिमलसर ताको ठयऊ॥
देखै पीवै न्हावै जोई। गऊलोक कहँ पावै सोई॥
अरु जो यह सुनिहै इतिहासा। ताहू कहँ गति अहै खुलासा॥
गोपीमख सीताकी कथा। सुनहु होइ जामें अघबृथा॥
नगर उशीर सुदाक्षिण माहीं। तितशद अब्दभयो जलमाहीं॥
दो० नन्दराय की लै कृपा, धनी गोप समुदाय।
त्यागि उशीरहि सब बसे, गांव सुगोकुल आय॥
तिनके गृह रघुबर बर पाई। यज्ञ सिया सब जनमीं आई॥

कृष्णकरउँ पति यह उरआना। बृषरविकन्यहिं बचन बखाना॥
हे राधा बताउ मोहिं ऐसो। जामहँ होहिं नाथ मम केसो॥
अहैं तुम्हारे बश नँदलाला। सुनि बरबाला बचन निकाला॥
हरिहित हरिबासर ब्रत करहू। ह्वै हैं बश अवश्य अनुसरहू॥
बोलीं ते सिगरी यह बानी। मोहिं बिधान बतावहु रानी॥
अरु सबकेर बतावहु नामा। सुनि बोलीं श्यामा अभिरामा॥
अगहन कृष्णनाम उत्पन्ना। कोटिन पुण्यराशि सम्पन्ना॥

दो० चौबिस बारह मासकी, पुरुषोत्तम की दोय।
नाम सुनहु छब्बीसके, नास रास अघहोय॥

मं० उत्पन्ना अरु मोक्षा सफला जानहु।
सुतदा षट्तिल जया सुबिजया मानहु॥
आमर्दकि अघमोचनि कामप्रदायिनि।
बहुरि बरूथिनि मोहनि नाम कहायिनि॥
निर्जल योगिनि सुरसैनी कामा पुनि।
बहुरि कामिका नाम दाय गुनि॥
पुत्रप्रदा अरु अजा अनूप बखानिय।
पद्मा अरु इन्दिरा अघाकुश जानिय॥
रमा प्रबोधिनि चौबिस संवत महँ भल।
हरि बल्लभा पुत्रदा दोय मास मल॥
इमि जो इनको नाम सुनै जग सुख धरि।
सो फल पावै ब्रत को सिगरा दुखदरि॥

दो० नेम एकादशि को सुनहु, परम पुण्यदातार।
जितइन्द्री दशमी दिवस, एकबार आहार॥

छप्पय ब्रह्म मुहूरत उठै नेम तेहि क्षणते करई।

अधम कुम्भ अस्नान कूप मध्यम अनुसरई॥
उत्तम बहुरि तड़ाग नदी अतिउत्तम जानो।
क्रोध लोभ तजि श्वेत बसन शिर तिलक सुहानो॥
द्विजनिन्दक पाखण्डरत अनृत बचन परनारिरत।
परधनहारी कुटिलते बुध संभाषण करहु मत॥
हरि कहँ पूजै धूप दीप नैवेद्य लगाई।
कथा सुनै पुनि द्विजन देइ मन मोद बढ़ाई॥
निशा जागरण करै कृष्णपद सुन्दर गावै।
इहि बिधान एकादशिब्रत बैष्णव सरसावै॥
कांस मांस कोदव चना शाक परान्न मसूर मधु।
मैथुनभोजन द्वितिययह दशदशमीदिनतजहिं बुध॥

दो० दतुवन क्रीड़ा द्यूत अरु, निद्रा हिंसा पान।
परनिन्दा पैशुन्यऋषि, रति सुझूठ शिवजान॥
कांस मांस रति औषधी, मसुर तेल ब्यायाम।
पुनिभोजनमधुअनृतरिसि, हिंसा द्वादश नाम॥
इहि बिधान एकादशी, करै सुचित चित होइ।
ताते मिलहिं मुकुन्दप्रभु, परम हितू निज जोइ॥

गोपिन कह्यो बचन तब ऐसे। याकर काल बतावहु कैसे॥
और कहहु फल परम अगाधा। सुनि यह कहत सुन्दरी राधा॥
पचपन घटि पल ऊपर होई। दशमी तौ बुध त्यागहु सोई॥
द्वादशि ब्रतहि करै नतु पापा। सुराबिन्दुपर जिमि घट आपा॥
द्वै एकादशि आवैं जबहीं। दूजे ब्रतहि करै नर तबहीं॥
एकादशी कथा सुनि काना। बाजपेय फल मिलै महाना॥
सब सहि दान करै नर जोई। यामहँ सहस गुणित फल होई॥

एकादशि भवसागर तरणी। अघतमराशि महा कहँ तरणी ॥
दो० ब्रतकरि करै सुजागरण, जो एकादशि बीच।
बिष्णुलोक सो जातहै, कैसेउ अघकरि बीच ॥
तुलसीते पूजै हरि जोई। हरि सान्निध्य लहै जन सोई ॥
शत नृपसूय सहस हरिमेधा। यासम फल न सोउ अनिमेधा ॥
दशपितु दश नारी दशनाना। होत उधार पिढ़ी परिमाना ॥
शुक्ल कृष्ण दोउ समकरि जानो। गोपयफलसम भेद न मानो ॥
मेरु सरिस अघ दहत महाना। तूलराशि कहँ शिखी समाना ॥
द्वादशि दिन जो दानहिं देई। होत कोटिगुण अक्षय सेई ॥
जो हरिकथा सुनै चितलाई। पावै फल महिदान सुहाई ॥
द्वारावती न्हाइ हरि देखै। सोऊ फल याके महँ लेखै ॥
दो० कुरुक्षेत्र बाराणसी, बदरी अरु केदार।
शूकरक्षेत्र प्रभास पुनि, सूरजग्रहण बिचार ॥
चार लाख संक्रान्ति नहाई। नहिं एकादशि की समताई ॥
अहिमहँ शेष गरुड़ द्विजमाहीं। सुरमहँ हरि बरणन द्विजआहीं ॥
तुलसिपत्रमहँ तरुमहँ पिप्पल। तिमिब्रतमहँएकादशिअतिभल ॥
अयुतबर्ष जो ध्यान लगावै। नहिं एकादशि सम फल पावै ॥
इमि एकादशि फल हम भाषा। तुम्हरी अहै कहा अभिलाषा ॥
गोपी कहतभई यह बानी। आप महान ज्ञानकी खानी ॥
तुमसम नहिं कोउ जाननहारो। संशय एक और निरवारो ॥
किन्हकिन्हकीन्हब्रतहिकापायो। सुनि भगवान भाषा गायो ॥
दो० प्रथम कीन्ह ब्रत बज्रधर, गयो रह्यो जब राज।
जीत्यो असुरन सुरनसह, जगयशभयो दराज ॥
बैखानस तप पितुहित कीन्हा। सहितबंश तिन्ह सुरपुर लीन्हा ॥

लुम्पक राजभ्रष्ट शठ पापी। करि ब्रत भयो महीप प्रतापी॥
केतुमान सुतहित ब्रत कीन्हा। सुतभोपितहिस्वर्गनिजदीन्हा॥
नरअबलहि सुरअबलन दीन्हा। फल ताते सो सब सुख कीन्हा॥
मालवन्त अरु पुष्पवती दोउ। शाप पाय ब्रतकरि छूटे सोउ॥
रामचन्द्र ब्रतकरि अरिमारा। सीता लै निजपुर पग धारा॥
बिधि सुरसहित भये ब्रत करते। पायो परमपदहि सुख भरते॥
मेधावी ब्रतकरि तरि गयऊ। शापरहित सो निजतन भयऊ॥

दो० धुन्धमार अस सगर नृप, मांधाता मुचकुन्द।
ये सब करि करि तरिगये, परशे चरणमुकुन्द॥

ब्रह्मकपाल शम्भुते छूटे। एकादशि ब्रतफल जब लूटे॥
धृष्टबुद्धि बनियां अतिपापी। ब्रतकरि गो बैकुण्ठ सुरापी॥
रुक्माङ्गद करिकै हरिबासर। गये बिष्णुपुर भरिआनँद उर॥
अम्बरीष ब्रत कीन्ह खुलासा। जगजद दुर्बासा इतिहासा॥
यामहँ निर्णय प्रकट दिखायो। महिजितनृपकरिब्रतसुतपायो॥
बहुरि बिष्णु के लोक सिधायो। सबप्रकार सों आनँद छायो॥
नृप हरिचन्द कियो ब्रतभारी। लह्यो राज अरु स्वर्ग सुखारी॥

दो० शोभन अजहूं लसत हैं, मन्दरागिरि महिपाल।
शशिभागा ताकी तिया, ब्रतसुप्रभाव रसाल॥

सुनि राधा बचनहिं सब नारी। कीन्ह एकादशि को ब्रतधारी॥
हरि प्रसन्न ह्वै रासरमायो। मारग पूनो दिवससुहायो॥
अब पुलिन्दिकनकर बरवर्णन। करब सुनहु नृप जो अघअर्दन॥
बिन्ध्याचलपर बसहिं पुलिन्दे। तहँके नृपते झगरहि रिन्दे॥
बिन्ध्यभूप चढ़ि अक्षौहिनी। घेरेउ भीलन अमरखसमनी॥
शर असि अशनि शूलकहँ डारो। राजदूत सुपुलिन्दन मारो॥

तबहिं कंस ढिग दूत पठायो। भीलनसों सुनि भोजरिसायो ॥
नृपसन लरनहेत उमदायो। बली प्रलम्बासुरहि पठायो ॥
दो० कालमेघद्युति कर गदा, ऊंचो योजन दोइ।
कीश कीश कुण्डल करण, सर्पहार छवि होइ ॥
लहलहात जिह्वा अतिभारी। आयो मनहुँ कालबपुधारी ॥
निरखि प्रलम्बहिं नृप भयपागो। सदलआशु कढ़ि तहँते भागो ॥
तब प्रलम्ब लै भीलन साथा। गो चलि जहां भोजकुलनाथा॥
भये कंस के नौकर भीला। इहिबिधि सुनहु भूप बलशीला ॥
तिनके गृह पुलिन्दिका जाई। जिनहिं दीन्हबर श्रीरघुराई ॥
सो हरिकहँ लखि दृगन लोभाई। पदरज शीशधरे छबिछाई ॥
सोऊ रमीं रासमहँ आई। परिपूरणतम कुँअर कन्हाई ॥
जो रज दुर्लभ शेष महेशानि। अबलाधन्य धरहिं शिरदेशानि ॥
दो० शिवपद बिधिपद इन्द्रपद, सर्बभौमपद त्यागि।
जे लागहिं भगवानपद, नृप तेई बड़भागि ॥
सब तजि हरिभजु सार यही है। मिथ्या सब संसार सही है ॥
हे नृप भक्ति करी तिन पायो। नहिं उत्तम कुल इहां गनायो ॥
दूजी गोपिनकेर बयाना। सुनहु होइ जाते अघहाना ॥
दिब्य बांह गोपेष्ट मतज्ञा। मार्गद शुक्र नीतिबिद सज्ञा ॥
षट बृषभान भवन भइ कन्या। ऊर्ध्व बिष्णुपदबासिनि धन्या ॥
रामा सखि जलसुता सुजाना। श्वेतद्वीप की त्रिय नरत्राना ॥
श्रीलोकाचल बासिनि जोई। और अजिनपदकी त्रिय सोई ॥
हरि हित कीन्ह माघ ब्रत भारी। चिन्तत चरण शरण सब नारी ॥
दो० माघशुक्र की पञ्चमी, हरि धरि योगी भेश।
करन परीक्षा जात भे, बर बरसाने देश ॥

तन बिभूति हरि चर्महिं धारे। जटाजूट शिर सरस सँवारे॥
मगआवत मुरलीधुनि कीना। आनिधाय ब्रजबाल प्रबीना॥
हँसीं परस्पर हरिहि निहारी। बोलीं सुनहु साधु ब्रतधारी॥
सिद्धिनाम अरु नाम कहा है। ठाम कहां अरु काम कहा है॥
कृष्णचन्द्र तब बचन प्रकाशा। अहै नाम मम स्वयं प्रकाशा॥
बसत मानसर अशन बिहीना। मोहिं त्रिकालज्ञान हरि दीना॥
भव्य भूत बर्तत सो गोहन। उचटन थम्भन मारन मोहन॥
बशीकरण जानत हम नीके। सुनि त्रिय कहहिं मनोरथजीके॥

दो० बशीकरण आवत यदपि, सिद्ध अहौ तुम आप।
जेहि चिन्तत हमसो अबहिं, आवैं प्रकट प्रताप॥

तौ तौ सिद्ध अहौ हम जाने। सो सुनि सिद्ध प्रसिद्ध बखाने॥
यह अतिदुर्लभ दुर्घट भाषा। पै करिहौं जो तव अभिलाषा॥
मूंदहु आंखि सकल ब्रजबाला। होत तुम्हारे मनको ख्याला॥
मूंदेउ सबन आंखि तेहि काला। योगी भे भोगी नँदलाला॥
खोलि दृगन तिन हरिहि निहारे। सो सुखको जन सकल उचारे॥
माघ मास के चारु रास में। तिन सँग हरि बिहरे हुलास में॥
सुनहु कथा अरु गोपिनकेरी। उपनन्दन की सुता घनेरी॥
त्रिगुण और आदिव्यादिव्या। ते सब जनमीं आइ पृथिव्या॥

दो० बीतिहोत्र श्रुत अग्निभुक, गोपति श्रीकरशान्त।
पावन साम्ब ब्रजेश ये, नव उपनँद ब्रजकान्त॥

सो सब सखी राधिका केरी। रूपराशि गुणगणन बड़ेरी॥
मानसहित राधिकहि निहारी। बोलीं बचन आइ ब्रजनारी॥
हे सुन्दरि नव बैस किशोरी। सुनहु बचन गोरी तिय भोरी॥
अहह फागको अवसर येह। आवत हरि भरि हृदय सनेह॥

उतते अबिर गुलाल उड़ावत। झांझ पखावजडफहि बजावत॥
चारु कपोल अलक छबिछाई। पीतबसन पर माल सुहाई॥
लोचनलाल लसत मदभीने। चलनगयन्द थकित करिदीने॥
मोरमुकुट कुण्डल सरसाई। बेसर मोति ज्योति दरशाई॥

दो० इन्द्रधनुष घन माहिं जिमि, तिमि भृकुटी द्वै देखु।
करमहँ पिचकारी भरत, अँग अँग मोहन भेखु॥

तब आशा अवरेखत ठाढ़े। ग्वाल गुपाल गुणी गरु गाढ़े॥
तजहु मान तजि भानुदुलारी। लेहु सुयश फागुनको भारी॥
चलि देखहु सब साथ सँजोवा। बुक्का केसर चन्दन चोवा॥
उठहु उठहु बैठी केहिहेता। खेलहु ब्रज घनश्याम समेता॥
फिरिफिरि समय न जानहु ज्ञानी। बहते पानी धोवहु पानी॥
सो सुनि उठिकरि प्रीतिदराजा। लगीं सजन होली को साजा॥
बुक्का अबिर अरगजा धूरी। चन्दन अरु केसर कस्तूरी॥
थाली भरे चलीं सब आली। हँसी करहिं अरु गावहिं गाली॥

दो० तन सारी सारी लसै, सारी बाल रसाल।
अबिर उड़ावत तालदै, घेरिखयो नँदलाल॥

क० ताल दैदैधावैं औउड़ावैं लै गुलाल गोपी, मदनगोपालते बिशाल बरजोरी है। युवती ब्रजबाल तेतेभये नँदलाल तहां, डारत रसाल काशमीर नीर घोरी है॥ टूटी बनमाल गाल चोवा बिन्दु दरशात, चलत सुचाल भाल सरसात रोरी है। गोरी गोरी नवल किशोरी दोरी दोरी फिरैं, झोरी लै चलावैं मुखगावैं आज होरीहै॥

दो० दीन्ह पीतपट कृष्ण तब, प्रमुदित आये धाम।
इहिबिधि बिलसत फागुहरि, संग भानुपुरबाम॥

सुनहु त्रिदश त्रिय बरणन राजा। सबसुखकरणभवाब्धिजहाजा॥

मालवदेश दिवसपति नामा । नन्दगोप इक रह्यो ललामा ॥
सहस तियन सह तीरथ करते । आयो गोकुल सुख बिस्तरते ॥
मिलिकै नन्दराय ते सोई । बसत भयो सुबास अति जोई ॥
योजन द्वैको घोष बनायो । बसे दिवसपति थल मनभायो ॥
सुता ताहि बहु भई नरेशा । माघ नहान कीन्ह बरबेशा ॥
नवकिशोर हरिहित नित जाहीं । गावहिं गीत सप्रीति नहाहीं ॥
मुदित आइ हरि भाष्यो बानी । बर मांगहु सुनि कहत सयानी ॥

दो० दुर्लभ योगी यूथकहँ, कोटि अरडपति आप ।
लोचन अन्तरहोहु जनि, हरहु बिश्व परिताप ॥

एवमस्तु भाषेउ भगवाना । तिन्हसँगरासकीन्हबिधिनाना ॥
पीत बसन कटि शीश मुकुटबर । श्यामस्वरूप नवाये कन्धर ॥
लकुट बेनु नटबेष कपट तजि । रे मन क्यों न नन्दनन्दनभजि ॥
भक्तिबिबश जानहु गिरिधारी । गोपी जासु प्रमाण बिचारी ॥
भक्ति त्यागि बश होत न हरी । जिमि तालहिते चालति धरी ॥
जालन्धरी भई जो नारी । सुनहु कथा सो पावनकारी ॥
गोप रङ्गजित नाम महाना । रह्यो रङ्गजित को नरत्राना ॥
धृतराष्ट्रहि अर्बुद आशरफी । देत रह्यो इक संबतसरकी ॥

दो० परमबीर दीन्हों नहीं, कर बर संबत एक ।
कुरुन कोप कीन्हों तबै, जानि ताहि अबिबेक ॥

अयुत शस्त्रधर धीर पठाये । बांधि ताहि कौरव ढिग ल्याये ॥
आज्ञा दीन्ह तबै नरराजा । कैद करहु इहि सहितसमाजा ॥
बहुरि भागि सो निज पुरआयो । कुरुवरकर करनाहिं पठायो ॥
अक्षौहिणी तीन तब भारी । भेजत भे धृतराष्ट्र हँकारी ॥
भो तब समर भयंकर राजा । चले [illegible] ॥

असि शर भिन्दिपाल शरपट्टा। भट्ट करहिं सरपट्ट झपट्टा॥
लख्यो बहुत दिन कुरुन प्रचारी। रङ्गोजित निज हारि निहारी॥
दूत बोलि मधुपुरी पठायो। कंस शरण मैं यह कहि गायो॥

दो॰ दूत बन्दिकै कंस को, कहत भयो सब बैन।
रङ्गोजित नृप रङ्गपुर, अहहिं महामति ऐन॥

घेर्यो तिनहिं कौरवन जाई। तुम्हरी शरण अहै सो राई॥
तुम्ह प्रभु दीन दुःख के हन्ता। अहहु महाबल बसुधा कन्ता॥
सुर अरु असुर जीति बश कीन्हो। तीन लोकमहँ डङ्का दीन्हो॥
शशिहि चकोर रबिहिअरबिन्दा। पपिहाको सेवति बरबिन्दा॥
भूखे अन्न तृषित की लाला। रङ्गजितहि तिमि तुम नरपाला॥
सो सुनि कंस दयाल बिचारी। चले साथ कोटिन अमरारी॥
सुन्दर रञ्जित महत मतङ्गा। मस्तक मस्त डुलावत सङ्गा॥
श्वेतबरण शिकरा पग भारे। कंस चढ़े अरि जीतनहारे॥

दो॰ केशि ब्योम बृष लम्ब अघ, बक मुष्टिक चाणूर।
सबन सहित गो रङ्गपुर, कंस कठिन अतिशूर॥

मिलि यदुपति बंशी तेहि काला। समर परम भे करत कराला॥
कंस गदा करलै तेहि पल में। धँस्यो कालसम कौरवदल में॥
मर्दन लग्यो भयंकर भारी। करपग शिरधरतलन प्रहारी॥
गजते गज हयते हय तजितजि। मारत कंस बीरबिधि साजिसजि॥
पकरि घने कहँ भूमि मरद्दत। बहुतन नभमहँ फेंकि नरद्दत॥
ब्योम बढ़्यो शतब्योम उँचाई। नृपभो दलत शत्रु समुदाई॥
केशी कीन्ह शत्रु गति केशी। प्रलयकाल के केशी केशी॥

दो॰ देखि तिन्हैं यमराज सम, भागी कौरव सैन।
जिमि छूटे बंदूक के, नभचर एक रहैन॥

रङ्गजितहि लै देत नगारे। मथुरा दिशि मथुरेश सिधारे॥
सुनि यदुजीत दशन दलकौरव। रहे मौन गहि राखे गौरव॥
नगर बर्हिषद ब्रजके पासा। रहेउ रङ्गजित तितहि खुलासा॥
ताके गृह सब जालंधरी। भईं आइकै हरि बर धरी॥
ते सब ब्याहीं गोपन माहीं। जार सरिस हरि लखत सदाहीं॥
चैत्रमास महँ रहस रचाईं। तिन्हकहँसुखअतिदीन्हकन्हाईं॥
ब्रजमहँ गोप एक धनवाना। पांच सहस तिय ताहि सुजाना॥
ताहि भईं बहु सुता प्रबीना। जिन्हहिं पूर्ब पृथु ऋष बरदीना॥

दो० बर्हिष्मती भईं सबै, अरु अप्सरा नरेश।
सुतलबासिनी अहिसुता, पूरब कथित बिशेश॥

दुर्बासा मुनि तिन्हकहँ दीना। यमुना कर पञ्चाङ्ग प्रबीना॥
ता प्रतापते मिले मुरारी। एक दिवस बृन्दाबन भारी॥
तहां डोल अतिउत्सव कीना। यमुनाके तट रचेउ नबीना॥
झूलत डोल श्याम अरु राधा। जाहि देखि भागत भवबाधा॥

क० लोल दोऊलोचन निचोल तनपीतसोहैं, जटित अमोल नग भूषण सुडोल हैं। करत कलोल ब्रजबाला बोलैं मीठे बोल, उपमा अतोल देखि रबिहि अडोल हैं॥ घोल घोल केसर कपोल में लगावैं आली, शोभाके हलोल राग गावत हिंडोल हैं। डोल डोल कुञ्जन ब्रजेश मनरञ्जनसों, झोललै उड़ावैं औ झुलावैं फूलडोलहैं॥

दो० इहि बिधान इनको कह्यो, नृपति तुम्हैं इतिहास।
सुनै पढ़ै जाकहँ मुदित, होइँ सकल अघनास॥

सो० सर्प सुताही जौन, रास कीन्ह बलदेव सँग।
मैथिल पृथिवी रौन, अब सुनिहौ कह सो कहहु॥

सुनि बहुलाश्व कहा यह बानी। कहहु मोहिं कृष्णहिं के ज्ञानी॥

पांच अङ्ग हैं सुवन बिरञ्ची। सुनि बोले करधरे बिपञ्ची॥
इत इक अहइ महत इतिहासा। मांधाता नृप रहे खुलासा॥
इकदिनखेलत बिपिन शिकारी। गै सौभरि आश्रम ब्रतधारी॥
बन्दि दमादहि आसन पाये। खगबंशी यह बचन सुनाये॥
कहहु मोहिं कछु जगअघहारी। हरिपुरप्रद कोउ साधनभारी॥
तुम सम है न कोऊ अज्ञाता। सुनि बोले सौभरि मुनि बाता॥
यमुना पञ्च अङ्ग हम भाषत। जेहिपढ़िनरहरिपुरअभिलाषत॥

दो० कवच सुतव पद्धति पटल, सहसनाम ये पांच।
अङ्ग कलिन्दकुमारि के, अघ ईंधन कहँ आंच॥

सुनहु अहैं क्रमते सब अङ्गा। प्रथम कवच यह करन उमङ्गा॥
रथासीन कृष्णा भुजचारी। अम्बुज ईक्षण अच्युत प्यारी॥
ध्यानधारि तब कवचहि धारै। न्हाइ पूर्ब सुख मौन सुधारै॥
शिखाबद्ध कृतसंधि कुशासन। करिआचमन पढ़ै अघनाशन॥

छप्पय यमुना मे शिरपातु पातु कृष्णा मम लोचन।
बाम अङ्ग सम्भूत कृष्ण केवतु शुनि दोउ धन॥
परमानन्द प्रदा कपोलवतु पाप बिनाशिनि।
श्यामावतु भ्रूभंग नाकवतु नाक निवासिनि॥
कालिन्दीवतु अधर मैं चिबुक सूर्यकन्या सदय।
कन्धर पातु यमस्वसा महानदीवतु मम हृदय॥
कृष्णप्रियावतु पृष्ठ पातु तटनी भुज दोई।
श्रोणीवतु सश्रोणी कटि सुदर्शना जाई॥
रम्भोरू उर पातु अब्धि भेदनिवतु जानू।
रामेश्वरिवतु गुल्फ चरण अघनाशिनि जानू॥
अधऊरध भीतर बहिर दिशि बिदिशा सब कालमैं।

वतु परिपूरणतम प्रिया भाषेउ कवच रसाल मैं ॥
पढ़ै याहि दश बार निधन होवे धनवाना।
व्रत धरिकै त्रयमास होइ सब भूमि प्रधाना॥
शतपर दश नित पढ़ै एकशत बीस दिवसलौं।
तेहि कहँ कहुँ नहिं होइ अवशि मनकेर हबसलौं॥
नित्य प्रात उठि जो पढ़ैं सबै तीर्थ फल सो गहैं।
परमधाम गोलोक जो अङ्गयोगि दुर्लभ अहैं॥
दो० मांधाता पूछत भये, अस्तव यमुनाकेर।
चतुर्बर्ग प्रद सिद्धकर, बोले सौभरि फेर॥
छं० हरिबामअंस प्रभूत कृष्णा नमो कृष्ण स्वरूपिनी।
अघहरण तुम्हरे चरणपङ्कज बरण त्रियब्रजभूपनी॥
जे कुटिल कामी कूर तुम्हरो नाम कबहुँ न लेत हैं।
जो मुनिन दुर्लभ जात सोइ पद जीतिजगअघजेतहैं॥
तव उर्मिमाहीं कुर्मरूपी मत्स्य हैं आवर्त्त में।
प्रतिबिन्दु श्रीगोबिन्द कृष्ण स्वरूप कृष्ण प्रवर्त्त में॥
घनसघन समद्युतिजघन बिस्तृत बेगअतिलीलावती।
ब्रह्माण्डते गिरि दुर्ग भेदत भूमि माला आवती॥
तव भ्रात जो यमराजसुनि तव भक्ति तुरतहि तजत हैं।
सो दण्ड परम प्रचण्ड तासु स्वरूप देखत लजत हैं॥
जा कहे जगदुख जात अरु मू कहे मुद सजतहैं।
ना कहे नारायण बनतबिधि शम्भु बन्दित छजतहैं॥
डोरी अहै जग कूप कारण पाप दाप बिदारिणी।
शिरमालसम नँदलाल के ब्रजबृहत शोभाकारिणी॥
हैं धन्य तिनके भाग जेजन मजहिं दरसहिं परसहीं।

गोलोक औ बैकुण्ठबारेहू घने जन तरसहीं॥
गो गोप गोपी गुणी गोकुल सुखद श्रीगोपालकी।
ब्रजभूषणा अघदूषणा गोलोकपुर हित पालकी॥
प्रतिरोम रसना पाय कीरति कहै केशव बालकी।
नहिंपारसत्यबिचारललना ललित श्रीनँदलालकी॥
गिरिकलिंदनंदनिअघनिकंदनि बिबुधबंदनिसुरसरी।
यमुनाकहे यमुना गहैं हरिकी प्रिया करुणाकरी॥
जोपढ़ैयहतवराज तव तो तवन पुर तब लहतहैं।
जहँ कृष्ण बृन्दाबन गोबर्धन गोप गोसह रहतहैं॥

दो० बहुरि कह्यो यवनाश्वसुत, धरिपद ऊपर माथ।
पटलपद्धतेहि भाषिये, भाषतभे मुनिनाथ॥

पटल सुनहु यमुना कर भूपा। सुनि पढ़ि मनुज होहिं हरिरूपा॥
प्रणव पूर्व भाषै नरपाला। माया बीज कहै सुरसाला॥
रमाबीज अरु अत तन बीजा। कालिन्दी पुनि कहै सुभीजा॥
यमुना देवी नमः बखानै। तब यह मन्त्र कहै मन मानै॥
लक्षएकादशि मन्त्रहि कहई। सिद्ध होइ जब सब कछु लहई॥
षोड़श दल अम्बुज के माहीं। सिंहासन भगवान तहांहीं॥
कालिन्दी समेत बैठावै। दल प्रति सरितरूप छबि छावै॥
गङ्गा बिरजा कृष्णा बानी। शशिभागा गोमती बखानी॥

दो० बेनि सिन्धु गोदावरी, कौशिक सरयू नाम।
बेत्रवती बेदस्मृती, शतद्रू बहुरि ललाम॥
ऋषिकुल्या सुककुझिनी, पृथक पृथक बैठाइ।
बृन्दाबन बृन्दा तुलसि, गोबर्धन सरसाइ॥
नाम सहित पूजन करै, बँध्यो प्रेमके तन्त्र।

सुनहु सुजान महीपमणि, सो पूजा को मन्त्र ॥

छं० प्रणवनमो कहि भगवत्यै कलिन्दनन्दिन्यै।
सूर्यकन्यकायै भाषै यमराज भगिन्यै॥
श्रीकृष्णप्रियायै यूथी भूतायै स्वाहा।
पढ़ि यह मन्त्रहि षोड़शविधि पूजै नरनाहा॥
इहि विधानभाष्योपटल परमचतुरतुमसोगुनहु।
अबपद्धति भाषतअहौं श्रवणलाइ सो सबसुनहु॥

दो० जबलौं पूरो होय नहिं, पुरश्चरण महिपाल।
ब्रह्मचारि मौनी व्रती, यव आहार रसाल॥
महिशायी अरु यतभुग, जितमानस जितक्रोध।
लोभ मोह कामहि तजै, राखै आत्मा शोध॥

भक्ति सहित उठि बड़े सबेरे। यमुना ध्यान धरै तेहिबेरे॥
न्हाइ नदीतट संध्या करई। तीनहुकाल काल ना टरई॥
नियम समाप्त जबै नृप पावै। द्विज गृहस्थ दल लाख जेंवावै॥
भूषण बसन अशन धन नाना। देइ दक्षिणा सहित विधाना॥
श्रद्धा सहित करै चितलाई। यथाशक्ति यह पद्धति भाई॥
तब नृप सहस नाम अभिलाषा। सो सुनिकै पुनि सौभरि भाषा॥

छं० प्रणव अस्य श्रीकालिन्दी सुसहस नाम कहि।
कहै सोत्र मन्त्रस्य सौभरि ऋषि आनन्द गहि॥
श्रीयमुना देवता अनुष्टुप छन्द बखानै।
बहुरो माया बीज मिती कीलकं सुजानै॥
रमाबीजमिति शक्ति तब श्रीकलिन्दनन्दिनी कहि।
प्रसादसिद्धार्थे जपेबिनियोगहि भाषै सुचहि॥

छं० श्यामा सम्भ्रमज अच्छघन द्युति चारु कञ्चन करधनी।

केयूर कङ्कण माल मणिमय करण कुण्डल छबि थनी ॥
तन लील अम्बर लसत बर शिर गुथी चोटी शुभ बनी ।
अभिराम कान्ति ललाम ध्यावै अघहरणि रबिनन्दिनी ॥

क० कालिन्दीयमुनाकृष्णा कृष्णरूपासरस्वती, कृष्णबाम अंशभूतापरनन्दरूपिनी । बृन्दाबनमोदिनी गोलोकबासिनी सुश्यामा, राधासखीरासलीला करुणाकी स्वरूपिनी ॥ बल्लीरङ्गबल्ली मनोहरासुनामकहिय, रासमण्डलाख्यमण्डनीत्रियाअनूपिनी । माधवी निकुञ्जयूथी भूताहरिप्रियाजानि, गऊलोकबासिनी गभीरा ब्रजभूपिनी ॥ दिब्यानिकुञ्जतलबासिनी बालाकबरण, दीर्घउर्मि घनश्यामा पूर्णमेघपालिनी । परिपूर्णतमापरापरब्रह्म प्रियायुष्य, बल्लवस्वरूपमेघमामाशत्रुघालिनी ॥ महानदीमन्दगतीमहाबेगवती वेगा, निर्गतानिकुञ्जते बिरजाबेगशालिनी । अनेकब्रह्माण्डगता ब्रह्मद्रवसमाकुला, गङ्गामिश्रानिर्जलाभानिर्जलाबिशालिनी ॥ रत्न बद्धउभैतटी ब्रह्मलोकगताब्राह्मी, निर्मलपानीयानदी हंसपद्मसंकुला । बैकुण्ठपरखीभूताब्रह्मअण्डपावनीसु, स्वर्गास्वर्गनिवासिनी उल्लसन्तिआकुला ॥ प्रोत्ययन्तिमेरुमाला गण्डशैलबिभेदिनी, शिखरनीमहोज्वालाकृष्णप्रेमब्याकुला । परिखाश्रीगङ्गा आभताप हारिणीसुजान, भूमिमध्यगाककलिन्दनन्दिनीशुभाकुला ॥ मार्तण्डतनुजासरि देशान्पुनन्तिगच्छन्ति, बाहन्तीसुसाधवीबरन्ती चारुदर्शना । यमस्वसामन्दहासापद्ममुखीनीलाम्बरा, जलस्थिता श्यामलाङ्गीखाण्डवांभास्पर्शना ॥ रम्भउरूपद्मनैनासुश्रोणीप्रमदोत्तमा, रचितअम्बरासुद्धापापमूलवर्धना । शुद्धजातपश्वरन्तिकूजन्नूपुरसुजान, भाण्डीबिभाषिनीबन्यासकलदुखधर्षना ॥ पट्टरागी परंगतामहारागीरत्नभषा,स्वमखासार्थीस्वकीयाभक्तस्वार्थसाधिनी।

नवलाङ्गाबलामुग्धा कामलोचनाबराङ्गा, कृष्णबरमिच्छतीबिशुद्धा पापबाधिनी॥ शोभाभायरमाकीर्तिप्रौढ़ाप्रौढ़ीप्रगल्भ, कामध्याम-ध्यगानवोढ़ाअच्युत अराधिनी। ज्ञातयौबनाअज्ञातयौबनामुदीना प्रभा, धीराधैर्यधराज्येष्ठ श्रेष्ठाकान्तिब्याधिनी॥ श्रेष्ठकुलअङ्गनासु छबीद्युतीछनप्रभा, बिद्युतसौदामिनी चलाकाचञ्चलारता। स्वा-धीनपतिकातड़ित स्वाधीनपतिकापुष्टा, लक्ष्मी इच्छाकाशिपुस्था दिव्यशय्याआरता॥ कलहान्तरिताभीरूमानसगोबिन्दहृत, पोत कण्ठितापुराअखण्डशोभा धारता। बिप्रलब्धाखण्डिताभिसारिका बिरहआर्ता, नारीबिरहिनीप्रज्ञामानदाबिचारता॥ प्रोषितपतिका ज्ञातामानिनीभनतकारी, मन्दारबिपिनबासिनिभ्भकारीमेखला। काञ्चनीश्रीकुण्डाब्योमहामनीश्रीहारिणी, सुपद्महारामुक्तामुक्तप्रदा कालनीकला॥ रक्तकञ्चुकेयूराकञ्चुकोसुकञ्चु मपि, दर्पनाफु-रदअंगुलीअँगूठीचञ्चला। बृन्दाबनलतामाध्वीबृन्दाबनाबिभू-षणा, दर्पिनी बिभूतादुष्टदर्पनासिनीमला॥ कम्बुग्रीवाकम्बुधरा तार्टङ्किणीटङ्कधरा, ग्रैवैयकबिराजिताबृन्दाबनबासिनी। सिखा भूखाबालपुष्यामणिभूमिगतादेवी, रैवतादिबिहारिणी बृन्दाऔ बि-लासिनी॥ नासामोतीशोभिताकनककर्णफूलयुता, सौन्दर्यलहरी लक्षाकाम्यारम्याभाषिनी। बिश्रान्तगोकुलशुभमथुरानिवासिनीसु, रमणस्थलशोभाख्याप्रणताप्रकाशिनी॥ तीर्थराजगतिर्गोत्राभारती प्रोन्नतासृष्टा, भारतार्चितालठन्तीसातासिन्धुभेदनी। लीलासप्तदीप गताबलाततसैलाभिद्यन्ती, गङ्गासिन्धुसंगमासुकाचिनीप्रभेदिनी॥ कनकीभूमिभाताकनकभूमिलोकदृष्टि, लोकालोकाचलार्चिगता स्वर्गतामेदिनी। शैलहुताबृन्दाबनीबनध्यक्षारक्षाकक्ष्या, तटीजटी स्वर्गपूजितामहाघछेदिनी॥ असिकुक्षगताकक्षास्वच्छुन्दोच्छलि-

तादिशा, पापांकुशास्वर्गार्चास्फुरन्तीबेगवत्तरा । पापद्रुमकुठारी पापसिंहीपुण्यसंहाहैं, कहुरस्थारयप्रस्थापुण्यबर्धनीबरा॥ पस्यद्धाते तरात्वराअम्बुह्लाददर्दुराभा, दर्दुरस्वरूपाचारुरूपादर्दुरोदरा । मधुबननदीमुख्यातुलातालबनस्थिता, कुमुदबननदीकुब्जापुण्यदासुदर्दुरा॥ सावरूपाबेगवतीसिंहसर्पादिबाहिनी, कुण्डकृष्णजल प्रियारूपपरमसुन्दरा । कुमुदाजैबर्धिनी सुबहुलीबहुदाबह्री, राधा कुण्डकलाराध्याबहुलाबनमन्दिरा ॥ ललिताकुण्डगाधराटामण्डिताबिशाखाकुण्ड, गोपकुण्डतरङ्गिनीसुकन्तलसकेसरा। श्रीगङ्गाकसुमाकरभावनीमानसीगङ्गा, गोबर्धनी गोबर्धनासारसीशुभा सरा ॥ कृष्णदेहसमुज्ज्वलानिलयागोबिन्दकुण्ड, नीलकुञ्जबर्णा नीलकुण्डआभामानिनी । नीलपद्मआभनीलाभ नीलकञ्जशालिनी, नीलकञ्जधराभराशीलचारुचांदिनी ॥ नीलबह्लीनागपुरी नागबह्लीदलार्चिता, मकरन्दमनोहराचर्बाऔप्रमानिनी। केसरनीपानचर्चिताकज्जलाभालभा, केशपाशशोभिताप्रियाजहांनत्राननी॥ गिरिराजप्रसूर्भूरिदिब्यौषधिनिधिसृती, पारदीपारदमयीपर्मानारदीभृती। गोबर्धनअङ्काआतपत्राआत्रपत्रनीसु, गोदेतीसुकामा कामकाननाश्रयाश्रुती ॥ कामाटवीनन्दनन्दीनन्दग्राममहीधरा, नन्दीश्वरसंयुताबृहतसानुद्युती । लोहार्गलप्रदाकाराकोकिली भाण्डीरकुश, कौशलाकोकिलमयीरत्नरञ्जनीस्मृती ॥ काश्मीरबसनावृत्ताबर्हिषादीशोणपुरी, शूरक्षेत्रपुराधिकानानारत्नरञ्जिता । नानारत्नसमोज्ज्वलानानामर्मशोभाआढ्य, नारीनरीकन्दवाढ्य रङ्गासबरोगभाञ्जिता ॥ ललितारत्ननिलयास्त्रीरत्नरङ्गभूषाढ्या, राज बिद्याराजगुह्यारङ्गिनीसुगाञ्जिता । जगत्कीर्तिघनाघनानानाजलसमन्विता, रङ्गमहीरुहकृष्णअङ्गासप्रभाञ्जिता ॥ घण्टाबिलोल

ताम्रालक्षाताम्रवसनधरा, आरक्तचरनासु श्रीनगरासुकुन्तला। क-
ज्जलाक्ताकज्जलचलितअञ्जनासुजान, श्रीखण्डमण्डिताबरकुशला
कुशन्तला ॥ पाठीरकनकासनीजटामासिरुचाम्बरा, अगरगुरुग-
न्धाक्ताशान्तिमयीकुन्तला। तालपत्रसिन्दूरसुरुचिरगन्धतैलकुन्ता
तालि, पातिब्रतपरायणसुसंकुला ॥ सूर्यप्रभासूर्यकन्यासूर्यदेहसमु-
द्भवा, कोटिसूर्यप्रतीकाशासंज्ञाश्रितमारुता। सूर्यनन्दिनीरविजासंज्ञा
मोदप्रदायिनी, संज्ञासुतास्वेच्छाशनैश्चरानुजाधीवृता ॥ चन्द्रबंश
विवर्धनीसावरणयनुभवावीरा, क्रीलासौख्यदायिनीसुबडवामहाद्धि-
ता। संज्ञापुत्रीस्फुरच्छायाचन्द्रावलिचण्डलेख्या, तापकारनीनयनी
चन्द्रकान्तिकास्मृता ॥ अनुगाभैरवाथूलाचन्द्रबंशबधूचन्द्रा, चन्द्रा-
वलिसिहायिनीझारीयसिपिङ्गला । लीलावतीसधीनिश्रीगन्धारी
देवगन्धारी, टोड़ीआसावरीअन्धकारीगौरीमङ्गला ॥ गुर्ज्जरीबि-
चित्राजयकारनीबैराटीनाम, स्वर्मणिगुणबर्धिनीतैलङ्गीतालिका-
मला । ब्रजमलारीरागिनी बैशाखीअचलाचारु, तालस्वरानागा
क्रियामानकारिकाभला॥गौरबाटिकाकल्यानीचतुश्चन्दकलाहेरी,
विजयावतीकुमारीसोरठीबिहागरी । जलधारिकाघटासुगौड़औ
कल्याणमिली, कामाकरुकमनीयाश्रीसुराटधूंधरी ॥ मन्दारिका
कामरूपिणीसुरासंजीवनि, हेलाचन्द्रीकामधेनुबिभासीसुसागरी।
मारुतीसारङ्गीहोटाकामवादिनीसुजान, कामलतासुधारासमण्डली
उजागरी ॥ कल्पबृक्षस्थलीस्थूलासुधासौधनिवासिनी, सुभूकाम-
प्रदाभृङ्गायष्टिद्वारपालिका। भृङ्गारप्रकारस्वच्छभृङ्गोपकरकाप्रेष्या,
गोवर्धनतटीभवाबिरजाप्रनालिका ॥ ललिताबिशाखारामाकुञ्ज
पुञ्जाभृन्निकुञ्ज, सुमुखीपार्षदाएकासखीशुक्लाकालिका। मधुमाधवा
अनकाबृन्दाबनपालिका, सुगुञ्जाभरणभूषिताशुक्लाहरितालिका॥

श्रुतिरूपाऋषिरूपासखीमध्यामहामना, यज्ञसीतापुलिन्दिकाअ-जितपदाश्रिता । श्वेतदीपसखीरमावैकुण्ठवासिनीत्तना, अवध निवासिनीअदिव्यादिव्यादेवता ॥ मैथिलाकौशलादिव्यअङ्गा नागकन्यकासुभूमिगोपीदेवनारीपराऔषधिलता । जालंधरी बर्हिष्मतीदिव्याम्बराअप्सरासु, तौतला श्रीसखीसागरोद्भवामही धृता ॥ परंधामपरब्रह्मऊर्ध्वगऊलोकबासी, श्रीलोकअचलवासीप्र-त्तीगुणाकरी ।श्रीसखीसमुद्रउद्भवातटस्थापौरुषीसु, व्यासातीनिर्गुण वृत्तिगीतागुणाभाकरी ॥ गुणागुणमयीदृष्ट्यागुणभूसहशमाला, महत्तत्त्वअहंकारीमनोबुद्धिनागरी । पृथुअवर्तताहष्टिचेतोवृत्तिस्वां-तरात्मा, चतुर्व्यूहचतुर्मूर्तिरसाचतुराक्षरी ॥ व्योमवारिदाजला चतु-र्धास्पर्शगन्धरूप, महीशब्दकर्ममयीद्विधा औअनेकधा । कर्म-इन्द्री ज्ञानइन्द्री ज्ञानात्रिधाअधिदैवाअधिभूता, अधिमध्याअध्यात्म-कारास्वधा ॥ ज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिसर्वदेवअधिदेव, बिराटमूर्तिबेद-मूर्तिधारणामयीसुधा । धारणासंहितागर्गपाराशरीपरमहंसी, याज्ञ-वल्कीभागवतीसुवाशिष्ठिकाभिधा ॥ रामायणमयीरम्यापुराणपुरुष-प्रिया, पुण्यंगापुराणमूर्तिभागवतअर्चिता । धिषणामनीषाबुद्धि वाणीधीषेमुखेमती, साममूर्तिमह्लेन्नताविधातृकाशोभिता॥गायत्री सावित्रीबेदपार्बतीब्रह्माणीदुर्गा, सत्याचण्डिकाम्बिकापर्णाशिनी जगद्धिता । तत्याब्रह्मलक्षणासुआर्यादाक्षी दाक्षायनी, दक्षयज्ञघा-तिनीपुलोमजाशचीहिता ॥ वायुनाधारनीधन्या देवदेववरार्चिता, यमानुजासंयमनाताराम्रूरसंयुता । संगाछायाफुरत्प्रभारत्नदेवीरत्न-बृन्दा, बायुबीसुबेगमाइन्द्राणीरम्याबिश्रुता ॥ रुचिप्रशान्तिक्षमा शोभादयावक्षद्युतिस्त्रिया, तलतुष्टिविभा पुष्टिसुसंतुष्टिऔहता । चतु-र्भुजा चारुनेत्रातुष्टिभावनाष्टभुजा, शंखहस्तापद्महस्ताद्विभुजाबला

स्मृता ॥ चक्रहस्तागदाधरागरूड़ारूढ़ारथस्था, बंशीधराकृष्णबेषा कृष्णहृदयस्थिता । सृग्वीबनमालिनीनिषङ्गधारिणीसुभटा, चर्मखङ्गधनुर्धरायोधीदैत्यशरार्जिता॥धनुशब्दकारिणीकिरीटधारिणीसुयाना, मन्दमन्दगतिर्गतातन्वीकरुणायुता। भैष्मीभीष्मसुताभीमा चन्द्रकोटिप्रतीकाशा, सत्यभामाजाम्बवती कृष्णरूपिणीस्मृता ॥ सत्याभद्रासुदक्षिणामित्रबिन्दासखी बृन्दा, बृन्दाबनध्वजोर्द्धगा रुक्मिणी औ लक्ष्मणा । तितिक्षेच्छास्मृतिस्पर्धास्वधास्पर्द्धास्वानिर्वृत्ति,ईर्षातृष्णाप्रीतिर्हिंसाभृङ्गभूपचक्षणा ॥ भृङ्गदाखुगासभृङ्गाकारणीभृङ्गारकृषी, भ्रामा निद्रायोननिद्रामाताक्षमालक्षणा । योगिनी प्रतिष्ठानिष्ठायोगदायुतासुमती, उत्तमाप्रकृती सत्त्वसात्त्विकीबिलक्षणा ॥ तमःप्रकृतिदुर्मर्षारजःप्रकृतिरञ्जन्ती, क्रियाक्रियाकृतिर्म्लानि बृषाऔअध्यात्मिकी । बृत्तिसेवाशिखामणीआहुतीसुमतीद्युती, रज्जुद्युम्नी षटवर्गासंहतिसुआत्मिकी ॥ उक्तिप्रोक्तिदेशभाषा पिङ्गलोद्भवाप्रकृति, नागभूषानगभूषानागापरमात्मिकी । नौनौका भाव्याभवनाभवसमुद्रसेतुका, नगरीनागरीसौख्यदायिनीसभात्मिकी॥मनोमयीदारुमयी सैकती सिकतामयी, लेख्यालेपगमनीमयीप्रतिमानीराञ्जनी। शैलीशीलभवाशीलाशीलरामाचलाचला, अस्थितासुस्थिताशूलीहेमनिर्मितामनी ॥ वैदिकीतान्त्रिकीसन्ध्या सन्ध्यकाशाबिधि, बेदसंधिसुधामयीप्रह्वीबेणुबादिनी। सूक्ष्माजावकलाकृतीमहाबिद्याआत्मभूता, शिखामेध्याभावितासुकन्दलीसायतनी ॥ बिपुलाप्रतिष्ठापूजाकार्यसाधिनीपुनन्ति, शुक्रशक्तिमौक्तिकाभवेणीपरमेश्वरी । कञ्जकर्णिकाप्रतीतिविराजोषनिकविराट, वेणुकाआवर्त्तनीसुवारताप्रदेश्वरी ॥ बर्त्ताबार्त्तबिमानमाराशिरोभिनीरासाढ्य, गोपागोपीश्वरीगोपीरासमण्डलेश्वरी । गोचारनि

गोपनदीगोपानुगागोपवती, गोपानन्दप्रदायिनीसबरीसरिते-श्वरी ॥ यसेव्यदागोपसेव्यामोगनाम्रघागोकोटि, गोबिन्दपद-पादुकागौतमीसरस्वती । राधावृषभानुसुताकृष्णवशकारिणी, सु-कृष्णप्राणाधिकागङ्गारसिकाबृहद्मती॥ अवटोदाताम्रपर्णीकृतमाला विहायसी, कृष्णावेणीभीमरथीतापीरसूगती । तुङ्गभद्राचन्द्रभागा सहार्यकावेत्रवती, ऋषिकुल्याककुद्मतीकौशिकीमहामती ॥ गोदा-वरीरत्नमालाबानगङ्गामन्दाकिनी, सिन्धुसिद्धिका सुवेलास्वर्नदी सुहावनी । गोपीगोपवन्दिताख्यबालबिष्णुपदीप्रोच्या, सिन्धु सिन्धुसंज्ञितासमुद्ररत्नदाधुनी ॥ भागीरथीस्वर्धुनीभूश्रीवामनपद-च्युता,वैष्णवीसुमङ्गलायनारमामुनीगुनी । लक्ष्मीविष्णुवल्लभा भा-ष्यसीताजानकीअर्चि, भार्गवीकलङ्करहिताध्वजाधरागुनी ॥ कृष्ण पादपद्मभूताकलामाताबिश्वधरा, तीनपथगामिनीधराअनन्ता औथिरा । भूमिधात्रिक्षमापयीधरिनीधरित्रीउर्वी, शेषफनास्थिता सर्वा कौशिलीऔमथुरा ॥ राघवपुरी अयोध्यारघुबंश जासुजान, पदवीमाथुरीपन्थाध्रुवपूजितागिरा । मायपुबिल्वनीलब्धागङ्गाद्वार-विनिर्गता, कुशावर्तमयोधौव्याकाशीशैवाअङ्गिरा ॥ बिन्ध्यासि पुरीपुनीतबाराणसीदेवपुरी,ध्रुवमण्डलेगताअवन्तिकाकुशस्थली। उज्जयनीप्रोज्ज्वलमहापुरी आकुशभूता, द्वारावतीद्वारकामामहा-पुरीहैभली ॥ सप्तपुरीनन्दग्रामथलस्थिताशालिग्राम, शिलाऔ अदित्यायामशम्भलाख्यआवली।बंशगोपालनीक्षिप्राशक्रप्रस्थवा-सिनी, मुहरिमदिरवर्तनीगजाह्वपीशाकली॥पौष्करीपुष्करीप्रसूदा-डिमीसैन्धवीजम्बू, कुरुजाङ्गलभूकालीसर्वदोषहारनी । नैमिषीस-पेदकोलधारिताख्यसर्वतीर्थ,मयीतीर्थाहैमवत्याबुधाअब्धिचारनी॥ उत्पलआवर्तगतादाखिनी सम्पदासर्व, कोलक्षेत्रबिदितातिथीन

तीर्थकारनी। गर्भवासकृन्तिनीगोलोकधामधर्मनी, सुराजबर्धनी सुसाक्षात्सर्वपुण्यधारनी ॥ सर्वोत्तमाकुञ्जऔनिकुञ्जमर्दनीसुजान, सबतीर्थअधिदेवनानानिमिषावृता। सुभगसर्वसौन्दर्यशृङ्खलामहात्मिकासु, सर्वतीर्थऊपरगतासुपावनीकृता ॥ महारूपामहापुण्या सर्वोत्तमाहंससुता, कृष्णप्रियासर्वपुरासुन्दरीजगद्धृता। कालिन्दी सहसनामभाष्योइमिबुद्धिधाम,देतअर्थधर्मकाममोक्षबिश्वबिश्रुता॥

दो० एक बार जो पढ़ै निशि, होय चोर भय नाहिं।
दोय बार इहि पढ़ै मग, डाकू हतै न ताहि॥

द्वितियातें पुनवासी ताईं। पढ़ै मनुज दश बार सदाईं॥
रोग नशय बन्धन सब जाईं। तनय होइ बिद्या सरसाईं॥
मोहन वशीकरन उच्चाटन। शोषन दीपन थम्भन घातन॥
उन्मादन तापन निधिदर्शन। होत सकल चिन्ते आकर्षन॥
द्विज द्युतिवान छत्र नृप होई। बैश्य धनी अपरन सुख होई॥
नित शतबार पढ़ै इक संवत। पद्धतिपटलकवचतब बिधिवत॥
सप्त द्वीप कर होइ महीपा। जो निष्काम पढ़ै कुलदीपा॥
जीवनमुक्त सुकृत कर सोईं। ता सम नाहिं महिके मधि कोईं॥

दो० जहँ निकुञ्ज यमुना पुलिन, बृन्दाबन गिरिराज।
गऊलोक सो जात है, सत्य मनुज सिरताज॥

मुनि पञ्चाङ्ग मुदित मांधाता। बन्दि अयोध्या गे नरत्राता॥
यह हम गोपी चरित सुनायो। पापहरण सुपुण्यप्रद गायो॥
कह मुनिहौ अब हरि रँग राचे। तब बिदेह बहुलाश्व उबाचे॥
तव मुख सुना कथा गोपिनकी। हरिप्रिय लोकलाज गोपिनकी॥
अरु पञ्चाङ्ग सुना सुखदाई। सबल कृष्ण प्रभु गोपुर राई॥
आगे करत भये कह लीला। मुनि बोले बिधिसुवनसुशीला॥

इकदिन हरि बल ग्वालन साथा। बट भाण्डीर निकट नरनाथा॥
खेलत रहे सुखेल सुहायो। निजनिज पाला परम बनायो॥
दो० हारे तौन चढ़ावई, जीतै सो असवार।
जबलौं हद नाहिं जाय सो, तबलौं नाहिं निहार॥
तहां पठायो कंस को, बनिकै ग्वाल प्रलम्ब।
खेलतभो सो कन्धलै, चलो बलहि अति लम्ब॥
क० धरनि धरनहारे शत्रुके दलनहारे, ताकहँ उठायो देखो कैसो बड़ो बीरसो। कज्जल पहार पै द्विजेश बीराजमान, लीहाढूहा ऊपर जटित नगहीरसो॥ जान्यो बलदेव भेव तान्यो कर मूका बांध, शीश मध्य माखो सो अनार माहिं तीर सो। लम्बाभो प्रलम्बा भूमि प्राण अवलम्बा बिन, फूटाकपागेरजैसे फूट सुसमीर सो॥
दो० तासु ज्योति बलदेवमहँ, लीन भई तेहिकाल।
अमर करतभे सुमन झरि, जय जय शब्द रसाल॥
कहा सुनन चाहत अब भूपा। सुनि बोले नृप प्रेम सरूपा॥
कौन असुर यह पूरब रहेऊ। केहि हित मुक्ति हली ते लहेऊ॥
तब मुनि नारद बचन सुनायो। उपबन एक कुबेर लगायो॥
ताके फूल पत्र फल जेते। एक देव पूजाहित तेते॥
कहेउ कि जो याते कछु लैहै। आशु अवश्य असुर सो ह्वैहै॥
राजराज इहिभांति बखानी। यतनसहित राख्यो सबज्ञानी॥
हूहूतनय बिजय गन्धर्बा। इक दिन सो आयो तेहि पर्बा॥
बिष्णुभक्त सो गावत ज्ञाना। तहँते तोस्यो सुमन अजाना॥
दो० लगो शापको दाप तेहि, भो बहु ब्याकुल आप।
पुनि सब शाप हवाल सुनि, लग्यो तापको बाप॥

तब कुबेर के शरण गयो सो। निजअजानपनकहतभयोसो॥
बोले हँसि तुम हौ हरिदासा। शोच पोच त्यागहु गुणरासा॥
द्वापरमुक्ति होइ बल करते। हलधर खलदलदलबल करते॥
सोइ प्रलम्ब मुक्तिवर पाई। अब हरिचरित सुनहु नरराई॥
सबन सहित इक दिवस मुरारी। गये महद्वन सघन निहारी॥
मुञ्जगुञ्जमहँ लागेउ दावा। प्रलयसमानदशहुदिशिछावा॥
ब्याकुल भये गोप शिशु भारी। त्राहि कहहिं कोउ रोवहिं भारी॥
कितननते नहिं कढ़तबकारी। तब दृग मूँदहु कहेउ बकारी॥

दो० सुनि ग्वालन तैसइ कियो, पियो अग्नि भगवान।
जिमि शिशु शीतलपय पिवै, हरषे ग्वाल सुजान॥

तब तिन सहित कृष्ण छबिछाये। यमुनपुलिनअशोकबनआये॥
भूखे सकल गोप तेहि काला। कहेउकि प्राणजात नँदलाला॥
हरि सिखाय मधुपुरी पठायो। जहँ अङ्गिर सुयज्ञ सरसायो॥
द्विजन बन्दि बोले यह ग्वाला। इत खेलत आये गोपाला॥
हमहुन सहित क्षुधित गिरिधारी। भोजन देहु बिप्र मखकारी॥
सुनि जवाब नहिं बिप्रन दीन्हा। तिनगुनिप्रभुते बिनती कीन्हा॥
तिन न दीन्ह तुमकहँ कछु मोहन। नहिं यह नन्दरायको गोहन॥
गुनि मुकुन्द पुनि बचन प्रकासा। अब मांगहु द्विजनारिन पासा॥

दो० चौबे त्रिय ढिग जाइकै, भाषेउ शीश नवाइ।
खेलत आये कृष्ण इत, संग ग्वाल समुदाइ॥

तिन कहँ लगी भूख अति भारी। सुनि त्रियसारी भरिभरि थारी॥
चलीं भलीबिधि भोग सवांरी। गावत चलीं मङ्गलाचारी॥
बढ़ी लालसा दरशन केरी। देख्यो हरिहि खरी सब घेरी॥
धरि धरि थार भरे नग दाना। तबयह तिनहिंकह्यो भगवाना॥

तुम सम भक्त अहै नहिं कोई। भवन जाहु पतिभय नहिं होई॥
तुम सँग ते ते हैं सब भरता। गऊलोक जैहैं मुद करता॥
इमि कहिकै हरि खायो सोई। ते गृह गईं बिदा कहँ होई॥
तिन सबकह तिनके पति जेते। बन्दत भे बखान करि तेते॥

दो० यज्ञ किये यज्ञेश ढिग, गये न ते नरराय।
आयो अहि नहिं पूजई, बांबी पूजन जाय॥

सवैया। जब ब्रह्मको जाना नहीं पण्डित भया तो क्या भया।
जब बात को बूझा नहीं कुछ कह दिया तो क्या भया॥
जब राग को चीन्हा नहीं गानी भया तो क्या भया।
जब कृष्ण को ध्याया नहीं ज्ञानी भया तो क्या भया॥

दो० सबन समेत गोपाल तब, आये अपने धाम।
और सुनहु इतिहास अब, जनक महामतिधाम॥

सो० एक दिवस नँदराज, ब्रत करि एकादशी को।
गे नहानके काज, निशा शेष यमुना सरित॥

बरुण दूत नन्दहि गहि लीन्हा। स्वामिहि सौंपि जाइ सो दीन्हा॥
भयो कोलाहल नन्द हिराने। तब हरि यमुना माहिं समाने॥
परम कोप प्रभु कोप तहाहीं। लगी आग पानी के माहीं॥
देख्यो हरिहि तेज की राशी। नौमि जोरि कर बोलेउ पाशी॥
नमो कृष्ण परिपूरण स्वामी। अमित अण्डपति अन्तरयामी॥
चार ब्यूह पति सर्वाभाशा। शिवबिधिबन्दितस्वयंप्रकाशा॥
कोउ नौकर मम मूरख भारी। कीन्ह अवज्ञा क्षमहु मुरारी॥
मैं तव शरण दयानिधि लीन्हा। इमिकहिबहुबिधिपूजनकीन्हा॥

दो० बिदा होय के बरुण ते, संग लिये निज बाप।
ब्रज आये आनन्दमय, जान्यो सबन प्रताप॥

गोपन तबै कृष्ण ते भाषा । हम तव पुर दरशन अभिलाषा ॥
दृग मूंदहु भगवान बखाना । कैसी सबन कीन्ह नर आना ॥
खोलि आंख बैकुण्ठ निहारा । जहँ सहस्रभुजके सरदारा ॥
उच्च कनकआसन आसीना । सेवहिं ब्रह्मशिवादि प्रबीना ॥
ठाढ़े श्रुति भुज सुर समुदाई । अतिशोभा कछु कही न जाई ॥
गोपन कहँ लखि चौकीदारा । बरे खरे रहु बचन उचारा ॥
करहु दण्डवत बकहु न नेको । तकहु चरण अरु ध्यान न छेको ॥
तुम गवांर बैकुण्ठ न देखा । नई साध यशपालक भेखा ॥

दो० ते सब तैसेइ भे खड़े, सभय कहत कछु नाहिं ।
जिमि नव खगन पकरि धस्यो, कनकपींजरा माहिं ॥

भे कुण्ठित बैकुण्ठहि आई । याते भलो अहै ब्रजभाई ॥
यह विचार ते मनमहँ ल्याये । कहा कृष्ण भाषहिं घबराये ॥
तुरतहि तिनसह हरि छबिछाये । आये ब्रज को भेद न पाये ॥
इक दिन नन्दादिक ब्रजबासी । गये अम्बिका बन छबिरासी ॥
भद्रकालि पशुपति कहँ पूजी । रहे राति उर आनँद पूजी ॥
अहि इक आइ नन्द पग गहेऊ । ब्याकुल कृष्ण कृष्ण यह कहेऊ ॥
बाती लै धाये सब देखा । कृष्ण आइ अजगरहि परेखा ॥
मारेउ चरण मरेउ सो अजगर । तुरतहि भयो चारु बिद्याधर ॥

दो० हाथ जोरि पग बन्दिकै, बोलेउ गिरा ललाम ।
बिद्याधर मैं रूपनिधि, हौं सुन्दर शतकाम ॥

अष्टावक्रहि लखि कै हँसेऊ । शापदीन मुनि सोइ अघ फँसेऊ ॥
टेढ़े अङ्गन भयद भुजङ्गा । तवप्रताप गति लहेउँ अभङ्गा ॥
देखि चरण युग पङ्कज बरणा । भयों मुक्त मैं गहि तव शरणा ॥
जय जय दीनबन्धु करतारा । मैं तुम कहँ बन्दत बहुबारा ॥

इमि कहि गो सो वैष्णवलोका। जहँ न नेकु दुख सब सुखओका॥
सबन समेत नन्द ब्रज आये। कहत कृष्णगुण आनँद छाये॥
और कथा अब सुनहु महीपा। बिहरत बिपिन गोपकुलदीपा॥
चोर साहु को खेल रच्योभल। बलमोहनमिलिआंखिमुंदउवल॥
दो० व्योमासुर तित बाल बनि, मातुल प्रेरित आइ।
पकरि पकरि ग्वालन धस्यो, गुफामाहिं नरराइ॥
ऊपर राख्यो शिला महाना। व्योमहिकृष्णआसु अनुमाना॥
कोपि प्रबल पटकेउ महिमाहीं। प्राणरहा क्षणहूँ तन नाहीं॥
तासु ज्योति हरि मध्य सुहाई। घनमहँ यथा बलाका जाई॥
मारि व्योम कहँ करि गुणतासू। काटेउ कृष्ण गुवालन आसू॥
तब यह प्रश्न कीन्ह क्षितिरवना। पूरब रह्यो असुर यह कवना॥
जो माधव मुख मध्य समायो। सुनिकै नारद बचन सुनायो॥
काशीभूप भीमरथ नामा। वैष्णव दानी मखी ललामा॥
सुतहि राजदै मलयहि जाई। संवत लक्ष कीन्ह तप भाई॥
दो० ताके आश्रम महँ गये, शिष्यन सहित पुलस्त।
नयो न अरु पूजो नहीं, तपमदग्रस्त सुमस्त॥
दैत्य होहु ऋषि सरुष बखाना। परेउ चरण तब नरकुल त्राना॥
कह मुनि आनि दया मन माहीं। द्वापरमहँ अस्थान जहांहीं॥
मुक्ति होइहै संशय नाहीं। सोई भो अरु मस्यो तहांहीं॥
कथा सुनहु अरु नृपति सुजाना। एक दिवस ब्रजमहँ बलवाना॥
बृषबपु अरि अरिष्ट चलिआयो। गर्जत पगतें धरणि कँपायो॥
चलेउ बवण्डर खग मृग भागे। गे जगदीश बृषभके आगे॥
सींग पकरिकै ठेल्यो पाछे। सोऊ उरित भयो बिधि आछे॥
पूंछ पकरि पटक्यो हरि कैसे। लघुकमण्डलहिं अर्भक जैसे॥

दो० उठेउ अरिष्ट गरिष्ट अति, परमबरिष्ट अरिष्ट।
शिला उठायो सींगते, दानव मध्य बलिष्ट॥
बैल शैल हरि ऊपर डारो। तापर फेरि कृष्ण सोइ मारो॥
ताते व्याकुल है अति डकरो। मारत सींग भूमि जल निकरो॥
पुनि प्रभु तेहि फिरायकै पटक्यो। कढ़िकैप्राणव्योमदिशिसटक्यो॥
तुरतहि बृषभ बिप्रबपु धरिकै। कृष्णहिं कहत बन्दना करिकै॥
शिष्य बृहस्पति के हम सांई। बैठे गुरु ढिग पग फैलाई॥
गुरु तब कहा बैल सम अहई। ताते आशु बैल बपु लहई॥
बन्दिदेश महँ बृषभ भयो है। तहां असुर के संग ठयो है॥
बृषते असुर भयो मैं स्वामी। अब तव कृपा परमगतिपामी॥
दो० श्रीगोविंद प्रणतार्तिहर, बासुदेव भगवान।
कृष्ण तुम्हैं बन्दत अहौं, कृपा करहु सज्ञान॥
सवैया॥ इमि भाषत आस प्रकाशत सो, यदुनायकके बरधाम गयो। सुरग्वालन ने नँदलालन को, कहि धन्य सुजान निशान हयो॥ महिपाल सुनो यह प्रेम भरो, बर माधुरीखण्ड समाप्त भयो। पढ़िकै सुनिकै गुनिकै यहिको, मन कौनको नाहिं अनन्द भयो॥
दो० जेहि सुमिरे भय भगत हैं, खण्ड होत पाखण्ड।
अमितअण्ड मण्डल करन, दलन विश्वअघचण्ड॥
नगबरधर जगमग बदन, नगबर मुकुट जराव।
जगदुखहर सुखकर परम, सजग सुचित यदुराव॥
सो० कृष्ण कृष्ण जपि नाम, माधुरि खण्ड समाप्त किय।
तिनकहँ कोटि प्रणाम, जे बैठे मेरे सुहिय॥
इति श्रीभाषाप्रकाशेकृष्णप्रियगिरिधरदासविरचितेप्रेमपथ-
रचितेगर्गसंहितायांचतुर्थमाधुर्यखण्डंसमाप्तम्॥ ४॥

अथ मथुराखण्डप्रारम्भः ॥

सो० बिरचित कोटिन अण्ड, ब्रजमण्डन आरत हरण ।
बरणत मथुराखण्ड, बन्दिदेव गुरु गिरिधरण ॥
दो० देवदेव बसुदेवसुत, दलन कंस चाणूर ।
देवकि आनँद पद प्रभू, बन्दे प्रिय अक्रूर ॥

पुनि महीप इमि कहेउ प्रबीना । मथुरामाहिं कृष्ण कह कीना ॥
किमि माख्यो कंसहि भगवाना । बेदबदनसुत बचन बखाना ॥
एक दिवस हम हरिके प्रेरे । मथुरा गये कंसके नेरे ॥
देखत भये समेत समाजा । शक्र सिंहासन राजत राजा ॥
परम भयंकर कह्यो न जाई । मोहिंलखि सो अतिकीन्हपुजाई ॥
बैठे हम तिन मोते पूछा । मैं तेहि कहा जान मति छूछा ॥
बसुसुर सुवन कृष्ण बलदेवा । देवकि रोहिणि ते यह भेवा ॥
तव भय सुतहि नन्द कहँ दीन्हा । सो निज करिकै बिश्रुत कीन्हा ॥

दो० पूतनादि मारो सकल, असुरन हे क्षितिपाल ।
साईं तुम कहँ मारिहैं, नेकु न चीन्हत काल ॥

शौरिहतन हित कंस रिसाना । चलेउ क्रोधबश काढ़ि कृपाना ॥
हम निवारिकै भवन सिधायो । फँसे कैदमहँ तिनहिं नचायो ॥
राम कृष्ण मारनके काजा । केशीकहँ पठयो यदुराजा ॥
चाणूरादिक कहँ बुलवाई । कहत कंस उसगंस बढ़ाई ॥
सुनहु सकल नारद निरधारे । राम कृष्ण हैं काल हमारे ॥
आवहिं इत तब तुम सब भाई । मारेहु करिकै कुटिल उपाई ॥
रङ्गद्वार पर राखेहु नागा । रहैं सुभट सब रिपु तिनआगा ॥
चौदशि दिवस धनुषमख होई । मल्ल समर अम्मावस सोई ॥

दो० इमिकहि मन्दिर जाइकै, अक्रूरहि बुलवाइ ।

सादर ढिग बैठाइकै, कहत भोजकुलराइ॥
हे मन्त्री ममहित अनुसरहू। प्रात जाइ ब्रजकारज करहू॥
तहँ द्वै शौरिसुवन मम काला। अहैं कह्यो यह नारद हाला॥
रङ्गभूमि बिरतान्त सुनावो। तिन सह सब गोपन लै आवो॥
गज अरु मल्लनते मरवैहैं। पुनि नन्दहि यमलोक पठैहैं॥
बृषभपतङ्ग नन्द उपनन्दा। देवक शूर शौरि मतिमन्दा॥
उग्रसेन खल जनक हमारा। करिहौं यदुकुल कर संहारा॥
ये सब सुर मम रिपु हैं भाई। शकुनिदैत्यममहितअधिकाई॥
बृक शम्बर संभूत सँतापन। कालनाभ महँ नाम महाप्रन॥
दो० हरिश्मश्रु बानर द्विबिद, ये मम मित्र महान।
जरासंध मेरो श्वशुर, परम बीर बलवान॥
बाण नरक अति मित्र हमारे। जिन रनमाहँ पुरन्दर हारे॥
धनदहि मेरु गुफा महँ नाई। लै धनु राज करौंगो भाई॥
तुम अतिकबि गुणवान सुजाना। लावहु रिपु यह काज महाना॥
सुनि सुफलकसुत बोले बानी। दुर्लभ यह मनोर्थ तव ज्ञानी॥
हरि इच्छा ते होइहि पारा। सुनत सकोप कंस उच्चारा॥
जे रोगी ते ऐसेइ कहहीं। होइहि सोई हरि जो चहहीं॥
मेरो सिद्ध मनोरथ होई। हम न आलसी निश्चय सोई॥
इमि कहि कछुक कोप उरधारी। कीन्ह भवन महँ गवन सुरारी॥
दो० इत केशी हयरूप खल, परमचण्ड अति जोर।
बृन्दावन महँ जाइकै, गरजेउ कुटिल कठोर॥
टाप लगे गिरि गिरहिं गरारे। नभघन सरकहिं पूंछ प्रहारे॥
देखि भयाकुल सब ब्रजबासी। कृष्ण शरण भे कहत उदासी॥
अभयतिनाहिंकरिकटिपटकसिकै। चले लड़नहित केशानिगिसिकै॥

हरिकहँ हरि पश्चिम पदमारो। डगत भूमि नभ मण्डल सारो॥
गहिपद हरि श्रुतिकोस समूचा। फेंकेउ बायुकमल सम ऊँचा॥
बहुरि आय सो पुच्छ घुमाई। मार्यो हरिहिं असुर रिसिआई॥
हरि गहि शतयोजन नभ ऊपर। तज्यो पुच्छते गिर्यो सभूपर॥
पुनि उठि कीन्ह मेघसम शोरा। कालसरिस कराल सह जोरा॥

दो० उठिकै निज मस्तकभयो, चालत असुर महान।
बातबेगते फल सरिस, महिमहँ गिरे बिमान॥

छं०भु०

महाकोपकै मुष्टिका कृष्ण मारो। घरी दोय चेतै नहीं दैत्य धारो॥
उठायो हरीको गयो ब्योम धायो। श्रुतीलाखकोसैहृदयमेंरिसायो॥
भयो अश्वते युद्ध आकाश ऐसो। लरे वृत्र वृत्रारि लैकोक जैसो॥
उठायो घुमायो हयै भूमि नायो। लटूज्योंकोऊबालछोटोफिरायो॥
भुजाकृष्णकी कोप केशी चबायो। कियो रोध ता पेट बीचै बढ़ायो॥
भयो बन्द बाजू महा घब्बरायो। तबै तासुको आसु आसूपरायो॥

दो० उदर फटे भो अमरतन, मुकुट बिराजत शीश।
बन्दि हरिहिं भाषतभयो, सुनिये श्रीजगदीश॥

हम क्रतु अनुचर कुमुद सुजाना। छत्र फिरावत जहँ सुरत्राना॥
बृत्र हते हत्या के काजा। बाजिमेध कीनो सुरराजा॥
हम तव मखहय लीन चोराई। अतलगयो चढ़ि सभय पराई॥
मरुतनते पकराइ सुरेशा। दीन्ह शाप तैं हो हरिभेशा॥
द्वै मन्वन्तरलौं यह दासा। अबसो शाप तुमहिंलखिनासा॥
दीन दयापालक भगवाना। मोकहँ किङ्कर करहु अपाना॥
इमि कहि सो हरिके समरूपा। चढ़िकै चलो बिमान अनूपा॥
बन्दि हरिहिं हरिपुर सो गयऊ। कुमदकुमद हरिमखहरि भयऊ॥

दो० कंससुरथ चढ़िकै चले, गोकुल को अक्रूर।
हरिदर्शन गुनि मगन मन, कौन कहै गतिभूर॥

पुनि पुनि पुलकत करत बिचारा। आज प्रकट अतिसुकृत हमारा॥
भारत कीन कौन अस करणी। नैन चैन होइहि ब्रजधरणी॥
द्विजसेवन तीरथ महँ बासा। जाते लखिहौं रमानिवासा॥
कौन सुतप हम हरिहित कीन्हा। जो होइहि सुखप्राप्त प्रबीना॥
योगिनकहँ दुर्लभ सो दरशन। होइहिं हमहिं पदुमपदपरशन॥
सोइ जगजीवन सफल बखाना। जो दरशै परशै भगवाना॥
जो दर्शनकरि पूरिहि स्वारथ। अहो आज हम होब कृतारथ॥
लोचन ते मोचत जलधारा। गोकुल सांझ कीन्ह पैसारा॥

दो० हरिपद चिह्नित भूमि लखि, अंकुश कुलिशसमेत।
जो दुर्लभ ब्रह्मा शिवहिं, कूदे प्रेम अचेत॥

सो० लोटन लगे सुजान, नन्दराय ढोटन सुमिरि।
करि भव चोटनहान, झोटन हरिपदरजमिल्यो॥

छं० पुनि सुरथ चढ़ि अतिमग्नमन नँदराजघरचलिआइयो।
मगमाहिं सखन समेत श्रीबलराम कृष्णहि पाइयो॥
जिमि शरद पावस मेघ हंस मयूर हीरलसूलिया।
सुपुराण पुरुष प्रबीन परम परेशकी छबि गूनिया॥
शिरमुकुट अरु लट लटक पटकी चटक मनकहँ हरत है।
नटवर प्रकट घट घटनिवासी अधर मुरली धरत है॥
सो निरखि चाचा प्रेमराचा भई बाचा गदगदी।
सब विश्व कांचा कृष्ण सांचा जानि परसे पदपदी॥
बीचहि उठाइ लगाइ लीन्हो कण्ठ हरि सनमानिकै।
बलदेव ते मिलि नन्दके गृहगये उर सुख मानिकै॥

उठिनन्दसहित अनन्दआतुर मिलि कुशलकहँकरतभे।
बैठे समेत समाज सिगरे शूल मनको हरत भे॥

दो० कहत नन्द तुमहौ कुशल, कंस दुष्टके राज।
जिन मारे भगिनीसुवन, नेकु न आई लाज॥

हरि तब कह्यो कुशल इत अहई। कहहुकुशलनिजजोमोहिंचहई॥
शौरिकेरि अरु यदुकुल केरी। दशा बतावहु खलकी प्रेरी॥
कह्यो अक्रूर सुनहु खल कंसा। शौरिबधन चाल्यो गहि गंसा॥
नारद तहँ समुझाइ बचायो। कोपि कैदखाने महँ लायो॥
यादव जहँ तहँ गये पराई। और दशा जिन पूछहु भाई॥
तुम सबहिन कहँ काल बुलायो। रङ्गभूमि धनुयज्ञ रचायो॥
लै लै गोरस सिगरे गोपा। चलहु काल आनन्द अरोपा॥
सो सुनि नन्द चलन अभिलाषे। यह आभीर मार सो भाषे॥

दो० हम अरु बर बृषभान बुध, सकल नन्द उपनन्द।
षट बृषरवि अरु गोपगन, चलहु कालिह सानन्द॥

गोरस नेक रहै नहिं भाई। राखहु सबको शकट भराई॥
प्रात मधुपुरी जाइ अखेटा। लै लै चलहिं गोप निज भेटा॥
इमि कहि सुफलकसुतहि जेंवाई। घर घर सैन दीन्ह नँदराई॥
नन्द दूत घर घर यह भाषा। सुनि गोपन सोई अभिलाषा॥
तनक भनक जब अबलन पाई। कहहिं परस्पर जात कन्हाई॥
बर बृषभान भवन सुनि राधा। परी शोक के सिन्धु अगाधा॥
प्राणनाथ मथुरापुर जाहीं। मोरे प्राण कि रहइँ इहाहीं॥
चिन्तति गिरी अवनि पर कैसे। गिरि परते मतवाला जैसे॥

दो० घर घर सब गोपी बिकल, परी मारकी मार।
यार हमार मुरारि हरि, चलन चहत नृपद्वार॥

प्रभु गोविंद कृपाल गोपाला । पर दुखहरन दीन प्रतिपाला ॥
त्यागि त्यागि गृहके सबकाजा । कृष्ण कृष्ण कहि रोवहिं राजा ॥
अतिहि क्रूर अक्रूर कहायो । सुफलकसुवनअसुफलकजायो ॥
देखहु निरमोही नँदलाला । को जाने सखि ताको ख्याला ॥
भीतर औरै ऊपर औरै । देव न जानहिं नर इकठौरै ॥
हाय चलतहू कहा न सोई । जीवन बिन किमि जीवन होई ॥
मम नैनन ते जीवन जाई । हा अपार यह आपद आई ॥

दो० इमि गोपी ब्याकुल सकल, जान्यो श्रीभगवान ।
सोइ रात सबके सदन, गये भक्त सुखदान ॥

जेती नारी तिते मुरारी । घर घर गे समुझावन भारी ॥
लख्यो राधिकहिं निजगृहमुरछी । बनशी श्याम बजायो तिरछी ॥
चौंकि उठी देख्यो गिरिधारी । निजलोचन ते मोचत बारी ॥
शशिहि देखि कुमुदिनि समसोई । आसन दिय गरुड़ासन जोई ॥
देखि बदन प्रिय केर मलीना । फिकिरजिकिरकहँकेशवकीना ॥
हमहिं जात सुनि तुम दुख कीन्हा । ताहि तजहु जो संशय लीन्हा ॥
बिधि बिनये हम तुम भुवआये । भार उतारन हेतु सुहाये ॥
ताते हम मथुरापुर जाई । ऐहैं करि कारज अधिकाई ॥

दो० सो सुनिकै अति दुखितह्वै, रहीं भूमि मुरझाइ ।
यथा लुआर प्रहारते, महि चंपा ह्वै जाइ ॥

कहत बहत दृग महत मलीना । सुनिय चहत हमजो मत कीना ॥
है बियोग तुम्हरो अति भारी । सहि रहिसकत न प्राण मुरारी ॥
तव दुख अग्नि प्राणमम पारा । उड़िजैहैं जो धरहु पिटारा ॥
केशव कह्यो शाप श्रीदामा । भूलिगई कै जानत बामा ॥
शत संवत मम होइ बियोगा । नहिं संशय पै बर को योगा ॥

मास मास प्रति दरशन होई। यह हम सत्य बखानत सोई॥
तब राधा भरि लोचन बारी। कहत बचन उर शाप बिचारी॥
मास मास प्रति जो नहिं ऐहौ। सत्य न तौ मोहिं जीवत पैहौ॥

दो॰ जगभूषण अभिराम मति, बिश्वदीप दुखहारि।
यदुनन्दन नँदनन्द प्रभु, सुखसागर भयहारि॥

सो॰ सुनि राधाके बैन, बुद्धिऐन राधारमण।
बोले मोहन बैन, सत्य आयहैं है न छल॥

छं॰ मोहिं सौंह अहै सुरभीगणकी, इतआवहिंगे तहँते झपटी। दुखकी बड़िबात अहै बनिता, तृण आगिलगै अति ज्यों दपटी॥ दिनतीस गये घनश्याम प्रभू, दुख दूरिकरौं गरमैं लपटी। हिततै नर जो कछु झूठ कहै, अघराशि सोई जगमें कपटी १ मति मान करौ जनि संशयको, जगमें नर को इक बात अहै। तेहि त्यागि दियो तब काह रह्यो, तन चञ्चल प्रान रहै न रहै॥ जब बैन गयो तब चैन कहां, यह तो अतिसारस बेद कहै। जिन झूठ कह्यो तिन नर्क लह्यो, सुख दूरि बह्यो नहिं शर्म लहै॥

दो॰ कारण सब मनको अहै, जानहु तुम करि गौर।
प्रेमसार संसार को, सत्य बिचार न और॥

जिमि भाण्डीर बिपिनके माहीं। भयो मनोरथ सकल तहांहीं॥
तिमि ह्वैहै संशय नहिं करहू। काहे हृदय बृथा दुखधरहू॥
हम तुममहँ जे जानहिं भेदा। तिनहिन ते यह बरणत बेदा॥
होहिं तीन यमके अधिकारी। केहिहित करतशोचअतिप्यारी॥
जिमि रबिरश्मि सिन्धु अरु लहरी। बिलग लये दोउ नामन बहरी॥
कालसूत्र सुनरक महँ गर्का। तेनिबसहिं जबलौं शशि अर्का॥
इमि राधादि गोपिकन कहिकै। आये लेन भवन सुख गहिकै॥

प्रात गोपाल तहां के सगरे। नन्दादिक मथुरादिशि अगरे॥
दो० आगे नन्दादिक गये, संग लिये सब ग्वाल।
पाछे यादव सुरथपै, बल औ श्रीगोपाल॥
कोटिन गोपी सब दिशि धाईं। करत शोर रथ छेंकेउ आईं॥
रे रे क्रूर क्रूर यह कहिकै। लीन्हे छेंकि महारिस गहिकै॥
तजि लाजहि गहि गहि कर लाठी। मारन लगीं सुरथपर माठी॥
छोरि हयनकहँ दीन्ह भगाई। सूतहि रथ ते ऐंचि सुताई॥
क० क्रोधउरपूरपूरदूरजातिभागिगोपी, दीन्होहैगिरायभूमि व्याकुलअनूरभो। कङ्कणतेकरतेबिदन्तनतेपांवनते, घातकरैंबातन तेनैनजल पूरभो॥ यानलै चढ़ाये जान जानचहैंहमजान, जान नहिं देहैं देखि मोहिं दुख भूरभो। चूर चूर करिकै अक्रूरकी नि-कारिधूर, चोटलागीभरपूर क्रूर मशहूरभो॥
दो० गोपिनकहँ समुझाइहै, संध्या अइहै भाखि।
चले बायु सम जोति रथ, तापर चाचहि राखि॥
क० स्यन्दनकीध्वजाप्यारीनारीतेनिहारीरही, कहतमुरारीजू हमारी आशपूरहू। वहजातमोकहँलखातदरशातछत्र, बातकेकहत बातसमजातदूरहू॥ गिरी एकबेर भरबेरकीसी ढेरझरी, टेरकह एरी ना दिखात अब धूरहू। रोवत लुगाई आई भवननसाईसारी, आईहै कन्हाई सांझ आश लाई भूरहू॥
दो० सुरथ जाइ अक्रूरको, रुक्यो यमुन के तीर।
मथुराको उपबन निरखि, उतरे यादवबीर॥
यादव दोउन रथ बैठाई। प्रविशे जलमहँ ध्यान लगाई॥
तहँ दोउनकहँ लखि अक्रूरा। बाहर पुनि रथ लख्यो सुसूरा॥
बहुरि धसे जल तहां निहारो। सर्प सहसमुख गेडुरि मारो॥

ताके गोदी गोपस्तुतिघन। यमुना गोवर्धन वृन्दाबन॥
अमितकोटि रविसरिस प्रकासा। तहँ राधाहरि करहिं निवासा॥
परिपूरणतम पूज्य परेशा। बन्दहिं बहुविधि शेष महेशा॥
कृष्णहि कृष्ण जानि तेहि काला। देहते सब संदेह निकाला॥
धन्य भाग्य गुनि गोदनिनन्दन। बोले करि कृपाल पद बन्दन॥

दो० नमो कृष्ण करुणायतन, ओक जासु गोलोक।
परिपूरणतम अण्डपति, शोक भाण्ड महँ भोक॥

तो० श्रीराधिकापति चारु। व्रजमाहिं नित्यविहारु॥
श्री नन्दनन्द उदार। यशुदाकुमार कुमार।
देवकसुतासुत ईश। बसुदेवपुत्र नरेश॥
गोबिन्द जग विश्राम। यदुनाथ नाथललाम॥
जगदीश पुरुषपुराण। जिहि बदत बेद पुराण॥
यह देहु मोहिं गुनिदास। तव भक्ति उरकर बास॥
तव बदन देखैं नैन। पग जाहिं तुम्हरे ऐन॥
कर करैं सेवा चारु। श्रुतिसुनैंसुयशअपारु॥
तव चरण कञ्ज पराग। नासा सुंघै बड़भाग॥
जेते हमारे अङ्ग। तव हेत ते श्रीरङ्ग॥
होवै हमैं बरदेहु। करि कृपा केशव येहु॥
श्रीकृष्ण यह तव नाम। मम उर करहु विश्राम॥

दो० कृष्ण कृष्ण रसना रटै, घटै न नेकहु प्रीति।
हटै न मनकी बासना, दीजै प्रेम प्रतीति॥

इमि अक्रूर जब अस्तुति ठाना। भे जलते प्रभु अन्तर्धाना॥
नौमि हरिहि नितको कृतकरिकै। स्यन्दन बैठि चले सुख भरिकै॥
पिछले दिवस रहे सो जाना। मथुरा उपवन आइ तुलाना॥

उतरे तहां गोप समुदाई। काकाते भे कहत कन्हाई॥
जाहु आप मथुरा रथ लैकै। हम ऐहैं सब सँग निरभैकै॥
सुफलकसुत यह बचन प्रकाशा। कीजै कृपा जानि निजदासा॥
बलबालक नँदराज समेता। ममगृह निबसहु कृपानिकेता॥
होइ पवित्र आजु अस्थाना। सुनिभे कहत बिहँसि भगवाना॥

दो० मारि कंस कहँ आइहौं, तव गृह सखन समेत।
जाहु जात हम नन्दपहँ, अबहीं है कछु हेत॥

गे अक्रूर कंस के पासा। उपबन आयउ कहेउ खुलासा॥
कंस करतभे आदर भारी। निज गृह गये अक्रूर बिचारी॥
सहित सरोवर बारे बारे। कृष्ण नन्दते बचन उचारे॥
हम पुर देखन चाहत ताता। तबहिं लखन भाष्यो ब्रजत्राता॥
पै ऊधम न करेहु सुनि काना। ग्वालन संग चले भगवाना॥
बलमिलि भलबिधि नगरनिहारा। रतनरचित राजहि आगारा॥
अमरावती सरिस अस्थाना। यमुनामहँ मणि के सोपाना॥
सखन सहित प्रमुदित गिरिधारी। राजमार्ग राजे बनवारी॥

दो० सुनि आये दोउ नन्दसुत, ब्रजबनिता तजि काज।
जहां तहां देखन चलीं, कहहिं सुकृत अति आज॥

क० आँगनकुमारडारेपलँगभतारडारे, दूरिब्यवहारडारेसुधिभूली काजकी। हाथमेंकोहाथमेंहैमुखमेंकोमुखमेंहै, थारमेंकोथारमेंहैदशा योंसमाजकी॥ केतीहैंझरोखेकेतीमहलअनोखेचढ़ीं, खिरकीमें गलीमेंबजारब्रजराजकी। शोभासिन्धुआयेसुनिधाईंनारिआपगा सी, लहरदराजमें जहाजबूड़ीलाजकी॥

दो० देखि रूप ब्रजकी त्रिया, दिय तनदशा भुलाय।
बल मोहन सोहैं लसैं, छबि बरणी नहिं जाय॥

तो० प्रमुदित लुगाइ। सुख उर न माइ॥
मोहन निहारि। मोहीं सुनारि॥
गोविन्द रूप। अतिही अनूप॥
लखि मुदित गात। यह कहहिं बात॥
जहँ रहहिं श्याम। सो धन्य ठाम॥
ते धन्य बाम। ब्रज बसहिं गाम॥
नित लखत नैन। जिनके सचैन॥
जिन जित्यो मैन। बर रूप ऐन॥
इमि सुनत बैन। हरि जगत जैन॥
तहँ के नृनाथ। शिशु लगे साथ॥
इमि चले जात। आनँद बिभात॥
मथुरा गलीन। पूछ्यो अलीन॥

दो० एक रजक देख्यो तहां, बोले कृपानिधान।
अम्बर मोकहँ देहु कछु, सुनिसो कहत रिसान॥

स० पट मांगत हैं झटसों मुखते, सुरभीकहँ चारि मही अटते।
जेहि बापपितामह नाहिंलख्यो, नहिंआवतलाजकह्योठटते॥
पुनि भाषत तौ इकधौल लगै, सब पद्धति दूरि दुरै नटते।
यदु होइ कहा कोउभूत लग्यो, सुनतै नृपप्राण हरै घटते॥

दो० सुनि सकोप भगवान हरि, निजकर अग्रप्रहारि।
धरते मस्तक धरापै, निधरक धरा उतारि॥

लीनभयो तहँ धोबी सोबी। ग्वालन पीठ दियो द्रुत बोबी॥
भागिगये अनुचर सब ताके। ग्वालभये पट लूटत वाके॥
जिन जो पायो तिन सो लीनो। अस्तब्यस्त तनधारण कीनो॥
नीलबसन लीन्हे बलदाऊ। पीरे परम कृष्ण यदुराऊ॥

थानहि लै लै अङ्ग लपेटा। हरि बलसह गोपन के बेटा॥
तहँ दरजी हरिकी गुनि मरजी। बगाबनायो हरिजन बरजी॥
सबकहँ शीघ्र सुखद पहिरायो। सो समाज शोभा अतिपायो॥
तब हरि ताहि रूप निज दीन्हा। लक्ष्मीदै धनाढ्य बलकीन्हा॥
दो० बन्दि चरण भगवानके, बानक गो अस्थान।
शोभासागर चलतभे, उर आनन्द महान॥
ग्वालनसहित सुमनहित हाली। मालीभवन गये बनमाली॥
उठि बन्दे दोउ चरण सुदामा। सिंहासनपर धरि बलश्यामा॥
चौकी फूलनकेरि बनाई। कहत सुमाली शीश नवाई॥
धन्य जन्म कुल भवन हमारा। पीढ़ी सात भई उद्धारा॥
मातु त्रियाकी तितनी पीढ़ी। पुरुषा चढ़े कृष्णपुर सीढ़ी॥
भूमिभार के नाशन काजा। ब्रजप्रकटे दोउ यदुशिरताजा॥
करि सुकृपा ममभवन पधारे। धन्य भाग प्रभु आज हमारे॥
इमि कहि कुसुम सुभूषण भारे। रचि द्रुतदोउ बलकृष्णशिंगारे॥
दो० सबग्वालनकहँ सजिदयो, शोभित तिनमहँ श्याम।
सुमनससुमनसनाथजिमि, सानुज सुमन सुठाम॥
हरिसे कहत गरीयसि मेरी। भक्ति होइ सायुज्य बड़ेरी॥
वलदै श्री तेहि उठि सहसाजा। चले नगर अवरेखत राजा॥
मग कुब्जा इक चन्दन लीन्हे। लखिहरिकह्यो समुदमन कीन्हे॥
को तुम कासु प्रिया कहि एहू। अङ्गराग यह मोकहँ देहू॥
तुरत तोर होई कल्याना। कंसचेरि सुनि बचन बखाना॥
मैं दासी तव कुब्जा नाऊं। चन्दनानितप्रति नृपहि लगाऊं॥
पै अब दासी भई तुम्हारी। देखि मनोहर मूरति प्यारी॥
सबन लगैहौं तुम्हरे काजा। चन्दन नन्दनँदन ब्रजराजा॥

दो० जगबन्दन के अङ्ग में, चन्दन दीन्ह लगाय।
परम महीन प्रवीन त्रिय, अति सुबास सरसाय॥
जेते बालक सँग रहे, तेते अरचित देह।
जानि कृष्ण आनी दया, कीन्ह उपाय बिदेह॥

क० दोऊपगएकढिगताकेकरिकृपासिन्धु, तापैश्रीचरणनिज धारयो भांति खूबरी। दाबिकैचिबुककरएकराखिपीठपर, उभकि अनूपकरिदीन्हीमहबूबरी॥ मालीजैसेलटकतीलताकोउठायलेत, तैसे बनमाली डालीकीन्हीहैअजूबरी। दूबरीमुटाईपायपरशुगुपाल जीको, रतिकेसमानरूपमानभईकूबरी॥

स० अवलोकति सो अपनेतनको, नँदकूबरकूबरचोरलयो।
गठरी सुहरी गठरी मनकी, यह अद्भुत तस्करकर्मठयो॥
तुरतै करथाँभि कह्यो प्रभुजी, अबजातकहांहमबाटधयो।
तनकोमनको धनचन्दनको, हरिजानचहौंहरिसोनभयो॥

दो० जब ऐसे कुब्जा कह्यो, करताली दै ग्वाल।
हँसनलगे बलदेवसह, सकल कहहिं भल ख्याल॥

ताते कहत भये भगवाना। नहीं नगर मथुरासम आना॥
लखि शोभा इतकी अतिभारी। तव गृह आवत सुनसतिनारी॥
चले बहुरि उर आनँद पागे। बहुत बैश्यजन देखे आगे॥
पूजि हरिहि दधि अक्षत लाजन। बोले सहित समाज महाजन॥
जब प्रभु होइहि राज तुम्हारा। जानेहु दास हमन निरधारा॥
बनिकन्ह भक्ति देइ भगवाना। कहेउ बतावहु धनु अस्थाना॥
तिन तब सो थल दीन्ह बताई। जहां धनुष उत्तम सरसाई॥
मथुरा बालक मन्त्रि कृपाला। जाइलख्यो कोदण्ड कराला॥

दो० अष्टधातु चित्रित बन्यो, चामीकर को चारु।

सर्प कुण्डलीभूत सम, लाख भार सम भारु॥
परशुराम जो कंसहि दीना। केशव कर कोदण्ड प्रबीना॥
अरचित बिबिध भांति धनु सोई। चौदस दिवस सोई सुख होई॥
पाँच सहस भट रक्षहिं भारे। तहां आशु श्रीकृष्ण पधारे॥
मगमहँ मृगपति सम सरसाई। बासुदेव धनु लीन्ह उठाई॥

छं० धनुलीन्हमण्डनकीन्हसबकी आँखितेहिक्षणढँपगई।
तेहितानकान प्रमान शब्द महान धरणी कँपगई॥
द्वैटूकतुरतहि कीन्ह लखि खलमण्डलीअति चपगई।
त्रैलोक्यकंपायमानशोर महान जिमि तड़ि लपगई॥
जिमिचढ़तगजलघुतरणितिमि महिगिरनलागेभूधरा।
भेबधिरसकलसमाजघटिका दोय चेतहि नहिं धरा॥
अहिकँपत कूरम चपत सूकररद लपत तिहुँपुरडरा।
उच्छलत सागरनीर बाढ़ी पीर जग खरभर परा॥
सो शब्दरूपी बान निकरि कमान ते तिहि कालमें।
धरिगयो कंस कठोर उरमहँ भो सभय दुखजाल में॥
शिरते पर्यो महिकेतु संकट हेतु लखि जंजाल में।
भोकंसमोहितजोहि अशकुन सभ्रमहृदयउताल में॥
भटचेति पाँच सहस्र मारहु धरहु यह भाषत भये।
दोउटूकधनुको कृष्ण बल निजहाथ महँ राखतभये॥
ते सकल धाये शस्त्रधरि बहु शस्त्रकहँ नाशतभये।
प्रभुके प्रताप अपारते यमलोक अभिलाषत भये॥

दो० तेहिक्षण भागे मनुज सब, भयो भयंकर शोर।
धनु टूटो यदुनाथ को, तोरेउ नन्दकिशोर॥
संध्यासमय निहारिकै, ग्वालन सहित गोपाल।

नन्दरायके ढिग गये, चलत सुचाल उताल ॥
हरिहि देखिकै मथुरा नारी। मुग्धा कहहिं बिचारि बिचारी ॥
याहि देखि मन मोर लुभाता। किमि पति होइँ कहहु सो बाता ॥
मम मन मथत सुमनमथ आली। कुशलानारि कहहिं सुनिहाली ॥
हम सब अहहिं प्रमाणिक नारी। नाहिंमगमहँ छेड़हिं अबिचारी ॥
यह सुन्दर सब त्रियके काजा। मथुरा जन्मलीन ब्रजराजा ॥
एक चहै कै मोरहि होई। अहै बिचार ठीक नहिं सोई ॥
जामहँ सबको होइ गुजारा। सोइ ठीक मत येहु हमारा ॥
कबहुँ कृपा हमहूं पर करिहैं। सबके मन इमि आनँद भरिहैं ॥
दो० मनमोहन मोहन अहैं, धीरज धरहु सुजान।
अकसर मीठो खाइबो, उचित न सत्य सुजान ॥
कहि कहि भवन गईं हित अपना। कंस रात यह देख्यो सपना ॥
जेहि हरि लगन लगै अभिरामा। सो देखै नृप आठहु यामा ॥
रजक धनुष रक्षक कर नाशा। भङ्गधनुषध्वनि पूरण आशा ॥
अशकुन होन चलन अँग बांये। कंस सपनमहँ यह दरशाये ॥
तेल रक्त नङ्गो सँग प्रेता। रासभ महिष चढ़्यो दुख हेता ॥
दक्षिण जात माल हुड़हुड़की। उठा प्रात लागी दुख हुड़की ॥
सबन बुलाइ कहा समुझाई। मल्लभूमिकहँ साजहु भाई ॥
हेम सभा मण्डप के आगे। रच्यो अखारा संशय पागे ॥
दो० तनेउ बितान महान द्युति, अतिउन्नत नृपमञ्च।
मणिमण्डित तापर धस्यो, सिंहासन शुचिसञ्च ॥
छं० शुचिसञ्च सिंहासन बिराजत छत्रशिरअवदात हैं।
पंखा चमर सूरजमुखी बहुमोरछल सरसात हैं ॥
तापर बिराजेउ कंस आसन शक्रकेरबिभात हैं।

लखि जासु अतुलिततेज देवसमाजहू शरमात हैं ॥
नाचहिं त्रियाबहुरङ्गराजहिं बिबिधबाजनबाजहीं।
भेरी मृदङ्ग नगार दुन्दुभि अतिअवाजहिसाजहीं ॥
महिपाल निजनिजमञ्च बैठे लखहिं सुन्दररङ्गको।
मन्त्रीप्रधान सुजान लीन्हे सरस अपने सङ्गको ॥
चाणूर मुष्टिक कूटतोशल शल साहित सब मल्लजे।
बिहरहिंअनेकप्रकार अरिकुल मत्तगजकहँमल्लजे ॥
नन्दादि सिगरे गोप आये भेंट रखि नरपाल को।
बैठे सु अपने मञ्चपर देखत तहाँ के ख्याल को ॥
शम्बर जरासुत भौम बाण महीप सिगरे अतिबली।
बैठे बड़े रणधीर तितसब साज सजि उपमा भली ॥
यदुराज केरी बरसभा नरराज तहँ शोभित भई।
भारो अखारो मल्लराजहिं कंस उर संशय भई ॥

दो० इतनेहिमें लरिकन सहित, राम कृष्ण दोउ बीर।
रङ्गभूमि के देखते, आये पुलक शरीर ॥

देखेउ द्वार कुबलयापीड़हि। मत्तमतङ्ग करत किल क्रीड़हि ॥
कस्तूरी चर्चित सुखमूला। लसत सुमणि दुकूल में झूला ॥
देखि गजहिं बसुदेव कुमारा। गजवानहिंयहिबिधिललकारा॥
हस्तिहि खल हटाउ मैं जाऊं। नतरु मारि जैहौं नृप ठाऊं ॥
ताहि महावत भयो चलावत। चलेउ बितुण्ड शुण्ड फैलावत ॥
हरि भुजदण्ड झपटि गहि शुण्डहि। खैंचि लीन्ह कछु दूरि बितुण्डहि॥
तबहिं मतङ्ग उमङ्ग बिहाई। दन्त हनन की करी उपाई ॥
तजि शुण्डहि कराल इक मूका। करिवरशिर महँ हतेउ अचूका ॥

दो० ताते भिरेउ महान गज, चलेउ श्यामदिशि मस्त।

हस्तभरे के बीच मधि, डोले नगर समस्त ॥
भो पुर माहिं कोलाहल भारी। रङ्गद्वार पुनि गये मुरारी ॥
पग हरि हतेउ बहुरि गतब्रीड़ा। भई कुवलयापीड़हि पीड़ा ॥
दन्ती कहँ हरि झपटि लपटिकै। शुण्ड गह्यो अतिबेग दपटिकै ॥
पकस्यो पूछ इतै बलदाऊ। खींचन लगे दोऊ गुनि दांऊ ॥
जिमि नर डोर कूपकी खींचै। तिमि दोउन बल कीन्ह नगीचैं ॥
तिनमहँ ब्याल बिकल भो कैसे। द्वै खगपतिमहँ ब्याकुल जैसे ॥
सात महावत तबहिं रिसाई। चढ़िगे तापर दांव दिखाई ॥
अंकुश मास्यो कुञ्ज प्रभाका। मनहुँ मेघपर महत चलाका ॥

दो० तब सकोप गरज्यो रदी, शुण्ड गह्यो भगवान।
पटक्यो भूमि भवांइकै, कीन्हेउ प्राण पयान ॥

ज्योति कृष्णके चरण समाई। अचरजभयो सबन अधिकाई ॥
गिरि गिरि मरे महावत सारे। बायु बेग जिमि मेघ बिचारे ॥
रद दोऊ उखारिकै दोऊ। चले कन्धधरि अति छबि सोऊ ॥
भाजे जेहैं और महावत। यथामेघगुणि शरदहि आवत ॥
दन्त धरे भगवन्त कृपाला। प्रविशे रङ्गभूमि तेहि काला ॥
जेहि जस भाव रह्यो महिपाला। तिन तैसो देख्यो नँदलाला ॥

क० मल्लनसुमल्लजान्यो मित्रन अशल्यजान्यो, नन्दरायपुत्र जान्यो हरष बिशाल हैं। नारिनअनङ्गरूप अतुलअनूपजान्यो, यादवनजातिजान्योपरमरसाल हैं॥ योगिनसुतत्त्वजान्योब्रह्मजान्योब्राह्मणन, ग्वालनसुमित्रजान्योब्यापकदयाल हैं। नृपनमहीप जान्योखलनकरालजान्यो, देवदेवपालजान्योकंसजान्योकाल हैं॥

दो० जिनकी जैसी भावना, तिन तैसो हरि दीख।
निराकार साकार प्रभु, बेद पुराण सुलीख ॥

कान कानमें कहहिं सभाजन। ये परमेश्वर उभय महाजन॥
शम्भु स्वयम्भु भजहिं नितजाहीं। शेष सहसमुख रटहिं सदाहीं॥
धन्य भाग हैं आज हमारे। लोचन ते खगकेतु निहारे॥
इतने माहिं मल्ल चाणूरा। कहत कृष्ण ते भो रिसपूरा॥
तुम बल कृष्ण दोऊ बलवाना। हम सँग कुश्ती करहु महाना॥
ह्वै हैं मुदित भूमिभरतारा। करिहैं आदर अतिहि तुम्हारा॥
तब हरि कह्यो नृपति के जोहत। ऐसी नीति तुमहिं नहिं सोहत॥
कहँ तुम प्रबल कहां हम बालक। लरिहैं निजसमते अरिघालक॥

दो० हँसि बोल्यो चाणूर तब, भाषत कैसी बात।
लड़के लड़के गज हत्यो, बरबिक्रम बिख्यात॥

जब इमि कृष्णहि मल्ल प्रचारा। तब कूदे दोउ भ्रात अखारा॥
भिरे कृष्ण चाणूर दपटिकै। बल मुष्टिक रणकीन्ह झपटिकै॥
आकर्षण मर्दन भुज बन्धन। दांव करतभे करधरि कन्धन॥
चाणूरहि भगवान उठावा। पटक्योतबसो अतिरिसिआवा॥
उठिकै कीन्ह कुटिल ललकारा। भिरे बहोरि भूमिभरतारा॥
झपटहिं लपटहिं दपटहिं चपटहिं। सपटहिंरपटहिं छपटहिंकपटहिं॥
छुटिछुटि जुटिजुटि तुटितुटि बीरा। सानुजबल दोउ मल्लरणधीरा॥
यदुमण्डन मुख भयो पसीना। लखि नृपद्धार कहहिं सबदीना॥

दो० अहो अधर्म अपार इत, होत जहां नरभूप।
कहँ कठोर ये कुलिशसम, कहां अर्कफल रूप॥

यह सब हमरे भाग खोटाई। धनि गोकुल के लोग लुगाई॥
इकतौ दर्शन दुर्लभ रहेऊ। देखे तऊ अधिक उर दहेऊ॥
दुष्ट महीप कहा बौराना। शिशुकीदिशि देखहु भगवाना॥
जामहँ मारि शत्रु समुदाई। सुख पावहिं बलराम कन्हाई॥

अबलन की इमि दया निहारी। भिरे प्रचारि खरारि मुरारी॥
गहि चाणूरहि कृपानिधाना। फेंक्यो नभशिशुसुमनसमाना॥
गिस्यो गगनते तब चाणूरा। उठि मूकहि मास्यो रिस पूरा॥
हरि तेहि गहि महिमाहिं लथेरा। जिमि रँगरेज सुरङ्ग बखेरा॥
दो० झरिगे रदन सुमल्ल के, बहुरि उठ्यो रिसिआय।
द्वै मूका मारत भयो, परम कोप उर ल्याय॥
तब हरि गहिकै चरण घुमायो। जिमि चकईकर ख्याल रचायो॥
पटकत पृथिवी फूट्यो माथा। मुखते रुधिर बमत नरनाथा॥
जब चाणूर भयो गत प्राना। तब बल मुष्टिकसन रण ठाना॥
हरिसमान करि भट बिधिघाता। प्राण लीन्ह उरहर्ष बिभाता॥
कूटहिं बहुरि मूक बल मारा। जिमि कूटहिंकतुकुलिशप्रहारा॥
शलकहँ कृष्ण पटकि महिमारो। तोशल कहँ बहोरि ललकारो॥
कंसराज के आगे मारा। जिमि शाखहि मतङ्ग मतवारा॥
पांचहु मारे मल्ल जुझारा। तेजवान श्री नन्दकुमारा॥
दो० तिन्हके भागे अनुग सब, उर भय धारि बिचारि।
बहे जाहिं हाथी जहां, चिउँटी पूछै बारि॥
तब श्रीदामादिक के साथा। कुश्तीकरन लगे ब्रजनाथा॥
मुकुट धरे शिर परम अनूपा। ललितलरहिंलरिकनसँगभूपा॥
बिना कंस सबके आननते। जय जय शब्दभयो जाननते॥
कंस तबै बाजन करि बन्दा। बोलो गरजि कालबश मन्दा॥
यह दुर्बुद्धि शौरि के छोरा। काढ़हु पुरते संकट घोरा॥
गोपनकेर सकल धन हरहू। नन्दहि आशु आशुगतकरहू॥
उग्रसेन बसुदेवहि मारहु। यादवरहित भूमि करिडारहु॥
दो० सुनि दोऊ बसुदेवसुत, गये मञ्चपै कूदि।

अजा देखि द्वै सिंहसे, माधव मनमहँ मूँदि ॥
मृत्युहि देखि चर्म असिधारी। उठा रिसान मियान निकारी ॥
हरि तब गहेउ कंसकहँ जाई। सर्पहि गहै यथा खगराई ॥
करिछल निकस्यो खल ललकारी। करि कृपान बिद्युतद्युति भारी ॥
लगे परस्पर लरन प्रचारी। बहुरि गये नभसकल बिचारी ॥
बाज बाज सम बाजे सोऊ। यदुवर सों यदुबर ये दोऊ ॥
गहि भुजते भोजेशहि स्वामी। लगे घुमावन अन्तरयामी ॥
ताको तीन मञ्चपर नावा। टूटि गयो सिंहासन पावा ॥
उठि सो भिरो कृष्ण सों कैसे। मत्तद्विरद केहरि सों जैसे ॥
दो० बहुरि साथ चोटी गह्यो, छाती भये सवार।
रङ्गभूमि फेंक्यो तुरत, कंसहि नन्दकुमार ॥
तापर आप परे महराई। बहुरि अनन्तपरे नरराई ॥
दोउन केर भार भो भारी। प्राणकढ़्यो खलको ब्रतधारी ॥
तिनके गिरे धरा इमि हाली। जिमि अँगुरी पर नाचै थाली ॥
गहि कच रङ्गभूमि भगवाना। खींचत चले तबै नरत्राना ॥
भो हरिरूप कंस तेहि काला। बैरभाव भल भांति सँभाला ॥
देखि दशा जगजितकी ऐसे। सिगरे डरे काल के भयसे ॥
हाहाकार भयो तहँ भारी। अहो मस्यो अद्भुत धनुधारी ॥
कंसमरण लखि ताके भ्राता। उठे आठ रिसपूरित गाता ॥
दो० सृष्टिसुनामा कङ्कसुहु, राष्ट्रपाल न्यग्रोध।
शंकु तुष्टि ये शस्त्रधर, योधा पूरित क्रोध ॥
लखि बल मुद्गर करमहँ धारी। सिंह समान कीन्ह हुङ्कारी ॥
तिनके करते शस्त्र खसाये। यथा आमफल दण्ड चलाये ॥
ते सब लागे मूक प्रहारन। मानहुँ बततन गोश्रम हारन ॥

सृष्टि सुनावहिं मुद्गर मारी। कङ्क न्यग्रोधहि करन प्रहारी॥
शंकु तुष्टि सुहु बामचरन ते। राष्ट्रपाल दक्षिण बल घन ते॥
मारि बधे तिनकहँ बल ज्ञानी। माधवके मधि ज्योति समानी॥
देवन दिविमहँ दीन्ह नगारे। जय जय कहहिं फूल बहुडारे॥
गावहिं किन्नर सुरन मिलाई। नृत्यहिं बारबधू समुदाई॥

दो० ब्रह्म शम्भु इन्द्रादि सुर, अस्तुति करहिं अपार।
बन्दहिं श्रीनँदनन्दकहँ, उर आनँद बिस्तार॥

अस्ति प्राप्ति आदिक नर नारी। कहहिं बिकल उरमहँ करमारी॥
जीति विश्व कहँ कीन्हा राजू। हे प्रभु कितै गये चलि आजू॥
उठि किन मारत शत्रु कराला। किमि सूते महिमाहँ बिहाला॥
तीनलोक महँ दाप तुम्हारा। आज परे अनाथ भरिछारा॥
मारे सब भगिनी के जाये। सोइ अघ आज प्रकट फलपाये॥
कालकालकिय काल न चीन्हा। अबलनआजुअतुलदुखदीन्हा॥
करुणासिन्धु जगताजित बीरा। परे भूमि गत प्राण शरीरा॥
स्वामी सुखदायक हितकारी। रांड़ आज ये नारि तुम्हारी॥

दो० इहि विधान बिलपहिं सकल, नगर रह्यो सुरपूर।
तिन्हैं बुझायो बिबिधबिधि, शौरिसुवन सुत शूर॥

बिधिवत नृपकी क्रिया कराई। चन्दनचिता सुचारु बनाई॥
करिकै दाह तिलाञ्जलि दीन्हा। लौकिकरीति प्रेतबिधि कीन्हा॥
गे बसुदेव देवकी पासा। कृष्णचन्द्र उरपूरि हुलासा॥
टूटिगई बेरी तिन केरी। बढ़ी दुहूं दिशि प्रीति घनेरी॥
उर सतभाव अनूपम आनी। नाथसहित देवकिबिलखानी॥
नहिं सनेह तिनको कहिजाई। जनु आजुहि जनमे दोउआई॥
उग्रसेन की बन्दि निवारी। राज दीन्ह सहसाज मुरारी॥

भागे रहे सुयादव जितने । मथुरा सकल बसाये तितने ।
दो० जानलगे नँदराय घर, बिदा होत भरिप्रेम ।
बोले हरि बलदेव दोउ, क्षेमरूप कहि क्षेम ॥
आप चलहु ब्रज गोपन लैकै । हम इत राजकाज निरभयकै ॥
करिहैं आय आपको दर्शन । अहहुजनकमम गुरु अघमर्षन॥
सुनि गुनि गर्गबचन दुख छाये । मिलि शौरीते गोकुल आये ।
तब बसुदेव नियुत गो दीन्ही । पूरब जौन संकलप कीन्ही ।
गर्ग बोलाइ सविधि भरि प्रीता । हरिबलकर कियमख उपबीता॥
सांदीपन ढिग पुनि दोउ भाई । बिद्या पढ़न गये नरराई ॥
बिद्यानिधि सब बिद्या लीन्हो । गुरुकी सुन्दर सेवा कीन्हो ॥
जब दक्षिणा हेत अभिलाष्यो । मृतकपुत्र लावहु गुरुभाष्यो ॥
दो० करि प्रणाम बलदेव हरि, रथपर भये सवार ।
गे समुद्रतट बिप्रहित, आरतहरण उदार ॥
डरि समुद्र लै रत्न अपारा । भेंट कीन्ह बन्देउ बहुबारा ॥
तब हरि मांग्यो गुरु सन्ताना । सरितप्राण यह बचन बखाना॥
हे प्रभु मैं न हस्यो शिशु सोई । मम उर असुर पञ्चजन होई ॥
लै सो गयो बधहु भगवाना । ताते मिलिहै गुरुसंताना ॥
सुनि हरि पटते कछनी काछे । कूदे तित झटते बिधि आछे ॥
हरिके गिरे शब्द भो भारी । आयो दानव शंख सुरारी ॥
शूल बज्रसम हरिकहँ मास्यो ।अबनबचतयाहिबिधिललकास्यो॥
ताहि पकरि हरि फेरि चलायो । ब्याकुल होइ असुर मुनिछायो॥
दो० उठेउ कोपि पुनि पञ्चजन, मारयो हाथ उठाय ।
तब हरि ताके शिर हन्यो, मूक महत रिसिआय ॥
ताके मरे उदर कहँ फारी । शंख रह्यो सो लीन्ह निकारी॥

कीन्ह असुरकहँ निजमहँलीना। नहिं देखे गुरु सुवन प्रवीना ॥
पुनि रथ चढ़ि द्वौभ्रात सुहाये। संयमनी अति आतुर आये ॥
आशु पञ्चजन कम्बु बजायो। यमपुर शब्द पूरि थहरायो ॥
चौरासी लखके अघकारी। भक्त भये सुनि नाद सुखारी ॥
डरि यम आय पूजि हरि दोऊ। बोल्यो हाथ जोरिकै सोऊ ॥
देव पुरान पुरुष अबिनासी। कृपाकरन प्रभु घटघट बासी ॥
आज्ञा होय करौं मैं सोई। तब हरि कहत भये यम जोई ॥

दो० गुरुसुत लावहु बेगितुम, सुखी करहु इतराज।
नीतिसहित शुभ रीतिसब, अहो प्रेतकुलताज ॥

लै शिशु दीन्ह गुरुहि हरि जाई। बिदा भये बर आशिष पाई ॥
चढ़ि रथ पुर आये दोउ भाई। और कथा सुनिये नरराई ॥
यक दिन सानुज बल हरषाई। गे अक्रूर सदन सुखदाई ॥
लखि चाचा उठि शीश नवाई। कनक सिंहासन पर बैठाई ॥
बिबिध भांति ते कीन पुजाई। कहत जोरि कर प्रेम बढ़ाई ॥
युगल चरण हम नमत सदाई। परिपूरणतम परम गोसाईं ॥
जग कारण अभिराम सुहाई। जगहित जगतदीप यदुराई ॥
गो द्विज साधु देव सुखदाई। यदुकुल प्रकट प्रेम सरसाई ॥

दो० कंसादिक के बधन हित, जन्म लीन्ह इतआय।
भारत भूमि पवित्र किय, अपने चरण लगाय ॥

हरिभे कहत तनय हम तुमरे। नहिं तुम कहा ज्ञान कछु हमरे ॥
बड़े लघुन कहँ देहिं बड़ाई। पै यक काम करहु अब जाई ॥
पाण्डव कुशल देखि द्रुत आवो। धृतराष्ट्रहिबहुबिधि समुझावो ॥
सुनि अक्रूर सुरथ चढ़ि धाये। आशु हस्तिनापुर चलि आये ॥
सबते मिले हवालहि बूझा। हरिते कह्यो आइ जो सूझा ॥

बिनु तुम्हरे प्रभु पाण्डुकुमारन । अहैं अहूं एको आधारन ॥
अन्धसुवन ते दुखी बिचारे । अहहिं आपकी आशा धारे ॥
सुनि अक्रूर बचन भगवाना । दीनदयाल सकल अनुमाना ॥

दो० आधोराज कुरुन को, तिन्हैं दीन्ह दिलवाय ।
एकदिवस कुब्जा भवन, गे उद्धवहि लवाय ॥

कुब्जा उठि पूज्यो विधि नाना । तासु रूप नहिं जाइ बखाना ॥
तहँ की अद्भुत बनी तयारी । को कहिसकै तौन छबि भारी ॥
परिपूरणतम जाके नाथा । को कह तासु भाग की गाथा ॥
आठ दिवस तितरहे कृपाला । पूरण कीन मनोर्थ दयाला ॥
यह मथुरा हरि चरित रसाला । श्रवणसुखदअघकुलकरकाला ॥
चार पदारथ पित नरपाला । कह सुनिहौ अब कथारसाला ॥
सुनि बिदेह पुनि बचन निकाला । अब इच्छा यह मोहिं बिशाला ॥
सबकी पूरब कथा सुजाना । हम पूछा अरु आप बखाना ॥

दो० रह्यो रजक पूरब कवन, कहिये कृपानिधान ।
अम्बुजअम्बक मन तबै, बोले बचन सुजान ॥

राम राज त्रेताके माहीं । रह्यो रजक यह भूप तहांहीं ॥
इक दिन नारि रही पितुधामा । प्रातकह्यो सो लखि निजबामा ॥
मैं न राम रखिहौं घर माहीं । रातरही कहुँ प्रात इहांहीं ॥
रावण धाम रही बैदेही । जिमि पुनि तिन्ह घर राखा तेही ॥
सुनि सो राम काढ़ि सिय दीन्हा । तेहि अघकृष्ण तासु बध कीन्हा ॥
दीनदयाल उधास्यो सोबी । पापी दुर्बच बदता धोबी ॥
सुनि नृप कहा कौन सो बायक । जेहि सारूप दीन्ह यदुनायक ॥
तब नृप कह्यो सुनत सो अरजी । मिथिलारहत रह्यो यह दरजी ॥

दो० रामचन्द्रके ब्याह में, मैथिल आज्ञा पाइ ।

बागो विरच्यो चारु अति, पहिराये सब भाइ॥
शोभा भई राम की भारी। पहिरि बसन सो सब सुखकारी॥
कीन्ह मनोरथ तहँ छबि छावैं। पुनि हम बसन बनाय धरावैं॥
तब रघुनाथ जानि मन तासू। दीन्ह बरहि सीताबर आसू॥
द्वापर पूर्ण होइ अवतारा। तहां मनोरथ सिद्ध तुम्हारा॥
सोई मधुपुर भो हरि मरजी। हरिसरूपकहँ पायो दरजी॥
पुनि नृप कह्यो प्रेम भइ हाली। कौन सुकृत सो कीन्हो माली॥
जा गृह आये कृपानिधाना। सुनिकै मुनि पुनि वचन बखाना॥
नाम चैत्ररथ धनद बगीचा। सुन्दर शीतल जल ते सींचा॥
दो० बटुक हेममाली तहां, रहत रह्यो हरिभक्त।
कृष्ण हेत पूजतभयो, शिवहि प्रेम आसक्त॥
तीन सहस पङ्कज नित ल्यावै। महादेव के शीश चढ़ावै॥
इक दिन ह्वै प्रसन्न हर ज्ञानी। बर मांगहु भाषा बरबानी॥
बैष्णव बरहि नौमि तेहि काला। हेममालि यह वचन निकाला॥
परिपूरणतम मम गृह आवैं। हम पूजैं तब यह बर पावैं॥
शम्भु कहा होइहि यह बाता। ब्रजमहँ तव गृह ऐहैं त्राता॥
शंकर बरते भयो सुदामा। ताके भवन गये बलश्यामा॥
दीनदयाल मुक्ति कहँ दीना। दुर्लभ जो मुनिकहँ गुणपीना॥
तब बहुलाश्व बहुत हरषाये। कहत महतमति शीश नवाये॥
दो० कवन रही कुबरी तवन, जवन भवन गे श्याम।
तब नारद भाषत भये, परम बुद्धि के धाम॥
पञ्चवटी सुन्दर लखि रामा। मोहतभई सुपनखा बामा॥
रावण स्वसा रामते भाषा। पुनि सीता भोजन अभिलाषा॥
सो सुनि लषण उठे तेहि डाटी। लीन्हो नाक कानकहँ काटी॥

कहि रावणकहँ पुष्कर जाई। हरिहित तप कीन्हो अधिकाई॥
महादेव कहँ जपत सदाहीं। अयुत अब्द ठाढ़ी जलमाहीं॥
तब त्र्यम्बक प्रसन्न होइ आये। बरम्ब्रूहि यह बचन सुनाये॥
शूर्पणखा बोली यह बाणी। मम पति होहिं रामधनुपाणी॥
सो सुनि धूरजटी भगवाना। रावणभगिनिहि बचन बखाना॥

दो० पूरण होइहि अर्थ तव, युग द्वापरके अन्त।
कृष्ण कन्त तव होइहैं, भाषि गये भगवन्त॥

हर बर शूरपणखा सुहाई। भई कृष्ण पटरानी आई॥
जन हित करन कृष्ण यदुराजा। सुनि पुनि प्रश्न करतभे राजा॥
रह्यो कुबलयापीड़ मतङ्गा। कहहु कवन सो सहित उमङ्गा॥
तब नारद मुनिनाह सुजाना। मैथिल नृपते बचन बखाना॥
बलिसुत असुर मन्दगति नामा। लक्ष नाग बल मदको धामा॥
गयो रङ्ग यात्रहि यकबारा। मरदत नरन गरूर अपारा॥
त्रितमुनि गिरे तहांकर बेगा। काढ़्यो कोप कोपको तेगा॥
गजसम चलत गिरावत रस्ता। होसि मतङ्ग बढ़्यो जो मस्ता॥

दो० इहि बिधान त्रितके कहे, होतभयो गत तेज।
अहि कञ्चुकसम तन गिर्‌यो, मनभो दुखते रेज॥

तबसो दैत्य बन्दिपद डरिकै। बोल्यो जल लोचनमहँ भरिकै॥
हे मुनि करुणासिन्धु दयाला। क्षमहु मोर अपराध कराला॥
हम जस कीन्ह सुतस फल पावा। निजरिसिआपलखहुँदुखदावा॥
सो सुनिकै निज आनन खोले। त्रितमुनि हितगुनिताकरबोले॥
मम बाणी मिथ्या नहिं होई। पै सुदेत बर दुर्लभ जोई॥
द्वापर अन्त कृष्ण के करते। होइहि गत अति बर मुनिबरते॥
सोइ गजभो विन्ध्याचल आई। नाम कुबलयापीड़ सुहाई॥

अयुत नाग बल तेहि नरराई। पकरयो जरासंध तहँ जाई॥
दो० दीन्हो कंसहि सो द्विरद, तेहि मारयो भगवान।
लीनभयो सो मन्दगति, पायो पद निर्बान॥
मैथिल कह्यो प्रेमउर सांचा। चाणूरादि मल्ल जो पांचा॥
पाई मुक्ति कौनते रहे। सुनत बचन पुनि नारद कहे॥
पूरब रहे उतथ्य मुनीशा। पांचतिन्हहिं सुतभे अवनीशा॥
तजि द्विज कर्म बेदकी रीती। कीन्ही मल्ल युद्धपर प्रीती॥
जानतिन्हहिं नित क्रीड़त पुस्ती। बोले मुनि गुनि सोन दुरुस्ती॥
शम दम शौच शान्ति बिज्ञाना। आर्यवतप आस्तिकपनज्ञाना॥
ये द्विज कर्म अहहिं ते त्यागी। किमि मति मल्लयुद्धमहँ लागी॥
ताते अहो अधम तुम सारे। मल्ल होइकै जैहौ मारे॥
दो० बहुरि होइहै मुक्ति तव, भाष्यो बिप्र उतथ्य।
भे पांचहुते मल्लवर, हरि जेहि बध्यो सुपथ्य॥
सुनिकै मिथिलापति हरषाये। नारद से यह बचन सुनाये॥
रहे आठ जे कंसके भैया। तेके कहहु मोहिं मुनिरैया॥
नारद कहे कुबेर धनेशा। शिवकी पूजा करहिं हमेशा॥
अलकापुरी करत सो बासा। तिन्हहिंआठसुतसुनहु खुलासा॥
गण्ड महागिरि खण्ड प्रचण्डा। देवकूट दण्डो पृथुखण्डा॥
चण्ड सहित ये आठ गनाये। कमल हेत धननाथ पठाये॥
ते सब सहस सरोज सुहाये। शिवपूजा हित सूंघि लेआये॥
कीन्ह उच्छिष्ट देव की पूजा। ताते भे नहिं कारण दूजा॥
दो० मुक्ति तीसरे जन्म में, दीन्हो श्रीभगवान।
आठकङ्कआदिक अनुज, प्रकट कंसके जान॥
सो सुनि बहुरि जनक यह भाषा। शंखकथा सुमिरे अभिलाषा॥

तब नारद विज्ञान सरूपा। कहत भये सो कथा अनूपा
पूरब निजतन तेज निकारी। आयुध बनये सकल मुरारी
पाञ्चजन्य जब शंख बनायो। ताके उर घमएड अतिआयो
एक दिवस सो शंख महाना। गरजि सबनमहँ बचन बखाना।
मोहिं बजाइ रण जीतत हरी। हम मुहँ लगुआ आठौ घरी।
मुख पङ्कज पर हंस समाना। हम राजत हरि सुखद महाना।
जो हम पियत अधर रस सोई। दुर्लभ सदा रमाकहँ होई।

दो० तीन जलज जब होतहैं, एक जगह सुखरूप।
कञ्जकुमुद गजशुण्डसम, शोभा तीन अनूप॥

रमा कोप करि दीन्हो शापा। होसि असुर घमएड ज्यों दापा॥
सोई असुर हत्यो भगवाना। पुनिकर धार्यो शंख सुजाना॥
शंख शंख मदते फल पाया। शापबिगत हरिकर पुनिआया॥
पुनि नृप कह्यो जोरि दोउ हाथा। तब कह चरित कीन्ह यदुनाथा॥
सुनि सो बीनापानी ज्ञानी। बोले बानी आनँद आनी॥
एक दिवस ब्रज कीन्हो यादा। लोचनमाहिं भरे जलजादा॥
तब माधव ऊधवहिं बुलायो। बैठि एकान्त बिबिध समुझायो॥
तात जाहु तुम गोकुल धाई। जहँ गोपी गोधन समुदाई॥

दो० परमरम्य अस्थान सो, बहु बन उपबन यत्र।
यशुदहि राधहि पितहि पुनि, पृथक दीजियो पत्र॥
युवती तहँकी गोपिका, चिट्ठी सबहि सुजान।
दीन इकट्ठी करि कृपा, दीनबन्धु भगवान॥

मम पितु नन्दराय अरु माता। ममबलकेबिनअतिबिलखाता॥
समुझायहु कहि सुन्दरि बानी। जामहँ होइ शोककी हानी॥
मेरी प्रिया प्राण सम राधा। ताके उर दुख अहइ अगाधा॥

हे ऊधव तिनके ढिग जाई । बहुत बुझायहु ज्ञान दृढ़ाई ॥
श्रीदामादि सखा मम जेते । अतिही शोकविवश तित तेते ॥
तिन्हकहँ समझायहु बहुभांती । आवत श्याम कहेउ दै पाती ॥
जितनी तहां अहैं ब्रजबाला । न्यारो न्यारो यूथ रसाला ॥
तन मन धन पति सुत गृहत्यागी । केवल मेरे पद अनुरागी ॥

दो० तिन्हकहँ दूजी आश नहिं, अतिही रहत उदास ।
बहुत विधान बुझाइयो, निज विज्ञान प्रकास ॥

जो रथ चढ़ि आये हम भाई । तापर बैठिजाहु हरषाई ॥
इमिकहिनिजकुण्डल बनमाला । मुकुट पीतपट परम रसाला ॥
बंशी छरी गुञ्जकी माला । चन्दनलायो अङ्ग गुपाला ॥
भूषण बसन प्रसादी दीने । कौस्तुभसहित कण्ठकहँ कीने ॥
निज समान सब रूप बनायो । बहुरि प्रेम भरि कण्ठ लगायो ॥
बिदा कीन्ह सोइ रथ बैठाई । ऊधव चले बन्दि यदुराई ॥
जब ब्रजमण्डलमहँ चलिआये । लखि तहँकी शोभा सुख पाये ॥
कोटिन गऊ फिरहिं सँग बच्छा । मोरपक्ष शिर सोहत अच्छा ॥

दो० घण्टा घुंघुरू पैंजनी, रतन जड़ाव विषान ।
हार शिंगार ललाम अति, शोभा सरस सुजान ॥

श्याम लाल अरु धूमर धौरी । चित्रा कपिला श्यामा गौरी ॥
सिन्धु समान महान दुधारी । मृगसी चपल लसैं थनभारी ॥
दीरघ शृङ्ग बृषभ बहु साथा । तिनके मधि डोलहिं नरनाथा ॥
साथ सरस सोहैं गोपाला । शिखि परबंशी गुञ्जामाला ॥
गावहिं कृष्ण भजन सुख सारे । कर ललाम लकरी कहँ धारे ॥
श्रीदामादि ऊधवहि देखी । कहन लगे मन कृष्ण परेखी ॥
नन्दसुवन यह लागत भाई । तैसोइ वर्ण बसन सरसाई ॥

तैसी मुकुट लटक मनमोहै। गुञ्जमाल बनमाला सोहै।
दो० सोई रथपर आपुहैं, मनमोहन घनश्याम।
पैन साथ महँ रामजू, एकाकी अभिराम॥
इतनहिं कहत निकट रथ आयो। लखिऊधव हरि भ्रमहि नशायो॥
कहहिं परस्पर ते ब्रजवारे। को यह कृष्ण सरिस बपुधारे॥
सुनि ऊधव बोले यह बाता। शोच करहु मति तुम सबज्ञाता॥
दीन्हो कृष्ण पत्र सो लेहू। आवत आशु कह्यो पुनि एहू॥
करि यदुगण को काज रसाला। ऐहैं यह भाष्यो नँदलाला॥
सो सुनि पढ़ि पत्रहि ते ग्वाला। बोले गदगद सुर नरपाला॥
निरमोही अति नन्दकुमारा। पाइ राज भो गर्ब अपारा॥
पठवत पत्र समय यह आई। यहां रहो नहिं क्षण इकजाई॥
क्षण युग एकघड़ी मनु बीतै। एक याम जनु कल्प ब्यतीतै॥
इक दिन द्वैपदार्ध सम जाई। हरिबिन सत्य सुनहु मोहिंभाई॥
दो० हम सम करिजान्यो सदा, नहिं जान्यो कछु भेद।
ताते निवसे दूर प्रभु, उर गहिकै कछु खेद॥
तब ऊधव अचरज सब त्यागी। बोले बचन हृदय अनुरागी॥
हम हरि दास अहैं हरिप्रेरे। आये सुनहु तुम्हारे नेरे॥
पुनि हम जाय बन्दि दोउचरणा। बहु बिनवैंगे जनदुखहरणा॥
करि प्रसन्न निज सुरथ चढ़ाई। ऐहों बेगि सबेग लिवाई॥
शोचहि तजहु भजहु भगवाना। दीनबन्धु प्रभु कृपानिधाना॥
इमि कहि सबन सहित तब ऊधो। गये नन्द गृह गहिमग सूधो॥
अस्तभये रबि तेहि क्षण नन्दा। मिले प्रेमभरि ब्रजनभचन्दा॥
बहु बिधान भोजन करवाये। सुन्दर सेज लाइ बैठाये॥
दो० नन्दराय तब रोइकै, बोले ऐसी बात।

सुत सुहँ आनकदुन्दुभी, कुशल अहैं उततात ॥
कुं० मारे यदुपति कंसके, सुखीभये सबलोग ।
पै हमहीं अतिभे दुखी, करमभोग संयोग ॥
करमभोग संयोग, गवांये रामकन्हाई ।
तिनतौ यमुना गो, गोवर्धन दीनभुलाई ॥
हमहिं यशोदहि ग्वालन, बृन्दा बिपिन बिसारे ।
दुखद भरेहू भो दुख, ओछे भाग हमारे ॥
दो० हा कब देखहुँगो दृगन, मांगत माखन दूध ।
छोटी चोटी लोटिबो, रोटी मांगत सूध ॥
सो० कुञ्जन करत बिहार, कब निहारिहौं दुहुँन कहँ ।
अङ्ग लगाये छार, बाल बिनोद प्रमोद महँ ॥
धिग मम जीवन भोजन शयना । कृष्ण बिना बीतत दिनरयना॥
शशिबिनुजिमिचकोरगहिआसा। तिमिजीवनहमसुनहुखुलासा ॥
परिपूरण तुम कृष्ण निधाना । भारतभूमि भये भगवाना ॥
तिनके चरण शरण हम अहहीं । कब दुखहरण दया उर गहहीं ॥
सुमिरि सुमिरि सुतगुण नँदराई । रोवत रोवत रहे चुपाई ॥
गदगदस्वर नहिं कछुकहिजाता । लोचन बहत बारि अकुलाता ॥
ऊधव लखत सेज सो सारी । आंसुन ते ओदी करिडारी ॥
झरत नयन जिमि गिरिते झरना । कहि न जाइ दुखकेर बिबरना ॥
दो० ऊधव के अरु नन्दके, सुनिके ऐसे बैन ।
बूड़ी दुखके सिन्धु महँ, यशुमति अतिहि अचैन ॥
तजि लज्जा कहँ खोलि दुआरा । आयसुवनसम तिनहिं निहारा॥
धरि धीरज पोंछत चष पानी ।नँदरानी बोली यह बानी ॥
मोकहँ नन्दहि अरु नवनन्दन । बृषरबिबर बृषरबि उपनन्दन ॥

ममदेवर सुनन्द कहँ मोहन। यादि करत कबहूँ भरिछोहन।
जिनलरिकनसँग खेलत नित्तहिं। तिनकी ओर देत कछु चित्तहिं।
मोहिं सुत एक भयो बहु नाहीं। सोऊ द्रुत चलिगयो तहांहीं॥
हाय करउँ कह जावों कैसे। बिन देखे जल शफरी जैसे॥
प्रात होत नित माखन मांगै। देत देत पग पटकन लागै॥

दो० मीठे मीठे बचन ते, खाइ सवाद बखान।
सो किमि सुनिहौं कानते, किमि लखिहौं वह बान॥

ब्रजबासी जीवन गोपाला। सबको हित शुभचितनँदलाला॥
क्षण समान दिन रह्यो बितातो। अब सो कठिन कल्पसमजातो॥
जो न कोस आधे पर जाई। सो मधुपुरी गयो चलि धाई॥
छिना श्यामकहँ अङ्क लगाये। नित नित नन्द जात दुबराये॥
इक दिन हम बांधा तेहि भाई। समुझिसमुझि सो मनपछिताई॥
हा मम धिग जीवन बिन ताके। बचन रहे अमृतसम जाके॥
बिन मुकुन्द के रहत पराना। अहइ बज्रसम कठिन महाना॥
इमि बिलपत लखि नँदनँदरानी। चकित कहत भे ऊधव बानी॥

दो० धन्य धन्य हरिभक्तबर, दोऊ अतिहि जईफ।
रोमन रसना पाइकै, करि न सकत तारीफ॥

प्रेमलक्षणा हरि महँ कीन्हा। जाहिस्वयम्भुशम्भुनहिं चीन्हा॥
तीरथ योग किये मखदाना। करि नहात यासों तुम जाना॥
सुनहु ब्रजेश सत्य ब्रजरानी। करि यादवको कारज ज्ञानी॥
बल समेत ऐहैं रथ चढ़िकै। आशु अवशि मथुराते कढ़िकै॥
परिपूरणतम यह भगवाना। जिन्हकहँतुमनिजसुतकरिजाना॥
बिधि जब कीन्ही बिनती भारी। प्रकटे पुरुष पुराण बिचारी॥
होतहिकीन्हाबिबिधबिधि लीला। अव्ययअबिनाशी गुणशीला॥

हति पूतना प्रभंजन भंज्यो। तृणावर्तबधि तरु द्वै गंज्यो॥

दो॰ मुखमहँ दीन दिखाइकै, यशुदा कहँ ब्रह्माण्ड।

वत्स असुर बक अघ बध्यो, जिमि मृतिकाको भाण्ड॥

धेनुक कहँ बलदेव सँहार्यो। हरि कालीकहँ यमुन पछार्यो॥

दावानल कहँ कीन्हो पाना। बलप्रलम्ब कर लीन्हो प्राना॥

सबके लखत गिरिन्द उठायो। जिमिगजकमलहिशुण्डचढ़ायो॥

शंखचूड़ कहँ बधि मणि लीन्हा। वृषभहि अश्वहि यमपुर दीन्हा॥

व्योमासुरहि बधेउ भगवाना। मथुरा कीन्ह चरित पुनि नाना॥

रजकहि मारि शीश महिडार्यो। तूरि कंसधनु दूरि पवांर्यो॥

बध्यो कुवलयापीड़हि कैसे। मखमहँ मारहिं बकरा जैसे॥

मुष्टिक तोशल शल बधि डार्यो। बहुरि कूट चाणूरहि मार्यो॥

दो॰ कीन्ह कंसकहँ प्राणबिन, नभ उछारि महिडारि।

जिमि बाजीगरको छुरा, फेंकत गहत पछारि॥

तापर गिरे शैल सम आई। सो अप्राण तित मर्यो दबाई॥

कंस अनुज कङ्कादिक आठा। बध्यो तिन्हैं जिमि हरि गजपाठा॥

गुरुदक्षिणा देनहित गये। असुर पञ्चजन मारतभये॥

अद्भुत चरित करत गुणधामा। करत तिनहिं हमकोटि प्रणामा॥

कहत कहत इमि निशा सिरानी। तिनतेहिक्षणसमानकरिजानी॥

ब्रह्ममुहूर्त उठीं सब नारी। लीपिभवन अरु दीप सँवारी॥

धरिधरि दधिअरु मुदित मथानी। मथहिं कृष्णको चरित बखानी॥

बोलत कङ्कण कुण्डल झलकैं। गिरत फूल महि छूटी अलकैं॥

दो॰ चन्द्रमुखी बनिता सकल, करत कृष्णगुण गान।

यह शोभा देखत भले, ऊधव नदी नहान॥

जहँ तहँ फिरहिं गऊ अति जोई। दूध दुहनको स्वन अति होई॥

गोपिगीत दधिमन्थन धुनी। गली गली महँ उद्धव सुनी
कहनलगे उर आनँद भाई। नन्दराय पुर अति अधिकाई
लगत चारु गोलोक समाना। इमि कहिगये करन अस्नाना
प्रातसमय सिगरी ब्रजनारी। कहहिं परस्पर रथहि निहारी
अरी अहै रथ कासु सुहायो। पुनि तौ नहीं क्रूर वह आयो
जो मम प्राणहिं हरिलै गयऊ। सोइ रथ है सोइ आवत भयऊ
अब लैजैहै नन्द यशोदहि। जाना सत्य तासु मनमोदहि

दो० अहइ सखा यह कंसको, महादुष्ट शिरताज।
क्रिया करैगो मित्र की, मारि हमनकहँ आज॥

निज मनमें यह बात दृढ़ाई। आपुहि घेरयो रथहि लुगाई
सबन तबै सारथि ते पूंछा। यापर को आयो मतिछूंछा
तिन ऊधव कर नाम बखाना। गये अहैं सो यमुन नहाना
सखिन लख्यो द्रुत जाइ तहांईं। अतिसरूप जिमि कृष्ण गुसांईं

क० घनकीसीप्रभाचारु हीरनकेहैंशृँगार, कटितटपीतपट बैज
यन्तीमाल हैं। बेनअरुबेतलीन्हे कन्धर नमितकीन्हे, कमल
भगहाथ तिलकसुभाल हैं॥ कुण्डलकीझलक घुंघुरारीअलकसों
मुकुटमनोजमानहरणरसाल हैं। श्यामकोस्वरूपजानि अति
अनूपमानि, नन्दलालआये मानों प्रेमके दलाल हैं॥

दो० मन्द हँसत चित में बसत, जान्यो गिरिधरदास।
मुदित होइँ ब्रजसुन्दरी, आईं ऊधव पास॥

तिनते कहि सब अरु सब सुनिकै। गुप्तबारता मनमें गुनिकै
सब बाला ऊधवहि लवाई। कदली कानन महँ चलि आई
जहँ राजत राधा सुकुमारी। व्याकुल हरिबियोग की मारी
जिमि तुषार ते हत केदारा। तिमि राधा बाधा बिस्तारा

जहां रम्भ के पादप लागे। चिक्कण खम्भ सजल अनुरागे॥
बर मन्दिर मण्डित कालिन्दी। जहां लसत कोई अरु इन्दी॥
तहां गयउ ऊधव सज्ञानी। माधव को सँदेश अनुमानी॥
तहँ ब्रजतियन खबर तब दीन्हा। सुनि हरिसखा बुलाइसो लीन्हा॥

दो॰ आसन पर बैठाइ कै, पूज्यो स्वागत भाषि।
तापर कीन्हो प्रेम अति, कृष्ण सखा अभिलाषि॥

सो॰ देखि बियोग समेत, बन्दि राधिकहि प्रेमभर।
ऊधव नीतिनिकेत, अस्तुति भाषत जोरिकर॥

छ॰ कृष्णचन्द्र परिपूर्ण देव देवी परिपूरण।
नित्यलील हरिलीलावति तुम भवभय चूरण॥
भूमा श्रीभगवान इन्दिरा तुम गति बाधा।
हरि ब्रह्मा तव गिरारूप तुम राजति राधा॥
शिवस्वरूप जबकृष्ण भे शिवातबै तुमअतिशिवा।
बिष्णुरूप तब बैष्णवी बरदेवी सुख उद्भवा॥
हरिकुमार अवतार सुतुम स्मृतिज्ञान बिबरणी।
जब हरिभये बराह तबै तुम बरबपु धरणी॥
देवऋषी जब कृष्ण तहां बीना बपुलीना।
नर नारायण कृष्ण शान्ति तन तुम तहँ कीना॥
कपिलदेव जब कृष्ण भे तब तुम सिद्धिप्रसिद्धियहँ।
दत्त भये जब देवहरि ज्ञानमयी तब रूप तहँ॥
यज्ञभये जब कृष्ण दक्षिणा तुम कहवाई।
जबै उरुक्रमरूप जयन्ता तब तुम गाई॥
जब पृथु भये कृपाल अर्चि तब तुम श्रीराधा।
मत्स्यकृष्ण तब श्रुतिस्वरूप तुम ज्ञान अगाधा॥

कूरमजब तब बासुकी शक्ति सुतुमगुणभवनअति ।
धन्वन्तरि पुरुषेन्द्र प्रभु तब तुम औषधि रूपवति ॥
हरि नृसिंह जब भये आपु तब तिनकी लीला ।
जब बामन भगवान आपु कीरति बरशीला ॥
परशुराम घनश्याम तबै तुम धार कुठारा ।
व्यास जबै जगदीश बेदगति रूप तुम्हारा ॥
संकर्षण श्रीकृष्ण जब तबहिं भई तुम रेवती ।
हरि जब बुध तब बुद्धि तुम सदा नाथपद सेवती ॥
कलकी जब श्रीकृष्ण सुयश तब नाम तुम्हारा ।
चन्द्र जबै ब्रजचन्द्र रोहिणी आप उदारा ॥
दिनपति जब तव पति तब आप प्रभा कहवाई ।
बासव जब बलबीर शची तब तुम सरसाई ॥
जब हिरण्यरेता प्रभू तब तुम हेति हिरणाई ।
राजराज ब्रजराज जब तब तुमनिधि प्रकृति भई ॥
क्षीरसिन्धु जब कृष्ण लहरि तब आप अनूपा ।
परब्रह्म जब कृष्ण तबै तुम प्रकट स्वरूपा ॥
जौन जौन हरिरूप भये तहँ तहँ तुम जाई ।
जबै नन्दसुत कृष्ण तबै राधिका कहाई ॥
दोउलीलाकरश्रमअति कहि न सकतश्रुतिसत्ययह।
परम पुराण परेश ये सबते पर अरु सबन महँ ॥

दो० हरि स्वामी तुम स्वामिनी, सब सुखदायक चारु ।
तुम रति तब अति मतिभई, जब मनमोहन मारु ॥

इमि कहि पत्रदीन्ह छबिछाई । लीजै आप्यो आप कन्हाई
अरु शतपत्र लेहु तुम येहू । पृथक पृथक प्रति याकहँ देहू

ऐहैं आशु कह्यो भगवाना । आरतहरण बिश्वशिरत्राना ॥
राधा लोचन लायो पाती । बाँचि लाय छाती बिलखाती ॥
व्याकुल ह्वै बृषभानुकुमारी । गिरी अवनि तनचेत बिसारी ॥
तब चन्दन गुलाब छिरकायो । चेत राधिका के तन आयो ॥
देखि ऊधवहि रोवन लागीं । दुखके अंकुर बोवन लागीं ॥

दो० दृग जलते प्रकटत भयो, लीला सो नरपाल ।
न्हाये निरखे पीवते, छूटै यमजञ्जाल ॥

यहि बिधान राधा दुखभारी । सुनहु कथा नरपति ब्रतधारी ॥
सुनि ऐहैं पुनि परम कृपाला । यादवते यह बचन निकाला ॥
कब देखिहौं मनमोहन प्यारे । मनसे बोल अङ्ग द्युतिधारे ॥
हमचकोर शशि यदुकुलशशी । हम शिखि घनमूरति मनबशी ॥
उनके बिना एक क्षण मोहीं । होत कल्पसम कलपत ओहीं ॥
बिना गोविन्द इन्दुमुखवारे । मम लोचनते बहत पनारे ॥
कबहूं ऐहैं मम दिशि हेरी । तैसी इच्छा है तिनकेरी ॥
आजुहि आवत कहि गय ऐसे । एते दिवस बिताये कैसे ॥

दो० जैसे सीतहिं सुखदभे, लङ्क जाय हनुमान ।
तिमि तुम आये प्राण मम, ऊधव चतुर सुजान ॥

आशा दै ब्रजनाथ सिधाये । आवन भाषि गये नहिं आये ॥
नहिं जाकी जुबानहै सांची । काफल ताके पत्रहिं बांची ॥
ऊधव कह्यो तहां मैं जाई । तुम्हरी दशा कहौं समुझाई ॥
तुम्हरी शपथ सत्यकरि जानो । लैहौं कृष्णहिं झूंठ न मानो ॥
राधा मुदित प्रीति अति कीन्हीं । शशिकी बस्तु ऊधवहि दीन्हीं ॥
चन्द्रकान्त द्वै मणी सुहाई । अरु द्वै कमल अमल नरराई ॥
छत्र सिंहासन चामर दीन्हों । मनते प्रकट जाहि हरि कीन्हों ॥

दिय ऐश्वर्य ज्ञान विज्ञाना। कृष्ण सँयोग सुकारणजाना॥
दो॰ भक्तिभाव निर्गुण सगुण, अरु वैराग्य सुजान।
तुमकहँ अक्षर होइहै, राधा बचन बखान॥
शंखचूड़ केरी मणि भारी। देत भई शशिबदना नारी॥
तथा सकल गोपी हरषानी। दीन्हें बहु मणि भूषण आनी॥
प्रेमानन्द मगन ब्रजबनिता। कहत ऊधवहिं आनँदसनिता॥
पुनिपुनि तिनकी पुलकतछाती। आई आजु ईशकी पाती॥
जो जो लिख्यो कृष्ण या माहीं। अरु तुमते जो कहा तहांहीं॥
सो सब मोहिं बखानहु ऊधो। अतिही अहै मोर मन सूधो॥
ऊधव कह्यो सुनहु सो क्षेमा। तिनकहँ तुमते अतिही प्रेमा॥
इकदिन म्वहिं बुलाइ भगवाना। कह्यो तिन्हैं तुम सुनहु सुजाना॥
दो॰ गुनहै बन्धन मनुज को, ताते निर्गुण होइ।
तौ नहिं दुख संसार में, उत्तम ज्ञानी सोइ॥
स्वयंब्रह्म परतंपर स्वामी। करिय ध्यान ते अन्तरयामी॥
तव निर्गुण को भावहि ल्यावै। मनको कलमष दूर बहावै॥
जिमि रबिएक और दृग सोई। घन छीजत नहिं मालुम होई॥
तैसेइ जीव ब्रह्म मधिमाया। तम नाशे सोइ ब्रह्म दिखाया॥
सो साधन अति सुखद बिचारा। सांख्यकेर जानहु निर्धारा॥
हे गोपी अब योगहिं करहू। ममता अरु भ्रमता परिहरहू॥
भोग रोग कहँ योग दवाई। करहु यथा यह दुख मिटिजाई॥
ऐसे म्वहिं भगवान बखाना। मनमहँ करहु हमारो ध्याना॥
दो॰ सुनि बिहँसी सब नागरी, लै निज मनको भाव।
पृथक पृथक भाषन लगीं, जस जाके उर आव॥
श्री गोलोकनिवासिनी, भई रहीं जे बाल।

ते सिगरी भाषत भईं, ऐसे बचन रसाल ॥

क० आपु तौ सिधारे मधुपुरी में हमारे प्यारे, आवतहौं आज काहे मगरथरूंधोजू। जायकै पठाई पाती ऐसे हैं बिश्वासघाती, पढ़ि ना फटतछाती देखि कालऊधोजू ॥ कूबरीकोभोग योगहमदुखदूबरीको, आयेसमुझितैसे तुमहूंख्यालसूधोजू। जानतनाबककी कुटिलता बिचारेबिना, मछलीकोमार धीर धारैपगऊधोजू ॥

दो० सोसुनिकै गोलोककी, द्वारपालिका जौन।
प्रेमबिबश बोलीं सबै, सुमिरत कृष्णहिं तौन ॥

क० अरीआलीतूतो नहिंजानतखियालवाको, बनमाली जन्मकेकपटशालीजाने हैं। चाहतचकोरचन्द खातहैअँगारहूको, कञ्जदेखिसूरकोमुदितमनमाने हैं ॥ घनकोनिहारैमोर स्वातीबूंद चातकहूं, दीपमैंपतङ्गजायदेतनिजप्राने हैं। हमकरैंचाहताकोनेक परवाहनाहिं, आहएकअङ्गीप्रीतिदाहदुखआने हैं ॥

दो० परम बिकल शृङ्गारकी, करन हाल सब बाल।
ऊधोते भाषत भईं, उर करि शोक बिशाल ॥

क० चन्द्र अतिशीतल सुधाकरकहात जौन, ताको मित्र आग को अँगारा लैचबात है। कहा दोष ताको पै अभाग सोचकोरकेरो, जीवन जगत अन्न अमृत समात है ॥ नन्दलाल नाम लेतदुखको न लेश रहै, तिनकी सखीन को जुदुख दरशात है। ऐसीही बिधाता दुखदाता अनरीतिकरै, नेहकरनाता नेहदीपसों दुखात है ॥

दो० जे नितरहीं सवाँरतीं, हरिकी सेज सुजान।
तिन को यूथ महीपमणि, कहत महतदुख आन ॥

क० ब्याधा बाण मारि जो हरत जीव जीवनको, सोऊ तो बिचार लेत आज एते मारे हैं। भौंह धनुतान बान चितवनि तीखे

अति, एकमें करोड़नको आशु मारिडारे हैं॥ जानि निरजीव लैकै स्वाद इतै छांड़िदीनो, निपट निठुर जन्महीते निरधारे हैं। मरोकोऊ जीवोसो बलायतैं गोपालजूकी, आपुही गईथीं टेरि बेनुको पुकारे हैं॥

दो० गऊलोककी पारषद, जे जनमीं भूपाल।
ते सिगरी भाषत भईं, ऊधवते तेहि काल॥

क० कहिकै कन्हाई औ कन्हाई तुम करो छोह, ताके तो हिसाव हँसी यह है ठिठोलियां। नाम जाको मोहन है मोहन निपट आली, योग क्यों न कहै सो कृपाणकीसी बोलियां॥ दुख जाहि लाग्यो न कहै सो कहा गिरिधर, जानत चतुर आप ब्रजबाल भोलियां। जाके पांव फटै न बिवाई सो क्या जानै पीर, हीरा और कांच दोऊ एकभाव तोलियां॥

दो० बृन्दाबनकी नारि सब, जेही चौकीदार।
तिनन्ह तहां ऐसे कह्यो, सुनिये भूभरतार॥

क० उनकी तौ बात नेक जीवमें बिचारकरो, योग ना कहायो यह कहरायो हांसी है। नेहकहँ छोस्चो ब्रजनारिनतें मुखमोस्चो, अब तौ पियारी अति भई कंसदासी है॥ कूबर कुरूप अति कुटिल कलङ्क बान, दुखकी समृद्ध बृद्ध मति जासु नासी है। नासी मरयाद ब्रजवासिनकी गिरिधर, जग पुण्यरासी और कौन कुबजासी है॥

दो० गोवर्धनबासिनि सकल, करि जल पूरित नैन।
ऊधव तें बोलत भईं, दुख ते भीजे बैन॥

क० बिषयी सदाको और सिखई अहीरनको, कहा जानै योग कैसो मूरख गुपालसो। सुनि लीन्हों काहूते बताइ दीन्हों योग इन्हें, जानत न गिरिधर ताकर जंजालसो॥ एकतो रह्योई ऐसो कुबजा को साथ मिल्यो, जैसे तितलौकी को चढ़ायो नीमडालसो। भैंस

को बजायो बाजा देखि कूदी चारों पाँव, मूरख बखान्यो कैसो जान्यो सब तालसो ॥

दो० कुञ्जनिवासिनि नागरी, भरिलोचन की लाल।
ऊधव ते भाषत भई, सुमिरि देवकीलाल॥

क० हाय हाय मोते न कही जाय बात कछु, जाहि देख्यो दृग ताकी पाती आज आई है। जान्यो न मेरोदुख ताते है पठायो योग, कहा भयो घने दिन रहे नियराई है॥ कैसेके जाइये औ दरशहरि जू को पाइये, अतिही नगीच नाहिं मूरति दिखाई है। डूबि दुख ऊबि कैसे पार लगै गिरिधर, छाती पर गिरिधर भये दुखदाई है॥

दो० तबै निकुञ्ज निवासिनी, बोली ऐसे बात।
हे ऊधव धव ते कह्यो, मेरे बैन बिभात॥

क० बृन्दाबन बीच भाननन्दिनी निकट आली, चलत मराल चाल देखेऊ दृगनते। बलदेव साथ लीने मुकुट नमित कीने, बाँसुरी बजावैं गावैं तानको सुरनते॥ सो छबि सुजान और ईछन की तीछनता, ताछन ते काछन पिछौरी बसी मनते। गिरिधररूप नाहिं बिसरत नेकु मोको, साकरी गलीते गली आजुलौं या तनते॥

दो० यमुना केरो यूथ तब, बोलो ऐसो भूप।
सुमिरिसुमिरिसो मोहनी, मूरति परम अनूप॥

क० बापुरो बिधाता कहा साँचहू बौराय गयो, ऐसोहै रचत खेल दुखको लखा करैं। जाहि आँखि खोल देख्यो ताहि आँखि मूंदि देखैं, मोहनको भोग खाय मृत्तिका भखा करैं॥ जाके देखे अतिही अनूप अङ्ग भरे रूप, ताको कैसे काटि ध्यान ब्रह्मको रखा करैं। जीवत खसमके औ लगावैं भसम अङ्ग, ऐसी रसम को क्यों न भूजि करखा करैं॥

दो० गङ्गा केरो यूथ तब, बोलत भयो महीप ।
सुनि ऐसो तिनको बचन, श्रीपतिसखा समीप ॥

क० कुबजा जो रहीही कुरूपा सो भई सरूपा, सुनत हरीजू पीठ पै की गाँठरी हरी । दासीकी उदासी अबिनासी ने बिनासी सब, गिरिधर पटरानी रूपरङ्ग में भरी ॥ कंसहू नसायो मजूरिन हजूरिन भई, आज काल दशा मेरी दूर कर्म ते टरी । कोऊ दिन ऐसो ह्वैहै ताहूको बिचारि देखो, सदा कोऊ डालफूली ना रही औ ना फरी ॥

दो० रमायूथ की नागरी, जमा कियो जो दुःख ।
ताहि तबै काढ़त भई, लखि ऊधव को मुःख ॥

क० एकदिन ऐसेई हमारे बश श्याम रहे, आजकाल कूबरी की दशा अतिभारी है । दांव जो कबहूँ हमारो ऐहै गिरिधर, हमहूँ करैंगी ऐसी सवत खुआरी है ॥ अपने नसीबके बमूजिब होत काम सब, मोहन अजीबरूप बिश्वहितकारी है । सदा ना बसन्तरहै पूरो राकाकन्तरहै, कहांलौ रहैगी नाव कागद सुधारी है ॥

दो० तबै सखी मधुमाधवी, कर सुयूथ बर जौन ।
अपने मनकेरी बिथा, श्रवण सुनावत तौन ॥

क० ऊधवजू दोष कछु माधवको अहैनाहिं, जाइकै अकेलेमाहिं बुझायो ऐसे कूबरी । योग जो न गोपिन को कहा ह्वैहौ गिरिधर, तो मैंना करौंगी भोग गुनन अब दूबरी ॥ सोई कहवायो उन नहीं नन्दलाल गुन, ताते कराल काल आपद अजूबरी । तेरो है नसीब दुष्ट तैंहू कर मनमानो, मेरो दिन ऐहै जब समुझोंगी खूबरी ॥

दो० बिरजा केरो यूथ तब, ऐसो कहत सुबोल ।
ब्याकुल बूड़ो बिरहते, सुमिरि श्यामदृगलोल ॥

क० अहो श्रीमुकुन्द कुन्द मालवारे नन्दलाल, दासीपति होय

सो कबूलत बचन सत्य, दूलत दृगन आगे तैसोई स्वरूप साथ । एकबार ऊधोजी बिचारि आनि दयाभरी, देवैं दर्शन आय बृन्दावन प्राणनाथ ॥

दो० आठ सखी बैठी रहीं, मुख्य सुनहु नरपाल ।
तिन तब ऊधवते कह्यो, ऐसे बचन बिशाल ॥

क० कहा कहा कहिये की न कहिये बिचारोजू, गुण हैं अपार प्यारे राजिवनयन के । रोम रोम जीभ पाय कहै तो कह्यो न जाय, जानत ब्रजेश सब मर्दनमयन के ॥ सूधी यह बात जानो गिरिधर तें बखानो, सो कि सीधी एक यही दायक चयन के । धारिये चरन सुखअयन जयनबिश्व, टारिये महान दुख बनिता बयनके ॥

दो० तब षोड़श सखि सुन्दरी, मनमें बात बिचारि ।
कहत चहत दृगमहतदुख, चहतदरशगिरिधारि ॥

क० अटक रहत मन चलन चटक पर, नयन मटक बर नगधर परघट । घट घट रमत दमत अघ अय गन, नमत अमर गन बदन सरस झट ॥ झटकत अन तन मरदत बरधत, हरष करष मन परखत बरनट । नटखट सब मन हरत नवल नव, चढ़त बढ़त रट लखन अबश अट ॥

दो० बत्तिसबर ब्रजनागरी, तिनकहँ मरदेउ मारु ।
कृष्ण सखातें कहहिंते, बानी अतिशय चारु ॥

क० प्रीतिते मनैये मित्र नीतिते मनैये शत्रु, लोभीको सुधन दै मनैये बश आइ है । गुरू को प्रणाम कीजै आदर द्विजन दीजै, रसिकन को रसतें अतीह सरसाइ है ॥ नमस्कार सूरजको धूरजटि जलधार, गिरिधर पर उपकार ते मनाइ है । पाथर पसीजै कहा कञ्जपात भीजै कहा, निरमोही सँग प्राणबिथाही गँवाइ है ॥

दो० श्रुतिरूपा गोपी तबै, करत कृष्ण को ध्यान।
ऊधवतें ऐसे कहत, लोचन बहत सुजान॥

क० विश्वको करनहारो दुःखको हरनहारो, एक ईश सब बीच व्यापक ललाम है। घटघट में प्रकट प्रकाशत कूटरूप, मायापति परब्रह्म परंतत्त्व नाम है॥ इन्द्री मन कर्म बानी जाहि ना सकत जानी, दीनदुख दरन प्रबीन सुखधाम है। श्याम पति मेरो करि दया दासी ओर हेरो, फेरो दरशन दीजे कोटिन प्रणाम है॥

दो० ऋषिरूपा अबला सकल, कहत यादवहिं देखि।
दुख कांदवके मधि परी, कृष्णहि परम परेखि॥

क० परम्ब्रह्म परन्तत्त्व पररूप परंधाम, परमपरेश पूज्यपाल श्री गुपाल हैं। जाकी एक छाया माया जगत रचाया भाया, पारनहिं पाया गाया शेष श्रुतिभाल हैं॥ गोपीनाथ गिरिधर कंसदर केशी-दर, दुखहर दयातर चतुर कृपाल हैं। जानि निज दासी परकासी दया ब्रजबासी, कीजै निजपासी मैं खवासी कौनहाल हैं॥

दो० तबै देवरूपा सकल, भूपति बोलीं बैन।
बड़ो बिषाद बियोगको, सुमिरत नीरजनैन॥

क० अंश और अंशहूके अंश छठे अंश पुनि, विकलाकला सुजान पूरण अवेश हैं। जेते अवतार ते बिचार गाये बेदनमें, परि-पूर्णतम एक कृष्ण ग्वाल भेश हैं॥ जाहि भनै चारिमुख पांचमुख षटमुख, दशशतमुख शेष अतिही बिशेश हैं। नाशत कलेश लेश केशव परेश देव, गिरिधर पर मेरो मस्तक हमेश हैं॥

दो० तबै यज्ञ सीता सबै, परम बिनीता नारि।
कहत बचन सरवज्ञमति, उर आनँद बिस्तारि॥

क० कुञ्ज औ निकुञ्ज सुखपुञ्ज गरे गुञ्ज धरे, हरेहरे लता के

बिहारी बनवारी हैं। राधाके हृदयबासी सुखरासी परकासी, अबिनासी दीनबन्धु बर गिरिधारी हैं॥ कंसमदहारी बेणुधारी बिश्व हितकारी, कारी हरिमूरति हमारी अतिप्यारी हैं। नारी ये बिचारी सारी दासी हैं तुम्हारी प्यारी, दुखकीजै छारी दीजै दरश दुखारी हैं॥

दो० तबहिं रमा बैकुण्ठकी, रहनहार सब बाल।
ऊधवतें ऐसो कह्यो, सुमिरत श्रीगोपाल॥

क० रासको रचायो औ मचायो खेल रूपरास, अग्नितें बचायो कृष्ण कानन अनूप मैं। सुखमा सचायो औ बचायो दशा काम केरी, लीक को खचायो तीनलोक देव भूप मैं॥ कारन सबन के बिदारन महानदुःख, गिरिधर गिरिधारयो क्रतु कोपरूप मैं। काढ़ि काढ़ि शोकसिन्धु सरिता सरोवरन्ह, कृपासिन्धु काहे को डुबाओ दुःखकूप मैं॥

दो० श्वेतद्वीपकेरी सखी, ब्याकुल करत बिलाप।
ऊधवतें भाषत भई, करत तरुण अतिताप॥

क० लीन्हीहै उठाय गिरि गिरिधर मेरे हेत, भूलत न बातसोई डुलत दृगन मैं। हूलत है शूल दुःख आनँद अनुकूलत, फूलत है शोक फूल आपके लगन मैं॥ छूलत करेजा रेजा होत है पियारे बिना, खूलत न सङ्कट केवार भारतन मैं। ताते कृपासिन्धु दीनहेतु प्रभु आर्तिहर, राखिये अनाथनाथ नाम पोथियन मैं॥

दो० तब ऊधव बैकुण्ठकी, बासिनि बिलकुल ब्याल।
ब्याकुल बरनत इमिभई, ऊधव सुनहु रसाल॥

क० देख्यो जिन द्वैतको अद्वैत ताके आगे कहा, घनश्याम रङ्गभरे आंखआगे छायो है। इहांतो बियोग अहै योगको कहत तुम, त्यागिकै बिशेष घटा कौनको सुहायो है॥ बिना गिरिधरलाल

छूटैकैसे दुःख जाल, पायो जाहि सुगम सोनजात ऐसो धायो है। खायरह्यो मालपुआ बैठि जो समाज बीच, ताहि कहा पीसबो पछोरबो सुहायो है॥

दो० अजित पदाश्रितकी सकल, बोलीं अबला बैन।
सुमिरत राजिवनैन को, जिन्ह कहँ चैन अहैन॥

क० जाको मन्त्र ताहि सोई सकत उतारि आली, जाको रच्यो इन्द्रजाल ताहीतें नसात है। काट्यो जाहि सर्प बिष सर्पही उतारतहै, खायो बिष जौन सोतो बिषहीते जात है॥ ताते समुझाय दीजो ऊधवजी माधवकों, आइ काटैं मोह गिरिधर जग तात है। देखिये बिचारि करि आपहू बिज्ञानरूप, नातो नातो प्रेमको सो प्राणपै बिसात है॥

दो० लोकाचलकी तित रहीं, जितनी ललना भूप।
ते सिगरी बोलत भईं, बानी अतिहि अनूप॥

क० कृष्णके चरणबीच लागे मेरे नैन दोऊ, त्यागि जाहि सूझत न बूझत कछू अहैं। जैसे अरबिन्द मकरन्द को मलिन्द ज्ञाता, तैसेई गोबिन्द मेरे सुखद हिये लहैं॥ मोहनके छोहन छरीसी भई सूखि आली, अब तो भई सो भई ताकी तौ कहा कहैं। लीजिये बचाय और दीजिये दरश आय, गिरिधर एकरूप आपको सदा चहैं॥

दो० बोलीं सिगरी श्रीसखी, सुमिरत श्रीश्रीनाथ।
गाथ महादुखतें भरी, अरथ आपने साथ॥

क० यशको नशावै है कृपणताई बिश्वबीच, क्रोध सब गुण को नशावै अति हाली है। मित्रता नशावै हाँसी खरच नशावै धन, नाश करै कुलको कुचाल जो सँभाली है॥ गिरिधर को दरश नशावै है सारो पाप, प्राणको नशावै जो भुजंग त्रिय

काली है। प्रीतिहू नशात कीन्हे कपट कुटिल बात, आली सोई बात में निपुण बनमाली है॥

दो॰ तब मिथिला की नारि सब, बोलीं ऐसी बात।
बिछुरे श्रीब्रजनाथ के, दुखते पूरित गात॥

क॰ धनदै सँभारैं तन तनदै सँभारैं मित्र, सबते सुमित्र अति उत्तम कहात है। सोई हम कीनो सब दीनो गिरिधर जू को, सो तो त्यागि नातो साथ दासी के बिभात है॥ कहा अब कीजै का कहीजै मन लीजै बोध, तोलिये कहाँ जहाँ न पारसंगो अटात है। दोऊ हाथ ताली बाजै नाह खाली चोट लागै, नेहके सँभारे कोऊ छोट होइजात है॥

दो॰ कौशलपुरकी कामिनी, दुखमें अतिही मग्न।
ते सब बोलीं भूमिपति, लगीं कृष्णपद लग्न॥

क॰ कोऊ नहिं जानत बियोग की दशा कराल, मरत पतङ्ग सोऊ दीपक को हाँसी है। मोहन के हेत हम अतिही अचेत रहैं, तिनहीं को गिरिधर और कछु भासी है॥ औरहू पठाय दीन्हो योग करो सोग हरो, भोग हेत भई मेरी प्यारी कंस दासी है। पीर तो न जानी धस्यो नोन जरे अङ्गपर, बूड़त करनबीच बाँधी और फाँसी है॥

दो॰ अवधनगर की नागरी, भईं राम बरजौन।
ऊधवते ऐसे कहत, सजल नयन करि तौन॥

क॰ आशा दैकै देखत तमाशा आप दूत भेजि, आशा तौ दिखावन चहत यमराजकी। आशा लै थँभायो हाथ आधेको बतायो मग, बीच कीनो बिवर सुकैसी बात लाजकी॥ बाँधि नेह पासा बीच पासा धस्यो तीन काने, पास नहिं आये सास अवधि

दराजकी। छली सों चहिय छल ना भली सों गिरिधर, बूड़त खबर लेहु ललना जहाजकी॥

दो० तब पुलिन्दिका नारि सब, रहीं कृष्ण प्रिय जौन।
ऊधव माधव के सखा, तिनते बोलीं तौन॥

क० येही कृष्ण राम जब भये दशरथ धाम, देखि रूप आई शूपणखा ललचायकै। पति के करन काज बिनती नमित कीन्ही, बृथा ताकी नाक कान लीन्हो कटवायकै॥ भलोहू करत दशा ऐसी भई गिरिधर, ऐसेई सदा दुखदायक सुभायकै। तुम्हरी औ हमरी तौ आबरू बची है अजौं, ना तौ कौन जानै कहा करते रिसायकै॥

दो० अबला सुतल निवासिनी, भई रहीं जे भूप।
ते सिगरी ऐसे कहहिं, परम दुःख के रूप॥

क० बामनको रूप धरि ब्राह्मण भये हैं येही, जायकै दनुजनाथ द्वारपै कह्यो तबै। दीन्हो बलिदान ताको कीन्हो बलिदान सम, तन मन धन धाम क्षण में लियो सबै॥ तीन पैर भाषि तीनलोक नाप्यो गिरिधर, ताहूपर बाँधि मार्यो औरना रह्यो जबै। जन्मही के कुटिल कलङ्की औ निशङ्की ऐसे, आली मित्रद्रोह एक इनको सदा फबै॥

दो० तबै सकल जालंधरी, भरी भयंकर शोक।
बोलीं ते सुमिरत हरी, हे नृप सिगरो थोक॥

क० पूरब भयो कराल हाटककशिपु दैत्य, प्रहलाद हेत नरसिंह रूप धार्यो है। खम्भते प्रकट्ट भट्ट कट्टकट्ट अट्टहास, सट्ट चमकत अट्टवी में मारडार्यो है॥ दासको बचाय लीन्हो शीश पर हाथ कीन्हो, सोई कृष्णरूप होय लीला बिसतार्यो है। क्रोधरूप दयासिन्धु शान्तिरूप भे कठोर, कहाजानैं कहा गिरिधरने बिचार्यो है॥

दो० भूमि गोपिका सकल तब, आनि कृष्ण को ध्यान।

बोलीं ऐसे कोपि के, ऊधव ते मतिमान ॥

क० निरमोही अतिही लगै है मोही काम मोही, फिरत कहा तौके नहीं धौं अबरेखिये। आज काल कुबिजाको अहइ महातम आली, भाग आपनोही ओछी तिन्हैं क्यों परेखिये ॥ पाती को पठाई येहु बड़े भाग जानिलेहु, कारे सारे कुटिल कहाँलौ लीक लेखिये। देवता न जानैं तहाँ लेखो का नरन केरो, खोटो निज दाम ताहि कैसेकै सरेखिये ॥

दो० बरहिष्मती महामती, हतीं तहाँ तिय सर्ब।
बोलीं ऊधवको निरखि, पृथ्वीपति तेहि सर्ब ॥

क० लखहु दयाल के चरित्र को अनारि नारि, कोलरूप धारी सारी धराको उबारी है। सोई जब बीजको बिनाश कीन्हो गिरिधर, पृथु होइ दोहि लीन्हो औषधी मुरारी है ॥ जब जब पाप भयो तब तब रूप लयो, दुख कहँ हयो नयो धर्म निरधारी है। कौनसी हमारी चूक भारी अबकी सुपारी, देखिकै अनारी न्यारी त्यागि गिरिधारी है ॥

दो० लतारूप सब गोपिका, भाषत ऐसे बात।
नाथ होहिं ब्रजनाथ जिमि, आइ दयाल बिभात ॥

क० भये जब बैद्य सिन्धु बीचते श्रीगिरिधर, नाम ते। धन्वन्तर जगत बीच गायोहै। ऐसेई अनेक रूप मोहनी बराह कच्छ, मच्छ राम भृगुराम श्याम नाम पायोहै ॥ टेरयो जब नाग त्यागि गरुड़ सिधाये तहाँ, चक्रको चलायो नक्र शीश महिनायोहै। बेदन हमारी भोरी हरत मुरारी क्यों न, दीनके दयाल नाम बेदन में गायो है ॥

दो० नागसुता अति दुखयुता, केशव सखा निहारि।
दृगबहती कहती भईं, चहतीं चतुर मुरारि ॥

क० कूबरी को देखो तो लगन गिरिधर बीच, पहिले जनम कान नाक कटवायो है। भ्रातन मरायो कियो जौन राम मन भायो, कंस दासी होय पटरानी पद पायो है॥ तुम तो जो एक दिन आवैं ना मुकुन्द प्यारे, कैसे कैसे मानकरि बदन फुलायो है। भक्तिबश श्याम आठौ याम गुणधाम आली, आपनो कसूर हरि बीच ठहरायो है॥

दो० तबै सिन्धु सुकुमारि सब, भई रहीं जे तीय।
बोलीं ते कमनीय अति, चहत हीय ते पीय॥

क० चञ्चला बखानी जौन रमा बिश्वरानी तौन, एकपल कोऊ ठाम थिर होय ना रही। तिनके चरण त्यागि जात सो कहूं न भागि, हमतौ कहब हम ऐसी का तिन्हैं नही॥ आवैं जो कृपाल स्वामी दीनबन्धु गिरिधर, कृपासिन्धु नाम ताते जो कहो सोई सही। दासी कमलासी ताहि कहा ये अहीर नारी, भागको निहारो मेल हेम आसम को कही॥

दो० तबै अप्सरा अङ्गना, बोलीं दुख ते पूरि।
बड़ी चतुर चालाक चित, जानति है बिधि भूरि॥

क० ऊधवजी माधव कह्यो जो सो करेंगी सब, अङ्ग में बिभूति आछी भांति सों लगावैंगी। पहिरेंगी मृगछाल मुद्रा कान बीच डारि, हाथमें कमण्डल सकल सरसावैंगी॥ होय अवधूत त्यागि देश औ सुहाग भेश, अलख अलख भाषि खलक जगावैंगी। एकबात पूछि आओ कै बताओ आप ज्ञाता, आछत खसम कैसे मूड़ को मुड़ावैंगी॥

दो० तब दिब्या बोलत भई, ऐसे बचन अनूप।
वे हरिगुण जानहिं सकल, बात सुनहु सो भूप॥

क० वामन भये हैं बलि पास में गये हैं जब, पहिले तो दीन्हो दुख करुणानिधानने। पाछे अति आछे कियो अतिही अनूप भूप, राज दीन्हो बर दीन्हो गिरिधर आनने॥ सोधि लेत पहिले सुहास को रमानिवास, जैसे नीमखाय रोग जाय सत्य जानने। कहा जानै कौनचूक परी है हमारी आली, जाते ऐसी खींच कीन्ही प्यारे भगवानने॥

दो० तदनु अदिव्या नारि सब, बोलीं ऐसे बात।
ऊधो ते सूधो बचन, संकट उर न समात॥

क० मनु शतरूपा जबै कीन्हो हरि हेत तप, दैत्यके समूह तबै लीन्हों तिन्हैं घेरिकै। देखिकै अचल कीन्हो नाश दुष्ट समुदाय, दीनबन्धु कृपासिन्धु दास दिशि हेरिकै॥ सदाईते ऐसे आये करत कृपानिधान, बिना ताउ दिये हेमलेवै कैसे फेरिकै। पैहौ दीनानाथ कृपाकीजै मोपै गिरिधर, राखिये चरण बीच नारि निज चेरिकै॥

दो० सत्यब्रत्त वारी तबै, बनिता बोलीं बैन।
आश एक भगवानकी, कियो चैन गतिमैन॥

क० ध्रुव प्रहलाद अम्बरीष आदि भूमिपाल, ध्यान धरि कृष्ण को परमपद को गये। दीनके दयाल को भजन करि ब्रह्मा शंभु, पूजनीय देवता ते देवतारती भये॥ जैसो जिन ध्यायो तिन तैसोई प्रसाद पायो, दीनबन्धु गिरिधर दुख को सदा हये। करणी न मेरी कछु बरणी कृपानिधान, धरणीधरण दीजै दरश प्रजामये॥

दो० रजोवृत्तिकी नारि सब, वारी गिरा ललाम।
ऊधव ते अवरेखि हित, सुमिरत श्रीघनश्याम॥

क० हेमाङ्गद हरीचन्द आदि जे भये महीप, दैदै दुख सबन बहोरि करुणा कियो। तैसेही निहारतहैं नारिन को गिरिधर, पै न

फाट जात मेरो कठिन महा हियो॥ऐसी नाहिं कीजै निज ओर नेक देखि लीजै, कहा विश्वनाथ भाव मूरखनमें छियो। ताते प्राणप्यारे जू दरश दीजै दीनबन्धु, साधु गुणलेत कहूं अवगुण नहीं लियो॥

दो० ब्रजबनिता तब तामसी, बोलीं बचन महीप।
क्रूर वचन श्रीकृष्ण के, कर्म प्रकट कुलदीप॥

क० काका बृन्दा जिन छली ताहि छलि लीन्हो कंस, दासी देखो तो कन्हाई कैसे काममें अरूझा है। कुब्जा तीन टेढ़ी औ त्रिभङ्गी भलो जड़ामिल्यो, एकधार असिकाटै क्योंन प्राण जूझा है॥ देखो जब ताहि सोवतहार ते सचिह्न उर, गिरिधर निरमोही जन्मही ते सूझा है। ऊधोजी बिचार देखौ दूरिराखौ योग लेखौ, जानि लीन्हो भेव तांत बाजी राग बूझा है॥

दो० इमि भाषत मूर्च्छित भईं, सिगरी नारि महीप।
कृष्ण कहत अवनीगिरीं, यादव मुख्य समीप॥

तबै सबन बहु भांति बुझाई। ऊधव राधहि कहत सुनाई॥
परिपूरण तुम प्रिया सुजाना। आज्ञा देहु चहत मैं जाना॥
दीजै उत्तर की लिखि पाती। जिमि मैं कहेउ हरिहि बहुभाँती॥
सुनि राधा लेखनी मँगाई। लिखनलगी कागजपर स्याही॥
जेते अक्षर तेते आँसू। लिखि न जात लखि बाढ़ा गाँसू॥
ऐसीदशा देखि मतिमाना। कृष्णसखा पुनि बचन बखाना॥
केहि हित पत्र लिखत महरानी। हम कहिहैं सब यथा जुबानी॥
सो सुनि बालदीन्ह तेहिकाला। ऊधव धन्य सुबचन निकाला॥

दो० राधाजू के चरण कहँ, ऊधव करि सुप्रणाम।
बिदा होय सब सखिनते, रथ चढ़ि चले ललाम॥

नन्दराय आगारहि आये। जिमितिमिकरि सो रैनिबिताये॥

प्रात नन्दपद शीश नवाये। यशुमति ते भय बिदा सुहाये॥
मिलि वृषभानु नन्द उपनन्दन। चले सखनते कहि चढ़िस्यन्दन॥
साथ लगे जे तिनहिं फिराई। ऊधव गे मधुकानन धाई॥
अक्षयबट तट कृष्ण निहारा। उतरि प्रणाम कीन सुखसारा॥
गदगद गिरा ज्ञान सब भूला। कहत कृष्णते लखि अनुकूला॥
कहा कहौं ब्रजकी सब गाथा। चलहु आशु ब्रजमें ब्रजनाथा॥
हम मुखते हारे तव आवन। कृपासिन्धु सो चहिय पुरावन॥

दो० रुक्माङ्गद प्रह्लाद ध्रुव, अम्बरीष खट्वाङ्ग।
जिमि इनके बचनहिंकरे, तिमि यह करहु शुभाङ्ग॥

सुनि ऊधव के बचन गुपाला। चलन चहे ब्रज दीनदयाला॥
राज भार दैकै बलहाथा। बैठे रथ पै ऊधव साथा॥
दोउसम शोभा अति छबि छाये। नन्दघोष आतुर चलि आये॥
गोधन गोकुल यमुना देखत। बढ़्यो परमसुख प्रेम परेखत॥
कोटिन गऊ हरिहिं लखि धाई। बच्छ सहित घेर्‌यो समुदाई॥
पूंछ नचावत बदन उठाई। अस्तन ते पयधार बहाई॥
हरि तिनकहँ पोंछ्योबिधिनाना। चले संग गोदल दरशाना॥
दशदिशिग्वाला बीच गोपाला। आवत शोभा भई रसाला॥

दो० देखि सुरथ महँ श्याम कहँ, घेरहिं सुरभी ताहि।
लखि श्रीदामादिकसखा, कहहिंचकित चितचाहि॥

यह रथ रुचिर अहै अति भारी। जाके दशदिशि गऊ कतारी॥
लै हवालहरि सखा सिधायो। सुनि सो नन्दराय सुत आयो॥
फरकत दक्षिण कर अरु लोचन। करहिं सगुन ये शोचनमोचन॥
इमि कहि सब स्यन्दन ढिगआये। देखि मुकुन्दहि अति हरषाये॥
कूदि यान ते कृपानिधाना। मिले परस्पर सुख अधिकाना॥

गदगद कण्ठ निकर नहिं बाचा । सबके हृदय प्रेम अतिराचा ॥
तहँ हरि कहि २ कोमल बानी । सबन बुझायो बहु सनमानी ॥
दो० ऊधव कहँ पठवत भये, नन्दराय आगार ।
जाय खबर कीन्ही प्रथम, आयो आप कुमार ॥
सुनि अतिमुदित भये ब्रजबासी । चले लेनाहित हरष प्रकासी ॥
भेरी शंख मृदङ्ग बजावत । मङ्गल साज अनेक सजावत ॥
यशुमति सहित नन्द छबिछाये । सुतते मिलन हेत मगआये ॥
कीरतिबर वृषभानु सुजाना । गजचढ़ि प्रमुदित चलेमहाना ॥
बहु बिधि गोपी करत बधाई । देखन चलीं हरष अधिकाई ॥
नन्द और उपनन्द महाजन । षट वृषभानु बजावत बाजन ॥
शिशु अरु तरुण बृद्ध ब्रजबासी । चले लखन हरि आनँदरासी ॥
गावहिं नाचहिं करहिं अनन्दा । पीतबसन सोहत सब बृन्दा ॥
दो० मोरपक्ष गुञ्जा धरे, बंशी लकुटि ललाम ।
शोभित ब्रजके गोप सब, सुमिरत श्रीघनश्याम ॥
राधा सुनेउ कृष्ण आगमनू । भा दुख दूरि भयो सुखभवनू ॥
चढ़ि शिबिकापर चली सुजाना । मनकर मोद न जाइ बखाना ॥
बसु षोड़श बत्तिस ब्रजबाला । अरु शतयूथरसाल नृपाला ॥
चलीं सकल नारी हरषाई । सुखसागर उमड़्यो अधिकाई ॥
जैसी रही सुतैसी धाई । कछुक बनाव कियो नरराई ॥
मगमहँ आवत हरि अबिनासी । इतते बाढ़ि भेंटे ब्रजबासी ॥
नन्दराय कहँ लखि घनश्यामा । आठ अङ्गते कीन्ह प्रणामा ॥
यशुमति के पद बन्दे दोऊ । हे नृप छबि कहि जात न सोऊ ॥
दो० नन्दराय लायो हृदय, बहुरि यशोमति माय ।
भीजे अम्बर आँसुते, बढ़्यो प्रेम अधिकाय ॥

अरु जेते हैं गोप तित, तरुण वृद्ध अरु बाल।
तिन सबते भेंटे तुरित, यथायोग्य गोपाल॥
रथ चढ़ि चले श्याम मनमोदा। गज पर राजत नन्द यशोदा॥
अरु सब गोप गऊ समुदाई। पुर प्रविशे उर सुख अधिकाई॥
सुमनस सुमन भये बरषावत। जय जय गावत पटह बजावत॥
लावा और दूब दधि डारत। भये हृदय आनन्द पसारत॥
धन्य सखा ऊधव यह कहहीं। जा प्रसाद हम यहुफल लहहीं॥
प्राणदान दीन्हो तुम भाई। यहि बिधान सब करहिं बड़ाई॥
हे नृप हम यह कहा सुनाई। जिमि ब्रजमा आये ब्रजराई॥
जो सुनिबे की इच्छा होई। भाषहु मोहिं कहब हम सोई॥
दो० कहत भूप कीन्हो कहा, चरित बहुरि भगवान।
राधादिक ब्रजत्रियनकहँ, किमि दिय दरश सुजान॥
सो० इनके मनहिं पुराय, पुनि कैसे मथुरा गये।
यह इच्छा अधिकाय, सुनि मुनिबर बोलत भये॥
साँझ समय राधा बुलवाये। कृपासिन्धु कदलीबन आये॥
रम्भ परस्पर जहँ परिरम्भत। नूतन हरित पत्र आरम्भत॥
तहँ दुख ग्रसित बिराजत राधा। पुष्ट प्रेम नाहिं नेक उपाधा॥
तहँ शतयूथ त्रियन के आये। इतने में मोहन दरशाये॥
उठिकै अरघ सुआसन दीन्हा। विविध बचन कहि पूजन कीन्हा॥
पूछत कुशल कहै नहिं बानी। गदगद कण्ठ दृगन बह पानी॥
राधा कर दुख दूरि पराना। ब्रह्म जानि जिमि गुणकरहाना॥
हरि शृँगार कहँ राधा कीनो। अँग अँगमहँ अनङ्गरसभीनो॥
दो० चन्दन नाहिं ताम्बूल नहिं, नहिं भोजन नहिं सेज।
हास कबहुँ नाहीं कियो, मनकी नाहिं मजेज॥

पति परदेश बिशन बिन प्यारी। बोली बचन बड़ी सुकुमारी॥
रहिनगीचकिमिपुनिनहिंआये। केहिकुटिलागुणमोहिंबिसराये॥
दमयन्ती मैथिली समाना। मैं तुम बिन दुख लह्यों महाना॥
अरु तुम्हरी गोपी जे अहहीं। तुम बिन ते क्षण एक न रहहीं॥
ऊधव तुम्हरो सखा सुजाना। सो तुम कहँ लायो मतिमाना॥
नातरु तुम आवत हमजाना। भेकिमिकोमलकुलिशसमाना॥
इमि रोवत बहुबोल सुनायो। बासुदेव तब कण्ठ लगायो॥
धीरे ते अति कोमल बानी। बोले बिधुआनन बिज्ञानी॥

दो० राधा मति शोचहि करौ, हम आये तव हेत।
दोउ न महँ नहिं भेद है, बृथा जियहि दुख देत॥

जिमि पय होइ धवलता साथा। तिमिहमतुमजानहुसतिगाथा॥
तुम तटस्थ हम ब्रह्मपरेशा। भेदरहित बुध भजहिं हमेशा॥
जिमि आकाश बायु महि पानी। तेज तत्त्व ये पांचहु ज्ञानी॥
भीतर बाहर रहहिं सदाहीं। तिमि मोकहँ जानहु सबमाहीं॥
यह बिचारि सब दुख परिहरहू। मोमहँ भिन्न भाव जनि करहू॥
जबलौं दोय भाव जगमाहीं। तबलौं बन्धन छूटत नाहीं॥
गुण बन्धन जग अहइ कराला। बिन छूटे किमि भजै गोपाला॥
मोर एक प्रेमी अधिकारी। ताते करहु सोई निरधारी॥

दो० दृग दिबि महँ रबि दोयहै, दृग ते दिबिको सूझ।
ताबिन जग अन्धेर सब, नेकहु परै न बूझ॥

सो० मन जो शुद्ध सुजान, तौ देखो भगवान कहँ।
नातरु अन्धसमान, ताते करहु न शोच तुम॥

सो सुनि मुदित भई अतिप्यारी। साधु भाषि पूज्यो गिरिधारी॥
कातिकशशितिथि श्यामसुहाये। रास चौतरा महँ चलिआये॥

मुरली बजत तजत मन धीरज। लजतकामलखिलोचननीरज॥
जितनी गोपी तितने मोहन। नृत्य करत सुखमा भरिसोहन॥
नूपुर नवल बसन वनमाला। कमलहार शिर मुकुट रसाला॥
कुण्डल करण लसै कर बेनू। तनपर पग पटकन की रेनू॥
कौस्तुभ कण्ठ कान्तिको सदना। शक्रशचीजिमिरतिअरुमदना॥
घन चञ्चला सहित सो शोभा। जाहि देखि उपमा उरलोभा॥

दो० वृन्दावन बिहरत सुइमि, हरषरास बररास।
बाजत ताल मृदङ्ग मिलि, बिचबिचवेणुप्रकास॥

लखि गोपिन कहँ मान महातित। राधा सह हरि भये तिरोहित॥
रोहित अचल दोय दश कोसा। आये हरि तहँ ते भरि रोसा॥
लता कुञ्जमहँ बिचरत माधव। परमरम्य जहँ आपु न व्याधव॥
तहँ सुरसर बड़ी सब तावा। पीन कच्छ पाठीनन छावा॥
सहसपत्र पङ्कजन समेता। परम मनोहर गन्धनिकेता॥
राधा सहित कृष्ण भगवाना। लखेउ सुमुनि तपकरत महाना॥
धरत निरन्तर हरिको ध्याना। एकचरण ऋभुनाम बखाना॥
छांछठि सहस बरस तप कीन्हा। नेकअन्न अरुजलनहिं लीन्हा॥

दो० राधा ते केशव कह्यो, पुलकि सप्रेम शरीर।
धन्य भक्त कहिजगतगुरु, गये बिप्रके तीर॥

हे ऋभु टेरि कह्यो भगवाना। सुन्यो न ध्यानाबिबश नरत्राना॥
तब हरि उरते ध्यान नशायो। ध्यानहिं तज्यो सुमुनि घबरायो॥
देख्यो राधा सहित मुरारी। भो आनँद उर अन्तर भारी॥
करि परिकरमा बन्देउ चरणा। गदगद बचन कहत बरबरणा॥
नमो कृष्ण कृष्णा हरि राधा। परिपूरणतम तमा अगाधा॥
श्याम नमो श्यामारमरासिनि। रासईश अरु रास बिलासिनि॥

लीलाकर लीलावति अतिमति। अखंडकरनजयअखंडप्रभागति॥
जगन्नाथ गरुड़ध्वज ज्ञाता। जयजयज्योति राधिका माता॥

दो॰ भूमिभार के हरणहित, जग हरि राधा होय।
अमितभांति लीलाकरी, नमो नमो पद दोय॥

इमि कहि राखि चरणपर माथा। तनहिंत्यागकीन्ह्योमुनिनाथा॥
ज्योति कढ़ी अति अर्कसमाना। कृष्णचरण महँ अन्तर्धाना॥
सो लखि कृष्णभये अतिशोचत। प्रेम अम्बु अम्बकते मोचत॥
हरिपद ते पुनि मुनि प्रकटाने। हरिस्वरूप धरि दिव्य लखाने॥
हरि तिनकहँ तब कण्ठलगायो। पुनि मुनिप्रभुचरणनाशिरनायो॥
गऊलोकते स्यन्दन आयो। लखिमुनिपुनिपुनिशीशनवायो॥
चढ़ि तापै रवि सरिस प्रकाशा। गे गोलोक बिभासत आशा॥
राधा उर अतिबिस्मय आयो। प्रेमबितान प्रकट कै छायो॥

दो॰ कहत भई निजनाथते, धन हरिभक्ति प्रभाव।
तुमस्वरूपयहिमुनिलह्यो, करि बिश्वास सुभाव॥

याको जो यह अहइ शरीरा। क्रिया तासु करिये बलबीरा॥
इतनेहि कहत सुनहु नृप ज्ञानी। सो शरीरते निकर्‍यो पानी॥
कछु क्षणमहँ सरिभई शरीरा। राधा कहत खड़ी तेहि तीरा॥
किमि मुनिको शरीर भो बारी। यह मम संशय हरहु मुरारी॥
तब हरि कह्यो बचन यह आसू। भयो प्रेमते तन जल यासू॥
पाथर पाथ प्रेम ते होई। जगत प्रेम सम अहै न कोई॥
हमहुँ भये पूरब जलरूपा। सुनि राधा भाष्यो यह भूपा॥
शारँगपानी हे किमि पानी। कहहुकथा सो आनँद आनी॥

दो॰ प्राणप्रियाके बचन सुनि, गिरिधरलाल दयाल।
बिहँसि बचन बोलतभये, सुनिये बसुधापाल॥

पापहरण यह कथा सुहाई। सुनहु सुखद राधा मनलाई॥
मम प्रसाद ते भये बिधाता। लागे करन सृष्टि सुरत्राता॥
भये उछङ्ग प्रकट तब नारद। बेणुधरे हरिगान बिशारद॥
इकदिनाबिधि नरदहिसमुझावा। करहु सृष्टि मम मन यह भावा॥
नारद कहा न करिहौं याही। शोक मोह अतिहै जामाही॥
करिहौं कृष्णगान कहँ दादा। तुमहुँ तजो यह सृष्टि बिषादा॥
शाप दीन्ह तब विधि है खर्बा। गावत दुष्ट होसि गन्धर्बा॥
एक कल्पलौं नारद ज्ञानी। उपबरहन नामक भे गानी॥
दो० त्रियन नचावत ब्रह्मऋषि, इक दिनगे बिधिधाम।
बिगत तालगायो तहां, भई सभा लखि छाम॥
पुनि विधि कहा मूढ़ तैं होसी। जनमें मुनि जनमी अतिडोसी॥
करि सतसंग बिरञ्चिकुमारा। पुनि मुनि भये ज्ञान आगारा॥
मुनिमति मममन नारदनामा। परम भागवत बुद्धि ललामा॥
इकदिन गावत आनँदछाये। सुमुनि इलावृतखण्डहि आये॥
जम्बू नदी बारि अतिलोना। होत जहां जम्बूनद सोना॥
बेद नगर तहँ परम ललामा। बहु नरनारि रहहिं गुणधामा॥
गुल्फ जानु पद हाथ बिहीना। कृशउर कुब्ज सुबावन दीना॥
कन्ध उदर शिर पीठ बिनाके। लखे पंगुतन मनुज तहांके॥
दो० तब बिस्मित पूछत भये, नारद तिनते बात।
कौन किसिमके नारिनर, तुम सब टूटेगात॥
नरहौ कै सुर अहहु असुरहौ। को तुम अतिसंकटते पुरहौ॥
तुम सब मोहिं बतावहु भाई। सुनिकै कहत राग समुदाई॥
अति दुख अहै कौनते कहिये। दूर करे अस मनुज न लहिये॥
हम सब अहहिं राग हतअङ्गा। हे मुनि ताकर सुनहु प्रसङ्गा॥

नारद विधिसुत गावै एका। कालताल कर तेहि न बिबेका॥
बृथई टर टर करत अयाना। ताके किये अङ्ग ममहाना॥
सो सुनि नारद संशय छाये। रागनसों यह बचन सुनाये॥
काल ज्ञान किमि मोकहँ आवै। ताल भेद पुनि किमि सरसावै॥

दो० काके चेला होहिं हम, सो मोहिं देहु बताइ।
तब बोले ते राग सब, सो सुनिये नरराइ॥

हरिकी नारि गिरागुणवाना। सो दैहैं गायनको ज्ञाना॥
सुनि नारद आये गिरिश्वेता। तिन तप कीन्ह भारती हेता॥
निर्जल बर्ष दिव्य शतरहे। ध्यान सरस्वति दर्शनचहे॥
सुभ्रनाम तजि नारद नामा। भयो शैल सो चारु ललामा॥
आई गिरा हंस असवारी। बीणापाणि श्वेत भुजचारी॥
देखि गिरा कहँ उठे मुनीशा। बोले राखि चरणपर शीशा॥
शीश मुकुट सोहत कर बीना। श्वेतबरण अरु बसन नवीना॥
पगनूपुर मराल असवारा। नमो गिरा सु ज्ञानदातारा॥

दो० सबदिशिते अवदात तुम, बीणा पुस्तक हाथ।
नारि पियारि मुरारिकी, बरबेदनकी नाथ॥

कृपा करिय दीजै बरदाना। होइ अद्वैत गान कर ज्ञाना॥
गोलोकहु हम गावहिं भाई। ऐसी बुद्धि होइ मोहिं माई॥
यह अस्तुति हम कीन्ह ललामा। जाड्या यह है याकरनामा॥
याके पढ़े जाड्य सब जाई। नर कहँ फुरै ज्ञान अधिकाई॥
गिरा मुदित तब बीणा दीना। स्वरबिभेदयुत रुचिर नवीना॥
राग रागिनी सुतन समेता। देश काल ताड़न कर हेता॥
छप्पन कोटि भेद सब दीन्हो। अन्तरभेद असंख्यन चीन्हो॥
ग्राम नृत्य बादित्य बतायो। बहुरि मूर्च्छना भेद लखायो॥

दो० अद्वितीय करि नारदहि, बाणी बुद्धिनिधान।
बैकुण्ठहि आवत भई, उर आनन्द महान॥

शिष्य करहु मुनि हृदय बिचारा। गे गन्धर्ब नगर बर भारा॥
तुम्बुरु नाम गन्धरब एका। ताकहँ निजसम आप बिबेका॥
नारद चले सुनावत गाना। पहिले गये शक्र अस्थाना॥
देखि राज कर काज अपारा। नारद गे आदित्य अगारा॥
दौरत व्यग्र तिनहिं अनुमानी। शंकरलोक गये चलि ज्ञानी॥
तिन कहँ देख्यो ध्यान लगाये। ब्रह्मलोक चलि नारद आये॥
देखे पितहि कुम्हार समाना। बिरचि रहे सुबस्तु बिधि नाना॥
करि बिचार तब मुनि सुख छाये। बिष्णुधाम बैकुण्ठहि आये॥

दो० बिश्वईश परमेश प्रभु, जगकारण भगवान।
भक्त हेत लागे रहे, कारज करत महान॥

तिनके पद कहँ करि परणामा। मुनि गोलोक चले मतिधामा॥
निकरे ब्रह्मअण्ड ते सोई। देख्यो अण्ड अमित तहँ जोई॥
पुनि बिरजाके पास सिधाये। बृन्दाबन लखि अतिहरषाये॥
यमुना नाम नदी अतिभारी। गोबर्धन द्विजबरहि निहारी॥
जहाँ बसन्त रहत सुखपुञ्जा। नारद तब चलिगये निकुञ्जा॥
पूछेउ सखिन कौन इतआये। सुनिकै बिधिसुत बचन सुनाये॥
हम दोउ अति अहहिं गवैया। आये हरिहित राग छवैया॥
कहहु बीनती बिबिध बिधाना। करिकै कृपा सुनहिं मम गाना॥

दो० सखिन आय हमते कह्यो, मम आज्ञा कहँ पाइ।
नारद तुम्बुरु कहँ गईं, निज अस्थान लवाइ॥

देखेउ तुम समेत मोहिं तहँवां। कौस्तुभकर सिंहासन जहँवां॥
श्वेतछत्र शिर चमर सुहाई। शोभाचारु कही नहिं जाई॥

मोकहँ देखि दोऊ तेहिकाला। फेरी करि पद बन्दि रसाला॥
ममआज्ञा लै बैठे दोऊ। गावनलगे सरस सुर सोऊ॥
कहि न जात जो नारद गावा। हम प्रसन्न होइ शीश डुलावा॥
पानी सम प्रवाह हम पायो। सोई ब्रह्मद्रव कहवायो॥
जामहँ ब्रह्मअण्ड ये सारे। लुढ़कहिं जेहि तुम दृगन निहारे॥
जब बामन निज चरण लगावा। फूटो अण्ड बारिमधि आवा॥

दो० रहे अनेकन अण्ड पै, जाके मधिमहँ छेद।
ताहीमहँ आवत भये, गावहिं जाकहँ बेद॥

जबसों यह अण्डामहँ आयो। गङ्गानाम तासु सब गायो॥
मन्दाकिनी कहहि दिवि नामा। भागीरथी भूमि अभिरामा॥
जो जन गङ्ग नहावै जाही। अश्वनिरधफल पगपगमाही॥
गङ्गा गङ्गा जो जन भाखै। सो वैकुण्ठ रूप निज राखै॥
दशशत शत पीवत जल दूना। दशशत न्हात होइ अघहूना॥
तासु सुफल महि जन्म अभङ्गा। जे नर जीवत देखहिं गङ्गा॥
तैसेइ बिरजा नदी बखानी। तिनके साथ सुवन पुनि ज्ञानी॥
बेणी हर हरि कृष्णा जाना। विधिककुदमिनीतिमिपाहिंचाना॥

दो० भई गण्डकी अप्सरा, भरि कै प्रेमप्रबाह।
तिमि ऋभुऋषिसारिताभये, जानहु सहित उछाह॥

जे यह कथा सुनहिं गत बाधा। ते ममलोक जातचलि राधा॥
इमिकहि लिये राधिका साथा। आये बृन्दाबन ब्रजनाथा॥
हरिबिन तहँ ब्याकुल सब गोपी। कीन्ह बिलाप सकल सुखलोपी॥
अबलनकर जब मान हिराना। तब तिनमहँ प्रकटे भगवाना॥
संग लिये बृषदिनकर कन्या। मिलीं प्रेमबश उठि त्रियअन्या॥
तहँ तब रास रचायो भारी। कमलनयन कर बेणु सुधारी॥

सुनिकै मुरछि परीं ब्रजनारी। खग न उड़ै न चलै सरिवारी॥
मौनदेवतादप भे पानी। सूतेउ जगत नींद अधिकानी॥

दो० इहिविधान करि रास हरि, ब्रह्ममुहूरत जानि।
नन्दराय सदनहि गये, मदन कदन अनुमानि॥
राधावर वृषभानु घर, गई राति के शेश।
निजनिज अङ्गन अरु त्रियन, भूपति कीन्ह प्रवेश॥

कछु दिन रहि गोबर्धनधारी। मथुरापुर की करी तयारी॥
अपने श्वशुर आदि वृषभानन। नँद उपनन्द गोप निजआनन॥
सबते मिलि भे बिदा बुझाई। चतुर शिरोमणि श्रीयदुराई॥
तुरत सुरथ चढ़ि चञ्चल चारू। चले मधूपुर गुण आगारू॥
लागे संग घने ब्रजबासी। तिनहिं बुझावहिं आनँदरासी॥
हरिदर्शन पावै सोइ जानै। पुनि देखे बिन मनहिं न मानै॥
देखि मुकुन्दहि ते सब ग्वाला। कहत प्रेमते बचन रसाला॥
फिरिकै झटित सुदर्शन दीजो। जानि दासनिज कृपाकरीजो॥

दो० तुम यशुदा सुखप्रद सदा, नन्दसुवन राधेश।
जगमोहन कुलदीप प्रभु, ब्रज धनसुखद हमेश॥

शीतत्रासित कहँ अग्निसमाना। रोगत्रसितकहँ ओषधि जाना॥
मृतकहि अमृतसम अधिकाई। तापतपे कहँ नीर सुहाई॥
तिमि तुम ब्रजके जीवन स्वामी। आवत जात रहेउ खगगामी॥
पूरब जन्म पुराय फल भारी। पावत तुम्हरो दरश मुरारी॥
तुमकहँ निर्गुण बेद पुकारन। निजजनहेत सगुणपगधारन॥
तुमहिं भक्तसम प्रिय जगमाहीं। बिधि शिव रमा अहहिं ये नाहीं॥
इमि कहि कहि ते रोवन लागे। कृष्ण कृष्ण भाषहिं दुखपागे॥
लखि निराश सिगरे ब्रजबासी। बोले बासुदेव अबिनासी॥

दो० तुम सब मेरे प्राण हो, मैं ब्रज तजि नहिं जात।
प्राण इहां औ तन उहां, दुःख चलहु दरि तात॥
मास मासप्रति ऐहौं भाई। नाहिं संशय यह नेम सदाई॥
उतहि जरासुत आवत होई। ताते जात यदुन दुख जोई॥
इमिकहि नन्दयशोदहि मोहन। दूजे रथ बैठायो छोहन॥
श्रीदामादि सखाकहँ श्यामा। तीजे रथ बैठारि ललामा॥
तीनिहुँ रथ लै मथुरा आये। ब्रजबासिन समुझाय पठाये॥
सुनहु भूप भवसंकटहारी। अहहि यदपि यह पावनकारी॥
जो जन पढ़हि सुनहि चितलाई। सो गोलोक सुरथ चढ़िजाई॥
बहुरि बिदेह प्रश्न यह कीना। ब्रजमहँ श्रीगोपाल प्रबीना॥
दो० मथुरामहँ बलदेव ने, कीन्ह कहा मतिमान।
सो सुनिकै बोलतभये, नारद नीतिनिधान॥
सुनहु चरित हम कहत उदारा। बल इकदिवस अश्वअसवारा॥
साथ कछुक ले जन समुदाई। मृगयाहित बन गे नरराई॥
कौशाम्बी पुरी के बासी। कोलदुःख ते त्रसित उदासी॥
आवत रहे मधुपुरी सारे। मग लखि बलकहँ नौमि उचारे॥
प्रभु हम दीन शरण तव आये। करिय कृपा दुखदरिय सुहाये॥
कोल असुर इक कंस सखाहै। मोहिं निकारि मनमाहिंमखाहै॥
हम कौशाम्बनगर के बासी। चाहत हैं तव शरण उदासी॥
मम महीप गङ्गा तट तपई। श्रीबलदेव शरण यह जपई॥
दो० जबलौं जीवत कोल है, तबलौं मरो न कंस।
ताते करि जग पै दया, करहु तात बिध्वंस॥
सुनि बलदेव सुमग ते बगरी। तुरत गये कौशाम्बीनगरी॥
बल आगमन सुनेउ जब कोला। लै दल चलेउ करतअतिरोला॥

दश अक्षौहिणि दानवध्वजिनी। मनहुँ भयद भादौंकी रजनी॥
हय तुरंग रथ नक्र महाना। संगर सरित बेग अधिकाना॥
सो लखि करिकै हलकर सेतू। मुशल प्रहारेउ यदुकुल केतू॥
केते भये चरण कर हीना। मगहिबीर लखि यमसमपीना॥
कोल कोल कुणकीचर माहीं। बलते भिरो सकोप तहांहीं॥
शिर सिंदुर चर्चित कस्तूरी। सोहत सुबरण सिकरी रूरी॥

दो० चारुदन्त अरु स्रवतमद, उन्नत मेघ समान।
करत गर्जना गज चढ़्यो, शूकर अति बलवान॥

तो० बाराह अतिहि रिसाइ। अंकुश प्रहार चलाइ॥
बलदेव सन्मुख जाइ। मारनलग्योचिचिआइ॥
बल तमकि मूशल मारि। गजबधिदियोमहिडारि॥
सो कोलमुख खल कोल। गिरिउठेउ बोलत बोल॥
निज तज्यो शूल घुमाइ। नहिंबचतबचनसुनाइ॥
निज मुशल राम प्रहारि। बहुधा दियो महिडारि॥
तब गदा मार्यो घोर। गुरु सहसभार अथोर॥
तिहि सह्यो बल बलवान। बारनहिं कञ्ज समान॥
पुनि मुशल घोर पसारि। गहिलीन्हताहि खरारि॥
शिर मुशलमारि महान। गर्जत भये बलवान॥

दो० मुशललगे महिपर पर्यो, उठेउ कुशल पुनि कोल।
मूका मारि अनन्त कहँ, अन्तरगत भो जोल॥

कीन्ह महत माया पुनि नाहक। धावन लगे सबाल बलाहक॥
भो अँधियार सूझ नहिं कोहू। बरषत मेद मांस अरु लोहू॥
सुरा मूत्र पाथर बरषाये। लखिकै सिगरे जीव डराये॥
हाहाकार भयो नरनाहा। तप बलको कह नाशन चाहा॥

अष्टधातुमय मुशल महाना। शतयोजन जो उच्च प्रमाना ॥
त्यागि दीन्ह ताकहँ समुझाया। फिर फिर लग्यो नशावनमाया॥
जिमि रवि दूर करत अँधियारा। तिमि तव बिगतभूमि करिडारा ॥
जिमि नर काटत जलकी काई। कर लकरी लै फिरत फिराई ॥

दो० तब सकोप बल भुजन ते, गह्यो ताहि भरिजोर।
शूकर तू सू करतहै, दुष्ट द्विजन शिरमौर ॥

पटक्यो महि महँ ताहि घुमाई। कढ़्यो प्राण अतिही दुख पाई ॥
धरकी धरा परे धर ताके। एक मुहूरत दिग्गज भाके ॥
टूटे दांत केश महि छूटे। भई मोक्ष अविरल सुख लूटे ॥
जय जय नीचे ऊपर भयऊ। पुष्पन ते महिमण्डल छयऊ ॥
इमि ताकहँ बधिकै सह साजा। दीन्ह तहाँ के राजहि राजा ॥
बहुरि गये बल गङ्ग नहाना। सङ्ग गर्ग आदिक सुमहाना ॥

दो० तहँ पढ़ि पढ़िकै मन्त्र द्विज, बलदेवहि तेहि काल।
अन्हवावन लागे मुदित, सत्य सुनहु महिपाल ॥

लाख द्विरद दूने रथसाजी। धनअर्बुदशतलखपुनिबाजी ॥
धेनु कोटि मणि हाटक नाना। दीन्हो राम द्विजनकहँ दाना॥
जहँ अस्नान कीन्ह हलपानी। रामतीर्थ तेहि गावहिं ज्ञानी ॥
कातिक शशि तिथि न्हावै जोई। हरिदुवार ते अति फल होई ॥
तब नृप कहा मुदित अतिहोई। तितते किती दूर है सोई ॥
नारद कह्यो तबै नृपबरते। श्रुति योजन कौशाम्बनगरते ॥
शूकर ते बायब तितनोई। नलते पांच कोस सुगनोई ॥
कैन क्षेत्र से है षटकोशा। अग्निदिशामहँफलकरकोशा॥

दो० तीरथबर भुवि कोशते, बृद्धकोशते भूप।
पूरब योजन पवन पर, बरतीरथ सुअनूप ॥

सुनहु कथा अब नीतिनिकेता। भयउ दृढ़ाश्व बङ्गनृप जेता॥
लोमशकहँ लखि हँस्यो समीपा। शाप दीन्ह भरि कोप मुनीपा॥
कोलबदन दानव दुखदाई। सोइ मुनिशाप भयउ इत आई॥
बलके करते मरिकै सोई। शुद्ध भयो भवके मल धोई॥
तब बलदेव अतिहि हरषाये। जह्नु तीर्थ तहँते चलिआये॥
रहे तीन निशि गङ्ग नहाये। दैकै द्विजन दान हरषाये॥
तहँते पश्चिम भोजस्थाना। जाय बसे निशि दीन्हो दाना॥
तहँते इक योजन पुनि गये। ऋषि मण्डूकहि देखत भये॥

दो० ध्यान धरत बलदेवको, ऊर्ध्वबदन मण्डूक।
एक पांव धरणीधरे, मगन लगनबश मूक॥

तब बलभद्र पुकार्‌यो ताहीं। उठिदेख्यो बल तेहिथलमाहीं॥
नील बसन राजत तन गोरे। कुण्डल एक कर्ण झकझोरे॥
मुशलपाणि बर सुरथ सवारी। परेउ चरण करि अस्तुतिभारी॥
बर माँगहु भाष्यो हलधारी। तब बोले माण्डूक बिचारी॥
मोहिं शुककथित भागवत दीजै। जाके कहत सुनत अघछीजै॥
तब बलदेव कहत दुखमथनी। ऊधव ते मिलिहै यह कथनी॥
सो सुनि मुनि माण्डूक बखाना। कब मिलिहै सो बर अख्याना॥
याकर मोहिं बतावहु भेवा। सुनि पुनि गुनि बोले बलदेवा॥

दो० देखहु मेरे पास ये, ऊधव कृष्ण समान।
रूप अनूप सुबुद्धिधर, जानहु मुनि मतिमान॥

हैं ताके आचारज भाई। पै न अबहिं कहिहैं मुनिराई॥
ऊधव जब गोपिन सुख दीन्हा। निजसम तिन्हैं कृष्ण तब कीन्हा॥
गुण स्वभाव बुधि शील स्वरूपा। निजसम कीन कृष्ण ब्रजभूपा॥
तब ब्रज में ब्रजजीवन गये। कीन्ह निवास परम सुखभये॥

परम मन्त्र बिधि उत्तम ज्ञाता। जानि इन्हैं हरिमतिअवदाता॥
अन्तरधान समय के माहीं। देहैं बर भागवत तहांहीं॥
परम ज्ञानमय भानु समाना। जेहि पढ़ि गयो अन्धअज्ञाना॥
तब ह्वैहैं ये अति मतिमाना। नीतिनिपुण बिज्ञाननिधाना॥

दो० हरे युधिष्ठिर कष्टको, करे किरीटी बोध।
तीन समय की बारता, तुम्हैं सुनावत शोध॥

बज्र नाम तब होइ महीपा। मधुपुर में यादव कुलदीपा॥
हरिसुत को पउत्र गुणधामा। कौरवभूप परीक्षित नामा॥
तासु सुवन जनमेजय होई। पितुअरिमेध करैगो सोई॥
तहँ ऊधव ह्वैहैं गुरु ताके। जो गुण विद्यालय गुरुताके॥
सो सुनिहै पुराण बिधि नाना। पूरण करिहै यज्ञ सुजाना॥
तब द्विजगण कहँ पूजै सोई। शत शत ग्राम देइ भल जोई॥
पुनि जैहै सो गुरू समेता। शूकर तीरथ तीरथ हेता॥
तहँ देइहै दान बिधि साजी। गो गज रथ धन धाम सुबाजी॥

दो० पुनि तहँते चलि गुरुसहित, इत आवै मुनिनाथ।
पुरबर चार सयान महँ, ताकी सुनहु सुगाथ॥

सामग्री करिकै बिधि नाना। अश्वमेध सो करै महाना॥
एक छत्र होइहि बरराजू। गुरु आज्ञा सुखकरन दराजू॥
इतते पांच कोस पै तबहीं। होइ भागवत सुनिहैं सबहीं॥
परम भागवत कथा अनूपा। होइहि भवभय निर्भयरूपा॥
धर्म समाज नीति मतिमाना। कहिहैं ऊधव ज्ञाननिधाना॥
तहँ तुमहूँ सुनिबे हित जैहौ। ऊधवते मनइच्छित पैहौ॥
तुम ममहेतु कियो तपभारी। तब हम कहा जानिअधिकारी॥
इमि बरदै बलदेव सिधारे। कण्टकते दिशि उत्तर भारे॥

दो० एक कोस दक्षिण तबै, पुष्पवतीते जाय।
द्विजन दान देते भये, संकर्षण हरषाय॥
हय दशसहस सहस गज अच्छे। रथ शत अयुत गऊसहबच्छे॥
तहँके देवऋषी सब आये। पूजा बहुबिधि बलहि चढ़ाये॥
नमो कोल खर मर्दनहारे। हलधर मुशलपाणि बलधारे॥
तालकेतु जयरूपनिधाना। इमिअस्तुतिकीन्हीबिधिनाना॥
बल भाषेहु तुम मांगहु बरको। तिन्ह तब कहा देखि हलधरको॥
जब जब हम सुमिरैं बलदाऊ। तब तब संकट दुरैं सदाऊ॥
सुनि बलदेव कहा मुसकाई। ऐसेइ होइ तुमन कहँ भाई॥
यह बर या थलके मधि दीन्हा। तुम्हरो कहो मानि हम लीन्हा॥
दो० संकर्षण तीरथ प्रकट, होइहि याकर नाम।
जो इत न्हैहैं देइहैं, बिप्रन दान ललाम॥
पूजैं बिष्णु सुरन हरषाई। ताकर जन्म सुफल जग भाई॥
मनइच्छित तिनको सब होई। इमि बल कह्यो सुजनकहँ जोई॥
बहुरि सबनसह सुखमा छाये। मथुरानगर माहिं चलिआये॥
जो यह कथा सुनै हलधरकी। तजि मग गहइ राह हरिघरकी॥
कह नृप और कहहु मुनिराई। मथुरा जौन पुरी सरसाई॥
तीरथ तहँ केते सुखदाई। को पति को रक्षत हरषाई॥
कौन कौन तप करि तिततरिगे। कौन देवके ध्यानहिं धरिगे॥
सुनिकै पुनिकै नारद नामा। ब्राह्मण बोले बात ललामा॥
दो० परिपूरणतम कृष्णप्रभु, सो मधुकाननाथ।
मन्त्री कपिल बराह द्वै, रहहिं रमापति साथ॥
रावण श्वेत शूकरहि लायो। लङ्कामहँ पूजत सुखछायो॥
रामजीति तेहि इनकहँ लायो। अवधमाहिं पूजत छबिछायो॥

शत्रुदमन लै सोइ बराहा। मथुरा धरि पूज्यो नरनाहा ॥
आदिबराह कपिल मतिमाना। हैं मन्त्री हम तुमहिं बखाना ॥
भूतेश्वर भव हैं कोतवाला। मथुरा सुखद पापके काला ॥
दुर्गा महा सुविद्या नामा। इत रक्षहिं चढ़ि सिंह ललामा ॥
मैंहौं चार राधिकाबर को। हरिअधिकारदियो सुखकरको ॥
मध्य रहत मथुरा शुभ देवी। देत सबन कहँ नेग जलेबी ॥

दो० डोलहिं हरिके पारषद, दशादिशि सुनहु महीप।
श्यामबरणअरुचारुभुज, देत मुमुक्ति समीप ॥

हरि के मनते उपजी नगरी। मरदत राशि पापकी सगरी ॥
प्रथम बिरञ्चि कीन्ह तप भारी। शत संवत निर्जल ब्रतधारी ॥
चारु कृष्ण को ध्यान लगायो। तब सुत स्वायम्भू मनु पायो ॥
भूतेश्वर शत संवत बैठे। तपत मुकुन्द ध्यान महँ पैठे ॥
हरि नगरी प्रताप ते हाली। पाई मथुरा की कोतवाली ॥
हम करि तप बर पाइ महाना। भये चारु तिनके नरत्राना ॥
दुर्गा करि तप भईं पहरुआ। क्रतु तपि भये सुधाम ठहरुआ ॥
मनु कुबेर पाशी दिननायक। करिकरि तपहि भये सबलायक ॥

दो० तपकरि ध्रुव ध्रुवपद गये, बिदित कथा जग बीच।
अम्बरीष इत पूजिकै, भये गोबिन्द नगीच ॥

शत्रुदमन इत तप बिस्तारा। लवण नाम रजनीचर मारा ॥
मधुकरि तपहि भयो बलवाना। मधुसूदनसन तिन रण ठाना ॥
सातऋषिन तित अतितपकीन्हा। सिगरी योगसिद्धि लैलीन्हा ॥
औ गोकर्ण बैश्य तप कियो। बहुत द्रब्य पायो बहु जियो ॥
इत तप कीन्ह दशानन योधा। जीतेउ सुरन समर भरि क्रोधा ॥
कीन्ह राज अतुलित प्रभुताई। बेदजटा तिन जगत बनाई ॥

शन्तनु नृप तप कीन्ह महानन । पावत भये भीष्म संतानन ॥
जे जे सिद्ध भये महिमाहीं । तेते करिकै सुतपु इहांहीं ॥
दो० तब बिदेह बोलत भये, मोकहँ कहहु मुनीश ।
फलवर मथुरा नगर को, जहँ निवसत जगदीश ॥
तब बोले नारद बिज्ञाना । धरणी धरो कोल भगवाना ॥
मथुरा केर महातम भारी । पूछेउ पतिते भूमि बिचारी ॥
तब शूकर गोबिन्द सुजाना । उरबीसों यह बचन बखाना ॥
मथुरा कृष्ण नाम दोउ सम हैं । गावत सुनत जपत नहिं कम हैं ॥
छुवत साधुदर्शन फल मनसों । सूंघत तुलसीदल सूंघनसों ॥
देखत हरिदर्शन फल होई । महाप्रसाद मृदासम सोई ॥
सेवै हरिसेवा फल पावै । जात चरणप्रति तीरथ गावै ॥
गोत्र त्रिलोक बिप्र त्रिय मारै । मथुराबसि मुनिगति निरधारै ॥
दो० धिग पद नाहिं मथुरागयो, धिग दृग लख्यो न याहि ।
धिगश्रुतिसुनामहात्मनाहिं, मुखधिगकहा न चाहि ॥
तीरथ नव अरु चौदह कोटी । रहतकि तहँकी महिमा छोटी ॥
इकइक अहहिं मुक्ति के दाता । कौन कहै सो पुरकी बाता ॥
परिपूरणतम कृपानिधाना । निजनिज रूप धरे बलवाना ॥
कौन तहांकी करै बड़ाई । शरण देहु मथुरामहँ माई ॥
जाके मगमहँ पग पग माहीं । मोक्षआदि पावत को नाहीं ॥
ताते ढूंढ़ी बसुधा सगरी । या सम अहै न दूजी नगरी ॥
काशी आदिक सात बखानी । सबते अधिक मधुपुरी जानी ॥
मृतक मुक्ति बाराणसि अहई । जीवतमुक्ति इहां नर लहई ॥
दो० पुरी कृष्णकी भूमिपति, पुरी सदा फल चारु ।
मोक्षप्रदा अरु धर्मसय, मथुरा मम त्रातारु ॥

सुनै महातम मथुरा केरो। सो पावै हरिचरण बसेरो॥
ब्रजयात्रा को सब फल मिलई। इकइक अक्षर अघकहँ गिलई॥
मथुराखण्ड भूप यह अहई। सुनि सुनाइ नर सबकछु लहई॥
जीवतमुक्त सोई जग जानो। ताकर चारि पदारथ मानो॥
एकहु बार सुनै जो कोई। ताकहँ अतिहि संपदा होई॥
धन कुटुम्ब अरु अघ की हानी। सकलमिलत जो चाहौ ज्ञानी॥
विप्र बेदविद क्षत्री शूरा। बैश्य धनी शूद्रहि फलरूरा॥
सुनिकै नारि होहिं अहिवाती। सबकहँ सबसुख है सब भांती॥

दो० जात मनुज गोलोक सों, अतिही आनँदओक।
शोक थोक कहँ नाशिकै, दूरि करत दुखनोक॥
नगधर बर सुरमुकटमणि, दरन कंस नँदलाल।
श्यामबरण पङ्कजचरण, सुमिरि जात जञ्जाल॥

सो० जपत कृष्ण को नाम, कीनो मथुराखण्ड कहँ।
तिनकी कृपा ललाम, जे बिरचहिं बहु अण्डकहँ॥

इति श्रीभाषाप्रकाशेकृष्णाप्रियेगिरिधरदासविरचितेप्रेमपथ-
रचितेगर्गसंहितायांपञ्चमंमथुराखण्डं समाप्तम्॥ ५॥

अथ द्वारकाखण्डप्रारम्भः॥

सो० देवकिसुवन सुजान, बासुदेव गोबिन्दहरि।
कृष्ण नन्दसन्तान, ममउर बसिये कृपाकरि॥

दो० मण्डन अण्ड अनेक के, खण्डन खलदल चण्ड।
तिनहिं बन्दि बर्णनचहत, चारु द्वारकाखण्ड॥

पुनि मैथिल नृप बोले बानी। मथुराखण्ड सुन्यों सब ज्ञानी॥
कहहु द्वारकाखण्ड सुजाना। हरिके किते ब्याह संताना॥

अहइ अलौकिक कथा सुजाना। तब बिरञ्चिसुत बचन बखाना॥
अस्ति प्राप्ति पति मरे दुखारी। कहेउ जनकते दुख बिस्तारी॥
सो सुनि जरासंध रिसियाना। यदिपुर ऊपर कीन्ह पयाना॥
तेइस अक्षौहिणि लै सैना। मधुपुर घेरिलियो जगजैना॥
सो सब खबरि कृष्ण सुनि काना। संकर्षण ते बचन बखाना॥
तात निपातहु याकर सैना। पै न बधेहु मागध बलऐना॥

दो० जरासन्ध रणधीर अति, जो जीहै तौ आय।
सकल सैन मरवाइकै, दन्त बजाय बजाय॥

इतनहि कहत उभय रथ आये। दिविते दिनकर से द्युतिछाये॥
चढ़ि तापै मोहन बलदाऊ। चले सैन कछु संग जुझाऊ॥
दश अक्षौहिणि दलकहँ साजा। भिरेउ जरासुत मागध राजा॥
अक्षौहिणी पाँच लै भारी। भिरेउ सुयोधन सुभट हँकारी॥
बिंधिनाथ तितनेइ दल साथा। अभिरो क्रोध बिबश नरनाथा॥
तीन अक्षौहिणि लै दल भारी। भिरेउ बङ्गपति अरिमदहारी॥
यहिबिधिसबमहीप भिरिभिरिकै। परमयुद्ध कीन्ह्यो थिरिथिरिकै॥
गिरिधर शारङ्गहि टंकारयो। जरासंध कहँ गरजि प्रचारयो॥

दो० ब्रह्मअण्ड उगतोभयो, कम्पे दिग्गजचार।
शेष भये शङ्कासहित, भो भय अरिन अपार॥

छं० भयभयो अरिन अपार बधिरसमान अतिसंकटभये।
गज अश्व रथ भट ऊंट सिगरे दशदिशामहँ भगिगये॥
षटकोसलौं चतुरङ्ग भागी सभय लखि भगवानको।
तेहिकाल सुभट प्रचारिदशदिशि लगेडारनबानको॥
करकटे अरु पगकटे मस्तककटे महिमहँ डोलहीं।
धरु मारु मारु झपट्टि मर्दहु बीर बहुबिधि बोलहीं॥

बहु छत्र सुन्दर हार कुण्डल परे महि महँ टूटिकै ।
गोमायु कङ्क समाज मिलिकै रहे रणरस लूटिकै ॥
तेहिकालपरमबिशाल निकरी लाल शोणितकी नदी ।
नरअङ्गजलचरबिबिधसोहतदशहुँदिशिअतिहीलदी ॥
खर ऊंट नभशिरबिगत ते सब लसहिं सरिकीधारसे ।
शिशुमार रथ अरु सर्पबर भुज केशबेश सिवारसे ॥
सबरतन रेती चमक देती उभय दल बेला लसैं ।
द्विपसुरिस द्विपमयि महत राजैं बीरकर मन तहँ बसैं ॥
बहु मरे घायल मारु बोलहिं बिगत शिर डोलहिं घने ।
कर शक्ति शूल भुशुण्डि परिघा परशु मारहिं भटबने ॥
बैताल भैरव भूत योगिनि अट्टहास उचारहीं ।
कर भरहिं खप्पर समर डोलहिं मुण्डमाल सवांरहीं ॥
चढ़ि सिंह ऊपर भद्रकाली डाकिनी बहु सँग लिये ।
पीवत रुधिर प्रमुदित गरज्जत शूल असिमहँ करकिये ॥
अप्सरा बिद्याधरी चढ़ि चढ़ि यान देखहिं भीरको ।
लैजाहिं निज निजधाम सगरी मरद बीर सुधीरको ॥
बहु सुभट बढ़िकै प्राण त्याग्यो बिष्णुपुर ते जात भे ।
सो देखि संगरकरनमहँ सब सुभट अतिउमदात भे ॥
दश दिशनछाये शस्त्रधुनि धरु मारु धरणी भरिरहीं ।
यदुबीर मागधबीर दोऊ सैन झुकि झुकि लरिरहीं ॥
बलदेव तब गहि मुशल हल ते भटनकहँ मरदतभये ।
गतप्राण अमित प्रधानकहँ तेहिकालभरिरिसकरिहिये ॥
सो देखि गजपुर बङ्गबिन्ध महीप ब्याकुल भागते ।
सबसुभटभयतेत्रसित बलके बलहिलखिअतिठगतभे ॥

तब जरासंध रिसाइ सम्मुख आइ धनुकहँ धुनतभो।
शरअमित अर्बुदत्यागि तुरत अनन्तको बधगुनतभो॥
हलते पकरि रथ मारि तूरण मुशल चूरण करतभे।
तब मल्लसरिस महान बल बलदेव मागध लरतभे॥
करकरन चरण सुचरण उरते उर बदनते बदनको।
करिमेलबिबिधबिधानअभिरहिंचहतदोउअरिकदनको॥
करिगर्जना अतितर्जना दोउ सिंह वारन से लरे।
तिनके लरत अहि कोल कच्छप धरणिकेसहथरथरे॥
बललेन चाहे प्रान अतिरिसियान दृगअरुणाइकै।
तित जाइ तब भगवान दीन्ह बचाइ ताहि बुझाइकै॥

दो॰ अतिगलानिबश जरासुत, करनचह्यो तपघोर।
मन्त्री बिबिध बुझाइ कै, लैगे घरकी ओर॥

जीति जरासुत कहँ दोउभाई। लूटेउ धन बाहन समुदाई॥
यादवगण सब देत नगारे। बन्दे ते बन्दित प्रभु प्यारे॥
मागध कहहिं कि मागधमारो। जयजयकार होत अतिभारो॥
मङ्गल गावत आवत नारी। नावत अक्षत दूब सुपारी॥
इहि विधि संग सुभट समुदाई। मथुरामहँ प्रबिशे यदुराई॥
उग्रसेन कहँ बन्देउ जाई। राखेउ भेंट हवाल सुनाई॥
तिनको सुख कछु कह्यो न जाई। जयजयकार होत अधिकाई॥
इमि मथुरा निबसे सुख छाई। सबके हृदय हर्ष सरसाई॥

दो॰ जरासंध पुनि तेतनी, भिर्‍यो सैन लै आय।
पुनि जीतो यादव सकल, हरिअरि गयो पराय॥

प्रभु प्रताप यदुबंश सुखारी। तिनकी बढ़ी बिभवअतिभारी॥
जबजब जीतहिं जराकुमारा। तबतब लूटहिं द्रब्य अपारा॥

बाढ़ो धन कछु कह्यो न जाई। मनहुँ बसे कुबेर बहु आई॥
सत्रह बार मगध नृप हारा। पुनि यह आवन कोपअपारा॥
मेरे कहे काल तेहि काला। घेरि लियो मधुपुरी रसाला॥
कोटि यवन लै तबन गरारो। डाढ़ी लाल विशाल सुधारो॥
इतहि मगधदल उतहिमलिच्छा। द्वैअरि लखिकरि कीन्हीं इच्छा॥
सिन्धु मध्य नगरी बनवाई। विशुकर्मा ते परम सुहाई॥

दो० का बर्णन ताको करिय, शोभा कही न जांय।
पुरवासिन को रात में, दीन तहां पहुँचाय॥

सो० कोउ न जान्यो ख्याल, कीन्ह जौन गोपालजू।
बलहि त्यागि नँदलाल, निकरे पुरते शस्त्र बिन॥

कालयवन गोपाल निहारे। मेरे कथित स्वरूप बिचारे॥
चलेउ निरायुध पाछे धाई। भागे कृष्ण लखहिं समुदाई॥
बीच बीचमहँ हो कर भर को। चलेउयवनलखिगिरिवरधरको॥
माधव एक शैल महँ जाई। चतुरचारु बपु गये लुकाई॥
तहँ सूतो मुचकुन्द महीपा। जिनजीत्यो अरिअसुरसमीपा॥
देवन कहँ कीन्हों जय दाना। बर मांगहु तब सबन बखाना॥
मान्धाता सुत बोलो बैना। बहु दिन जाइ करउँ मैं शयना॥
मोकहँ जाइ जगावै जोई। देखतमात्र भसम सो होई॥

दो० उठौं होइ हरि दरश तब, सोइ बरदानहिं पाइ।
सूतो हूतो देखि तेहि, हरि पट दीन्ह उढ़ाइ॥
सतयुगको महिपालबर, भक्तजानि भगवान।
नृपति तहांई लुकिरहे, आउ यवन कुलत्रान॥

काल कालबश मारेउ लाता। जानेहु तिन्हैं कृष्ण रिसियाता॥
उठि आलसबश नृपति निहारा। तुरतहि यवन भयउ जरि क्षारा॥

नृप भो कालयवन कर काला। तब प्रकटे तित दीनदयाला॥
चारि भुजा सुन्दर बनमाला। उर श्रीवत्स बिराज रसाला॥
तब मुचकुन्द मुकुन्दहि जाना। मस्तक धर्यो चरण अस्थाना॥
करजोरे भरि लोचन पानी। अस्तुति बिबिध भाँतिते ठानी॥

तो० बसुदेवनन्दन ईश। श्रीकृष्ण हरि जगदीश॥
गोबिन्द नन्दकुमार। प्रभु शुद्धगुण आगार॥
जयजलजनाभिगोपाल। जयजलजमाल रसाल॥
जयजलजलोचनश्याम। जयजलजपाणि ललाम॥
परमेश अच्युत कृष्ण। जय क्लेशहरबपु कृष्ण॥
बहुरूप कीर्ति अनन्त। बहुनाम बेद भनन्त॥
करअमित अरु बहुचरण। गुणधाम बहुयुगधरण॥
ममसरिस नहिं अघवान। तुम सम न करुणाखान॥
कीजै कृपा श्रीनाथ। मम माथ मूकिय हाथ॥
हम दीन तुम दीनेश। तमपाप हरहु रमेश॥

दो० सुनि मुकुन्द मुचकुन्दके, बचन रचन आनन्द।
कहत भये भवद्वन्द हर, केशव करुणाकन्द॥

धन्य भूप तुम ज्ञाननिधाना। बदरीबन तप करहु महाना॥
तित तपिकै ब्राह्मण बपुधारी। ह्वैहौ मुक्त नृपति रिपुहारी॥
बिना प्रेम नहिं मुक्ति निहारी। इमि भाष्यो भगवान सुधारी॥
सो सुनि वन्दि चन्दकुलदीपा। चल्यो गुहाते निकरि महीपा॥
ताल बृक्ष शत ऊंच निहारी। भागी प्रजा तहांकी सारी॥
तिन्हइ अभय करि सतयुगभूपा। बदरीबनकहँ गयो अनूपा॥
मनमोहन मथुरा पुनि आये। तहँते निकरि चले रिसिछाये॥
मर्दन लगे याविनी सैना। इतनेहि जरासंध जगजैना॥

दो० बिप्रन तहँ बुलवाइकै, साइत शुभनिकराइ।
तिनके भवन पठाइ धन, राखे कैद कराइ॥
सो० जो जीतहुं अरि सैन, तो छोरहुंगो पूजिकै।
जो मोहिं जीति मिलैन, तौ मारहुंगो इमि कह्यो॥
लै शुभ साइत मागध राजा। गो मथुरा बजवावत बाजा॥
भरा रहा उर दुख अधिकाई। जराकुमार तबै रिसियाई॥
तेइस अक्षौहिणि सँग सैना। जरा क्रोध ते सो अरिजैना॥
सुधि ब्राह्मणकी गिरा गुपाला। भजे यवनदल तजि तेहि काला॥
संग मलेच्छन लै मगधेशा। पाछे चल्यो भयानक भेशा॥
देखत भये प्रवर्षण शैला। चढ़े उभय तापर गहि गैला॥
मागध तामहँ आग लगाई। जर्यो शैल नभ आंच सिधाई॥
रामकृष्ण ह्वै अन्तरधाना। गे द्वारका शत्रु नहिं जाना॥

दो० सिगरे भूधर के जरे, मुदित भयो मगधेश।
जानि शत्रुको नाशहुत, प्रमुदित गो निजदेश॥

जय जय करत दुन्दुभी देई। गो गृह परम बिजय कहँ लेई॥
सत्यबचन द्विज यह अनुमाना। पूज्यो दै दौलत बिधि नाना॥
तुम्हैं कहा यह शत्रु बिदारण। द्वारावती बासकर कारण॥
सुनहु बिवाह प्रथम हलधरको। अघहरबर सुखकर अरिदरको॥
भो आनर्तभूप बलवाना। जासु नामकर नगर सुजाना॥
सिन्धु मध्य पुर परम बसायो। रैवत ताको सुवन सुहायो॥
सुता तासु रेवती बखानी। उत्तमपति चाहत गुणखानी॥
इक दिन सुता सहित नरपाला। रथ चढ़ि चलत बायुसम चाला॥

दो० बेदबदन के लोक गो, रैवत बर गुणधाम।
सभासीन बिधिकहँ लख्यो, कीन्ह प्रबीण प्रणाम॥

विधि तहँरहे सुनत कल गाना। तहां मुहूरत एक बिताना॥
तब रुख कीन्ह भूप दिशि सोई। बन्दि कह्यो रैवत दुख खोई॥
तुम प्रभु परपुराण जगदीशा। परमेश्वर सब महँ बिभु ईशा॥
करहु भरहु अरु हरहु दयाला। मुख श्रुति हृदय धर्म हसकाला॥
अङ्ग देव पद असुर सुजाना। पीठि अधर्म बुद्धि मनुमाना॥
हस्तामलक खलक यह अहई। पलक झलक बिरचा जो चहई॥
इन्द्रादिक जे भे सुरपाला। सो सब आप कृपा श्रुतिभाला॥
गुण अनन्त सुर ज्येष्ठ कृपाला। बिधि बिश्वेश बिश्व प्रतिपाला॥

दो० यहि कन्या कहँ करिकृपा, बर बताइये ईस।
बर सबमहँ बर बुद्धिमहँ, सुन्दर बिस्वेबीस॥

सो सुनि हंसे जगत परदादा। बोले बचन सहित मर्यादा॥
तुमहिं खड़े इत हे नृप ज्ञानी। सत्ताइस चौकरी बितानी॥
अब न बसन्त बउर धनधामा। द्वापरयुग यह गुणहु ललामा॥
रामकृष्ण पूरणतम स्वामी। भे बसुदेवसदन खगगामी॥
परम पुराण परे सुर सोई। तिनके सम जग अहइ न कोई॥
रहत द्वारका में करि गेहू। बलदेवहि निज कन्या देहू॥
सुनि रैवत बलके ढिग आई। दीन्ह सुता सब कथा सुनाई॥
सहस अश्वयुत स्यन्दन दीन्हा। योजन भरकर जौन प्रबीना॥

दो० मणि धन भूषण बसन सब, दाइज दैकै भूप।
करि बिवाह बदरी बिपिन, आये तपन अनूप॥

इत उत्सव कीन्हों सब कोऊ। बल रेवती बिराजे दोऊ॥
सुनै कथा जो यह अघहारी। ताके हाथ पदारथ चारी॥
कृष्ण बिवाह सुनहु भूपाला। पापहरण सुखकरण रसाला॥
मधि बिदर्भ कुण्डिनपुर नामा। तहँकर भीष्मक भूप ललामा॥

भई रुक्मिणी तासु कुमारी। श्रीगुणवान मनोहर भारी॥
इक दिन हमगे नृपके पासा। रही सुता तहँ चन्द्रप्रकासा॥
हरि कर गुण सब वर्णन करेऊ। वैदर्भी मनते प्रभु बरेऊ॥
भूप कीन्ह यह चारु विचारा। सबहिनकह भल कीन्ह भुआरा॥

दो० तासु तनय युवराज खल, रुक्मी दीन निवारि।
बर शिशुपालहि बरतभो, दैकै कृष्णहि गारि॥

तबै रुक्मिणी होइ उदासा। पठयो दूत द्विजहिं हरिपासा॥
सो मुकुन्द मन्दिर महँ आयो। ताहि जिंवाइ कृष्ण बैठायो॥
पूछि कुशल हरिकी रुख पाई। ब्राह्मण पढ्यो पत्र हरषाई॥
स्वस्तिश्री गुण सकल निधाना। उपमायोग अनन्त महाना॥
कुशल इतै चह कुशल तुम्हारी। नारदमुख गुण सुनिकै भारी॥
सब जानत परिपूरण प्यारे। ब्याहहु म्वहिं बसुदेव दुलारे॥
मृगपतिबलि मृग गहै न जैसे। करिय कृपाकरि केशव तैसे॥
जब हम देवी पूजन आवैं। तब हरि हरि सम हरिलैजावैं॥

दो० रुक्मिणिके यह बचनसुनि, प्रभु लोचन जल छाइ।
बेगि लै आवहु मम सुरथ, सूतहि कह्यो बुलाइ॥

दारुक दिविते रथ लै आवा। कहिनजाइ अतिरुचिर बनावा॥
मेघपुष्प सुग्रीव बलाहक। सेव्य चारुहय रथके बाहक॥
द्विजसे चढ़े कृष्ण मन भाये। तूरण कुण्डिनपुर चलि आये॥
उतरे उपबन में भगवाना। यह सुधि प्रात मुशलधर जाना॥
तुरतहि सिगरी सैन सजाई। आये तहां जहां यदुराई॥
है डङ्काकर शब्द घनेरा। सोइ उपबनमहँ कीनों डेरा॥
तहँते कुण्डिन नगर दिखाई। योजन सात गोल सरसाई॥
शत धनु नापि खुदाई खाई। सरित समान बारि अधिकाई॥

दो० करपचास की जहँ लसै, ऊंची चारु दिवार।
महलघने मणिके बने, ऊंचे कठिन किवार॥
मोर कबूतर भ्रमहिं पुरी में। सींचे अतर कपूर धुरी में॥
चैद्यहि भीष्मक दैहै कन्या। बिदितनगर यह और न अन्या॥
मङ्गलगीत होयँ नृपधामा। सकल शिंगारहिंरुक्मिणिबामा॥
द्विजन दक्षिणा बहुबिधि दीन्हा। दान अरिष्ट निवारण कीन्हा॥
हेमभार लख दूनों मोती। गो षट अर्बुद दशशत धोती॥
दशलख रथ दश कोटि तुरङ्गा। गुड़तिल परबत अयुत मतङ्गा॥
सहस सुवर्ण पात्र बहुगहना। दीन्ह नृपति जो सो का कहना॥
शिशुपालहिं दमघोष महीपा। कीन्हों बहु मङ्गल कुलदीपा॥
दो० नहिं पूज्यो हेरम्बकहँ, किये सकल उपचार।
शिशुपालहि बांध्यो मउर, जामा पीत सुधार॥
छं० जामासुधारि सँवारि कङ्कण गीतमङ्गल गावहीं।
तनश्यामचोटीहारउर शिशुपालतिलककरावहीं॥
दमघोष नृप बजवाइ दुन्दुभि सुतहि गजबैठाइकै।
साजी बरात सुहात चलत सुदुन्दुभी बजवाइकै॥
रदबक्र जराकुमार शाल्व बिदूरथादिक भूप जे।
अरु पैद संग सहाय सैन समेत आप समीपले॥
यहिभांतिस्यन्दनअश्ववारनसाजिसुभटसमाजको।
प्रविश्योनगर बजवाइबाजन सजे सुन्दरसाजको॥
हमकहि दियो यह प्रथम इत श्रीबासुदेवहु आइहैं।
तेहि हेतु तुम सब सजग रहियो सुता हरिलै जाइहैं॥
बैदर्भपति तितजाइकै शिशुपालकर पूजनकस्यो।
बहुभेंट हाटक रतन अम्बर गजतुँरग सम्मुखधस्यो॥

समधीसकलपुनिमिलेप्रमुदितदुहूंदिशिदुन्दुभिबजी।
कीन्हीं निछावरि छाइ आनँद सकल तैयारीसजी॥
जनवास बहुरि महीप दीन्हों वाससबजनकरतभे।
शिशुपाल ब्याहोजात प्रातहि बात यह उच्चरतभे॥
दो॰ सुनहु भूप इत रुक्मिणी, हरि बिन ब्याकुल चित्त।
अतिही दुखमहँ डूबिकै, कहत बचन निजहित्त॥
अहो न आवत किमि भगवाना। यह संशयकर काल महाना॥
हाँ अरु ना कछु मालुम नाहीं। फिखो न द्विजजोगोप्रभुपाहीं॥
हरि यदुवंश बिभूषण जोई। तिनमहँ कछुकलङ्क कह कोई॥
नहिं आये करि हृदय उदासी। गुनि ममसमगृहकोटिनदासी॥
हा हमपर न कृपा कोउ कीन्हा। हरहू नहिं संकट हरिलीन्हा॥
एकदन्त द्विज सुरभी गौरी। पूज्यो इन्हहि फूल भरिदौरी॥
कोउ न सहाय होत इहिकाला। चिन्ततिभ्रमति भवनमहँबाला॥
तब भे फुरत बाम सब अङ्गा। भयो हरष लखि सगुन सुढङ्गा॥
दो॰ हरिप्रेरित सो बिप्र तब, गयो रुक्मिणी पास।
कह्यो कृष्ण आये निकट, अरु बलको इतिहास॥
होय मुदित दीन्हो बिधिनाना। बिदाकीन्ह करि बिनय महाना॥
सुना भूप हरि हलधर आये। ब्याहलखनअति आनँद छाये॥
भीष्मकद्विजनसहितअधिकाये। हरिकी स्वागत करिबे आये॥
कोटिन घट मधुपर्क सजाये। पूज्यो बिधिवत प्रेम बढ़ाये॥
भूषन बसन भेंट धरिआगे। नृपतिशान्तिचितबिनवनलागे॥
निजकन्यासम बरहिं बिचारी। बन्दिगये गृह नृप ब्रतधारी॥
सुनि आये बसुदेव कुमारा। गये मिलन नागर सरदारा॥
देखि देखि सो रूप अनूपा। प्रमुदित होहिं प्रजा सब भूपा॥

दो० इनते होइ बिवाह जो, रुक्मिणि सों भगवान।
या सम उत्तम बात नहिं, कोउ जग बीच सुजान॥
सो० जो होइहि ससुरार, तौ कबहूं ऐहैं इतै।
हो सुख हमन अपार, इमि भाषहिं पुरलोग सब॥
भीष्मकसुता चली तेहि बारा। पारबती पूजन निरधारा॥
उर अतिबढ़्यो कृष्ण सों हेता। सोहत सुन्दरि सखिन समेता॥
बाजहिं भेरी शंख मृदङ्गा। बन्दी मागध गावहिं सङ्गा॥
बारबधू नाचहिं बहुभांती। जैजैधुनि दशादिशन बिभांती॥
कोटिइन्दुसम आनन सोहा। भूषणसजे कान्ति रबि मोहा॥
छत्र चमर पंखा सखिहाथा। मुदित डुलावहिं ते नरनाथा॥
सुरथ अश्व अरु सुभट मतङ्गा। चहुँदिशि घेरि रहे भरिरङ्गा॥
रक्षाकरन हेतु मदपूरे। आयुध धरे करनमहँ रूरे॥
दो० देवीमन्दिर जाइ कै, धोइ चरण अरु हाथ।
करत बिनय यह रुक्मिणी, राखि चरणपर माथ॥
दुर्गे सुतसमेत भवहारिणि। पदप्रणवत संतत सुखकारिणि॥
ममपति परिपूरण तम होऊ। त्यागि कृष्णके और न कोऊ॥
सोसुनिसखिनबहुताबिधि बरजा। अस न कहहु इत उलटी अरजा॥
मागहु बर शिशुपाल रसाला। इमिकहि कहत अम्बकहिबाला॥
यह अजान क्षमियो अपराधू। परम सुशील शान्तिचित साधू॥
इमि कहि पूजा कीन्ह अनूपा। अक्षत गन्ध बिभूषण धूपा॥
बसन फूल फल भोग सुदीपा। राखि बिबिध बिधि भेंट समीपा॥
करि प्रणाम अरु कीन्ही फेरी। बर मांग्यो यदुबर कहँफेरी॥
दो० यहिबिधि जब पूजन कियो, हरिदर्शन अहलाद।
तबै तहां की नारि यह, दीन्हो आशिरबाद॥

स० शतरूप समान सरूपतुम्हैं, अरु शील सुजान शिवासमहै। पतिव्रत्त अरुंधति तुल्यअहै, सियतुल्य क्षमा न कलूकमहै॥ बरभाग्य सुलक्षण नारि यथा, सबकेसम वैभवउत्तम है। तववानि गिरासम ज्ञानमई, पतिभक्ति हरी जगसीगम है॥ १॥

दो० यहिविधि आशिर्बाद सुनि, भव उरमें आनन्द।
भवपतनी कर बन्दिपद, चलीद्विरदसम मन्द॥

चारहुँ दिशा सखी समुदाई। भा सुख सो कछु कहा न जाई॥
कोटि इन्दु सम लखिकै बदना। सबकहँ भूमि गिरायो मदना॥
गजी रथी अश्वी पदचारी। गिरे भूमि पर चेतबिसारी॥
कामधनुषते शर कढ़िकढ़िकै। भेदतभये भटन बढ़िबढ़िकै॥
तेहि क्षण हरिनिज सुरथ बढ़ावा। बायुकअब्रनमहँ जिमि धावा॥
चले मीनसम काटत काई। घुसि दलमहँ जलदी यदुराई॥
बैदर्भी की बांह पकरिकै। रथपर बैठायो सुख भरिकै॥
बहुरि बढ़े तहँते भटभेशा। जिमि पियूष हास्यो पतगेशा॥

दो० मोहित लखि परसैन कहँ, शारंगहि टंकारि।
निज दलमहँ आवतभये, द्रुत दुरितारि मुरारि॥

छं० दुरितारि द्रुतहि मुरारि जब निज सैनमहँआवतभये।
तेहि काल यादव देवनभ महिभेरि बजवावत भये॥
जयशब्द अम्बर होत नन्दन सुमन बरसावत भये।
अपसरा नाचहिं प्रेमराचहिं गन्धरब गावत भये॥

दो० यहिबिधानरुक्मिणिहर्‍यो, रुक्मिणिरमण कृपाल।
रुकुम रचित रथपै हरिहिं,लख्योलषण तेहिकाल॥

क० जरासन्ध आदि हे महीप मदअन्ध जेते, चक्रितबखानै गोपकीन्हों कर्म भारो है। सिंहन में स्यार भाग लैगयो उठाय

आज, ताहिना छुड़ायो धिक पौरुष हमारो है ॥ मारिलेहु मारिलेहु भागिबे न पावै जामैं, गिरिधर कुटिल महान मायाडारो है। कारो आज बीरनको कारोमुख करिडारो, रुक्मिणीनिकारोज्यों गरलधरकारो है ॥

दो० इमि कहिकहि भूपतिचले, साजे सैन कुरूप।
पौण्ड्रक द्वै अक्षौहिणी, तीन बिदूरथ भूप ॥
शाल्व तीन अक्षौहिणी, पांच लिये रदबक्र।
दश अक्षौहिणी दललिये, मागधबर नरशक्र ॥
अरु जेते महिपाल तित, निज निज धनुटंकारि।
भिरे भयंकर यदुनते, बारम्बार प्रचारि ॥

भयउ भयंकर संगर राजा। देवासुर के सरिस समाजा ॥
तुमुल मचो कछु भाषि न जाई। पैदल पैदल करहिं लराई ॥
रथते रथ हयते हयबाहा। गजते गज नृपते नरनाहा ॥
सभै देखि त्रिय सभै निहारी। अभय कीन्ह समुझाय मुरारी ॥
गहि धनुगद हरिअनुज रिसायो। दुष्टदलन हित सुरथ चलायो ॥
अम्बुद सम बरष्यो शरधारा। शत्रुसैन महँ प्रलय पसारा ॥
गिरहि मनुज महिखाइ पछारा। नदीबेग जिमि गिरै करारा ॥
स्यन्दन वारन काटे घोरे। भागे सभय देखि निज ओरे ॥

दो० टंकारत कोदण्ड कहँ, गद मुगदाधर भ्रात।
भयो सबन गद राजसम, प्राणहरण रिसियात ॥

तो० तबशाल्वगदाधरिमारतभो। गदबीरहि धीर प्रचारतभो ॥
गदव्याकुल ह्वै तब भूमिपर्‍यो। उठिकै धनुको रथ बीच धर्‍यो ॥
लखिभारमई गहि हाथगदा। रिसिधाइचल्यो गदगर्जितदा ॥
तबशाल्वहि तीन प्रहारकर्‍यो। महिपालक मूर्च्छितभूमिपर्‍यो ॥

मगधेश बिदूरथ पौण्ड्रकहूं। रदबक्र भिरे मिलि चारतहूं॥
तबकन्तितभूप ध्वजागदकी। द्रुत काटिदियो छबिकेहदकी॥
रदबक्र गदातजिकै तबहीं। रथडार्‍यो तोरि लख्यो सबहीं॥
बधि सूत बिदूरथ कोपभयो। हयको बधि मागध डारिदियो॥
पुनि चारन्ह यादव घेरिलियो। बहुमारिसुव्याकुल ताहिकियो॥
शर शूल परश्वध खड्ग गदा। सबआयुधते गद बीरलदा॥
दो० तब बल करमहँ लै मुशल, तमकि कोपकरि घोर।
दन्तबक्र मुख महँ हन्यो, सुभट सहज सहजोर॥
दन्त गिरे महिपर सब आई। दन्त निकारि हँसे यदुराई॥
रुक्मिणि सहित मुदित भगवाना। यदुदलसहित हँसे अहित्राना॥
मुखते निकरो अरिरद जहँवाँ। मुखते निकरो सबरद तहँवाँ॥
पौण्ड्रक जरा कुमार बिदूरथ। इनकहँमार्‍योमुशलमुशलहथ॥
तीनहु गिरे मृतक सम आई। तब बल अपनो हल फैलाई॥
मारि मारि मूशल बलवाना। क्षण महँ हरे भटनके प्राना॥
दशयोजन लौं शोणित पूरा। कटेपरे रथ हय गज शूरा॥
तेहि क्षण ऐसी दशा निहारी। भगी नृपनकी सैना सारी॥
दो० जरासंध आदिक नृपति, सकल चैद्य ढिगजाइ।
आंसु पोंछि भाषत भये, बहु बिधान समुझाइ॥
तजहु शोक कहँ अब नरनाहा। एक छोड़ि शत होहिं बिवाहा॥
अबहिं कृष्ण बलदेवहि मारौं। यादव रहित भूमि करिडारौं॥
चढ़ि द्वारावति पहँ सहसाजा। कहि निजराजगये सबराजा॥
शिशुपालक दमघोष समेता। गये सदन उरलै दुख केता॥
बहिनहरन मित्रनकर हारी। बोला रुक्मी सभा मँझारी॥
जो मैं बधौं कृष्ण कहँ नाहीं। तौ नहिं आवौं कुण्डिनमाहीं॥

इमि कहि पहिस्यो कवच महाना । सिन्धुदेश निर्मित शिरत्राना ॥
धनु सौवीर देशकर भारी । यवनदेशकी असी सुधारी ॥
दो० गुरजराटकी लै गदा, परिघ बङ्गको धार ।
मेरठकी शक्ती गह्यो, कमर निषङ्ग सुधार ॥
चढ़्यो सुरथ पर भट बलऐना । संग उभय अक्षौहिणि सैना ॥
चल्यो रुक्मकर कर कोदण्डा । रुक्म रथी रणधीर प्रचण्डा ॥
बल देख्यो अनीक पुनि आई । भिरे सदल दुन्दुभी बजाई ॥
तजि सैनहि बढ़ाइ रथ रुक्मी । गयो कृष्ण ढिग दुःसहरुक्मी ॥
कहत भयो निज धनु टंकारी । फिररे फिरु तस्कर अघकारी ॥
त्यागु बहिन मम मरिहौं नातो । तासे राखु प्राणको नातो ॥
गोप ययाति शापहत कादर । भगो यवनते है तव का दर ॥
इमि कहि तानि कानलौं चापा । हरिउर मास्यो शर भरिदापा ॥
दो० शारङ्गहि टंकारि हरि, तीछे तीर प्रहारि ।
दीन प्रतिज्ञा काढ़िकै, नातो तासु पुकारि ॥
तुरित चढ़ाइ दूसरी डोरी । दश शर हन्यो हरिहिं बरजोरी ॥
भेद्यो कृष्ण एक शर भारी । सो गरज्यो शत बाण प्रहारी ॥
कृष्ण एक शर हनि तेहि डाटे । शरन समेत शरासन काटे ॥
मास्यो महाशक्ति तड़ितासी । भाषत यह तव यमकी फांसी ॥
तब हरि अपनो गदा प्रहारो । शक्ति समेत सूत बधिडारो ॥
चूरण सुरथ हयन सह भयऊ । तब सो कूदि धरापर गयऊ ॥
रुक्मी गदा कृष्ण कहँ मारा । मारि सुदर्शन तेहि मग मारा ॥
परिघ घुमाइ हरिहि ललकारो । बज्र समान कन्ध महँ मारो ॥
दो० सोइ परिघागहि कृष्ण तब, मारेउ ताहि प्रचारि ।
सो तब कछु व्याकुल भयो, उर संभ्रम बिस्तारि ॥

चल्यो कोपि धरि चर्म कृपाना। तब तेहि लखि बिहँसे भगवाना॥
असिते असि काट्यो तेहि काला। हस्तत्राण शिर प्राण निकाला॥
कवच काटि दीन्हों महि डारी। चल्यो रुक्म असिमूठहि धारी॥
पकरि कृष्ण करते कर तासू। महिके मध्य गिरायो आसू॥
चढ़ि ताकी छातीपर राजा। खड्ग निकास्यो मारन काजा॥
लखि रुक्मिणी क्षोभ उर आनी। उतरि सुरथते बोली बानी॥
हे अनन्त अज ईश्वर ईशा। करि सु दया देखहु मम दीशा॥
सालहि मत मारिय भगवाना। करि कछु दण्ड तजहु जगत्राना॥

दो० देखि नारि कहँ बिकल अति, तजेउ रुक्मिणीभ्रात।
कटि कसि ताकी बांधिके, लीलाकरी बिमात॥

असि सितधार धारि यदुनाथा। मूड़तभये अधो अरिमाथा॥
इतनेहिं बधि अरिदल बलआये। तासु दशालखि तुरित छुड़ाये॥
हरिहि कहतयह अनुचित कीना। का कहि हैं जगलोग प्रबीना॥
सालहँसी अस होइ न भाई। नातामहँ न चाहिय निठुराई॥
देखहु रुक्मिणि दिशि यदुराई। इमिकहि तिनते कहत बुझाई॥
हे नृपसुता करहु मति खेदा। यह सब करत काल निरवेदा॥
मेघ बायुसम कालहि जानो। बिष्णुहि कालरूप करिमानो॥
हम तुम भाव जगतको बन्धन। याके रहित मुक्त सोई जन॥

दो० शत्रुमित्रसुख दुख सकल, अहहिं काल आधीन।
ताते कोउ पर दोष नहिं, यामहँ लखहिं प्रबीन॥

इमि कहि राम कृष्ण दोउ भाई। गये द्वारका हरख बढ़ाई॥
भीष्मकसुत गुनि दशा अपानी। तप करिबो चाह्यो अभिमानी॥
तब मन्त्रिन समुझाइ फिराई। बस्यो भोजकट नगर बसाई॥
लै रुक्मिणी श्याम छबि छाये। पुरमहँ आये परमा छाये॥

अगहन महँ करि बेद बिधाना। निज बिवाह कीन्हों भगवाना॥
सो शोभा नहिं जाइ बखानी। राजा कृष्ण रुक्मिणी रानी।
द्वारावती बिराजत कैसे। अमरावती इन्द्र की जैसे॥
जो रुक्मिणि मङ्गल कहँ गावैं। अच्युत पदम जाय क्षिति पावैं॥
दो० और कृष्ण के व्याहकी, भूप सुनहु आगान।
पापहरन भवनिधि तरन, करन सकल कल्यान॥
यादव सत्राजित रविदासा। तेहिमणिदीन्हों जगतप्रकासा॥
नाम स्यमन्तक अतिहि सुक्षेमा। देवै आठ भार नित हेमा॥
इकदिनमणिहिपहिरिसोआयो। हरि ताते यह बचन सुनायो॥
यह मणि उग्रसेन हित देहू। लालचबश न दीन्ह बुधिगेहू॥
तासु अनुज प्रसेन इकबारा। पहिरिमणिहिंगोबिपिनशिकारा॥
तहँकेहरितेहिहति मणिलीन्हा। चल्योहृदय अतिआनँद कीन्हा॥
जामवन्त रीछनकर राई। हति केहरि लैगो मणिभाई॥
इत सत्राजित सबन सुनायो। बधिभ्रातहि मणि कृष्ण चुरायो॥
दो० जिमितिमि यह पहुँची खबर, बासुदेव के पास।
कृष्ण यादवन संगलै, जङ्गल गये उदास॥
लख्यो ताहि हरिसह हरिमारा। हरिय प्राण पुनि हरिहिं निहारा॥
सबनभाषि निज चोरी काजा। रीछबिवर प्रबिशे यदुराजा॥
लखि पगचिह्न सोई मगजाना। तहां महल देख्यो भगवाना॥
जमवन्ती पलना पर सोई। ताके झूलन महँ मणि सोई॥
कृष्ण लीन्ह मणि चोर पुकारा। आइ रीछ कीनों ललकारा॥
दिवस अठाइस भा रणभारी। रीछराज तब पायो हारी॥
जानि कृष्णकहँ हरि अवतारा। बिनय करतभे बिबिध प्रकारा॥
हरिकर ब्याह सुता सँग कीन्हा। दाइज माहिं स्यमन्तक दीन्हा॥

दो० लै त्रिय आये धामहरि, ताहि रत्नसो दीन्ह ।
पोच शोच संकोचवश, सत्राजित लैलीन्ह ॥
निज कलङ्क हित हृदय बिचारी । सुता सत्यभामा अति प्यारी ॥
हरिहिं ब्याहि मणि दाइजदीन्हा । इमि तीजे बिवाह कहँ कीन्हा ॥
जिमि तिमि करि सो बात सँवारी । नातरु अतिहि रही धिक्कारी ॥
रुक्मिणि जाम्बवती सतिभामा । भईं तीन केशव करि बामा ॥
गे हरि पाण्डुसुतन के पासा । इन्द्रप्रस्थमहँ कीन्ह निवासा ॥
अर्जुनसह चढ़ि रथ इकबारा । गे यमुनातट करन शिकारा ॥
तहँ तप करत लखी इक बामा । पूछ्यो पार्थ हवाल ललामा ॥
कह्यो कि कालिन्दी मम नामा । तपत रहहिं पतिमम घनश्यामा ॥
दो० अर्जुन ताकहँ लाइकै, हरिते दीन्ह मिलाइ ।
बिधिवतकीन्हबिवाहकहँ, अपने पुरमहँ जाइ ॥
नृप अवन्तिपति हो अतिभारी । तासु मित्रबृन्दा सुकुमारी ॥
ताहि स्वयम्बर ते हरि हरेऊ । रुक्मिणि सम बिवाहपुनि करेऊ ॥
सत्या सुता नग्नजित केरी । रूपनिधान रमा सम हेरी ॥
तासु जनक कीन्हों प्रण येहू । सात बृषभ नाथै तेहि देहू ॥
ते बृष सात मतङ्ग समाना । नाथि सकै न कोऊ बलवाना ॥
तब तहँ आप गये यदुनाथा । सातसरूप होइ तेहि नाथा ॥
करि बिवाह अति आनँद छाये । नगर द्वारका के मधि आये ॥
भद्रा कैकय भूप कुमारी । यमुनासम तेहि बस्यो मुरारी ॥
दो० बृहत्सेन नृपकी सुता, रही लक्ष्मणा नाम ।
मत्स्यभेद ब्याहतभये, ताकहँ आनँदधाम ॥
पटरानी ये आठइमि, जानहु जनक नरेश ।
रानिन्हकी सुनिये कथा, गहि उर हर्ष बिशेश ॥

षोड़श सहस एकशत कन्या। भौमासुर के गृहही धन्या॥
तिनकी आर्ति जानि भगवाना। लीन्हों जाइ नरककर प्राना॥
ताके सुतकहँ दैकै राजा। लखेउ सुताकर जाइ समाजा॥
लाये तिन्हहिं सुपुर निजचाहे। एक मुहूरत माहिं बिवाहे॥
तितनेइ आप पिता अरु माता। द्विज प्रोहित सम्बन्धी भ्राता॥
यादव मन्त्री सकल समाजा। तितने द्वार सुबाजन साजा॥
मङ्गल भयउ कह्यो नहिं जाई। केशव की सुन्दर प्रभुताई॥
तितनेइ सुन्दर महल बनाये। रहे दीन हित आपु सुहाये॥

दो॰ इक इक त्रियमहँ होतभे, दश दश सुत तन श्याम।
एक एक कन्या भई, शोभा अति अभिराम॥

रुक्मिणिसुवन काम भगवाना। धरयो नाम प्रद्युम्न सुजाना॥
दशईं निशि शम्बर हरिलीन्हा। सुतहिं डारि सागरमहँ दीन्हा॥
ताकहँ गयो एक झष खाई। केवट लीन्हों जाल फँसाई॥
पुनि शम्बर कर दीन्हों जाई। भोजनशाला दीन्ह पठाई॥
मेरे कहे ब्राह्मणी होई। पतिहित रहत रही रति सोई॥
काटि मच्छ कहँ नाथहि पावा। करि सुयतन यदुबीर बढ़ावा॥
अपनो सो बृत्तान्त बखाना। कहा कि तुम्हरे पितु भगवाना॥
अहहिं द्वारका अतिहि दुखारी। हम रति पूर्व जन्मकी नारी॥

दो॰ शम्बर लायो हरि इतै, हरिसुत मारहु ताहि।
इमि कहि दीन्हो अस्त्रसब, शस्त्रनाथ कहँ चाहि॥

बधि शम्बर कहँ अम्बर मगते। रतिसँग गये द्वारका रँगते॥
नभते उतरि धाम जब आये। मात पिता कहँ नाहिं चिन्हाये॥
मिले बहुरि जानत हरिज्ञाता। भा बिवाह तिनको तब ताता॥
पुनि रुक्मीकी सुता बिवाहीं। तासु प्राण कीन्हो बल नाहीं॥

तातें भो प्रद्युम्नहि बेटा। सो अनिरुद्ध गुणज्ञ अखेटा॥
चार व्यूहकर इमि अवतारा। कहेउ कृष्णकर मङ्गलसारा॥
तापहरण अति आयू करई। सुनत पढ़त सिगरो दुख जरई॥
भे बहुलाश्व कहत इमि बचना। धन्य द्वारका सब सुख रचना॥

दो० जहँ निबसत भगवानहरि, इनके अङ्ग सँभूत।
किमि इत आई कहहुसो, अहो बिप्र पुरहूत॥

सो सुनिकै मुनि ज्ञानबिशारद। बोले बचन बिहँसिकै नारद॥
मनुसुत भूप भयो शरयाती। अयुत बर्ष किय राज बिभाती॥
तब उत्तान बरहि आनर्ता। भूरिसेन त्रिय सुत भूभर्ता॥
तीनिहुँकहँ दिशि तीनि सुदीन्ही। पूर्व उतान बरहि कहँ चीन्ही॥
भूरिसेन कहँ दक्षिण दीशा। आनर्तहि पश्चिम अवनीशा॥
यह ममराज साज सहपाला। तिमि तुम कीजो राज रसाला॥
सो सुनि मध्यम सुवन अनर्ता। बोलेउ बचन ज्ञानपथचर्ता॥
नहिं तव महि नहिं तुम इमिपाला। नहिं तुम निज शत्रुनकहँ घाला॥

दो० महि है प्रभु श्रीकृष्णकी, तिन्हही पालन कीन।
सोई मार्‍यो शत्रु सब, सोइ जगमहँ बलपीन॥

सोई करैं भरैं अरु हरहीं। ब्रह्मकाल बनि सोइ अनुसरहीं॥
सोइ बाहर भीतर दरशाना। बिष्णुबिश्वव्यापक जगजाना॥
जा भय रबि शशिचल दिनराती। जा भय बायु बहत बरभाती॥
परिपूरणतम कृष्ण मुकुन्दहि। भजहु भूप तजि ममता द्वन्दहि॥
पितुकहँ बात ज़हरसम लागी। बोले हृदय परम दुखपागी॥
रे शठ रहु न राज मेरे में। है अति दुष्टपनो तेरे में॥
देहैं कृष्ण दूसरी उरबी। गुरुके सरिस बुझावत गुरबी॥
सो सुनिकै आनर्त बखाना। रहिहौं नहिं तुम्हरे अस्थाना॥

दो॰ निकरि तहांते सिन्धुधँसि, तपन लगो गहिबर्त।
अयुतशब्द अति आपमें, अच्युत अर्चि अनर्त॥
भक्तिजानि भे मुदित मुरारी। बर मांगहु बोले हितकारी॥
सुनि आनर्त उठेउ आनन्दी। बोलेउ बासुदेवपद बन्दी॥
बासुदेव संकर्षण सुद्धहि। नमः प्रद्युम्न और अनिरुद्धहि॥
बाप निकास्यो मोहिं तुमजाना। महि तजि दूसर देव ठिकाना॥
तव प्रसाद ध्रुव ध्रुवपद पायो। हे दुखहरण शरण मैं आयो॥
सो सुनिकै प्रणतार्तिनिवारण। बोले बिहँसि बिहँगध्वजधारण॥
नहिं दूजी दुनिया है भाई। पै करिहौं तव हेतु उपाई॥
शतयोजन बैकुण्ठ महीको। दै तोहिं देहौं राज तहीको॥
दो॰ इमि कहिकै लावतभये, भूमि चारु भगवान।
राखि सिन्धु महँ चक्रकहँ, कीन्हो अचल सुजान॥
धरा धरा ताके आधारा। तिलक अनंतशीश पुनिसारा॥
भो आनर्त नाम पुर सोई। चकित भयो जनकसुत जोई॥
लाखवर्ष किय राज सुजाना। रैवत भये तासु संताना॥
सो श्रीशैलसुतहि लै आवा। पुर आनर्त बीच बैठावा॥
ताते भो गिरि रैवत नामा। कुशस्थली पुनि रची ललामा॥
सोइ रैवत निज सुता प्रवीना। संकर्षण भगवानहि दीना॥
मोक्ष द्वार गुनि यह सुख पागे। द्वारावती कहन सब लागे॥
का सुनिबेकी इच्छा अहई। सो सुनिकै बिदेह नृप कहई॥
दो॰ द्वारावति तीरथमयी, परम पुण्यकी ऐन।
मुख्य तहां तीरथ किते, मुनि बोले मुनि बैन॥
आप्रभास ते करि मरयादा। कीन्ह पुरी बिस्तार कुशादा॥
देखि जाहि नर नरहरि होई। मरे परमपद पावै सोई॥

इकदिन रैवत भक्ति निहारी। हरिदृग भर्यो प्रेमको बारी॥
सोइ जल नदी गोमती जाई। जाहि लखे द्विजहत्या जाई॥
न्हाती बेर गोमती गावै। सो अस्नान सहस फल पावै॥
दिनकर मकर प्रयाग नहावै। सो शत अश्वमेध फल पावै॥
तासु सहसगुण गोमति माहीं। गुणकहिसकतजासुविधिनाहीं॥
गोमतिचक्र तीर्थपति नाना। पूजिय ते सब चक्र सुजाना॥

दो० चक्रतीर्थ महँ द्वादशी, दिवस न्हान हरषाय।
शक्रशीशशार चरणधरि, चक्रपाणि पदजाय॥
कोटिजन्म अघ नशत है, चक्रतीर्थ सोपान।
चढ़तबढ़त आनन्दअति, कटत दुःख सुमहान॥

गोमति तीर मृदा शिरधारै। सो शतजन्म पापकहँ जारै॥
सुनि नरेश बोले यह बाता। भो किमि चक्र सुतीरथ ज्ञाता॥
तब नारद ब्रह्माके लड़का। बोले वचन बुद्धिमहँ बड़का॥
यह इतिहास अहै अति भारी। सुनि नर होत परमपदचारी॥
धनद कीन्ह जब वैष्णव जागा। हरिपद प्रकट परम अनुरागा॥
आये हरिशिर मुकुट बिराजा। ब्रह्मा शंभु वरुण सुरराजा॥
रविशशिअनिलअनलइमिदक्षा। अपसर सिद्ध गन्धरब यक्षा॥
सुरऋषि ब्रह्मऋषी सब आये। तहँ कुबेर सनमान रचाये॥

दो० नलकुबेर धनपति भये, पूजा पर हुतबाह।
मरुत परोसन हेतु सब, सेवा पैगन जाह॥

रक्षत बीरभद्र बल जादा। पार्श्वमौलि अरु घण्टानादा॥
ये मन्त्री तिनके अभिमानी। धनपति कीनो धनपति ज्ञानी॥
यज्ञ अन्त अस्नानहि कीन्हा। देवाद्विजन मनमाँगत दीन्हा॥
तेहि क्षण दुर्वासा चलि आये। दण्डी क्षत्री जया बढ़ाये॥

क्रोधी कृश लघुउदर अबाढ़ी। चढ़े पादुका दीरघ दाढ़ी॥
बर मृगचर्म कुशासन लीने। आये योग रङ्ग महँ भीने॥
लखि धनेश उठि कीन्ह प्रणामा। दै आसन पूज्यो अभिरामा॥
तब संतोष सहित ह्वै सोई। बोले बिहँसि धनद दिशि जोई॥

दो० तुम कीन्हो वैष्णवमखहि, दीन्ह द्विजनकहँ दान।
देवन कहँ पूज्यो बिबिध, मुदित भये भगवान॥

हम कबहूं नाहिं तुमते मांगा। अब मांगन ममन अनुरागा॥
देहो तौ सुख सब जग साखी। नतरु जारिकै करिहौं राखी॥
जितनी निधि तुम्हरे गृह अहई। देहु हमैं कछु पास न रहई॥
सुनि कुबेर सो ज्ञाता दाता। देहु द्विजहिं बोले यह बाता॥
तबते दोऊ सहित बिषादा। बोले धनपति गत अहलादा॥
एक बिप्र लोभी कहँ राजा। देहु न सबधन सुरशिरताजा॥
दै शतसहस द्रव्य मतिमाना। बिदा करहु याकहँ हम जाना॥
सुनि तिनकी बाणी दुर्बासा। परम भयंकर कोप प्रकासा॥

दो० डगत भयो ब्रह्माण्ड सब, दुर्बासा के क्रोध।
कहत उभय मन्त्रीनते, गहत न नेकहु बोध॥

घण्टानाद दुष्ट संतापी। ग्राह होसि धनग्राहक पापी॥
पार्श्वमौलि तोहिं सूझत मस्ती। ताते होसि मस्त अति हस्ती॥
तिनहिं शापदै लै निधि सारी। बोले बचन बिहँसि ब्रतधारी॥
याहि लेहु अरु दूनी होई। कहि इमि राखि गये धन सोई॥
ते दोउ मन्त्री दुखित अतोले। बन्दि बिष्णु कहँ तहँ यह बोले॥
कृपाकरहु हम शरण तुम्हारे। तब दयाल अच्युत उच्चारे॥
मम मख भयो शाप यह भारी। द्विजबाणी न झूंठ निरधारी॥
ताते तुम ह्वैहो गज ग्राहा। ममकर मरि गतिलहहु सुचाहा॥

दो० तबते दोऊ मन्त्रिबर, जन्मे मकर मतङ्ग।
प्रथम कथा भूली नहीं, उत्तम फल सतसङ्ग॥
पार्श्वमौलि रैवतगिरि माहीं। भो गजरूपजात कहि नाहीं॥
चारदन्त तन श्याम समूचा। बिहरत कानन धनुशत ऊँचा॥
चम्पक चन्दन पनस मदारा। बीजपूर अर्जुन कचनारा॥
पाटल कौकन कुन्द अनारा। पीपर बट प्रयाल निरधारा॥
केला आम उदुम्बर ताला। बेनबेल अरु तिमि सतमाला॥
माधवमास सकल बन फूला। दन्ती मुदित भ्रमत सुखमूला॥
गयो गोमती गङ्ग नहावै। साथ घना करिणी सरसावै॥
नाग नहाय शुण्ड फैलाई। केलिकरै जलमहँ अधिकाई॥
दो० ताही क्षणमें आयकै, महाग्राह गहि दाँव।
ग्रसत भयो गजराज कहँ, महाकोप करि पाँव॥
लरे ग्राह गज खींचहिं दोऊ। करहिं जोर नाहिं जीतहिं कोऊ॥
गज बहुशुण्ड परस्पर जोरी। खींचहि नहिं त्यागै बरजोरी॥
यहि बिधि लरत करत बर रावन। बीतत भये बर्ष पञ्चावन॥
तब बिचारि गजव्याकुलभारी। टेरयो त्राहि कृपाल मुरारी॥
कृष्ण कृष्ण बपु कृष्ण कृपाला। कृष्णापदअति घिष्णदयाला॥
बिष्णुजिष्णु प्रिय पूरण पावन। पुण्यकीर्तिभुवि प्रभुभवभावन॥
परमेश्वर परेश जय बावन। आरतिहरण अनन्द बढ़ावन॥
पाहि पाहि बर कीरति रासी। त्राहि त्राहि सब हृदयनिवासी॥
दो० पुष्करते लै पुष्करहि, पुष्कर तेहि सनभूप।
पुष्कर दृग टेरतभयो, सुनि सो श्याम स्वरूप॥
क० आरति निवारिबे को कुञ्जर उबारिबेको, गिरिधरलाल सोई कालमें सचेतभे। धाये घहरात हहरात पट फहरात, पदमाहिं ठहरात

खगै त्यागिदेतभे ॥ आरत पुकारत बिचारत गोपाल उर, देखि दुख दीनानाथ दुखी दासहेतभे । मारयो चक्रवक्र अतिनक्रको बिदारयो शीश, शक्र आदि अमर अनन्द उरलेतभे ॥

दो० चक्रनच्यो पुनि मुदित चित, गोमतिके मधिजाय ।
ताके परसे अस्म सब, वक्रभये नरराय ॥

चक्रतीर्थ सो अगम अपारा । परसि होत नर भवजलपारा ॥
तब तन त्यागि ग्राहगज सोऊ । भे कुबेर के मन्त्री दोऊ ॥
करि दण्डवत परम मुद छाये । राजराज के राज सिधाये ॥
सुर पूजित अरु सुरन समेता । गे निकेत निज कृपानिकेता ॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै । चक्र सुतीरथ कर फल पावै ॥
जो गज ग्राह उधारहि धारै । भव समुद्रके पार सिधारै ॥
शंखोद्धार माहिं दै दाना । जात बिष्णुपुर सो सज्ञाना ॥
कनक देहि महिमा अधिकाई । ताकी कथा सुनहु नरराई ॥

दो० कृष्णभक्त जित नाम पुनि, तीरथ करत सुजान ।
आये महि आनर्तमहँ, तीरथ किय अस्नान ॥

सेवन करन लगे सुख चहेऊ । पाय सशाप शंख सँगरहेऊ ॥
तिनको शिष्य सुकक्षीवाना । शंख चुरायो गुरुनेहि जाना ॥
बोले बचन क्रोध उर आनी । जानि ताहि लालच बिज्ञानी ॥
जो मम शंख चुरायो सोई । तुरतहि शंख शंखबपु होई ॥
कक्षीवान शंख जब भयऊ । सभयशरण तब गुरुकी गयऊ ॥
मुनि हँसि कहा न हम यहजाना । तुमहीं चोरयो शंख सुजाना ॥
बचन न झूठ होइ दुख तजहू । दुःखनिकन्दन कृष्णहि भजहू ॥
गे मुनि शंख सरोवर रहई । कृष्ण कृष्ण आननते कहई ॥

दो० शत संवत गत कृष्णप्रभु, आइ सरोवर तीर ।

शंख शंख टेरतभये, शंखपाणि बलवीर ॥
सो सुनि शंख मोद उरछाई । पाहि पाहि भो बोलत आई ॥
तब करनाइ निकास्यो ताही । जलतेजलज जलजहगचाही ॥
तुरत दिव्यभा रूप महाना । हाथ जोरि बन्देउ भगवाना ॥
कहत कि मैं अतिशंख कृपाला । तव प्रताप इह दशा रसाला ॥
छं० द्वारावतिस्वामीखगपतिगामी गोविंदनामीगिरिधारी ।
ध्रुव ध्रुवपददाता बलिसुखनाता कायाधवत्राताभारी ॥
द्रौपदिपटबर्धनधरणगोवर्धनजनसुखअर्दनजगदीशा ।
गुरुसुवनदिवैया नृपउधरैया कृष्णकन्हैया अवनीशा ॥
मगधेशबिनाशन कृष्णखगाशन संकर्षणकरुणाकारी ।
प्रद्युम्नसकामा रूपललामा विप्रसुदामा दुखहारी ॥
अनिरुद्ध अनन्ता श्रीभगवन्ता राधाकन्ता गुणराशी ।
तुमहीं पितुमाता सहचरभ्राता विद्यानाता अविनाशी ॥
दो० इमिकरि अस्तुति यानचढ़ि, द्युति धरि कक्षीवान ।
यादव के निरखत कियो, केशव लोकपयान ॥
जहाँ उपद्रव अहइ न एको । तहँ चलिगयो रुको नहिंनेको ॥
शंखोद्धार कीन्ह भगवाना । शंखोद्धार नाम जगजाना ॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै । सो तित न्हावे को फलपावै ॥
सुनहु प्रभास महातम राजा । अघकहँ हरत पुण्य कर ताजा ॥
गोदावरि गुरुसिंह नहाई । कुम्भ माहिं हरिक्षेत्र सुहाई ॥
कुरुक्षेत्र दिनकर उपरागा । चन्द्रग्रहण काशी बड़भागा ॥
जो फल दान नहान प्रकासे । ताते शतगुण पुण्य प्रभासे ॥
दक्ष शाप पीड़ित शशि न्हाये । भला स्वरूप कलानिधि पाये ॥
दो० जहाँ सरस्वति सरितबर, पुण्यतमा विख्यात ।

जाके बीच नहाय कै, जीव ब्रह्म ह्वै जात॥
पीपरबोध नाम ता पासा। ऊधवते जहँ हरि सम भासा॥
तहां नौमि पूजै विधि नाना। अत्रशि सुनै भागवत पुराना॥
एकपाद आधौ अरलोका। सुनिकै लहत कृष्णकर लोका॥
भादौं शशिदिन उरसुख लेई। सोना सहित भागवत देई॥
जिन न सुना भागवत पुराना। ताकर जन्म बृथा जगजाना॥
श्रवण न पिया भागवतकाहीं। अर्चन किया भागवत नाहीं॥
धरा अमरकहँ अन्न न दीन्हा। बृथा जन्म धरणीपर लीन्हा॥
तहां गोमती सागर सङ्गम। न्हाइ जाइ जहँ हरिपुर जङ्गम॥
दो० अश्वमेध फल शत लहैं, गङ्गासिन्धु नहाय।
तातें इत दश शत गुणो, सुनहु सत्य नरराय॥
इक इतिहास अहै यक रूढ़ा। सुने नशात अघभूड़ा कूढ़ा॥
गजनापुरमहँ रह्यो महाजन। धननिधानखलअघकोभाजन॥
बैश्य कुबेश्यन भडुअन साथा। खेलै जुआँ झूठिकहै गाथा॥
लोभ मोह मत्सर ते भीना। ऋषिद्विजदेवनकहँनहिंदीना॥
सुनि हरिकथा भगै खल सोई। सुतहिंत्रियहिंधनदीन्हनकोई॥
तजि पतनी रराडासँग रमई। धन सबगयो लीनभोतमई॥
नृप अरु धरणि बारात्रिय चोरा। धन हरिहरि करिदीन्हो कोरा॥
लक्ष्मी जगत पुराय ते बढ़ई। हे नृप आशु पापतें कढ़ई॥
दो० बसुबिनकसबिनने कह्यो, कसबिन धन को सेठ।
तब लागो चोरीकरन, सब पापिनते जेठ॥
तब नृप संतन ताहि निकारा। आवै पुर नहिं चोर अपारा॥
बन भो बसत जाइ गति सत्या। कीन्ह अमित जीवनकी हत्या॥
बारह बरस न बरसेउ पानी। तबगोपश्चिमदिशिअभिमानी॥

हत्यो सिंह मगमा मजबूता। मारत बांधि चले यमदूता॥
ताकर मांस गिद्ध लै लीना। चलेउ तुरतपट अंतर कीन्हा॥
चिल्ल गिद्ध बहरी अरु बाजा। घेरि करत भे शब्ददराजा॥
उड़ेउ बेगते ते सब धाये। लरनलगे कोऊ नहिं पाये॥
गोमति सिन्धु संग मधि आई। गिरेउ मांस जल में नरराई॥

दो० तुरत फांस टूटी सकल, चितै रहे यमचार।
चार भुजा धरि सो गयो, बिश्वाधारअगार॥
गोमतिसिन्धु महात्मकहँ, सुनै पढ़ै नर जौन।
दहि पापहि आनन्द गहि, जाहि विष्णुपुर तौन॥

फल द्वारावति सागर केरा। सुनहु पुण्यप्रद हरष बसेरा॥
बैशाखी दिन जो नित न्हाई। बलदेवै पूजै हरिराई॥
ता तन निवसहिं तीनहु देवा। ताकर दरशन अतिजगमेवा॥
तेहि परसे द्विजहत्या जाई। संगति किये मुक्तिसरसाई॥
रैवत शैल महातम सुनिये। पापहरण दुखवितरणगुनिये॥
गौतमसुत मेधावी नामा। दशलखबरसतप्योअभिरामा॥
बिन्ध्याचलपर तपत निहारी। सुमुनि अपान्तरतमव्रतधारी॥
ताके देखन हित चलि आये। सो न उठे नाहिं शीश नवाये॥

दो० देखि अपान्तरतम कह्यो, बैठो शैल समान।
ताके सोई होसि तैं, कीन्ह बिप्र अपमान॥

भो श्रीगिरिसुत सो हरिदासू। जानत निज पूरब इतिहासू॥
मेधावी ते हम इक काला। कहेउ द्वारकाबरण रसाला॥
सो सुनि द्विज मनकीन्ह बिचारा। रहौं तहां अघ दहौं अपारा॥
मोते भाष्यो सहित उछाहू। तुम रैवतराजा ढिगजाहू॥
सो तितको नृप मोहिं लै जाई। रहिहौं अहइ पुण्य अधिकाई॥

हम तब जाइ रैवतहिं भाषा । नृपहु ताहि राखन अभिलाषा ॥
कीन्ह प्रतिज्ञा जल नहिं पावों । भुजबलते जो गिरि न हिलावों ॥
इमि विचारिकै रैवत राजा । लावनचल्यो शैलनिजकाजा ॥

दो० मैं कलरुहप्रिय जाय तब, श्रीते कहेउ सुनाइ ।
रैवत सुतहि चोराइ है, तेरो इत सों आइ ॥

सो सुनि सुत सनेह उर आना । तेहि जन जाहु बखानेउ नाना ॥
इमि सुमेरुके शरणहि जाई । रोवत बिपदा सकल सुनाई ॥
मोहिं सुतएक दूसरो हैना । ताहि चहत नृप रैवत लैना ॥
सुवन बिदेश कलेश अपारा । ताते रक्षहु गिरिभरतारा ॥
सो सुनिकै हिम मेरु रिसाये । लाख शैल लै तहँ चलिआये ॥
इत रैवत लै श्रीसन्ताना । चलत भयो हनुमान समाना ॥
सो लखि शैल शस्त्र धरि धाये । मारु मारु अतिशोर मचाये ॥
तब हुंकार कीन्ह नरराई । आयुध गिरे भूमि भहराई ॥

दो० भिरे भयंकर शैल सब, तब आयुध गतआइ ।
मारु मारु धरु मारु कहि, मारन लगे रिसाइ ॥

हे नृपभा तहँ परम तमासा । इकनृपलरहि लाखगिरिपासा ॥
ते सब कर पग उदर प्रहारी । व्याकुल कीन्ह नरेशहिं भारी ॥
इककर गिरि अरु इककरखाली । सावधताहिसुनहु बलशाली ॥
करै लाख परबत ते मारी । धरा न अपनो बचन बिचारी ॥
तब हम आय विष्णुते भाषा । दीनबन्धु रक्षण अभिलाषा ॥
नभ महँ आइ दीन बल भारी । उऋण करहु कहिगये मुरारी ॥
जब हरिगे दै धीरज ऐसो । अतिबलबलात्रियापितुतनपैसो ॥
लागे लरन नगनसो कैसे । बायु प्रचण्ड नगनते जैसे ॥

दो० लगे सकल भहरानागिरि, धर धर पकरप्रचारि ।

भूधर अरु भूधरनसों, भयो समर अतिभारि ॥
तब नृप मूका मेरुहि मारा। परेउ धरणितलदुखित अपारा ॥
थप्पर यक हिमाचलहिं दीना। मुरछि परा महि बेग बिहीना ॥
बिन्ध्यहिं मास्यो चरण अपाना। दण्ड लगे फल सम घहराना ॥
अरु जितने नग सम्मुख आये। कर पगते हति भूमि गिराये ॥
कूदि कूदि गिरि धावहिं मारे। सो रण गिरहिं मूकके मारे ॥
पाथर केर बिछो पाथरना। नृपकर मोद जाइ नहिं बरना ॥
जिमिघृत अरुपिसानको पिण्डा। फूटै करप्रहार ते कुण्डा ॥
श्रीगिरि भिरेउ भयद पुनि आई। मारि ताहि नृप दीन्ह भगाई ॥

दो० अमित मरे बहु महि परे, डरे खरे थहरात।
अङ्गअङ्ग चूरण सकल, जीति लियो नरतात ॥

अ० झम्झझम्झम्झझम्झपटिकै पप्पप्पूरैगैल।
धध्धध्धध्धध्धरनिपै छच्छच्छायेशैल ॥
छच्छच्छाये शैलल्लपटि महीपप्पद्दल।
टट्टट्टकरि झपट्टट्टलत प्रकट्टट्टट्टल ॥
दद्दद्दवरि इकट्ठट्ठमक हिडड्डोलत।
भम्भम्भिरत ततच्छण बक्कन्नन्नोलत ॥

दो० जीति गिरिन कहँ भूप तब, लै ताकहँ मतिमान।
राखेउ अपने देशमहँ, बैष्णव जान महान ॥

रैवत नाम बिराजत सोई। जाउर बिष्णुभक्ति अति होई ॥
देखि ताहि द्विजहत्या जावैं। परसत शतमख को फल पावैं ॥
करि परिकरमा द्विजन जिवावैं। सो नृप बिष्णु परमपद पावैं ॥
रैवत यज्ञ भूमिमहँ जावै। करिमख कोटिगुणित फलपावै ॥
तहँ कपिटङ्क तीर्थ अघहारी। कपितन ते प्रकव्यो अतिभारी ॥

नरकसखाइक द्विविद बिपिनचर। मारेउ तहां ताहि मूशलधर ॥
सो जल तीरथ उज्ज्वल राजा। आवहिं तहँ सुरअसुरसमाजा ॥
विकुण्ट यात्रा कोटि गऊ फल। दूनो दण्डक काननमें भल ॥

दो० चौगुण सैन्धव विपिनमें, भूप गुणहु मन माहिं।
तातें कहिये पञ्चगुण, जम्बुमार्ग जे जाहिं ॥
पुष्करबन महँ जाइ जो, तातें दशगुण पुण्य।
बर उत्पल आवर्त महँ, तातेहू दश गुण्य ॥
नैमिषबन सहदशगुणित, फल तातें गत शङ्क।
तातेहू शतगुण लहै, जो जावै कपिटङ्क ॥

अरु नृगकूप तहाँ अति अहई। जेहिलखि द्विजहत्या द्रुतदहई ॥
हे नृप नृग दानी अति भारी। कोटिन सुरभी दीन्ह दुधारी ॥
गऊ बिप्र दूजेकी आई। धोखे बरहि दीन्ह नरराई ॥
तिनके शाप बिकलभे राजा। कृष्ण उधार्यो लखत समाजा ॥
भये चारुभुज नृपनृग दानी। कार्त्तिक दिवस तहाँ नृपज्ञानी ॥
न्हाइ देइ इक सुरभी दाना। सहसगुणितफलहोहिसुजाना ॥
कोटि जन्मकर पातक नाशै। भानु समान मरीचि प्रकाशै ॥
गोपीचन्दन केर महातम। सुनहुभानुसमनाशक अघतम ॥

दो० गोपीगण निवसी जहाँ, गोपि अङ्गसों तात।
चन्दनहो अरु भूमिसो, गोपी भुवि बिख्यात ॥

क० गोपीअङ्गराग जोचढ़ावैअङ्गबीचभूप, गङ्गासिन्धुआदि अस्नानफलहोत है। छापकोलगावैपापदापकोदुरावैदूर, दान ब्रततीर्थताकोसकलउदोत है ॥ शतराजभूपदशसतअश्वमेधफल, बनोईरहतसबकालताकेपोत है। गोपीनाथबसैशोभालखैताके पाससदा, हरिदासदेखेपापरासआसुखोत है ॥

दो० गङ्गा रजते दुगुण फल, चित्रकूट रज होइ।
पञ्चवटी रज दशगुणित, ताते कहिये सोइ॥
ताते शतगुण चार फल, गोपीचन्दन माहिं।
बृन्दावन रजसम अहै, दोऊ कोउ कम नाहिं॥
गोपीचन्दन लाइकै, करै करोरन पाप।
यम अञ्चर अटकै नहीं, जात कृष्णपुर आप॥

दीर्घबाहु नृप भा अधिकारी। सिन्धुदेश महँ कुमति सिधारी॥
बारत्रियारत शत द्विज मारा। दश गुर्बिनी नारि संहारा॥
कपिला गऊ हत्यो सो पापी। इकदिन चढ़िहय द्विजसंतापी॥
बिपिन गयो मन्त्री तहँ तासू। मारि कृपान कियो गत आसू॥
मरो देखि यमगण तेहि बांधी। दीन्हयमनउर सुखअतिसाधी॥
यम तब कहा कहहु का होई। चित्रगुप्त बोले सुनि सोई॥
सकल नरक महँ डारहु याही। जबलौं शशि सूरज नभ माही॥
यहिखल कबहुँ पुण्यनहिंकीन्हा। परत्रियरत प्रजान दुख दीन्हा॥

दो० यहिं दश गर्भवती हत्यो, शत द्विज कपिलागाय।
अरु अपराध बिनाहत्यो, कीन्हो अति अन्याय॥

भूसुर सुरनिन्दक अघकारी। डारहु नरक न संशयभारी॥
सो सुनि दूत तुरत तेहि डारा। कुम्भिपाक महँ अग्नि अपारा॥
श्रुति दशशतसकोसको भारी। शीतल भयो मनहुँ सरिबारी॥
भो प्रहलाद सरिस सब ऐसो। गणन कहा यमते यह कैसो॥
मन्त्रिन सहित प्रेतकुलनाहा। यह अचरजको करतसलाहा॥
इतनेइमें द्वैपायन आयन। यम बैठायन बचन सुनायन॥
यहि खल कबहुँ धर्म नहिं चीन्हा। गुनिहमकुम्भिपाकमहँदीन्हा॥
भो शीतल यह अचरज भारी। सुनि बोले मुनिब्यासबिचारी॥

दो० सूक्षम गति अति धर्मकी, सत्य सुनहु यमराज।
ब्रह्म यथा सब बिश्वमें, सूक्षम लखहि समाज॥
दैव योग भो पुण्य सहाई। ताते पीड़ा सकल नशाई॥
कोउ करते गोपी तनरागा। गिरेउ मरत याके तनलागा॥
ता प्रभाव यह भो अघनासा। यासम नहिं जगसत्यखुलासा॥
सो सुनि यमराजा तेहि लाये। चार भुजा बिमान बैठाये॥
बिदा कीन्ह हरिपुर शिरनाई। इमि हम तुम कहँ कथा सुनाई॥
गोपीचन्दन की सुनि कथ्था। मनुज लहतहैं हरिपुर पथ्था॥
सिद्धाश्रम महात्म नृप सुनिये। सकल पापकहँ ताप न गुनिये॥
जेहि लखि हरि बियोग नहिं होई। सिद्धाश्रम जग भाषै सोई॥
दो० दर्शनते सालोक्य है, परसन ते सारूप।
न्हातलहै सामीप कहँ, बसि सायुज्य अनूप॥
जासु महातम सुनिकै काना। राधा चाहो करन पयाना॥
चन्द्रानना कथा सब गाई। चलत भई राधिका सुहाई॥
शतसंवत गत सहित उमङ्गा। चलीं यूथ शत लै निजसङ्गा॥
चढ़ि पालकी महामुद छाई। सबन सहित सिद्धाश्रम आई॥
हरि निज जात कुटुम्बन साथा। आये तहँ नहान नरनाथा॥
माधवमास रहो जब पर्बा। गोपबधू आईं तित सर्बा॥
कोटिन गोप शस्त्रधर साथा। चलहिं राधिका के नरनाथा॥
तथा गोपिका सब शत यूथा। छरीधरे कर चारु बरूथा॥
दो० यादवगण चाहत रहे, लेन थान तहँ गोप।
बरजोरी डेरा कस्यो, बेत दिखाय सकोप॥
सो लखि सकल कृष्ण की नारी। हरिते बोलीं बचन बिचारी॥
कासु त्रिया यह कौन सुबामा। कहँ निवसत कहँजात ललामा॥

कहहु आप सर्वज्ञ सुधारी। बोले बचन बिहँसि बनवारी ॥
यह राधा बृषभानुकुमारी। ब्रजत्रियमण्डनममअतिप्यारी ॥
सिद्धाश्रम नहान हित आई। जाभय डरहिं यदू समुदाई ॥
सो सुनि मान सहित सतभामा। सब बामनसों कहत बिरामा ॥
का राधहि सुन्दर हम नाहीं। हरि ममहित बहु कीन्ह तहाहीं ॥
ममहित शतधन्वहि हरि मारे। कृतबर्मा अक्रूर सिधारे ॥

दो॰ दिन दिन मममणि बीस मन, कञ्चन देत अनूप।
आधिव्याधि अहिभय हरत, नहिं कुकालको रूप ॥

याहीते यह बैभव सारा। हम हरि रहत गरुड़असवारा ॥
भौमासुरकहँ हम जब भाषा। तब तेहि मारि कृष्णमहिनाषा ॥
सब त्रिय मम गौरवते ब्याही। लाये नरक धनहि घरमाही ॥
दोय घरी महँ भयउ बिवाहा। मेरे कहे कीन्ह नरनाहा ॥
कुण्डल छत्र इन्द्रकहँ दीन्हा। जबहम कृष्णहि आज्ञा कीन्हा ॥
पारिजात सुरपुर ते लाये। संक्रन्दन सँग समर रचाये ॥
हम पतिब्रतकरि हरिबश कीन्हा। पतिकर दान नारदहि दीन्हा ॥
को मेरे सम है संसारा। मम सरूप लखि बशभरतारा ॥

दो॰ हे रुक्मिणि सवतन सहित, का तुम नहिं कमनीय।
जो राधा राधा कहत, कृष्णचन्द्र मम पीय ॥

हम सब राजसुता सुकुमारी। कहँअहिरिन दधि बेचनहारी ॥
वाह वाह यह अच्छो कीन्हो। सबते उत्तम पदवी दीन्हो ॥
सुनि इमि सतभामा की बानी। रानी पटरानी बौरानी ॥
कहहिं मानबस बचन सुऐसे। पावहिं करत पसेरी कैसे ॥
गहि गहि उर मैं गूढ़ गुमाना। बासुदेवसन बचन बखाना ॥
तव मुख सुना जासु बड़ताई। जाते तुमहिं प्रीति अधिकाई ॥

जा बिछुरे तुम भये उदासा । जानचहत हम तिनके पासा ॥
सो सुनि हरि सँग लै पटरानी । सोलह सहस एकशत जानी ॥
दो० जात भये राधा निकट, मानकदन भगवान ।
शोभा अवलोकत भई, कहि न जाइ सामान ॥
छं० सामान कहि नहिं जाय शोभा जोहिकै जहँ है खड़ी ।
शिरछत्र चामर चारु मुरछल ब्यजन डांड़ीमणिजड़ी ॥
सुन्दर बितान तन्यो सुजान मतङ्ग मोती झूमका ।
बिछये गलीचा रँगे रङ्गन बर बनाई भूमका ॥
सखियूथ चारहुँ ओर उडुपति बदन राजहिं अतिघनी ।
जेहि देखि सुर अपसरा लाजहिं बिबिधबानिकबरबनी ॥
श्रीराधिकामुखदेखिशशिनभकमल जलमहँलुकिगये ।
लखि चाल दुरे मराल मानस द्विरद जङ्गलचर भये ॥
मुखकहहिं गोपी कृष्ण माधव एक तन्मय ह्वैरही ।
भगवान सबन समेत रूपनिकेत द्रुत बहु पहुँचही ॥
सत्राजिती आदिक त्रिया सब नखतसम राजतभई ।
राधाबदन बरइन्दु पूरण निरखि अतिलाजत भई ॥
मुरछा बिबश ह्वै नारि सब उठि कहहिं अपने थोकमें ।
यह धन्य रूप अनन्य ऐसो है न तीनों लोकमें ॥
इमि कहत दर्शन चहत उर सुख गहत श्रीपतिजातभे ।
राधानिकट शिरमुकुटबर अवरेखि त्रिय हरषातभे ॥
गोपी सुरानी लखि परस्पर परमसुख छावत भई ।
पति देखि अतिसुख धारि उतते राधिका आवत भई ॥
जयजय भयो दुहुँ ओर राधा कृष्ण जब मिलते भये ।
सब ताप ताप कराल ब्रज अबलान के द्रुत दुरिगये ॥

हरिपद परसि बृषभानुकन्या मुदित परिक्रमा करी।
दीन्हो सिंहासन अतिमनोहर बहुत जामहँ मणिजरी ॥
शुभचारु पाये चारजामहँ बहुत श्रीमन्तक लगे।
चिन्तामणिन के बने तकिया देखि सिगरे तम भगे ॥
मधि पद्मराग चहूं दिशा शशिकान्तमणि दरशात हैं।
पीठक घने कौस्तुभ बिराजत पारिजात बिभात हैं ॥
भगवान कहँ बैठाइ राधा कहत जोरे कर दोऊ।
मम सकल जीवन जन्म सुकृत आजु पूरबकृत सोऊ ॥
हम कीन्ह नहिं तव भक्ति पै तव कृपा प्रभु अब को कहै।
मम हेतु बहु दुख सहे ऐसो कौन कोउके हित सहै ॥
बध शंखचूड़ धस्यो गोबर्धन पान दावानल कस्यो।
जहँ जहँ पस्यो संकट बिकट तहँ तहँ कृपाकरिके हस्यो ॥
इमि भाषि के पुनि रुक्मिणी सतभाम भालुकुमारिसों।
सत्या कलिन्दी मित्रबिन्दा लक्ष्मणा सुकुमारिसों ॥
भद्रा सहित षोड़श सहस शत एकसौ मिलती भई।
बरआसनन बैठाइ मन के शोक कहँ गिलती भई ॥

दो० बैठि सबन में राधिका, बोली सुन्दर बैन।
हम अनेक हरि एक हैं, सब कहँ दायक चैन ॥
उडुपति एक चकोर बहु, एक सूर बहु कञ्ज।
हम अनेक हरि एक तिमि, कहत सबन मन रञ्ज ॥

स० पद्मप्रभाव सिलीमुख जानत, रत्नप्रभाव परीक्षक जानै।
बिद्यानिधान गुनै बरबिद्याहिं, काव्यप्रभावकबीपहिंचानै ॥
बातरसीली रसीलेगुने जन, पण्डितहै सोइ बेद बखानै।
कृष्ण प्रभाव सुनो चितदै, हरिभक्तसोईजगमेंपहिंचानै ॥

दो० यहसुनिकै सबत्रियसहित, भीष्मकसुता सुजान।
भानुसुता ते इमि कह्यो, जानिहृदय गुणवान॥
धन्य राधिका तुम जगमाहीं। जैसा सुना सुतैसा पाहीं॥
जो त्रिलोक कोउ सकै न जानी। सो तुम जानतहौ ब्रजरानी॥
अब करि कृपा चलहु मम डेरे। जिमि हम सब आईं तव नेरे॥
सबन सहित सुनि भानुकुमारी। प्रमुदित तिनके संग सिधारी॥
चारु कनात बनात बनाई। बने काम कछु बरनि न जाई॥
गोपिन के शत यूथ समेता। पूज्यो रानिन नीतिनिकेता॥
भोजन दै अम्बर पहिराई। बिबिध भांति कीन्ही पहुनाई॥
बिदा होइकै सिगरी गोपी। डेरन गईं हरष आरोपी॥
दो० रात समै भीष्मकसुता, गई कृष्ण के पास।
जागत देखि उदासअति, चकित कहत सुखरास॥
किमि नहिं नाथ नींद अजुआई। सुनि इमि बचन कहत यदुराई॥
तुम राधिकहि बिबिध बिधिपूजा। तिनको हमरो जीव न दूजा॥
सो नित पयहि पानकरि सोवत। तुम न दीन सो आशहिजोवत॥
तिहि न नींद कैसे मोहिं आवै। ताते दूध देहु मनभावै॥
सो सुनि लै पटरानिनरानिनि। चलीपियावनपयगजगामिनि॥
उनहू पय मिश्री मधिडारी। कनक कटोरा करन सुधारी॥
राधहि सो रुक्मिनी पिवाई। बीरी सुन्दर दीन्ह बनाई॥
बिदा होय सँगलै सब बाला। आईं आशु जहाँ नँदलाला॥
दो० कहेउ पिवायो जाइ पय, राधा को हरिराय।
इमिकहिकै श्रीरुक्मिणी, सहित सौतिसमुदाय॥
चापन लगीं चारु पदनीरज। देखि फफोलहि भईं अधीरज॥
अबहिं रहे नहिं पग महँ छाले। कैसे यह प्रकटे दुखहाले॥

कहतभई पतिते बिलखाता। कारण आशु बताइय ज्ञाता॥
सो सुनिकै राधिकानिवासा। रानिन सों यह बचन प्रकासा॥
श्री राधाउर महँ पग मेरो। प्रिये सर्वदा करत बसेरो॥
ताते तुम जो पयहि पियावा। अपने मन चातुरी दृढ़ावा॥
गरम रहो सो नरम करेजा। जरेउ परमपद ताहि सहेजा॥
भरम बिगत यह मरमहि जानौ। मोहिंराधिकहिं एकपहिंचानौ॥

दो॰ हे नृप राधा कृष्ण सम, यामहँ है नहिं भेद।
भेदकरहिं निर्बेद गहि, तिनकहँ निन्दत बेद॥

जानि एक तजिकै अभिमाना। सबनश्यामसों बचनबखाना॥
धन्य गोपिका पुण्य प्रकासा। जोमिलिकीन्ह आपसँगरासा॥
लखन चहत हम तौन तमाशा। कीजै कृपा कटाक्ष प्रकाशा॥
तुम राधा गोपी हम अहहीं। करहुकृपा जिमियहफललहहीं॥
दीनबन्धु तुम कृपानिधाना। दीनबन्धु यह जान जहाना॥
सोसुनि बिहँसि मनोज लजावन। बोले चारु बयन मनभावन॥
जो राधाकी इच्छा होई। करिहौं रासहि पूछहु सोई॥
सो सुनि गईं सकल प्रभु रानी। बन्दि राधिकहिं बोलीं बानी॥

दो॰ रम्भोरू शशिआननने, सुन्दरि रास निवासु।
कीर्तिवंशकी कीर्तिकर, कीर्तिबिश्वअतिजासु॥

तुम परिपूरणतम की प्यारी। हम तुमते पूछत ब्रजनारी॥
हम अरु तुम केशव इत अहहीं। ताते रासहिं अतिशय चहहीं॥
पूरण करहु मनोरथ मेरो। राधा कहत बिहँसि तनहेरो॥
रासेश्वरसों पूछहु जाई। तिनकी करहु बिनय अधिकाई॥
तिनकी इच्छा तोकहँ देरी। अगसरहै न सामरथ मेरी॥
सुनि रानिन भाषा समुझाई। सब के हृदय रासकी आई॥

माधव पूरणिमा निशि भूपा । माधव बिरच्यो रासअनूपा ॥
राधाकृष्ण सबन सहराजे । रासबिलास हासरस साजे ॥

दो० जितनीब्रजकी गोपिका, अरु जितनी प्रभुबाल ।
दोय दोय मधि एकभे, मुरलीधर गोपाल ॥

लागत रास रसिक प्रभु कैसे । कनक नीलमणिमाला जैसे ॥
ताल मृदङ्ग बेणु कलगाना । तेहिक्षण परम मोद सरसाना ॥
कोटि मदन छबि उरबनमाला । बालन महँ निर्तत गोपाला ॥
राधा रामअनुज के सङ्गा । बढ़्यो केलिको अधिकउमङ्गा ॥
इहिबिधि नृत्य करत सो राती । क्षण समान सब भई बिहाती ॥
करिकै रास सकल हरिरानी । भईं प्रेमबस अति हरषानी ॥
पुनि अभिमान आनि उरसोई । कहत कृष्ण मुखपङ्कज जोई ॥
देखा तब रासहि गिरिधारी । भा अनन्द कहिजात न भारी ॥

दो० ऐसोहू प्रभु रास कहुँ, भयो न ह्वैहै सांच ।
न्यारी सिगरी गोपिका, और हमन को नाच ॥

हमरे बढ़े बढ़्यो सुखभारी । रासशिरोमणि यह गिरिधारी ॥
तब हरि बिहँसि कहा मुसकाई । यह पूछहु राधाते जाई ॥
सतभामान सहित अभिमाना । पूछ्यउ राधाते नरत्राना ॥
तब राधा मनमाहिं बिचारो । ये महिषी महिषी मतिधारो ॥
महिषी सम्मुख बाजी बीणा । कूदी सो गुनि अतिहि प्रबीणा ॥
निमि महिषी ये हरिकी प्यारी । बोली राधा हृदय बिचारी ॥
जो यह रासभयो तुमजाना । सो नहिं बृन्दाबिपिन समाना ॥
कहँ इत बृन्दाबन बरबेली । कुञ्ज निकुञ्ज नवल तितकेली ॥

दो० चारु बयार बहारयुत, अत्र कहा सरिकूल ।
यमुना समना जगतमें, रमना दमना शूल ॥

छं० कहां माधवीलता सुमन के सहित समूहा।
कहँ पक्षी कलकण्ठ बचन बोलहिं सुखरूहा॥
लोलकहां इत अलिसमूह कुञ्जन महँ लोलत।
शीतलमन्द समीर कहां मनके सुख खोलत॥
उन्नग शृङ्ग समेत कहँ गोवर्धन निर्भर भरत।
कल्पबृक्षबेलिन सहित उरमहँ अतिआनँदकरत॥
कूल कलिन्दी कृष्ण कहां कछनी कटिकाछे।
छरी धरी पुनि अधर बेणु निर्तत विधि आछे॥
कहँ बनमाल रसाल सुमनकर बर शृङ्गारा।
कहाँ अलककी झलक खलक मोहन सुखसारा॥
कुण्डल लोल कपोलपर तोलरहे गुरतान अति।
नकबेसर राजत चिबुक शिर केशर परमा भरति॥
कहँ शरीर कशमीर नीर चर्चित लोभे अलि।
दरशन परसन मन हरषन मरसन दुख विधिभलि॥
तीन कोन चषकरि चितवनि तिरछी चितमोहन।
करते कर पकरन आलिङ्गन आनँद जोहन॥
दुरन सुचारु निकुञ्ज में छिप छिपकै दरशन करन।
चीर लेन पङ्कज करन बेनु बेत्र गहि जल तरन॥
पकरि प्रेमते पानि परम रुचि हृदय लगावन।
आकर्षन चुम्बन भेदन मधुरे सुर गावन॥
जलके मधि अस्नान रास रस गुप्त दिखावन।
हास प्रकास नवल रस रास मनावन॥
जहाँ जहाँ की बात जो तहाँ तहाँ नीकी लगत।
बृन्दाबन तजि अनत नहिं चारु रासको रसपगत॥

दो० सुनि राधाके बचन कहँ, ते सिगरी प्रभुबाल।
अभिमानहि तजतीभईं, सुमिरिश्यामकोख्याल॥
करि रासहि मोहन मन भाये। बृषरबि कन्या संग लिवाये॥
पटरानिन्ह रानिन्ह ब्रजबालन। साज समाज दासदल पालन॥
लैकै द्वारवति चलि आये। ब्रजअबलनकहँ तितहिबसाये॥
सिद्धाश्रम महात्म सुनि काना। करत सडर अघ आप पयाना॥
द्वराचार सुत योजन अहही। चौगुन तासु प्रदक्षिण कहही॥
मधि हरिदुर्ग दोय दश योजन। पुनि नवयोजन दूजो बरधन॥
तीजो दुर्ग बहुरि हरि केरो। कोस अठाइस ताको घेरो॥
तहँ मन्दिर हरिके मन भाये। गिनती में नवलाख गनाये॥
दो० तहँ राधा मन्दिर निकट, लीलासर यक चारु।
सो आयो गोलोकते, तीरथ कर सरदारु॥
तहँ नर आठै दिवस नहाई। ब्रतकरि दान देइ हरषाई॥
कोटि जन्म को पाप नशावै। भरत सुरत गोपुरते आवै॥
सहस भानु दित तापर सोई। चढ़ै रूप मनमथ सम होई॥
श्याम सरिस पीताम्बर धरिकै। सहस पार्षदनी सँग करिकै॥
जय धुनि करत देव समुदाई। गऊलोक सो बरनर जाई॥
और सुनहु तीरथ नरराई। षोड़शदश शतशत अधिकाई॥
आठ और हरितिय के धामा। फेरो तासु करै अभिरामा॥
ज्ञानतीर्थ परियातक जावै। ज्ञान भक्ति बैरागहि पावै॥
दो० श्री हरिके उरमें बसैं, सिद्धि समृद्धिहि पाइ।
ऋद्धि सिद्धि पूजित परम, रमारमण पुरजाइ॥
छं० हरिमन्दिर है योजन पाँच बिशाल भूमिपति।
तहँते हरितन प्रभव कृष्णसर शत धनु है अति॥

साम्ब जाम्बवति सुवन न्हाइ जहँ भये कुष्ठगत ।
ता दरशनते नशत पाप परमाधर सोहत ॥
तहँते पूरबकी दिशा अष्टादश पद जाइकै ।
तीरथहै बलदेव को पुण्य देत अधिकाइकै ॥

दो० भूमि प्रदक्षिण करि जहाँ, रेवतसुता समेत ।
यज्ञ कीन्ह अस्थल सोई, सब तीरथ फलदेत ॥

छं० सहस धनुष हरिमन्दिरते दक्षिण की ओरा ।
है तीरथ हेरम्बकेर जहँ पुण्य अथोरा ॥
प्रद्युम्नहि लैगो जब शम्बर असुर चोराई ।
पायो रुक्मिणिसुवन पूजि तितही गनराई ॥
तहँ नहाइ नर पुरटकर दान देइ आनन्द युत ।
पाप ताप ताके भगैं होइ सुभग हरिभक्तसुत ॥

दो० हरिमन्दिरते द्विशत धनु, पश्चिम दिशि भूपाल ।
दान तीर्थ कल्याण कर, अघसमूह कर काल ॥

छं० कृष्णचन्द्र जित दानदीन उर आनँद सञ्चन ।
तहँ नर धनी नहाय सु देवै द्वैपल कञ्चन ॥
ताको चौगुन रजत रतन नवमोल महाना ।
शतपट भूषण सहस करै श्रद्धा सहदाना ॥
अश्वमेध दशशत गुनो राजसूय शतजानिये ।
एककला फलनहिंतुलै सत्य हृदय पहिंचानिये ॥

दो० बद्रीबन यात्रा करै, ताते जो फल होय ।
दानतीर्थ महँ शतगुनो, ताते जानै सोय ॥

छं० बृष महँ जब रबि होयँ तबै सैन्धव बनजाइँ ।
लाखगुणित फल होय दान करिकै तित भाई ॥

सोइ रबिमहँ उत्पल आरण्यहि जो जनजावै ।
ताते कोटिगुनो फल दानतीर्थ महँ पावै ॥
एकमहीना बासकरि दानकरहिं नर नित्त जे ।
संख्या ताकी को करै बासुदेव के हित्त जे ॥
दो० चित्रगुप्त देवान जो, देवाने होइ जाइ ।
देवाने जानहि फलै, श्रुतिमुख कहि न सकाइ ॥
सब महँ उत्तम है हय दाना । ताते गज बहु तीरथ जाना ॥
ताते भूमिदान अधिकाई । बहुरि अन्न दाननकरराई ॥
यासम और दान नहिं कोई । तृप्ति पितर सुर नर कर होई ॥
दानतीर्थ महँ अन्नहि देई । सो बर बुद्धि बिष्णुपद लेई ॥
त्रिया मातु पितु दश दश पीढ़ी । इकतिस चढ़हिं बिष्णुपुरसीढ़ी ॥
खग द्वै चारभुजा तन श्यामा । जाहि बसनधरि पीत ललामा ॥
हरिघरते उत्तर अधकोशा । माया तीरथ है बरकोशा ॥
दुर्गा दुर्गतिहारनि भारी । लसत जहाँ बर सिंहसवारी ॥
दो० जब हरिगे मणिहेतुधसि, रीछगुफा नरनाह ।
तहँ पूज्यो तब देवकी, सुत दरशन के चाह ॥
आये अच्युत ब्याह कराई । तबते सो प्रसिद्ध अधिकाई ॥
तहँ नहाइ पूजै जो माया । तापर रहै तिनहिंकी छाया ॥
दुर्ग दूसरे पूरब द्वारे । इन्द्रतीर्थ जानहु हरिप्यारे ॥
तहँ नर न्हाइ इन्द्रपुर जाई । मिलैरूप बैभव अधिकाई ॥
दक्षिणद्वार कुण्ड रबिगायो । सत्राजित तहँ मणि कहँ पायो ॥
तहाँ पद्मरागहि करि दाना । जात भानुपुर बैठि बिमाना ॥
पश्चिम ब्रह्मतीर्थ नृप अहई । तहँ नहाइ नर सब कछु लहई ॥
होइ बिप्र हत्यारो कोऊ । दहै पाप हरि त्यारो सोऊ ॥

दो० तौहूं सुरपुर पांव धरि, ब्रह्मलोक सोइ जाइ।
उत्तरद्वार महीप मणि, तीरथ इक सरसाइ॥
नाम नीललोहित त्यहि कहई। तहाँ नीललोहित शिवरहई॥
मरुत देव ऋषिसात ऋषीशा। निवसहिं तहाँ सुनहु नरईशा॥
तहँ शङ्करहि पूजि दशशीशा। जीत्यो इन्द्रहि निशिचर ईशा॥
जो फल कैलासहि मन लहई। ताको शतगुन नृप इत अहई॥
तीरथ लोहित नील नहाई। सो दहि पाप शंभुपुर जाई॥
सप्त समुद्रहि तीरथ तहँई। जहँ नहात कोउ पाप न रहई॥
हरिहरविधि यमरविक्रतु अनला। सोमवरुणमहिधनपतिअनला॥
बसहिं प्रजन्यादिक तट ताके। सिगरे अमर भरे परमाके॥
दो० सातकोटि ब्रह्माण्ड महँ, तीरथते सब आय।
सप्त समुद्रक महँ बसहिं, जो नर तहां नहाय॥
द्वारावति यात्रा फल पावै। बिष्णुसरिस सो नर अधिकावै॥
जो नहिं तहां कीन्ह अस्नाना। ताकर श्रम सब बृथा बखाना॥
तृतिय दुर्गके पूरब द्वारा। रक्षक हनुमत बायुकुमारा॥
तिनहिं देखि जो नर शिरनावै। तिनके सम हरिभक्तिहि पावै॥
दक्षिणद्वारे चक्र सुदर्शन। अघमरषणहै तिनको दर्शन॥
पश्चिमद्वार जामवत भालू। तिनके देखत द्रवहि दयालू॥
उत्तर रक्षक बिष्वक्सेना। हरिपारषद मनुज अघजेना॥
द्वारावती द्वारनके बाहर। पिण्डारक तीरथ नरनाहर॥
दो० ताके अब माहात्म्य कहँ, सुनिये जनक जनेश।
जाहिसुमिरिअघनशतसब, भाषत ज्ञान दिनेश॥
रैवत गिरि सागरके पासा। पिण्डारक जानहु गुणरासा॥
उग्रसेन नृपसूयहि कीना। तहाँ कृष्ण अज्ञा जब दीना॥

सब तीरथ कहँ भूप बुलायो। करि आदर इक ढिग बैठायो॥
सब तीरथ ताके मधिभाई। पावै राजसूय फल न्हाई॥
होय भूप अघ औगुण धुनई। बन्दिनते बिरदावलि सुनई॥
मणिधन असन बसन त्रियसङ्गा। भरै उमङ्ग जीति रिपुजङ्गा॥
ताके द्वार खड़े गजराजा। डङ्काआदि बजैं बहुबाजा॥
तोरण कनक ध्वजा फहराई। छत्र चमर छबि बरणि न जाई॥

दो० मण्डलीक की मण्डली, ठाढ़ी ताकी द्वार।
दशहु दिशाकेमनुज मिलि, ताकहँ करहिं जुहार॥

स० नहिं यासम तीरथ और अहै, मरि मानव सुन्दर मुक्ति लहै। गहिधर्म सुशर्मसुधर्मसबै, भवभर्म कुकर्महि पर्म दहै॥ सोइ भोगी अरोगी सुयोगी सोई, औ बियोगी सोई नहिं जाइ तहै। बिनश्याम अराम न कामकछू, यह साँच कलाम ललाम कहै॥

दो० जो यहि माधव मास में, करै प्रदक्षिण भूप।
द्वारावति बन्दै बहुरि, श्रद्धाआनि अनूप॥

ऋद्धि सिद्धि सब ताके करमैं। पुनि परलोक परम सो नरमैं॥
जब भोजन करिकै महि सोवै। मौनगहै अरु थिरमन होवै॥
मधु पूरणिमाते करिसाधन। बैशाखी लौं करै अराधन॥
गिनि घन बुन्द सकै नरज्ञाता। पुण्य पार नहिं पावै धाता॥
जिमि तिथिमहँ हरिबासर मानो। नागनमहँ शेषहि पहिंचानो॥
गरुड़हि गुरु नभगणमहँ जानो। बर पुराण महँ भारत आनो॥
बासुदेव देवन में देवा। बिधि हर जासु न पावत भेवा॥
तिमि तीरथ पुरियनके माहीं। द्वारावती सरिस कोउ नाहीं॥

दो० धन्य जहां यदुमण्डली, राजत कृष्ण समेत।
अहइ भूमि बैकुण्ठकी, सकल पाप हरिलेत॥

छप्पय जहाँ विराजत वासुदेव निज चार व्यूह करि।
सुमिरत जाकहँ शेशमहेश प्रजेश ध्यानधरि॥
उग्रसेन कहँ दीन्ह कृपाकरि नगरी सगरी।
बगरबगर महँ मुक्ति फिरै डगरी जहँ बगरी॥
जब जैहैं हरिधामनिज यह नगरी कहँ सिन्धुतब।
अपने महँ लेजायहैं देखहिंगे जगजीव सब॥
दो० रुक्मिणि को मन्दिररहै, ताहि लखैंगे लोग।
हरिमूरति तामें रुचिर, राजति नाशन सोग॥
तहँते ऐहैं चारु अवाजा। सो सुनिहैं जगके जनराजा॥
जो कोउ द्विज होइहि हरिदासा। ब्राह्मणके सब अङ्ग खुलासा॥
तरि सागर मन्दिरमहँ जाई। हरिमूरति लावै हरषाई॥
प्राणप्रतिष्ठा करि अस्थापै। तो कलियुगको जो नरव्यापै॥
तिनकर दर्शन जे जनकरैं। पूरण भाव हृदयमहँ धरैं॥
सो जावै हरिधाम सुजाना। जो योगिन कहँ दुर्लभजाना॥
यह हम तुम्हैं महात्म सुनायो। हरिनगरी को परम सुहायो॥
जो यह खण्डहि सुनै सुनावै। सो द्वारका बास फल पावै॥
दो० हे नरेश! तुम कहँ कह्यो, चारु द्वारकाखण्ड।
भुक्तिमुक्ति कीरति करणि, खण्डन बहुपाखण्ड॥
गिरिधर अघहर द्विरददर, करण कोटि कल्यान।
भरणसुजन अशरणशरण,हितअनुशरणमहान॥
सो० अहैं सकल जगव्याप्त, सुमिरि नाम श्रीकृष्णकर।
कीनो खण्डसमाप्त, जासु द्वारका नामबर॥
इति श्रीभाषाप्रकाशेकृष्णप्रियेगिरिधरदासविरचितेप्रेमपथरचिते
गर्गसंहितायांषष्ठंद्वारकाखण्डंसमाप्तम्॥ ६॥

अथ विश्वजितखण्डप्रारम्भः॥

सो० मण्डनबहु ब्रह्माण्ड, खण्डनखलु पाखण्डघन।
कहत विश्वजितखण्ड, होत महत आनन्दमन॥

दो० बासुदेव साक्षी नमो, संकर्षण अनिरुद्ध।
परमापति प्रद्युम्न पद, बन्दत करि मनशुद्ध॥
गुरुब्रह्मा हरि शूलधर, परब्रह्म गुरुदेव।
बन्दत जिनके चरण कहँ, जिन दीन्हों यहभेव॥

हे शौनक यह तुमहिं सुनावा। अबकहसुनिहौनिजमनभावा॥
सुनिऋषि शौनक बोले बानी। नृपबहुलाश्व कृष्णप्रियज्ञानी॥
नारद ते पुनि पूछेहु काहा। बोले सुनत गर्गमुनि नाहा॥
राजसूय सुनि यादवपति को। बोलेगुणिसहाय हरिअतिको॥
उग्रसेन भे मरुत महीपा। कौन पुण्य करिकै कुलदीपा॥
जाके ऐसे कृष्ण सहाई। सुनि नारद बोले हरषाई॥
भानुबंशभे मरुत प्रबीना। चक्रवर्ती नृपसूयहि कीना॥
हिमगिरि उत्तर मखमहि कीना। आचारज संवर्त प्रबीना॥

दो० बहुत लगायो द्रव्यकहँ, को करिसकै बखान।
बीसकोसकर कुण्डकरि, कीन्हो यज्ञ महान॥

ब्रह्मकुण्ड इक योजन जानो। द्वैद्वै कोसन के पहिंचानो॥
पाँच कुण्ड परमान अरम्भा। सहस हाथ ऊंचो मखखम्भा॥
असीकोस मखमण्डल लोना। कदली तोरन मण्डित सोना॥
बिधि शिवादि निर्जर सब आये। ऋषि ब्रह्मर्षि सुरर्षि सुहाये॥
होता दिक्षित दशदश लाखा। पाँच लाख अध्वर्यन राखा॥
तितने उद्गाता भे भागी। चारु स्वागे कोटिन तत्भागी॥

आज्यधार गजशुण्ड समाना। परत कुण्डमें अडग बखाना ॥
खाइ घने घृत कहँ हुतवाहा। भयो अजीरण कहिये काहा ॥

दो० बिश्वेदेवा भे तहाँ, सबन परोसत अन्न।
लेहु लेहु पुनिलेहु यह, कहहिं ज्ञानसंपन्न ॥

कोउ त्रिलोक महँ भूखो नाहीं। भयो अजीरण सुरन तहांहीं ॥
सम्बर्तहि दै जम्बूदीपा। नियुत भार दिय कनक महीपा ॥
शत अर्बुद हय गज लख दीने। कोटिन दीने रतननगीने ॥
पांच सहस हय शतगज पीने। कनकभार शतद्विजप्रतिदीने ॥
सोनेके उच्छिष्ट सब बरतन। द्विजदेवनत्यागेगुणिअतिघन ॥
अजहुँ कनकगिरिअहइमहाना। शतयोजनलौं तासु प्रमाना ॥
मरुतसरिसमखकोउनहिंकीन्हा। यह हम सत्यहृदय निजचीन्हा ॥
यज्ञकुण्डते कढ़ि नारायण। दर्शन दीन्ह प्रेम पारायण ॥

दो० देखि भयोगद्गद नृपति, पर्‍यो चरण पर जाइ।
कहनचह्यो नहिंकहिगयो, तिमिरहिगयो सचाइ ॥

इमि नृपदशा मुकुन्द निहारी। बोले बाणी बिहँसि मुरारी ॥
हे नृप तुम मोहिं बहुविधि पूजा। असमखकीन्हनकोउजगदूजा ॥
माँगहु बर देवैं हम भाई। जो देवन दुर्लभ अधिकाई ॥
सुनि महीप पूज्यो बिधिनाना। गन्धाक्षत फल फूल महाना ॥
पुनिपुनि बन्दि दुहूं करजोरे। बोले बचन प्रेमरँग बोरे ॥
हम जानत तजि तवपदसेवा। बरबर अरु न अहै जगमेवा ॥
गङ्गाके तट खोदै कूआ। तासमको जग मूरख हूआ ॥
पैजो आप कहा बर मांगू। तौमैं कहत जानि बड़भागू ॥

दो० मम उरते तुम्हरो चरण, कबहूं दूर न होय।
यह बर दीजै सुनिबचन, कहत भूप मुखजोय ॥

धन्य भूप मति निर्मल तोरी। यह तो अहइ सुमाँगु बहोरी॥
जब इमि श्रीगोपाल बखाना। तब बोले नृप मरुत सुजाना॥
जौं वरदेत देहु यह भावै। पुर बैकुण्ठ भूमिपर आवै॥
तहँ हम होहिं भूप छबि छाई। तुम हमरी तित करहु सहाई॥
अठाबीज चौकड़ी माहीं। होइहि इहाँ इसतहै नाहीं॥
ममपुर आवै भूमि अनूपा। हम तव दास आप मम भूपा॥
इमि कहि भे हरि अन्तरधाना। उग्रसेन सो मरुत महाना॥
राजसूय मख कीन्ह अपारा। नहिं अचरज करता करतारा॥
दो० मरुतभूपको चरित यह, पढ़ै सुनै नर जौन।
भक्तिज्ञान बिज्ञानधन, संतति पावै तौन॥
सो सुनि कह्यो नरेश्वर बानी। राजसूय कीन्हो किमि ज्ञानी॥
हरिसहाय ते भाषहु मोहीं। सुनिमुनिकहत नरेशहिजोहीं॥
इकदिन उग्रसेन गुणिमर्मा। हरिहि पूजि कह मध्य सुशर्मा॥
हे प्रभु हम नारदमुख जाना। मखमह महिपतिसूय प्रधाना॥
करनचहत सो तव बल स्वामी। जग सागर बरपोतहि पामी॥
तब हरिकहा भलो यह चाहा। होइहि अतुलकीर्ति नरनाहा॥
सब यादवन बोलाइ सुबीरा। धरहुबिश्वजित मधिको बीरा॥
यादव अहहिं अंशसब मेरे। जीतहिंगे महिशूर बड़ेरे॥
दो० तब बोलाइ सब यादवन, छपनकोटि बलऐन।
महिअहिबल्ली नागिकै, भे नृप बोलत बैन॥
जम्बूद्वीप सकै जो जीती। सो यह पानहि लेइ सप्रीती॥
मौनरहे सुनि यादवसगरे। तब प्रद्युम्न आपु उठि अगरे॥
लै ताम्बूलहि बोले बोला। शम्बरजीत प्रताप अतोला॥
जीत सकल जम्बूद्दिप राजन। लैहौं बलि बल आप महाजन॥

द्विजगुरुभ्रूण हते अघ जोई । सो सुहिंमहिजीते बिनु होई ॥
सो सुनि सबन साधु कहि भाषा । तिनकहँतिलककरनअभिलाषा ॥
गर्गादिक आचारज आये । वेदऋचा पढ़िकै नहवाये ॥
भूपति तिलक शीशमहँ कीन्हा । भेंट सबन तिनकहँ तब दीन्हा ॥

दो० उग्रसेन असिदेतभे, आपदमाल समान ।
कवच दीन्ह बलदेवजू, उत्तमअति द्युतिमान ॥

निज शस्त्रनते तुरत निकारी । तूण तीर धनु दीन्ह मुरारी ॥
कुण्डल क्रीट चवर पीताम्बर । छत्रहि दीन्ह शूल गणिनाम्बर ॥
असि शतचन्द दीन्ह बसुदेवा । उद्धव हाटकमाल सुभेवा ॥
शंख दक्षिणावर्त अक्रूरा । गर्ग विजयपत्री मणिपूरा ॥
चतुरानन आदिक सुरआये । शूली शूल दियो मनभाये ॥
शिरमणि पद्मराग विधि दीना । बायु व्यजन यम दण्ड प्रबीना ॥
शक्ति शक्तिधर पाशहि पासी । सूरज गदा दीन्ह अति खासी ॥
देतभये कुबेर मणिमाला । चन्द्रकान्ति मन चन्द्रसाला ॥

दो० धरणी दीन्हो पादुका, काली कुन्तल दीन ।
सहस नयन दीन्हो रथहि, बरणन सुनहु प्रबीन ॥

सहस अश्वयुत कञ्चन साजा । बिश्वकर्मा कृतजलदअवाजा ॥
सहस चक्र घुँघुरू अरु घण्टा । मिलिकै करहिं परस्पर टण्टा ॥
मनसमगति अरु सहस पताका । दीन्हविजयहितनायकनाका ॥
तेहिक्षण बाजे वेणु मृदङ्गा । दुन्दुभिशंख पटहमिलि सङ्गा ॥
मोती सुमन अक्षत फल लावा । सुरन कृष्णनन्दन पर नावा ॥
हरिबल नृप गुरुकेपद बन्दी । चलनचहे प्रद्युम्न अनन्दी ॥
उद्धवादि सँग यादव भोजा । शूरसेन अरु अन्धक भोजा ॥
बिष्णुदशारह आदिक बीरा । चली कोटि छप्पनकी भीरा ॥

दो० गदशारण आदिक चले, भ्रात कृष्णके सङ्ग ।
साम्ब आदि केशवसुवन, जीतन जङ्ग उमङ्ग ॥
कुण्डल कीट कवच धनुधारे। चले सैनमहँ सुभट गरारे॥
गरुड़ हंस गजताल पताकन। राजतअतिरथबाजिचलाकन॥
चँवर छत्र कञ्चनके राजहिं। तिनपै बीरधीर अतिगाजहिं॥
दल महँ राजहिं कुञ्जर कारे। घण्टा हेमजाल कहँ धारे॥

क० पर्वतसमान हैं महान हाथीवान सह, सैन सैन बीच शोभा देत ते उतङ्ग हैं। मद्रदे सुभद्रदे सुहिम बिन्धशैल के सु, कशमीर मलैतीर कैलास सुरङ्ग हैं॥ ऐरावत बंशवाले चारदन्त चारु धारे, तीनशुण्ड भूमिनभ चलत उमङ्ग हैं। चतुरङ्गरङ्ग शोभादेत जगसङ्ग भारे, सुभटतरङ्गकरि अङ्गसोंमतङ्ग हैं॥

दो० कोटि ध्वजाधर गज चले, तितने डङ्कावान ।
कोटि चले कोतल सुभग, कोटिन सहित प्रधान॥
घनसम गरजहिं चालत शीशा। शिरपर शुण्ड धरहिं नरईशा॥
सीकर पटकत करत बनैठी। भूमि कँपावत अँगरत ऐठी॥
मद झरनासम झरत सुजाना। इमि गजचले अमितनरत्राना॥
यह ऐसी नर कौशल बिकटा। मत्स्यकलिङ्गसुकुन्तलनिकटा॥
कैकय कुरुबन कटक सुअङ्गा। दारद गुर्जराट अरु बङ्गा॥
केरल कौकन अरु बैदर्भा। महाराष्ट्र आनर्त सुगर्भा॥
शृङ्गयज्ञ काम्बोजक कच्छा। सिन्धुचाल सौबीरक अच्छा॥
मालव कर्णाटक गन्धारा। अर्बुद अरु पाञ्चाल बिचारा॥

दो० ताजी टांगन पावनी बिबिध रङ्ग तैलङ्ग ।
आये इतने देश के, जीतन जङ्ग तुरङ्ग॥
परिपूरणतम कृष्णके, बाजिशाल के जौन ।

चलत बाजिसम जलद स्वन, सिगरे आये तौन ॥
श्वेतद्वीप बैकुण्ठ अजित पद। तहँके हय आये सरूप हद ॥
हेमहार मुक्तन की माला। चोटी कलगी बनी रसाला ॥
चँवर धरे मुख पट्टन साजे। बने बिछौने सुन्दर ताजे ॥
जालपरी शोभा अति होई। अनिलसमानचलत अतिसोई ॥
तिनके पग मग परहिं न कैसे। साधु जगतरहि छ्वहिं न जैसे ॥
लाँघहिं सरिता बिवर पहारा। चलत चपल बोलतभल प्यारा ॥
तीतर मोर हंस से नाचहिं। थिरकहिं जमहिं भ्रमहिं गतिराचहिं ॥
घने सपच्छ श्यामश्रुति केते। पीत पुच्छ सुन्दरद्युति केते ॥
दो० उच्चैःश्रवा तुरङ्ग से, बरुण लोक के अश्व।
जानहिं चलन चलाकचित, सम दीरघअरुह्रस्व ॥
नील पीत सित हरित लहरिया। कनकअकाशी चित्तचुनरिया ॥
बिबिध रङ्गके राजहिं घोरे। साजे साजन सुभग अथोरे ॥
सुभट पाश असि धनुशर बर्मा। शूल शक्ति धारे बर चर्मा ॥
भयद परम राजहिं बलवाना। तिनकर यूथ न जाइ बखाना ॥
लखि यदुसेना कहँ तेहिपर्बा। बिस्मित असुर अमर नर सर्बा ॥
चलत कार्ष्णिके यादव राजा। हरिबल सहित कहतनरताजा ॥
है प्रद्युम्न कृष्णकी मरजी। जीतहुगे महि जीतनगरजी ॥
सुनहु नीति सो राखेउ पासा। होइहि पुण्य शत्रु अघनासा ॥
दो० सुप्त मत्त जल बाल त्रिय, शरणागत उनमत्त।
बिरथ बिशस्त्र भगेल कहँ, हतिय न कबहूँ सत्त ॥
नृपहि उचित शरणागत रक्षण। आततायि भटभिरत बिचक्षण ॥
बाला बाल नपुंसक मारण। अहै नृपहि आपुहि संहारण ॥
नृपकहँ चहिय धर्म अभिलाषा। आदिराज मनुने यह भाषा ॥

जे रणमहँ निरभय लड़िमरहीं। ते रबिलोक जात तजिडरहीं॥
क्षत्रीहै रणते जो भागैं। रौरवनरक तौन अनुरागैं॥
नृपहि सैन सैनहि नृपरक्षै। रथी सारथी तेहि सो अक्षै॥
यादव तुम प्रद्युम्नहि रक्षहु। हरिसुत तुम इनकर दुखभक्षहु॥
गो द्विज सुर सुधर्म अरु बेदा। पूजनीय जग साधु अखेदा॥

दो० जासु सहाई बासुसुर, तासु अहै जगजीति।
सो सुनिकै बोलतभये, कृष्णसुवन भरि प्रीति॥
बेद बिष्णु बाणी गऊ, तन द्विज मुख सुर अङ्ग।
साधुहृदययहबिदितजग, पूजनीय सो मङ्ग॥

शूरशौरि हरिबल नृपगर्गा। इन पदबन्दि चले धरि पर्गा॥
बिजय सुरथ चढ़िचले तहाहीं। बल हरिरहे राजके माहीं॥
सोलहकोस परतहै डेरा। कञ्चन पूरित चारु बसेरा॥
आगे सदलरहे कृतबर्मा। पुनि अक्रूर भयानक कर्मा॥
मन्त्रिन सह उद्धव ता पाछे। पुनि हरिसुवन अठारह आछे॥
प्रद्युमन बृक अरुण सुनन्दन। पुष्कर शाम्ब बृहद्रबिअतिधन॥
बेदबाहु न्यग्रोध सुभानू। दीप्तिमान श्रुतदेव सुजानू॥
मधुक बिचित्रभानु सुबिरूपा। बृहद्भानु अनिरुद्ध सभूपा॥

दो० पुनि गदादि प्रभु भ्रात सब, चलेसंग यदुफौज।
अन्धकवृष्णि दशार्ह मधु, शूरसेन अरु भोज॥

छप्पनकोटि चले सरदारा। तासुसेन को बरणै पारा॥
तिनके चलत शब्द भो भारी। शस्त्र बिखरडक धनुटङ्कारी॥
गजचिकार हय हींसन तरजनि। रथकरराव सुभटदल गरजनि॥
छुटत भुशुण्डी बजत नगारे। परमशब्द पूरे पुरसारे॥
महाशब्द सुनि सुनि लघुभूपा। डरि डरि गढ़नि छिपे गतरूपा॥

यादव सागर चलेउ अपारा। ताकर भयो भूमिपर भारा॥

अ० टट्टट्टरकत शेषफण वव्वव्वाढ्यो होल।
धद्धद्धरणी धसति कक्कक्म्पतकोल॥
कक्कक्म्पतकोलल्लपकि कमट्टट्टकत।
चच्चिकरि मतङ्ग्गहि भयभम्भम्भरकत॥
तत्तत्तिपुरमुनहत्तनिकन्न अत्तत्तरकत।
जज्जलधि उलट्टट्टट्टपरिहट्टट्टरकत॥

दो० इहि विधानते विजयहित, चलत भये यदुयूह।
कृष्ण उतारहिं भारभुव, जानहु ज्ञान समूह॥

कह महीप मिथिलाकर मुनिते। प्रभुयहकथा कहहुमोहिंपुनिते॥
कौन कौन पुर जीत्यो राजा। मोहिं कहो सो कर्म दराजा॥
तब नारद प्रिय जाहि लराई। बोले बाणी चारु बनाई॥
वाह वाह नृप भल तुम पूछा। बिन हरिभक्ति चरित सब छूछा॥
महिरज जलधारा गिनिजावै। पै हरि नाम पार नहिं पावै॥
षोड़श कोश परतहै छाया। ऐसे छत्रसहित यदुराया॥
सबन सहित अति परमाछाये। पहिले कच्छ देशमहँ आये॥
सुभ्रभूप गोकरण अहेरी। आयउ सुनि पुर सेनाघेरी॥

दो० ध्वजनी कहँ देखत भये, रजते रजनी कीन।
दलिबे योग जहानके, उर अति शङ्का लीन॥

नागर डरे देखि दलसागर। दुर्जय जानि भूप मतिआगर॥
घोरे अयुत पञ्चशत बारन। लीने कनक दोय दशभारन॥
दीन्हो भेंट यादवहिं जाई। बैठत भो ढिग शीश नवाई॥
प्रद्युमन दीन मुदित मणि माला। भाषेहु राज्य करहु क्षितिपाला॥
जीति ताहिगे नगर कलिङ्गा। तहँ के नृपते याचेउ जङ्गा॥

तब कालिङ्ग सदन भड़ि योधा। भिरेउ यादवनसों भरि क्रोधा ॥
बढ़ि अनिरुद्ध अकेले आगे। गहि धनु लरन शत्रुते लागे ॥
शतशर भूपहि मन्त्रिहि दशदश। मारेउ गरजि बीर रणकरकश ॥
दो० साधुसाधु सबहिन कह्यो, तबै क्रुद्ध अनिरुद्ध।
भिरत भये कालिङ्गते, परमबीर जित युद्ध ॥
भु० घने काटिडारे धरो हाथशीशा। उरूपादपांटे महीचारुदीशा॥
चले सर्प से शायका दर्पधारे। गतासूघने बीर कै भूमि डारे॥
महीपाल दन्ती चढ़ो देखिसोई। भिरो आयकै कालके रूप जोई ॥
गदा गर्जिकै कामपुत्रै प्रहारे। कह्यो की बचैना अबै लेत मारे ॥
लगे सो गदा चित्तमें खेद आयो। यदूबीर सारे धनू को बजायो ॥
सबै घेरिके बानके जालठाटे। कलिङ्गेशके सैन में कोपि पाटे ॥
महाबीर कालिङ्गभो जोरकर्तो। अकेलो सहस्रानसों धीर लर्तो ॥
भयो रोकतो बाणते बानरेला। यथा सिन्धुको रोकतो होयबेला ॥
दो० सो लखिकै गद हरिअनुज, गदाधारि ललकारि।
बाम हस्तते भो तजत, कालिङ्गहि परचारि ॥
ताके लगे फाटिगो बारण। पर्यो भूमि करकै चिक्कारण ॥
तब कलिङ्गपति गदा पकरिकै। लरनलग्यो रणधीर अकरिकै ॥
दोउन गदायुद्ध अति कीन्हो। समरभूमि शब्दित करिदीन्हो ॥
गदा कलिङ्गहि पकरि घुमाई। पटकि बधन की करी उपाई ॥
तब व्याकुल कालिङ्ग बिचारी। गो प्रद्युम्न शरण बलभारी ॥
दैबल कहत भयो करजोरे। देव देव तुम पर हितभोरे ॥
तुमसँग को करिसकै लराई। आपु अखिल जगनेता साँई ॥
इमि कलिङ्ग कहँ जीतत भये। पुनि मरुधन्व नगर चलिगये ॥
दो० गिरिको दुर्ग तहाँ न जहँ, गयनामक भूपाल।

तहाँ पठायो ऊधवहिं, गये सुबुद्धि विशाल ॥
गयके सभाजाय हरिदासा। तहाँ जाय यह वचन प्रकासा ॥
उग्रसेन नृपजीति महीपन। करिहैं भूपतिसूय यहीपन ॥
परिपूरणतम कृष्ण सुतन्त्री। परिपूरणतम जाके मन्त्री ॥
प्रद्युम्नहि बलि लेन पठावा। दीजै कै कीजै मनभावा ॥
सो सुनिकै ओठन फरकावत। बोलतभयो वचन रिसिछावत ॥
अलपकाल महँ यादव बाढ़े। नहिं बलि देब विना रणगाढ़े ॥
सुनि ऊधव हरिसुत ढिगआये। तिनको सब वृत्तान्त सुनाये ॥
तब सब यादव बीर रिसाये। निज दलकर द्रुत कूच कराये ॥
दो० मरदत तरुपत्तन गिरिन, चलतभई जब सैन।
तब लै सँग अक्षौहिणी, अभिरो गय बयएन ॥
कुञ्जरते कुञ्जर रण करहीं। रथते रथ हयते हय लरहीं ॥
भिरहिं बीरते बीर दपटिकै। त्यागत शस्त्रसमूह झपटिकै ॥
तोप त्रिशूल भुशुण्डी पट्टा। धनुशर गहि गहि करहिं झपट्टा ॥
पगे बीररस धरु धरु बक्कै। शिर छेदन गहि खड्ग लपक्कै ॥
यदुभयमय गयके जनसारे। डरि दशादिशिमहँ भगे विचारे ॥
सो लखि एक धनुष टङ्कारत। अगरोगय नृप रिपुन बिदारत ॥
सो लखि दीप्तिमान हरिछोरा। शरसमूह त्याग्यो भरि जोरा ॥
द्वैते केतु सूत इक शरते। रथ शर बीस बरस शर शरते ॥
दो० शतशरते छेद्यो धनुष, गय गहि दूजो चाप।
बीस बाण मारतभयो, उर मधिलै अति दाप ॥
ताते कछु ब्याकुल ह्वै सोई। गह्यो शक्ति तड़िता सम जोई ॥
गरजत ज्यों घुमाइ ललकारी। सो उर धँसी तड़ित द्युतिभारी ॥
मुरछिपर्‍यो गय हरिसुत जाई। गलमहँ डारि धनुष घिसिआई ॥

गोले प्रद्यूमन के आगे । तुरत नगारे बाजन लागे ॥
देवन सुमन बृष्टि कहँ कीना । गयते पूजित कृष्ण प्रबीना ॥
गे अवन्तिका में कुलदीपा । जहां रहत गयसेन महीपा ॥
आनकदुन्दुभि कर बहनोई । दैकै भेंट मिले बढ़ सोई ॥
दुहुन दुहूं बन्धो तेहिकाला । बढ़ा परस्पर प्रेम रसाला ॥

दो० दादा बहिनहिं बन्दिकै, प्रमुदित कृष्णकुमार ।
बिन्द और अनुबिन्दते, कीन्ही मुदित जोहार ॥

माहिष्मती पुरी पुनि आये । मग नर्मदा दरश कहँ पाये ॥
लहर कलोल लोल अति करहीं । तरुते तटपै सुमन सुझरहीं ॥
देवनदी सम नदी अपारा । तातः उतरे यदुभरतारा ॥
इन्दुनील नृप तहँकर गावा । सो यदुदल दिशि दूत पठावा ॥
सो हरिसुतहि कह्यो इमि आई । मम रक्षक दुर्योधन राई ॥
हम कर देत हस्तिनापुर में । ताते अहैं अभै अति उरमें ॥
तजि तिनकहँ न दूसरहिं देहैं । आये बृथा न इत कछु पैहैं ॥
सो सुनि हँसत भये यदुनाथा । बोले बचन हिलावत माथा ॥

दो० गय कलिङ्ग को हाल जब, होइ होइ तव भेंट ।
लात कि देबी बातते, नहिं मानत मुख टेंट ॥

उग्रसेन यादव नहिं जानत । लेहौं भेंट शत्रु पहिंचानत ॥
सो सुनि दूत भूप ढिगजाई । दीन्हा सब बृत्तान्त सुनाई ॥
जान्यो परम प्रबल यदुजङ्गा । पञ्च सहस गज नियत तुरङ्गा ॥
अयुतसुरथ अरु बहुधनलीन्हा । बर बलिदान प्रद्युम्नहि दीन्हा ॥
बोली माहेश्वर ते होई । गे गुजरात महाबल सोई ॥
ऋष्यनाम तहँको नरराई । अहिकहँ ग्रस्योगरुड़सम जाई ॥
लैबलि तहँ ते आनँद छाये । चेदि नगर हरिनन्दन आये ॥

जहँ नृपहरि फूफा दमघोषा। जासु सुवन शिशुपाल सदोषा॥

दो० ऊधव कहँ दमघोष ढिग, भेजदयो बलऐन।
बन्दि महीपहि कहतभे, कृष्ण सखा बरबैन॥

नृप कर उग्रसेन कहँ देहू। सो करिहैं नृपसूय सनेहू॥
सो सुनि गहि उर कोप कराला। बोलत भयो बचन शिशुपाला॥
अहो कालगति अहइ कुचाला। ब्रह्मा चाहत होन कुलाला॥
काक हंस मूरख पुनि पण्डित। दासकरैं भूपन कहँ खण्डित॥
भ्रष्ट ययाति शापते सिगरे। यादव धन उनमद ह्वै बिगरे॥
नृप अकुलीन समाज अखेटा। मूरखके पुनि पण्डित बेटा॥
निरधन धन कहँ पाइ अपारा। तृण समान जानत संसारा॥
मन्त्री तासु मगध भै भागा। मूरख सिन्धु शरण अनुरागा॥

दो० उग्रसेन कब को अहै, भूप बतावहु मोहि।
सिद्ध होन निजमुख चहत, बासुदेव कहँ जोहि॥

पहिले नन्द अहिर के जायो। बहुरि शौरि छल अपन बनायो॥
लाज नहीं द्वै पितु जगजाना। मैं जीतहुँ यदुयूथ प्रधाना॥
फूले बहुत मत्त मद छये। कब जनमे कब राकस भये॥
इमि कहि चला चाप शरधारी। समुझायो दमघोष बिचारी॥
हे सुत सुनहु क्रोध नहिं कीजै। याते सकल बस्तु जग छीजै॥
अरथ धरम अरु मुक्ति सुकामा। ये सब मिलहिं साम महँ आमा॥
दामसाम कहँ अतिहि पियारा। ताते देहु मिटै दुखभारा॥
यादव चेदि अहै सम्बन्धी। यामहँ सदा चाहिये सन्धी॥

दो० सुनत बचन दमघोष के, गह्यो हृदय अफसोस।
साध्यो दम अतिरोष गहि, दुष्टशिरोमणि दोस॥

श्रुतिश्रवा दमघोष पियारी। शौरिस्वसा खलकी महतारी॥

शिशुपालहि गोदी बैठाई। बोली बचन बिबिध दुलराई॥
हे सुत है नहिं दुखको सामा। नातेदार शौरि तव मामा॥
रामकृष्ण दोऊ ये भाई। तिनके सुत सों कहा लराई॥
प्रेम समेत करो पहुनाई। देहु बिबिध धन हरष बढ़ाई॥
देखन जान चहत हम ताहाँ। है ममभ्रातसुवन शुचि जाहाँ॥
मेरे हृदय हुलास रसाला। सोसुनिकहत भयो शिशुपाला॥
मम रिपु राम कृष्ण यदुसारे। हतिहौं इन्हैं बाण के मारे॥

दो० कुण्डिनपुर महँ ब्याह में, त्रिय हरि लीन्हेसि दुष्ट।
तासों मिलिये जाय किमि, नाहिं यह सम्मत पुष्ट॥

पक्ष करै जो यादव केरी। जगमहँ सोइ अहै मम बैरी॥
करिहौं पितहि कंस सम ख्याला। तिन कर तौ हम काल कराला॥
सुनि दमघोष मौन है रहे। उद्धव यह प्रद्युम्नहि कहे॥
सेना बाहिनि ध्वजनी पृतनी। चतुरङ्गिनि अक्षौहिनि गतिनी॥
दोउ दिशि दलकी भई तयारी। तब बोले बहुलाश्व बिचारी॥
सेनादिक को लक्षण कहिये। बोले बिप्र सुनो जो चहिये॥
शतगज सहस सुरथ निरधारी। अयुत तुरङ्ग लाख पदचारी॥
सेना लक्षण भाषहिं गूनी। चतुरङ्गिनी तासु है दूनी॥

दो० अयुत सुरथ हय चार लख, गज बहोरि शतचार।
पैदल शत लख शस्त्रधर, बाहिनि नाम बिचार॥
याकी दूनी जानिये, ध्वजनी हे भूपाल।
पृतना ताकी द्वैगुनी, जानहिं शूर बिशाल॥
अयुतनागशत अयुतरथ, दश करोड़ बरबाज।
बाजी के शतगुण मनुज, कहहिंअक्षौहिनिसाज॥

सुनहु सुभट संख्या जो होई। शतसँग लरै शूरहै सोई॥

भिरै शूर शतते बलवन्ता । ताकहँ प्रबल कहहिं सामन्ता ॥
शत सामन्त साथ जय पावै । सो जगबीच गजी कहवावै ॥
निजहि सूत हय रथ कहँ जोई । रक्षै रथी कहावै सोई ॥
निज दलकी जो करइ सुरच्छा । महारथी तेहि जानहु अच्छा ॥
निज दल रक्षै परदल मारै । सो अतिरथी शङ्क नहिं धारै ॥
चलेउ चैद्य लै सैन अपारा । निदरिजनकजननी तेहिबारा ॥
बाहिनि ध्वजनी लै बिधिभले । द्युमत शक्र मन्त्री द्वै चले ॥

दो० अक्षौहिनि पृतना लये, रङ्ग पिङ्ग सरदार ।
सबन बीच शिशुपाल सो, अगरो कुपित अपार ॥
देखि सैन सो शत्रुकी, प्रलयसिन्धु सम घोर ।
कृष्णकृपा बरपोत चढ़ि, यादव चले अथोर ॥
सखा सदल शिशुपालको, बढ़िअति प्रबलद्युमान ।
यादव के दलसों अभिरि, करत भयो घमसान ॥

तो०दुहुकेरणको अतिशब्दभयो । रजते सबअम्बर पूरिगयो ॥
हय धावहिं हींसत कुञ्जरपै । गज चोटकरैं बढ़िकै नरपै ॥
निजशुण्ड उठाइ चलाइपगै । मुखमण्डितसिन्दुरलालपगै ॥
बहुरङ्ग बनातिन झूलबने । द्विप दौरहिं मेघ समानघने ॥
शरतोमर शक्ति भुशुण्डिगदा । दशहूंदिशिचालनलागतदा ॥
बहुपैदल मस्तकहीन भये । बहु स्यन्दनके अँगतोरिदये ॥
बहु घोरनकीन्हद्विधाहतिकै ।गजप्राणलियोबलकोअतिकै ॥
करलै असि केतिक बीरचले । सुमिरो अरिसागर बीचहले ॥
बहु धावहिं मार पुकार करी । द्युतिमान बरूथिनि खूबलरी ॥
अकरूर निहारि महारिसिलै । शरत्यागत सैनसमीप चलै ॥
पृतनातिनकेभयभागिचली । लखिसोकरिकोपद्युमानबली ॥

शरकेसमुदाइहि छांड़तभो। घनश्यामसखाकहँ आड़तभो॥
अक्रूरह्विमानभिरे रिसिकै। शरतेभरिदीन्हदशौ दिशिकै॥
तबखङ्ग सुफल्ककुमारलयो। सिगरे शर आशुहि काटदयो॥
गहिशक्ति अक्रूर प्रचारत भे। तड़ितासम घोर प्रहारत भे॥
मुरछाकहँ खाइ छुमानबली। उठिकैगरज्यो पुनिभांतिभली॥
लखभारबिनिर्मित धारिगदा। द्रुत मारेउ तर्जत पूरि मदा॥
अकरूरहिं भो दुख तासु लगे। कछु व्याकुलसे रसबीरपगे॥

दो० लखिसकोप अतिसात्यकी, मारि ब्रज्र समबान।
तासु शीश डारयो धरणि, व्योम सिधार्यो प्रान॥

सो लखि शक्ति शूल गहि तुरमें। मारत भो सात्यकि के उरमें॥
तब युयुधान बानको भारी। शूलहि तोरि दीन्ह महिडारी॥
शक्ति परिघ गहि परम कठोरा। सात्यकि कहँ मारेउ भरि जोरा॥
मुरछित भयो बीरबर कर्मा। तब अभिरो सकोप कृतबर्मा॥
तजि अनेक शायक अनियारे। पूरण कर्यो सुरथ दुखटारे॥
शक्ति गदातजि अति बलवाना। चूरकियो अरिबरको याना॥
कृतबर्मा रथ तासु उठाई। पटक्यो योजन एक घुमाई॥
ताछन सुभट शक्ति के मारे। रङ्ग पिङ्ग मन्त्री द्वै भारे॥

दो० द्रुत बढ़ाय निज सैनकहँ, शर समूह कहँ छाइ।
दलतभये यादव दलहिं, सिंह समान रिसाइ॥

तिनहिं देखि यदु भये अधीरे। गे सब शम्बरायके तीरे॥
तब हरिसुवन परम बलवाना। सबके मधि यह बचन बखाना॥
हम मरि हैं दोउन कहँ जाई। इन सम और न भट अधिकाई॥
सो सुनि भानुरतीपति भैया। कहत बिहँसि कै केशवछैया॥
जब त्रिलोक उतरहि रणकाजा। तब तुम मारेहु शत्रुसमाजा॥

हम जैहैं इनके बध हेता। यह सत सुनहु समरके हेता॥
लावत काटि दुहूंके शीशहि। यह हम कहत सत्य यदुईशहि॥
इमि कहि भानु चरम असिधारी। चलेउ शत्रुकी सैन बिदारी॥

दो० ताके असि ते शीश कर, अरु उर पगकरिशुण्ड।
कटे दिखाये भूमिमहँ, सुरथ बाजिके झुण्ड॥

चलेउ खड्ग कर तीछन धारा। भानु भानु अरिसैन निहारा॥
कटिते कटि कटि गिरहिं किते भट। इत सम कीन्ह पराक्रम परकट॥
जे जे शस्त्र शत्रु के आये। कछु रोंके कछु काटि गिराये॥
इमि दल मरदि भानु बलवाना। रङ्ग पिङ्ग ढिग आइ तुलाना॥
बाहि कृपान बीर बिधि मारे। काटि सुरथ दुहुँ के महि डारे॥
ते तब गहि गहि चरम कृपाना। महिरहि कीन्ह बीर बिधि नाना॥
तेहि क्षण बढ़ि भट भानु कराला। काटिदियो दुहुँकी असिढाला॥
बहुरि फिरावत उत्तम हाथा। काटेउ रङ्ग पिङ्ग कर माथा॥

दो० लै करमहँ शिर दुहुँनको, भानुबीर बलवान।
जाइ दियो प्रद्युम्नकहँ, भो जय शब्द महान॥

सुर यादवके दुन्दुभि बाजे। तेहि क्षण सकल चेदिभट लाजे॥
रङ्ग पिङ्ग अरु शक्तिद्युमाना। इनकर बध सुनि चैद्य रिसाना॥
सैन सहित बजवावत भेरी। भिरो सकोप यदुनकहँ टेरी॥
झूल सहित गज मत्त अनेका। चले शत्रु मरदत गहि टेका॥
कञ्चनरथमधि झांझ झनकहिं। बहुबीरनके बरम खनकहिं॥
भूप सुनहु तेहि क्षण शिशुपाला। भो यादवी सैनको काला॥
मारि मारि शर जहर जराये। अगणित भट यमलोक पठाये॥
तेहि क्षण तहँ रहिसकै न एको। भागे भभरि प्राणकहँ लेको॥

दो० सो लखिकै क्रतुदत्तरथ, चढ़िकै कृष्णकुमार।

भिरतभये शिशुपालसों, लागे करन कुमार ॥
रतिनायक शिशुपाल दोउ, निज निज शङ्खबजाइ।
उभय सैनकहँ बधिर करि, अभिरे ओज बढ़ाइ ॥
छं० भे भिरत ओज बढ़ाइ अतिबल दुहुँन शरदुर्दिन कियो ।
तेहिकालमें शिशुपाल द्रुत अङ्गारअस्त्रहि तजिदियो ॥
जमदग्निसुत जेहि दीन्ह ताते निकरि अनल सँग्राममें ।
यदुदल दहनलागे सकल नभते निकरि तेहि याम में ॥
सो देखिके परजन्य अस्त्र गोपालनन्दन तजतभे ।
जल बरषि सकल अँगार नाश्यो हरषि यदुगण सजतभे॥
शिशुपाल तब गजअस्त्रकहँ अरिसैनपर डारतभयो ।
जेहि मलयनामक शैलपै मुनि कुम्भसंभव ने दयो ॥
ताते निकरि बहु द्विरद शैलसमान अतिनरदत भये ।
द्रुत दौरि दौरि दपट्टि यादवयूथ कहँ मरदत भये ॥
सो देखि जलचरकेतु नरहरिअस्त्र कहँ छाँड़त भये ।
ताते निकरि भगवान दुख अरिजशनमहँ माड़त भये ॥
अतिरूप नखर कराल दन्त बिशालकी द्युति जगमगी ।
गर्जत कँपे भूधर सकल पग धरत पृथ्वी डगमगी ॥
गहि सकल द्विरद समूह कहँ महि मर्दिकै आनँद छये ।
नरकेशरी भगवान तेजनिधान अन्तरहित भये ॥
दो० परिघ तज्यो शिशुपाल तब, अब नहिं बचत पुकारि ।
हरि यमदण्ड प्रहारिकै, मगमहँ दीन्हो डारि ॥
स० शिशुपाल तबै असिचर्म गह्यो, रिस पूरि चल्यो रथको तजिकै।
तजिदण्डहि आयुध काटि दोऊ, गहिपाँय तबै अतिही सजिकै ॥
हरिनन्दन बांधिलयो खलको, हँसि भाषत जात कहां भजिकै।

पुनि ऐंचत खैंचत म्यान असी, चह मारन हर्षहृदै उजिकै ॥

दो० तब गद पकस्यो आइकर, बात कहा समुझाइ।
हरि मारनको प्रण कियो, तब तेहि तजा सुनाइ ॥

स० दमघोष सुनी जब बात सबै, बहुभेंटलिये चलि आवतभे।
सुनिकै रतिनायक भ्रातनलै, वसुअङ्गनसों शिर नावतभे ॥ बसु
देवस्वसापति देखि सोई, भरि आनँद आतुर धावतभे। जल मो-
चत लोचनते सुतको, अघ शोचत कण्ठ लगावतभे ॥

दो० धन्य धन्य प्रद्युम्न तुम, चित्त सरल शुचि साधु।
ममसुत शठ शिशुपालको, क्षमो सकल अपराधु ॥

हरिसुत कहत बुझाइ घनेरो। दोष न मेरो तव सुत केरो ॥
काल करै सब और न दूजो। इमिकहि गुरुगुनि बहुविधिपूजो॥
सुतहि छुड़ाइ चैद्य तेहिकाला। गये सदन गाहि हरष बिशाला ॥
सुनि बहु भूप चेदिपति हारी। भेंट दीन्ह नहिं भिरे बिचारी ॥
मनुतीरथ हरिसुवन नहाई। कौङ्कण देश गये हरषाई ॥
तहँ को मेधावी भूपाला। गदा बिसारत अरिकुल काला ॥
बनिकै मल्ल परीछन काजा। गयो जहां हरिसुवन समाजा ॥
बोला बचन बिहँसिकै ऐसे। का कादरके सम सब वैसे ॥

दो० तुम अनेक हम एकहैं, जीतहु तौ अब आइ।
सो सुनिकै भगवानसुत, हँसि बोले नरराइ ॥

शिरपर शिर जग करहु न माना। हरिमाया बल तेहिको जाना ॥
कहि अनेक कह अगणित सैना। होइहि अति अधर्म अघऐना ॥
कह्यो मल्ल जो कोउ नहिं लरहू। तौ ममपद मधितै सुनिकरहू ॥
तब गदनाम कृष्णको भ्राता। अभिरो धारि गदा रिसियाता ॥
तब सो गदहि गदहि तजि मारा। गद ताकहँ गति फेरि प्रहारा ॥

गिरेउ मल्ल मुख शोणितधारा । निकरि चली तन बृथा अपारा ॥
कहत बन्दिके कौङ्कण राजा । यह हम आप परीक्षा साजा ॥

दो० कहां कृष्ण भगवान हरि, कहँ हम प्राकृत जीव ।
क्षमहु मोर अपराध सब, शरण जानि बलसीव ॥

इमि कहि बन्दि चरण बलि देई । गो गृह नृप मेधावी सेई ॥
बहुरि कटक गे नगर पंचावन । तहँ नृपमौलि गयो सो कानन ॥
साम्ब पकरि ताकहँ लै आये । बलि लै यादव चले सुहाये ॥
दण्डकबन लखि सैन प्रचरिता । देख्यो सबन निबिन्ध्या सरिता ॥
बहुरि पयोष्णी तापी न्हाये । क्षेत्र सूरजाकर महँ आये ॥
आर्या द्वैपायनी निहारी । ऋष्यमूक गिरि गे धनुधारी ॥
गये प्रबर्षण जहां सुजाना । नित बर्षत प्रजन्य भगवाना ॥
शम्भुक्षेत्र लखि बर भो बेशा । गे त्रिगर्त अरु केरल देशा ॥

दो० केरलपति अम्बष्टनृप, ममसुख ते सुनि तौन ।
बिष्णु जानि भेंटहि दियो, परम पराक्रम भौन ॥

कृष्णाबेणी लखि दल सङ्गा । हरिसुत गये नगर तैलङ्गा ॥
तहां बिशाल यक्ष भूपाला । बिहरत उपबन बीच रसाला ॥
त्रियन समेत बजै बरबीना । सदा गान तानहि में लीना ॥
ते मन्दार मालिनी नामा । कहत बचन तहँ भई ललामा ॥
हे नृप तुम रण दुखहि न जाना । सदा ऐशमहँ दिवस बिताना ॥
हमहुँ नाहिं देखा यह बाता । आई आजु तौन नरत्राता ॥
यादवपति लै सैन महाना । जग जीतन हित कीन्ह पयाना ॥
जीति चैद्य आदिक हरषाये । तव पुरमाहिं लरन हित आये ॥

दो० गज चिकार हयहींसनी, रथधुनि धनुटङ्कार ।
नर गरजन को शब्द अति, भरी ब्योममहँ छार ॥

प्रलय सरिस यह आपद आई। ताते भेंट देहु प्रभु जाई॥
विहरहु बहुरि आइ नरराई। प्रबल शत्रु ते तजहु लराई॥
सुनि विशाल दृग उर अनुमानी। लै बलि गो हरिसुत ढिग ज्ञानी॥
ताते पूजित कृष्णकुमारा। पञ्चाप्सर नहाइ सरदारा॥
महाराष्ट्र गे तहँ को भूपा। बिमल विमलमति भक्त अनूपा॥
पूजित तहँ ते अति छवि छाये। करणाटकपति के पुर आये॥
तहँ सहस्राजित नृप मतिमाना। जेऊ जानि स्वयं भगवाना॥
पुनि प्रद्युम्न चले हरषाये। नगर करूष माहिं चलि आये॥

दो० महारङ्गपुर के नृपति, वृद्धशर्म यह नाम।
श्रुतदेवा शौरी स्वसा, तासु त्रिया अभिराम॥

हरि फूफी कर सुवन कराला। दन्तवक्र जानहु महिपाला॥
चैद्य सरिस सो वीर्यनिधाना। माता पिता बचन नहिं माना॥
परम कोप गहि लरिबे काजा। चलेउ अकेलो बिगतसमाजा॥
कंस सरिस नर सुत यह रहेऊ। दैत्य कराल क्रोध उर गहेऊ॥
कज्जलशैल सरिस अतिकाला। जीभकढ़ीजिमिव्यालविशाला॥
उच्च शरीर ताल दश बरणी। जाके चलत डगत हैं धरणी॥
लाख भार की गदा नचावत। तरु तोरत अरु द्वन्द्वमचावत॥
तेहि लखि यादव डरे बिचारे। भयउ कोलाहल सबन प्रचारे॥

दो० गुणि हरिसुत भेजतभये, दश अक्षौहिणि सैन।
परमधीर धनुधरण सह, बीर प्रबल रिपुजैन॥

बाण परश्वध बरछी भाला। तोप शतघ्नी शूलकराला॥
घेर्यो सबन शत्रु कहँ कैसे। रोकहि बाघहि बकरी जैसे॥
दन्तबक्र निज गदा प्रहारी। मर्दनलग्यो द्विरददल भारी॥
सोनेकर बर सिकर सोहै। घण्टा घुँघुरूजटित बनोहै॥

गहि गहि फेंकत नभमहँ कैसे। तूलसमूह अनिल अति जैसे॥
गजरथ तुरग मनुजकहँ गहि गहि। फेंकतनभमहँथिरथिरकहिकहि॥
शतयोजन ते ऊपर जाहीं। शोणितस्रवतगिरहिंमहिमाहीं॥
प्राण रहैं नहिं तिनके तनमें। पकरत आवत जात धरणिमें॥
दो॰ पगते करते जानुते, उरते मरदेउ सैन।
गदा मारि ललकारिअति, परम पराक्रम ऐन॥
कीन्हो कैसो कर्म अपारा। जिमि कुञ्जर मरदै केदारा॥
मथेउ जलधि जिमि हलि बाराहा। बिक्रम परम कियो नरनाहा॥
हरिसुत सिगरे तेहि क्षण धाये। तन शरते झाँझरकरि नाये॥
दन्तबक्र अति बिक्रम करिकै। तिनको बल सबलीनो हरिकै॥
कृतबरमा बड़ि शरते पूरा। असि सात्यकी शक्ति अक्रूरा॥
सारण आइ कुठार प्रहारा। तब अरिगदा सात्यकिहि मारा॥
तब अक्रूरहि क्रूर प्रहारी। दियो सारणहिं करते डारी॥
कृतबरमा तहँ दपटि चपेटे। चारहु बिगतचेत महि लेटे॥
दो॰ साम्ब जाम्बवतिसुत तबै, गदा धारि बिकराल।
लरत भयो कारूष सों, करत पैतरे चाल॥
तब रदबक्र गदा तजि ताहीं। पटक्यो पकरि भूमि के माहीं॥
साम्ब तुरत उठि ताहि पछारा। दोउन मूक अचूक प्रहारा॥
गरजेउ दन्तबक्र बल ओका। भे थहरात सात द्वै लोका॥
इमि अवरेखि पराक्रम तासू। गे प्रद्युम्न पास चलि आसू॥
सहस तुरँग अरु सहस पताका। अहइ प्रकाश भानुसम जाका॥
इमि आवत हरिसुतहि निहारी। कहत भयो कारूष प्रचारी॥
अन्धकादि ये यादव अन्धे। अलपबुद्धि दुर्मद ते बन्धे॥
राजभ्रष्ट करि दीन्ह ययाती। करत निरत सो दृढ़करि छाती॥

दो० इक हम अरु तुम सब लरत, धरमहि दीन्ह बहाइ।
पिता सरिस सुत होतहै, कस न करहु इत आइ॥
कृष्ण नन्दकर हो पशुरक्षक। सदा अहिर जूठनकर भक्षक॥
घृत दधि दूध तक्र नवनीता। घर घर चोरत फिरै अभीता॥
परत्रियलम्पट सदा अभागा। मागधभय सागरदिशि भागा॥
भयो अहीर सुयादवजाती। राजा उग्रसेन सुतघाती॥
राजसूय कहँ चाहत करणा। काल प्रबल कछुजाइ न बरणा॥
स्यारहु होन चहत मृगनाहा। सुनि प्रद्युम्न कहा मतिचाहा॥
यदुबल कुण्डिन नगर दिखाना। तेहि पुनि कहत तुच्छ अज्ञाना॥
तव पितु कीन्ह मने गुणवाना। तैं खल बाप विमुख नहिं माना॥
दो० नन्द गोपपति द्रोणवसु, तैं न जान यह हाल।
कृष्ण अङ्ग संभूत ये, गऊलोकके ग्वाल॥
राधा रास प्रकट सब गोपी। हरिस्वरूप अवगुणगण लोपी॥
परिपूरणतम कृष्ण कृपानिधि। अमितअण्डपति जेहिसुमिरतविधि॥
जहँ सब तेज लीन कहवावैं। तेहि यदु परिपूरणतम गावैं॥
उग्रसेन हरि बरते राजे। पूरब मरुत यज्ञ जिन साजे॥
दुष्ट निरंकुश निन्दक पापी। रोवत बृथा यथामति रापी॥
सुनि रदबक्र गदासों भारी। थिरु थिरु भाषि सुरथपै मारी॥
ताके लगे सहस ते घोरे। व्याकुल ह्वैकै इत उत दौरे॥
गदा तज्यो तब कृष्णकुमारा। भो कछु बिकल असुरसरदारा॥
दो० तेहि क्षण ते दोऊ लरे, गदा पकरि कर माहिं।
भूमि खरे ह्वै काल से, भाषि जात सो नाहिं॥
गिरिगिरिगजगजहरिहरि जैसे। ते दोउ भिरे भयङ्कर तैसे॥
दन्तबक्र तब लीन उठाई। धरणि पछार्यो अतिहि रिसाई॥

उठि प्रद्युम्न महाबलवाना। पटक्योतेहि महि सुमन समाना॥
व्याकुल निकरा मुखते लोहू। संभ्रमवश लरिसका न सोहू॥
दन्तबक्र पटके महिपाला। यह ब्रह्माण्ड पुरनसह हाला॥
कम्पे दिग्गज सागर सातो। कोल सहित भो कमठ कँपातो॥
तब रदबक्र जनक अरु माता। आवत भये भेंट लै ज्ञाता॥
पूजत भये तिन्हैं हरिबेटा। तिन्ह तब दीन्ह महीपहि भेंटा॥

दो० बढ्यो परस्पर प्रेम अति, तब सों नृप नरराइ।
कारूषहि प्रबिशत भये, निजसुत खलहि छोंड़ाइ॥

दक्षिणसिन्धु नहावत भये। नगर उशीनरके मधि गये॥
कोटिन गऊ चरहिं जहँ सुन्दर। डोलहिं गोप ज्ञानके मन्दर॥
तहँ आभीर गये लै भेंटा। दधि माखन अरु दूध अखेटा॥
लै हरिनन्दन तिनकहँ दीन्हा। गज हय रथ धन बिबिध प्रबीना॥
चम्पावतीपुरी पुनि आये। जहँ हैं मागध भूप सुहाये॥
आगेसे तिन भेंटहि दीया। आदर कृष्णकुँवर अतिकीया॥
कमल सहस दश कञ्चन माला। दीन्ही हरिसुत बुद्धि बिशाला॥
पुनि तहँ ते यादव मुद छाये। बर बिदर्भ कुण्डिनपुर आये॥

दो० भीष्मक भूपति लाइके, प्रद्युम्नहि निजधाम।
बिबिध भांति पूजत भये, उर आनँद अभिराम॥

मातामह कहँ शीश नवाये। कुन्त दरदपुर पुनि चलिआये॥
मलयाचल चन्दन जहँ होई। अतिसुगन्ध चारिहुदिशि सोई॥
तहँ अगस्त्य राजत मुनिनाथा। हरिसुत धस्यो चरणपहँ माथा॥
हाथ जोरि बोले यह बानी। दृश्य असत्य अहै जग ज्ञानी॥
बहुरि सत्य करि मानत काहे। कहहु भेद मोकहँ मम चाहे॥
तुम सर्वज्ञ दिव्यदृग ज्ञाता। सुनि बिचारि बोले मुनि भ्राता॥

तुम परिपूरण सुत हरि अहहू। मोकहँ देन बड़ाई चहहू॥
तौ पूछत तुम जगहित हेता। भाषत मैं यहि नीतिनिकेता॥
दो० जैसे घट जल सहितमें, शशि बहु परत लखाइ।
तिमि मायाते पुरुष वह, बिलग विविध दरशाइ॥
काँचमाहिं मुख लखत है, रसीमाहिं अहिमान।
तिमि शरीर मतिभिन्नहै, पूरि रह्यो अज्ञान॥
सुनि प्रद्युम्न कह्यो यह बानी। किमि भ्रम छूटै भाषहु ज्ञानी॥
दृढ़ बैराग्य कहहु मतिमाना। सुनिकै मुनि यह वचन बखाना॥
करि बिबेक नर ब्रह्महि भजई। मनमय जानि जगतकहँ तजई॥
जाइ परमपद सो नरराई। जन्म मरण भय व्याधि लराई॥
मोह क्षुधा पियास सुख शोका। शिशु जवान बृद्धापन थोका॥
आधि व्याधि तजिकै सुख पावैं। आतमनिरीह अहंकृत भावैं॥
शुद्ध गुणाश्रय निष्कल ज्ञानी। आतम धरम पूरणपद जानी॥
केवल ब्रह्म परावर जानै। भूमि अद्वन्द फिरत सुख मानै॥
दो० हम सूतत सो जागई, हमहिं मरत सो नाहिं।
कूटरूप सो दुःख बिन, नशत न सब के माहिं॥
पवन अग्नि नभ दारु सुभूरी। गुण नहिं अहहिं ब्रह्ममहँ भूरी॥
कर्म कहैं कोउ काल बखानैं। कर्ता कोऊ ब्रह्म करि मानैं॥
नहिं लक्षणते जान्यो जाई। प्राकृत जीव कहै किमि भाई॥
परमात्मा कोउ कहै सुजाना। बासुदेव कहि कोऊ बखाना॥
देखि निगम जानै मनभाई। अपने भ्रमत बिश्व दरशाई॥
जिमि चढ़ि नाव चलै जन जोई। तटतरु चलत निरेखै सोई॥
घूमै जो तेहि घूमै धरणी। तामहँ लखत आपनी करणी॥
करते लै जो दण्ड घुमावै। तासँग घूमत भूमि देखावै॥

दो० करिहौं अरु यह करत हौं, मेरो तेरो भान।
सुखी दुखी अरि मित्र पुनि, ज्ञान बिना कलकान॥
सत रज तम गुण माया केरे। बिश्व व्याप्त अज्ञान बड़ेरे॥
ऊरध सत्त्व सुराजस मध्या। अधो जाहि तम धरजमबध्या॥
अन्धकार गुण ते दरशातो। मानि लियो दुख सुखकर नातो॥
आवत जात नरक दिविबासा। दुख सुख केरो लखत तमासा॥
नभमहँ घन छावत पुनि काहै। तिमि आतम गुण बीच ढँपाहै॥
पक्ष भये खग खोतहि त्यागै। सुखते इत उत फिरिबे लागै॥
तिमि योगी सुख ज्ञानहि पाई। सुखी चरै संसार बिहाई॥
सुखद राह कहँ जावै योगी। जहां बिगत भय रहै अरोगी॥
दो० सबघटमहँशशिजिमिलखै, शिखिमहँअमितअँगार।
परमात्मा तिमि एक जग, घनो किये व्यवहार॥
घटमठमहँ जिमि नभ सब व्यापी। तिमितनप्रति सो मूरति थापी॥
कृष्णभक्त शान्तात्मा जोई। ज्ञान बिराग भक्तिधर होई॥
तिन्ह कहँ गुण छुवात नहिं कैसे। जलमहँ कमलहि परस न जैसे॥
ज्ञान पाइ बालक सम होई। मदिरा मत्त कहै सब कोई॥
मत्तहि नग्न ज्ञान नहिं अहई। तैसे गुण बिज्ञान न रहई॥
जिमि रबि उदय दिखावै धामा। ज्ञानउदय तिमि ब्रह्म ललामा॥
जिमि इन्द्री सब अपने कर्मन। करत अहै नहिं दूजे धर्मन॥
तैसेइ ज्ञान पाइ नर होई। एक ब्रह्मरस जानै सोई॥
दो० कहत कोऊ बैकुण्ठ है, कहत परमपद कोइ।
शान्त कहै कोउ हरि कहै, उत्तम बैष्णव जोइ॥
केवल कहत महत कोउ गावै। परम धाम कोउ अव्यय भावै॥
अक्षर परिकाष्ठा कोउ जानै। कोउ गोलोक प्रकृति परमानै॥

कोउ निकुञ्जवासी करि देखै। भक्ति ज्ञान वैराग्य परेखै॥
कृष्णचन्द्र पर केवल स्वामी। करै ध्यान जो ज्ञानहि पामी॥
भक्ति करै सो सब कुछ पावै। साधन सब याके मधि आवै॥
सुनि भागवत ज्ञान प्रद्यूमन। गहतभये अतिही आनँदमन॥
न्हाइ ताम्रपरणी कृतमाला। आये राजपुरहि यदुपाला॥
शाल्व भूप तित अतिबल जिनको। सखा द्विविद खल बानर तिनको॥

दो० कीश गयो प्रद्युम्न ढिग, कम्पत भो सह जोर।
दलहि दलन लाग्यो प्रबल, करत भयंकर शोर॥

नखते ध्वज रथ छत्र पताका। गज रथ हय मरदत रणबांका॥
मरदेउ यादव को दल कैसे। तीतिरगण महँ बिल्ली जैसे॥

अमृ० धद्धद्धद्धवरिकै पप्पप्पूरत मग्ग।
कक्कक्किलकारि करि सस्सस्सूर अडग्ग॥
सस्सस्सूर अडग्गग्गहत तुरग्गग्गज्जत।
झज्झज्झपटिबितुरडडपटि बिगच्छच्छज्जत॥
चच्चच्चिकरत्तत्त मना सस्सज्जत।
नन्नन्न वरनाखिन्नन्नरतन बव्बव्बज्जत॥
कक्ककोटिन भांति सों तत्तत्तरकत तुच्छ।
घग्घग्घग्घहरात अति पप्पप्पूरे पुच्छ॥
पप्पप्पूरे पुच्छच्छटाकि बिगुच्छच्छल्लत।
चच्चच्चरण प्रहारि अमित्तत्तलते दल्लत॥
डड्डड्डगरि अडग्गग्गिरि गहि मग्गग्गेरै।
सग्गग्गहत सुभट्टट्टरि परिहट्टट्टेरै॥
तत्तत्तत्तरुन गहि बव्बव्बोलै बोल।
डड्डड्डोल डगन नन्नन्नट्टै लोल॥

नन्ननट्टै लोलल्लपाकि कलोलल्लैं।
धद्धद्धराणि बिधद्धद्धवरि कुरुद्धद्धैं॥
युद्धद्धमाकि बिरुद्धद्धरिचित दद्दद्दैं।
भज्भज्झट्ट मरक्कट्ट भपट्टट्टैं॥

दो० निज दल भागत देखिकै, आये कृष्णकुमार।
पुच्छ हिलावत कपि भयो, करि गर्जना अपार॥

कुं०बानर लखिकै कृष्णसुत, निजचापहि संधान। मारतभये भुजंगसम, लाग्यो कीशहि बान॥ लाग्यो कीशहि बान, गयो शतयोजन ऊपर। दोय पहर महँ डारि, दियो लङ्काके भूपर॥ समर कीन्ह द्वै घरी, निशाचर सो सुकोप भर। पुनि त्रिकूटपर गयो, कूदि अति दुर्मद बानर॥

दो० बहुरि गयो मैनाकपर, सिंहलद्वीप निहारि।
भारतखण्डहि आइकै, हिमनगपै पगधारि॥

प्राग्जोतिषपुर के मधि आई। थिरत भयो बानरकर राई॥
जीति शाल्व कहँ लै बलिभारी। गे मल्लार देश धनुधारी॥
ताहि जीत बलि लै मनभाये। दक्षिण मथुरा के मधिआये॥
सेतुबन्ध रामेश्वर आई। देख्यो सिन्धु बेग अधिकाई॥
लीन्ह किनारे ऊपर बासा। साम्बादिक बुलाइ निज पासा॥
मन्त्रिन के मधि ऊधव बोली। कहतकृष्णसुतनिजमनखोली॥
नाम बिभीषण कौणप राजा। धनी धीर बरबीर दराजा॥
बलकरि बलिकहँ लेवो ताते। होइहि किमि शोभा खोवाते॥

दो० तब ऊधव बोलत भये, तुम देवनके देव।
पुरुषोत्तम भगवान हरि, कृष्णचन्द्र बर भेव॥

तव माया जग अति बलवाना। मोकहँ पूछत मनुजसमाना॥

ब्रह्मादिक अनुशासन करहीं। बन्दत चरण सदा तुव डरहीं ॥
सोइ तुम पुरुष अहौ सुखरासा। हम कह कहैं दासकर दासा ॥
सुनि प्रद्युम्न मसी मँगवाई। तत्र लिखो बर पत्र बनाई ॥
भोजराज कहँ तुम बलि देहू। नातरु लिखत शपथ सुनिलेहू ॥
शरको सेतु बांधि इत आई। बलि लैहौं करि कठिन लराई ॥
लिखि इमि बांधि बाण भगवाना। धरिधनुमाहिंश्रवणलागिताना ॥
करि टंकार तज्यो शर सोई। तीनलोक तब शब्दित होई ॥

दो० तरुण तरणिसम तेजधर, शब्द करत शर जाइ।
लङ्कापति की सभामहँ, गिस्यो अचानक आइ ॥

चकित तमीचर उठि उठि सारे। आयुध धरन लगे विकरारे ॥
पढ़ेउ पत्रकहँ खोलि विभीखन। चाकितचतुरदिशिलाग्योदीखन ॥
तेहिक्षण तहँ उशना चलिआये। पूजि लङ्कपति बचन सुनाये ॥
काकर बाण भोजपति कोहै। कावल ते बलि मांगत सोहै ॥
मोकहँ कहब आप अतिज्ञाता। सुनिकै शुक्र बखान्यो बाता ॥
इक इतिहास अहै अघ भारी। सुनहु तौन निशिचर ब्रतधारी ॥
सनकादिकमुनि चारहु नङ्गे। गे बैकुण्ठ समेत उमङ्गे ॥
तहँजयविजयनगनशिशुजानी। रोकेउ उभय पारषद मानी ॥

दो० तिन्ह तिन्हपर अतिकुपित ह्वै, शाप तुरन्तहि दीन।
असुर होहु अब जाइ तुम, तीन जन्म मतिहीन ॥

प्रथम भये दोउ शापहि पाई। कनककशिपु कञ्चनदृग भाई ॥
दितिके सुवन दैत्य सरदारा। तब हरि कोलरूपकहँ धारा ॥
हिरण्याक्षकहँ भरि रिस मारा। जलधारा पर धरणी धारा ॥
कञ्चनकशिपुहि भे कायाधव। दास हेत तेहि मारेउ माधव ॥
पुनि दोउ भये बिश्रवा धामा। रावण कुम्भकरण यह नामा ॥

तुम्हरे देखत राघव मारा। अब दोउन लीनो अवतारा॥
क्षत्री दन्तबक्र शिशुपाला। अहहिं अजौं दोउ बीर कराला॥
परिपूरणतम कृष्ण कहाई। यादवगणमहँ जन्मे आई॥

दो० अहै बिराजत द्वारका, आप भोजकुलपाल।
धर्मयज्ञ रण शाल्वमहँ, करिहैं दोउ कर काल॥

दिगजयहित तिनके सुत आये। जम्बुद्वीप जितिहैं मनभाये॥
उग्रसेन यादव शिरत्राना। करिहैं राजसूय मतिमाना॥
हरिसुतने यह पत्र पठायो। तिन्हके धनुते शायक आयो॥
जाकर शब्द अब्दलौं गयऊ। तेजसहित महिमण्डल भयऊ॥
रामभक्त श्रीरामहि जानी। प्रमुदितभये निशाचर ज्ञानी॥
राक्षसपति लै सेन अपारा। साजे भेंट बिबिध सरदारा॥
नभ मगते चलके बलऐना। देखत भये यादवी सैना॥
हरिसुत श्यामरूप धनु साथा। कौणप कह्यो जोरि दोउ हाथा॥

दो० नमो नमो भगवान प्रभु, बासुदेव मतिशुद्ध।
संकर्षण प्रद्युम्न प्रभु, नमो देव अनिरुद्ध॥
शफरी कूरम कोल जय, नरहरि बामन नाम।
राम राम अरु राम जय, बुद्ध कल्कि मतिधाम॥

इमि कहि दशशट बिधिनिरिनेशा। प्रद्युम्नहि पूज्यो तेहि देशा॥
कृष्णकुमार हरष उर लीन्हा। प्रेमलक्षणा भक्तिहि दीन्हा॥
मणि शशिकान्तरतनकी माला। पद्मराग बिधिदत्त रसाला॥
पीताम्बर इनामकहँ दीन्हा। लङ्कापतिहि बिदापुनि कीन्हा॥
धरि उर मूरति शीश नवाई। गये बिभीषण आनँद छाई॥
ऋषभ शैल देखत श्रीरङ्गा। काञ्ची गये समेत उमङ्गा॥
कामकोष्णि काबेरि नहाई। सह्य शैल आये यदुराई॥

लखेउ तहां धावत नररङ्गा। पुष्टधूरिधर शिशु बहु सङ्गा॥
ताली देहिं हँसहिं तन पकरै। मुखपरपावहि सम्मुख अकरै॥
लखि हरिसुत ऊधवते कह्यऊ। को यह पुष्ट मत्त पथ गयऊ॥
करहि अनादर बिहँसहि थोरे। सुनि ऊधव भाष्यो कर जोरे॥
परमहंस यह हरि अवधूता। दत्तपूतमति अत्री पूता॥

दो० जा प्रसादते अमित नृप, गहत भये अहलाद।
सहसबाहु अरु यदुपरन, असुरराज प्रहलाद॥

सुनि तेहि बन्दि आसनहिं थापी। बोले हाथ जोरि परतापी॥
प्रभु नाशहु मम संशय एतो। जगमहँ ब्रह्मभेद कह केतो॥
दत्तात्रेय कह्यो समुझाई। जबलौं वस्तु न नेकु दिखाई॥
तबलौं बाती जबलौं राती। बाती का जब चीज दिखाती॥
जबलौं ब्रह्म न जानै भाई। तबलौं जगत चीज दरशाई॥
मुख अरु मुख छाया जलमाहीं। द्वै अज्ञान रीति ते आहीं॥
तथा ब्रह्म अरु जीव बखाने। द्विधा मध्यमायाते जाने॥
रबि उदये जिमि वस्तु लखाई। ज्ञानभये तिमि ब्रह्म दिखाई॥

दो० सो मुनि बन्दि सुदत्त कहँ, प्रद्यूमन बलवान।
तब वे काटहि द्रविड़ महँ, आये बुद्धिनिधान॥

ताकहँ नृप धरमी सत बांका। पूजेउ हरिहि भयो जग शाका॥
श्रीगिरि हरथल गुहहि निहारी। पम्पासर देख्यो धनुधारी॥
गोदावरी भीमरथि होई। गिरि महेन्द्र दल आवा सोई॥
परशुराम रबि सरिस निहारी। बन्दि पूजि बैठे धनुधारी॥
दै आशीष राम द्विज देवता। तेहिदिनदीन्हसबनकहँनेवता॥
योगसिद्धि ते हे नरत्राना। बनत भये छप्पन पकवाना॥

क० दाल भात कढ़ी रोटी बड़ी औ मुँगौरी खीर, सिखरन अव-

लेह बड़ा शकरपाल हैं। फेनी उपरिष्टमधु शीरशाक पापड़न, खाजा खरखरा चन्द्रकला औ सुहाल हैं ॥ बायुपूरा छौंकीदही अमृती जलेबी पेड़ा, लपसी मेवाटीगूभा पूआ पूआमाल हैं। पूरी औ कचौरी सेव घेवर सदूध पूरी, सुभगसिंधानामोद मोदक रसाल हैं १ सिगरे सँजाव गूभा मोहनसुभोग संग, पूरणबियोगी शाक बिबिध प्रकारहैं। लवणकषायमधुतिक्तकटुखट्टेमीठे, फलहू अनेकभाँति जलहू अपारहैं ॥ बिबिधअनसें बने बरसे सुरसखात, बुन्दियां बनाईं और बरफीसुढारहैं। ऐते भोग जेते रहे तेते भयेलेते तहां, देते संख्या कीन्हो दोय तिगुनो अठारहैं ॥ २ ॥

दो० यहि बिधान पशु मृग मनुज, कीन्हो सबन अहार।
पान खाइ मण्डित इतर, नाच रङ्ग चौबार ॥

होइ मुदित प्रद्युम्न सुहाये। परशुपाणि सों बचन सुनाये ॥
हे प्रभु सकल सिद्धि तव पासा। धन्य धन्य गुरु आनँदरासा ॥
राम कह्यो हरिसुतते बाता। पूछत तुम अजान से ताता ॥
लोक हेत महि जन्म तुम्हारा। सुनि पुनि कृष्णकुमार उचारा ॥
सब हरिभक्तन महँ को प्यारो। हरिकर तौन मोहिं निरधारो ॥
राम कहा तब हृदय बिचारी। लक्षण सुनहु दक्ष धनुधारी ॥
निष्किञ्चन हरिपद रत होई। कथाश्रवण कीर्तनकर जोई ॥
मग्न रहै हरिरूप लहर में। सो उत्तम अति हरिजन बरमें ॥

दो० दाँत महान सुजान मति, जीवहि रक्षै जौन।
शान्त सुहृद सद कारुणी, बरत तुच्छ गुण भौन ॥

मंग० पदरज सो सबभूमि करत जो पावन। कृष्णचन्द्रकर भक्त सोई मनभावन ॥ जो बिधिकरपदक्रतुपद नेकु न चाहत। सारव-भूमिभूपपदकी मति दाहत ॥ योगसिद्धिअरु मुक्तिहि दूरि बहावत।

वासुदेवकर पदरज शीश चढ़ावत ॥ अपने कीन्हे कर्मफलहि नहिं इच्छत। आपु करत हरिभक्ति सवनकहँ शिच्छत ॥ हरिपद रजआसक्त सदा सुख साजत। सुख दुख तिनकेतुल्य भक्तिभरि भ्राजत ॥ ताकहँ जानहु भक्त घरेवर धृष्णहि। एकभक्ति तजि और न है प्रिय कृष्णहि ॥ शिव ब्रह्मा अरु शेष रमा अपनोपुर। भक्तिसरिस नहिं है प्रियकेशवके उर ॥ सदा भक्त आधीन चलत तिनके अनु। रुचिदायक जगदीश गहत आनँद मनु ॥

दो० भक्तमुख्य यहि जगत में, जाके वश भगवान।
यहि हित मुक्तिहि देतहैं, नहीं भक्तिको दान ॥

सो० परशुराम के बैन, सुनि भे बन्दत चैन सह।
प्राची गे सह सैन, गङ्गासिन्धु मिलाप जहँ ॥

हरिसुत भूको भार उतारत। आये अङ्ग धनुष टङ्कारत ॥
बनमहँ गह्यो अङ्ग को राजा। लीन्ह भेंट बजवावत बाजा ॥
बृहद्बाहु डामर कर भूपा। सो न दीन्ह बलि कोपस्वरूपा ॥
तब उडीस डामरपुर ऊपर। भेजो साम्बहि जानि धनूधर ॥
तेहि शर सो पुर सब भरिदीन्हो। जहँकै तहँ जन हैं दुख लीन्हो ॥
बृहदबाहु डरि भेंटहि दयो। बन्दि चरण निजघर चलिगयो ॥
लै अक्षौहिणि बङ्ग नरेशा। भिरेउ बीरधनवा भटभेशा ॥
चन्द्रभानु हरिसुत तब कढ़िकै। दीन्हो अरिदल शरते मढ़िकै ॥

दो० सदल बीरधन्वा नृपहि, छादित करि शशिभान।
बिबरणरणमण्डनकस्यो, धुनिकै धनुष महान ॥

छं० धुनिकै महान धनुहि शिर कर चरण दीन्हो काटिकै।
स्यन्दन मतङ्ग तुरङ्ग पैदल बधि दियो महि पाटिकै ॥
क्षणमाहिं तादल माहिं भारी आपगा प्रकटत भई।

कादरहि दुखकर शूर सुखकर लाल लोहूते छई॥
बहु रुण्ड डोलहिं मुण्ड बोलहिं चञ्चु खोलहिं बायसा।
धरु मारु ध्वनि दशदिशनपूरी चलहि असि सररायसा॥
योगिनि पिशाचो ब्रह्मराक्षस भूत और सियारते।
चिकरहिं कपालन पूरि कुण बैताल मुण्ड उच्चारते॥

दो० कोपि बीरधन्वा तबै, मारी गदा कठोर।
ताके लगे न चलतभो, चन्द्रभानु सम जोर॥

हरिसुत मार्यो गदा प्रचारी। गिरेउ बीरधन्वा तब भारी॥
मुखते स्रवत रुधिर गत चेतू। बहुरि उठा लै जीवनहेतू॥
गयो शरण प्रद्युम्न सुभटके। दीन्ही भेंट हरष परकटके॥
ब्रह्मपुत्र नत उतरि बहोरी। पुर आसीम गये दलजोरी॥
बिम्ब नृपतिकहँ मगग गहि लीन्हा। तिन्ह तब भेंट सभै चित दीन्हा॥
कामरूप आये दै डङ्का। राजकुमार पुण्ड्र तहँ बङ्का॥
सदल आइ सो भिरो प्रचारी। तिन्हसों भयो युद्ध तहँ भारी॥
परिघ शूल असि अशनि कुठारा। चले दशो दिशि शस्त्र अपारा॥

दो० पैशाची माया तबै, पुण्ड्र कियो अतिघोर।
राक्षस गुह्यक गन्धरब, घोर करत हैं शोर॥

छ० सस्ससस्सोनित पिवैं धद्धद्धुनि मण्ड।
गग्गग्गेंद कपाल को खक्खेलैं कुषमण्ड॥
खक्खेलैं कुष्मण्ड डुगरि अण्डड्डोलैं।
भम्भम्भट नभ कस्ससस्सकलरकस्ससस्सोलैं॥
बब्बब्बिकट समस्तत्त्तन बब्बब्बोलैं।
बब्बब्बदन बिरुद्धद्धरपर खक्खक्खोलैं॥
गग्गग्गग्गरजैं धवरि छच्छच्छाई ज्वाल।

घग्घग्घनघेरे घने बब्बब्बबहु ब्याल ॥
बब्बब्बबहु ब्यालल्लपकि करालल्लपटैं।
जज्जज्जङ्ग बिजभ्भभ्भभ्भनजुभ्भभ्भपटैं ॥
कक्कुपित मरद्दलन मरद्दपटैं।
पप्पप्पिसित पियत्तत्तत्तन चच्चपटैं ॥

दो० देखि बिकल अति यादवन, कृष्णदत्त धनुतानि।
तज्यो अस्त्र अध्यात्मको, आसुरिमाया जानि ॥

राक्षस आदि रहे खल जेते। ताते भये नाशते तेते ॥
रहे निहारि यदूगण कैसे। प्रकट्यो रबि निहार महँ जैसे ॥
सरथ पुण्ड्र कह बान उठाई। दोय घरी नभ माहँ घुमाई ॥
पटक्यो बहुरि भूमि महँ कैसे। चक्रबात बारिज कहँ जैसे ॥
पुण्ड्र बहुरि सारन तब लीन्हा। भेंट कृष्णनन्दन कहँ दीन्हा ॥
लाख तुरँग अरु अयुत मतङ्गा। दै बन्धो रणमाहिं अभङ्गा ॥
उतरि बिपाशा अरु नद सोना। आये केकय देश सो लोना ॥
तहँ धृतकेतु शौरि बहनोई। श्रुतिकीरति पतिबर नृप सोई ॥

दो० हरितन यहि धृतकेतु तब, कीन्ह बिबिध मनुहार।
मिले मुदित भरिप्रेम चित, पूजा दीन्ह अपार ॥

तहँते देत दुन्दुभी भाये। तब पुरमिथिला के मधि आये ॥
लखेउ कनकमय पुर अति भारी। ऊधवते हरि कहत बिचारी ॥
कासुपुरी यह अहै अनूपा। राजत भोगमती सम रूपा ॥
सुनि ऊधव बोले गुणधामा। जनकपुरी यह मिथिला नामा ॥
इत धृति रहत बिदेह सुधरमी। कृष्णभगत भागवत सुकरमी ॥
सर्बधर्ममय बर ब्यवहारा। जासु अहै बहुलाश्वकुमारा ॥
जाकहँ द्विज श्रुतिदेव समेता। याद करत हरि कृपानिकेता ॥

सुरते अजित मनुज तव काहै। कृष्णभक्ति नित नित्त निबाहै॥
दो० सुनि हरिसुत करते भये, ब्रह्मचारि को रूप।
साथ शिष्य ऊधव लियो, बिरचे बेष अनूप॥
प्रमुदित चले परीक्षन काजा। मिथिला नगरमाहिं यदुराजा॥
देख्यो सुन्दर तहँ की शोभा। जाकहँ देखि इन्द्रपुर लोभा॥
बीर धरे सब शस्त्र रसाला। भाषहिं कृष्ण तिलकधर माला॥
हरिके चित्र लिखे गृह द्वारा। बहुरि नाम बहु बिबिधप्रकारा॥
दशअवतार स्वरूप बनाये। शंख चक्र अरु पद्म लिखाये॥
गदा धनुष के चिह्न अथोरे। घर घर राजहिं तुलसीचौरे॥
तहँके जन हरिजन निरधारे। ऊरध द्वादश तिलक सिधारे॥
कुंकुम रचित पुण्ड्र शिर लागा। बीच छाप गोपी तन रागा॥
दो० गदा कमल की छाप दै, बहुरि देत हरिनाम।
शंख चक्र शफरी कमठ, भुज के बीच ललाम॥
धनुष पाणि नन्दक खड़ग, उरमहँ देहिं सुजान।
हल मूसल अरु अङ्ग महँ, शोभा देत महान॥
स० चार कुमार बशिष्ठ पराशर, गर्ग पुलस्त्यभली मखबल्की। संहित चारु पढ़ैं कितने जन, भारतनाम उचारत कल्की॥ बालमिकी रघुनायकको घर, बेदश्रुती स्मृति पुण्य सुफल्की। गावत गीत बजावत बाजन, प्रेम बढ़ावत हैं मति भल्की॥ नारद ब्रह्म भविष्य सुबामन, बिष्णु खगेश बराह सुमच्छा। अग्नि ब्रह्मांड कुमार पितासह, कच्छप ब्रह्मबैवर्तक अच्छा॥ लिङ्ग सुपद्म गनो मरकण्डेको, भागवतौ सुअठारह स्वच्छा। होहि पुराण गली बिगलीमहँ, जो सुनिकै अघ औगुण गच्छा॥
दो० बिष्णुयज्ञ कोऊ करै, धरै कृष्ण को ध्यान।

कृष्ण कृष्ण मुखते कहैं, राचेउ प्रेम महान॥
कोऊ करै कीरतन नाना। कोऊ नाचै प्रेम महाना॥
ताल मृदङ्ग झांझ अरु बीणा। मन्दिर मन्दिर बजहिं प्रबीणा॥
नवधा भक्ति प्रेमते पूरी। गली गली महि लोटैं रूरी॥
इमि देखत हरिसुत पुरसाजा। सभाबीच अवरेख्यो राजा॥
याज्ञवल्क्य शुक गौतम व्यासा। हम बशिष्ठ सुरगुरु खग पासा॥
बैठे सकल अकलधर भारी। सकल बेदकी सकल सुधारी॥
तहँ तब जनक जनक धृतिनामा। बल पादुक पूजत बलधामा॥
कृष्ण राम यह नाम बिचारैं। अति आनन्द हृदय बिस्तारैं॥
दो० चारु ब्रह्मचारिहि निरखि, उठिकै मुदित नरेश।
कीन्ह दण्डवत प्रेमते, पूजत भये बिशेश॥
अति सुन्दर आसन बैठाई। कहत बचन नृप शीश नवाई॥
सफल जन्म मन्दिर मम भयऊ। तृप्त पितर सुर दुख सब गयऊ॥
साधु सुनिरहेतुक हरिभावन। तुमरेक्षितिबिचरहिंक्षितिपावन॥
ब्रह्मचारि बोले सुनि बानी। धन्य अहो अवनीपति ज्ञानी॥
धन्य पुरी अरु प्रजा तुम्हारी। तब भाषेउ बिदेह ब्रतधारी॥
पुरी प्रजा सुत धन मम नाहीं। ये सब कृष्णचन्द्रके आहीं॥
परिपूरण तम गोपुरबासी। अमितअण्डपति जगसुखरासी॥
हरिबल प्रद्यूमन अनिरुद्धा। चारि ब्यूहभे भूतल शुद्धा॥
दो० काय बचन मन बुद्धिते, तन मन धन जन सर्ब।
कीन्ह समर्पण कृष्ण कहँ, मम मति नहिं यह खर्ब॥
ब्रह्मचारि पुनि कहत बिचारी। हे नृप बिष्णुभक्ति तोहिं भारी॥
देहैं मुक्ति कृष्ण भगवाना। मुनिधृतिमैथिल बचन बखाना॥
हम तौ कृष्णदासके दासा। चहत न मुक्ति भक्तिकी आसा॥

बहुरि बिहँसि बोले ब्रह्मचारी। कहत अहैतुक भक्तिहि धारी॥
तो हरिसुत दिग जीतन आये। निकरे इत काहे नहिं आये॥
सोतौ प्रेमबिबश जग गाये। सुनिकै नृप पुनि बचन सुनाये॥
बिष्णु बिश्वब्यापी सब ठौरे। इत किमि नहिं यह जाना गौरे॥
बोले बहुरि कृष्णसुत बानी। तुम तब लखत निरन्तर ज्ञानी॥

दो॰ जो प्रकटैं नरसिंह से, तौ तौ सत्य महीप।
यह सुनिकै तुम्हरे पिता, नृपमण्डन कुलदीप॥

जलभरि लोचन गद्गद बोले। जो मोहिं कछु हरिभक्ति अमोले॥
तो प्रकटैं प्रद्युम्न कृपाकर। जो हम होहिं कृष्णके किङ्कर॥
जो हरिदास दास हम होहीं। तो प्रकटैं करुणाकर योंहीं॥
नन्दनन्दनन्दन तेहि काला। प्रकटे करुणासिन्धु दयाला॥
ऊधव सहित रूपसो त्यागी। दीन्ह दरश आनँद अनुरागी॥
मेघबरण बारिजसे लोचन। कर प्रलम्ब भवताप बिमोचन॥
पीताम्बर फहरात मनोहर। मुखछबि कोटि इन्दुते नोहर॥
शीतकाल के बाल लाल रबि। तैसी कञ्चन कुण्डल की छबि॥

दो॰ कृष्णसुवन कहँ देखि इमि, जनक महामति ऐन।
आठ अङ्गते नमित ह्वै, बोले ऐसे बैन॥

अहो धन्य अति भाग हमारे। जो यह दर्शन दृगन निहारे॥
जिमि प्रकटे कायाधव हेता। दीन्ह दरश तिमि कृपानिकेता॥
तब प्रद्युम्न कह्यो हरषाई। भूपति धन्य भक्ति अधिकाई॥
अहो कहा कहिये तव बाता। हम देखन हित आये ताता॥
अबहिं होइ सारूप्य हमारा। जग यश आयुष बढ़ै तुम्हारा॥
इमि पूजित तब पितुते सोई। आये निकसि बिरण दुख खोई॥
मागध जीतन हित यदु सैना। गये गिरी ब्रज पुर जग जैना॥

सुनिकै परम कोप विस्तारा। कहत सभामहँ जराकुमारा॥
दो॰ तुच्छ सकल यादव अहैं, कादर कादर चाह।
सो अब जग जीतन चहत, मूरख खल शिरनाह॥
मम भय तजि पुरसह संतापू। गो समुद्र महँ याकर बापू॥
कीन्हो भस्म प्रवर्षण शैला। छल करिगयो द्वारका गैला॥
वधि तेहि सह यादव समुदाई। जिमि यह वंशहि जाइ नशाई॥
इमि कहि चलेउ परम रिस कीन्हे। तेइस अक्षौहिणि सँग लीन्हे॥
गज समूह रद चार करारे। सिन्दुर चर्चित बदन सुधारे॥
शुण्ड उठाइ नचावत भारे। चलहिं उखारत विटप अपारे॥
तिन महँ लसहिं मगधपति कैसे। मेघ यूथ महँ मघवा जैसे॥
रथ ध्वज हय चामर सह राजहिं। चलत चक्र बहु बाजे बाजहिं॥
दो॰ बायु बेगसे तुरँग सब, बिबिध बरण उरहार।
चमर बिराजत चपल अति, ऊपर सुभट सवार॥
अ॰ डड्डड्डड्डा बजैं बब्बब्बारण भुण्ड।
भभ्भभ्भभ्भटभीर चाढ़ि फफ्फफ्फेकैं शुण्ड॥
फफ्फफ्फेकैं शुण्डड्डगन बितुण्डड्डगरैं।
बब्बब्बीर निषङ्ग गहि चतुरङ्गग्गगरैं॥
भभ्भभ्भेरि मृदङ्गग्गराजि रवाबब्बगरैं।
सस्सस्सङ्ग विभ्भभ्भभ्भाकि अरुभ्भभ्भभ्भगरैं॥
दद्दद्दद्देखिकै सस्सस्सत्रू सैन।
जज्जज्जादव डरे जज्जज्जग जैन॥
जज्जज्जगजैनन्निरखि अनन्नग्गग्गज्जै।
सस्सस्सङ्ख बजन्तन्तिहुँपुर डड्डर सज्जै॥
कक्कक्कातर दद्दद्दरकत दिग्गज लज्जै।

जज्जरासुतन्तन्तेहि क्षण भम्भय छज्जे ॥
दो० दश अक्षौहिणि सैन लै, साम्ब भिरतभो जाय।
तुमुल युद्ध तेहि क्षण भयो, दुहुँ दल सों नरराय ॥
केतो बीर मल्ल कहँ धरिकै। हय चढ़ि मरदहिं गर्जन करिकै॥
शक्ति अशनि शर शूल कृपाना। मुद्गर भिन्दिपाल अधिकाना ॥
मारहिं चक्र बक्र रण भारे। शत्रु सैन दिशि चलहिं प्रचारे ॥
छुरी कुठार पग्र कहँ झेलहिं। मारि चपेटन्ह भूमि ढकेलहिं ॥
तोमर गदा परे महिमाहीं। तेहि गहि घने करहिं रणताहीं ॥
बहु कबन्ध धावहिं तेहि बारा। मारु मारु धरु मारु पुकारा ॥
कन्ध बिगत कोउ बाहु बिहीना। समर समौरिनके सँग कीन्हा ॥
बिद्याधर गन्धरबनि बरहीं। ममपति कहत महत सुख भरहीं ॥
दो० फिरहिं न केते समरते, क्षत्री अति रणधीर।
भेदि भानुपुर जात हैं, ऊरध मरिकै बीर ॥
क्रोधभरे बहु बीर दपट्टहिं। मारु मारु कहि प्रबल झपट्टहिं ॥
कसि कटि केतिक जाइ लपट्टहिं। केते काटत मस्तक झट्टहिं ॥
कटक माहिं केते कटकट्टहिं। मारहिं मरहिं लरहिं नहिं हट्टहिं ॥
केते लरहिं गहे असि पट्टहिं। बहु रणधीर परस्पर टुट्टहिं ॥
धरु धरु मारु मारु यह रट्टहिं। बढ़ेजाहिं नहिं नेकु पलट्टहिं ॥
बहु शोणितके कीच रपट्टहिं। केते गिरत उठत भट झट्टहिं ॥
केते कादर रणते नट्टहिं। केते अभिरैं बिगत कपट्टहिं ॥
स्यार गीध मिलि शोणित चट्टहिं। गीध आंतलै लरत प्रकट्टहिं ॥
दो० यहि बिधान रण घोर भो, दुहूँ ओर भूपाल।
साम्ब दल्यो मागध दलहि, त्यागि बाण बिकराल ॥
केते बीर लगे शर नक्कहिं। केते मारन हेत लपक्कहिं ॥

केते खड़े मारु धरु बक्कहिं। केते सभय लगी उर जक्कहिं ॥
केते रण मदमत्त बलक्कहिं। केते छये वीरपन छक्कहिं ॥
केते शूल कृपाण चमक्कहिं। केतेके उर रुधिर बमक्कहिं ॥
केतेके उर सभय धरक्कहिं। केतेके वरकेतु फरक्कहिं ॥
केते धीरे समर सरक्कहिं। केते तड़िता सरिस तरक्कहिं ॥
केते भरि अतिकोप करक्कहिं। केते बर्षहिं अवल अहमक्कहिं ॥
केते धारे तीर तमक्कहिं। केतेके तिरशूल भमक्कहिं ॥

दो० यहि विधि नाती भानुको, समरभाल आसीन।
मारिभाल भेदे भटन, परम पराक्रम वीन ॥

सो लखि मगधभूप बलवाना। बढ़िकै भिरो तजत बहुबाना ॥
बढ़ै दलहि बजवावत भेरी। बधे अमित रणधीरन टेरी ॥
साम्ब तड़पि दश शायक मारे। काटि धनुष डोरी महिडारे ॥
तब मागधपति गहि धनु दूजो। दश शरते प्रभुपुत्रहि पूजो ॥
ताते काटि धनुष महिडारो। चार बाणते बाजिन मारो ॥
एक बाणते ध्वजा खसाई। शतते सुरथ दीन्ह महिनाई ॥
गरज्यउ अमित बाण पुनि मढ़िकै। तब हरिसुत दूजे रथ चढ़िकै ॥
त्यागत तीरसमूह अथोरा। जरासन्धकर स्यन्दन तोरा ॥

दो० तबै बृहद्रथ सुतबली, चढ़ि मतंग रणधीर।
घन समान बरषन लग्यो, कोटिन तीक्षण तीर ॥

इन्द्र समान वितुण्ड चलाई। हरिसुत कर रथ लीन्ह उठाई ॥
साम्ब समेत रथहि गजभारी। नव योजन पहँ दीन्यो डारी ॥
हाहाकार भयो यदुदलमें। तब गदबीर गयो सो थल में ॥
परमधीर अरि जीति अचूका। झपटि कुञ्जरहि मारेउ मूका ॥
कुञ्जर गिर्यो कुलिश समलागा। उठिकै पुनि पहार दिशिभागा ॥

सो लखि हँसे दुहूँदल वारे। तब करगदा जरासुत धारे॥
मास्यहु गदा गदहि रिसपागी। तासु चोट हरिअनुजहि लागी॥
लक्षभार को आयुध सोई। मास्यउ जरासुतहि गद जोई॥
दो० ताके लागे महि गिस्यो, उठि पुनि गदहि उठाइ।
शतयोजन फेंकत भयो, व्योम माहिं बरियाइ॥
गिरिकै सोऊ शत्रुहि लेको। दश शतयोजन ऊपर फेंको॥
गिरि मागध पुनि भिस्यो प्रचारी। गदते गदत लेत मैं मारी॥
तेहि क्षण साम्ब तहांते आई। पटक्यो मगधहि भूमि भँवाई॥
सो लखि प्रबल जरासुत योधा। उठिकै कीन्ह कालसम क्रोधा॥
मूका एक साम्ब कहँ मारा। दूजो गदकहँ गरजि प्रहारा॥
ताते गिरे मुरछि महि दोऊ। तेहि क्षण चेत कीन्ह नहिं कोऊ॥
हाहा शब्द भयो तहँ भारी। तब प्रद्युम्न चाप टंकारी॥
बढ़ि अभिरे बजवावत भेरी। साथ सुभग अक्षौहिणि घेरी॥
दो० गदा गदा लै मगधपति, प्रबिशो अरिदल माहिं।
जैसे अग्नि सरूपधरि, तिनकानन महँ जाहिं॥
अ० भम्भम्भम्भेदत भटन गग्गग्गदा प्रहार। कक्ककक्काल सम जज्जज्जराकुमार॥ जज्जज्जराकुमार्रंन मदहार्रज्जै। दद्दलन बितुण्डड्डगरि तुरङ्गग्गज्जै॥ सस्सस्सुरथ सरब्बब्बहत गरब्बब्बज्जै। पप्पप्पच्छगच्छच्छच्छटकि सुभ्रच्छच्छज्जै॥
दो० इत मागधसैना झुकी, उत मागधपति चण्ड।
यदु असखण्ड सागर मथ्यो, बर उदण्ड दोदण्ड॥
स० इमि यादवको अहवाल लखी दुख भो निजधाम तबै बलकों। तुरतैं प्रकटे सोइ संगर मैं फैलाय दियो अपने हलकों॥
सब मागध सैनहि खींचिलियो पुनि चण्ड प्रहारेउ मूसलकों।

शत योजनलौं सब वीर परे सब नाश कियो अरिके दलकों ॥

दो० यदुदेवन दुन्दुभि दयो, वरषे नभते फूल।
जै जै धुनि दशादिशि भये, गो यादवको शूल ॥

प्रद्युम्नादिक योधा भारे। प्रमुदित शीश चरणपर डारे ॥
दै आशीश हलायुध प्यारे। तुरतहि द्वारावती पधारे ॥
तब सहदेव तासु सुत आयो। सुन्दर भेंट साजिकै लायो ॥
रथ द्वैलख दशकोटि तुरङ्गा। दीन्हे साठ सहस्र मतङ्गा ॥
कीन्ह दण्डवत विविध प्रकारा। गये भवन मागध सरदारा ॥
हरिसुत फल्गू गया नहाई। जीतन चले देश समुदाई ॥
हारि जरासुत की सुनि काना। सभय भेंट नृप देहिं महाना ॥
सरित गोमती सरयू न्हाये। गङ्गातट काशी महँ आये ॥

दो० पार्ष्णिग्राह काशी नृपति, सुनिकै यदुबल कान।
सभय भेंट देतो भयो, परम वीर बलवान ॥

पुनि कोशलपुरगे हरषाई। नन्दीग्राम बसे सचु पाई ॥
तहँ हरि ससुर नग्नजित भूपा। नातिहि पूज्यो प्रेम स्वरूपा ॥
उत्तरेश दीरघतम नामा। गज नयपाल नाथ बलधामा ॥
बरहिनरूप विशालकुमारी। भेंट दीन्ह अतिप्रबल विचारी ॥
नौमिषपति हरिभक्त सुजाना। प्रेम सहित पूज्यो विधि नाना ॥
गे प्रयाग पुनि न्हाय त्रिवेणी। दीन्हों दान जानि सुखश्रेणी ॥
गज द्वै अयुत लाख दश घोरे। गऊ पद्म श्रुतिलख रथ जोरे ॥
कनकभार दश रतन द्विलाखा। एकलाख पुनि मोती राखा ॥

दो० बसनदीन्ह दशलाख नृप, अरु द्वै लाख दुशाल।
पूजो विप्रन प्रेमभरि, नन्दलाल के लाल ॥

कन्तितपति पौण्ड्रक विख्याता। कृष्णशत्रु सोउ भयो डिराता ॥

सोउ बलिदेत भयो भरिशङ्का। तब गे कानकुब्ज दै डङ्का॥
तहँते लै बलि गये समाजा। कपिलसुदेश द्रुपद जहँ राजा॥
सोऊ भेंट दीन्ह हरषाई। तब हरिगे पुर बिन्द बजाई॥
सगरे प्रजा डरे भयरूपा। दीरघबाहु तहाँकर भूपा॥
संधि करनसो द्रुत चलि आयो। मित्र होय वर बचन सुनायो॥
तुम सबप्रबल अहहु हम जाना। करहु मनोरथ मोर महाना॥
काँचपात्र महँ जल भरिटाँगी। मारहु बाण बीर बिधि पागी॥
दो० पात्र हिलै नहिं नहिं फुटै, जल न गिरै नहिं जाइ।
बान काँच घटबास मैं, सूक्षम अर्ध समाइ॥
तेहि देहौं कन्या मैं भाई। नारद यह म्वहिं कहा बुझाई॥
सो सुनिकै नरेश की बानी। चकित भये यादव भटमानी॥
तब प्रद्युम्न बांस मँगवाये। हिंडोला से उभय गड़ाये॥
ऊपर बाँधि रखी छबिछाये। मध्य सजल शीशी लटकाये॥
देखि ताहि पुनि मारेउ बाना। ऊपरते अध होइ समाना॥
आधो मधि बाहर पुनि आधो। सोख्यो बारि मन्त्र भल साधो॥
भाजन लेत न फूटा सोई। गिरा न जल यह अद्भुत होई॥
दूजो शर पुनि हरिसुत मारा। तैसइ भयो सुभटन निहारा॥
दो० दूजी शीशी टाँगिकै, साम्ब चलायो बान।
आधो कटि राजत भयो, घनरबिकिरणिसमान॥
तब युयुधान बाण यक मारा। फूटो काँच बही जल धारा॥
हँसे सकल यह बचन बखाना। तुमहो दशशतबाहु समाना॥
अर्जुन भरत राम शिव करना। द्रोण भीष्म भार्गवधुनभरना॥
दूजी शीशी धरि अनिरुद्धा। नीचे जाइ तज्यो सुर सुद्धा॥
सो नीचे ते ऊरध गयऊ। पुनि उर पुर सोहत नभ भयऊ॥

गिरा न फूटा हिला न डोला । साधुबोल सबहिन मिलि बोला ॥
दीप्तिमान निज बाण प्रहारा । भेद काँच कढ़िकै शर सारा ॥
शिला भेद यक बहुरि समाना । जल न गिरा न फुटा थहराना ॥

दो० भानु तबै दृग मूंदि कै, तज्यो आपने बान ।
शीशी उलटी सी कियो, सीधी बहुरि सुजान ॥

बहुरि बीचि सो बाण समाना । जल नहिं गिरा काँच थहराना ॥
अद्भुत करम भानु कर जाना । साधु साधु यह सबन बखाना ॥
इमि हरिसुवन अठारह बारे । भेद्यउ कांच बीर विधि धारे ॥
चकित बिन्दु नृप बिन्दु न गिरेऊ । अतिहि अनन्द ब्याहहित थिरेऊ ॥
सबहिन कर करि दीन्ह बिवाहू । मङ्गल कीन्हो दीरघबाहू ॥
बन्दी लगे बजावन गावन । सुमनस लगे सुमन बरषावन ॥
गत षट अयुत सुरथ दश लाखा । चार लाख शिविका कहँराखा ॥
अर्बुद हय दासी लख दीन्हा । तेहि हरि बिदा द्वारका कीन्हा ॥

दो० बिदा होइ ससुरारि ते, गे निषाद पुर मीन ।
तहां सैनजित नाम नृप, भेंट मुदित चित दीन ॥

बृहदसेन भद्र कर राजा । पूज्यो परम प्रेम चित साजा ॥
मथुरा गये यदूजितअंशी । निबसत शूरसेन मधुवंशी ॥
मिलि तिनते निजपुरी निहारी । कीन्ह प्रदक्षिण सुखधरि भारी ॥
गोप नन्द यशुमति बृषभानू । गोकुल सबन मिले भगवानू ॥
सबन कार्ष्णि पूज्यो गुरुजानी । पूजेउ तिन्हहिं नन्द नृप ज्ञानी ॥
कछुदिन कीन्ह कृष्णसुत बासा । चले बिदा ह्वै सहित हुलासा ॥
भेंट लेत मग के महिपनते । जीतत चले सकल महि पनते ॥
कौरव जीतनहित मुद छाये । सकल हस्तिनापुर चलि आये ॥

दो० जहँ कौरव सैना परी, असीकोस के मांहि ।

तामधि चालिसकोस सो, खास सैन निवसाहि ॥
बीसकोस महि नगर बनाये। जहँ बहु बनिक धनी दरशाये ॥
दरजी औ रँगरेज कुम्हारा। बसन बनावनहार सुधारा ॥
हलवाई रतिनी औ धुनियां। खटिक हजामो पटुवा बनियां ॥
बारी माली और लहेरे। धोबी तेली लखे घनेरे ॥
तंबोली सोनार कसेरे। भड़भूंजे अरु घने चितेरे ॥
ननिबेधीहः काक लुहारा। बहु सराफ़ बज्जाज निहारा ॥
इन सब रीति बने बैपारी। चहल पहल सब महल निहारी ॥
भानुमती बिरचहिं बहु जालू। नट नाचहिं कहुँ नाचहिं भालू ॥
दो० कहुँ नृत्यहिं बानर अजा, डमरू करन बजाय।
बन्दी मागध सूतके, गावहिं कहुँ समुदाय ॥
कहुँ करिकै द्वादश शृङ्गारा। बारबधूकर नाच अपारा ॥
कोउ कछु कहै अहै कछु होई। पुरमहँ परम कोलाहल होई ॥
हे नृप सिन्धुसहित नृप जेते। कौरवके अनुवर्ती तेते ॥
चक्रवर्ति राजनके राई। इनकर बल कछु कहो न जाई ॥
तिनके दीन्हें यदु समुदाई। भूप भये हरि जासु सहाई ॥
तापुरमें हरिसुतकी सैना। प्रबिशी छबि देखत छबिऐना ॥
भयउ कोलाहल तहँ तब भारी। डरे सकल पुरके नर नारी ॥
तेहि क्षण ऊधव कहँ समुझाई। भूप सभा भेज्यो नरराई ॥
दो० ऊधव तेहिक्षण जाइकै, बुधि बिबेक अधिकाइ।
धृतराष्ट्रहि देखत भये, सह मन्त्री समुदाइ ॥
सभामाहिं महिपाल निहारा। सूरसूर दितसूर अपारा ॥
जहँ मदस्रवत चपल गज ठाढ़े। कस्तूरी मण्डित मुख गाढ़े ॥
लोलकरन सिन्दूर रँगाये। दशदिशि बरखाखन सरसाये ॥

तिनमहँ श्रीधृतराष्ट्र महीपा। मन्त्री मण्डित कुल गुरुदीपा॥
भीषम करण द्रोण कृपराजहिं। शल्य धौम्य बाह्लीक विराजहिं॥
भूरिश्रवा संजय छवि साजहिं। विदुर दुशासन शकुनी गाजहिं॥
लक्ष्मण अश्वत्थामा छाजहिं। सोमदत्त मखकेतु सुभ्राजहिं॥
दुर्योधन सानुजन समाजहिं। लखि जो सभा पुरन्दर लाजहिं॥

दो० धरम धीर धृतराष्ट्र अति, बर धृतराष्ट्र महीप।
देख्यो सकल समाजसह, मतिदराज कुलदीप॥

क० काल जिन जीत्यो सो विदित दशभाल जग, तासु बाहु सहस उतारिलीन्हों मद है। परसा धरनहारो ताहुको विदारि डारो, हारो सोऊ जाते कैसो शूरमाकी हद है॥ ताहीते रिपूनपै न भीषम समान कोऊ, भीषम दिनेश जैसे ग्रीषम विशद है। गङ्गा-कुमार दास गिरिधर उदारकेरो, बारपन ब्रह्मचारी धनुधारी जद है॥

दो० ऐसे ऐसे बीर बर, जासु सभा के माँह।
तासु बड़ाई को करै, सत्य सुनहु नरनाह॥

क० तैसेई महानबीर द्रोण द्रोही दण्डदाता, जाके चेला विदित जहान कपिकेतु हैं। कर्णके समान ह्वैहै कौन रण करनवारो, दुर्यो-धन तैसोई प्रचण्ड अरिहेतु हैं॥ अश्वत्थामा विदित कृपाल जग जाने धीर, सकल सुभट भवसागर के सेतु हैं। एक एक चाहैं ढाहैं मंदिर सुरेशहूको, चक्रवर्ती कौरव महान शोभा देतु हैं॥

दो० इमि निरखि कुरुनाथ कहँ, करहिं जोरि तेहिकाल।
ऊधवजू भाषत भये, बाणी परम रसाल॥

श्रीप्रद्युम्न कह्यो यह गाथा। उग्रसेन नामक यदुनाथा॥
जम्बुद्वीप के राजन जीती। राजसूय करिहैं भरि प्रीती॥
जीते घने इतै नर शङ्का। मागध चैद्य शाल्व रदबङ्का॥

इन आदिकन जीति इत आये। दीजै बलि उर हरष बढ़ाये॥
यदुकुरुकी न कलह जिमि होई। आप चतुर गुण कीजे सोई॥
क्षमहु मोर भाषा यह भाषा। दूत कहै स्वामी कर भाषा॥
जो तुम कहिहौ सो हम कहिहैं। हे नृप नेकहु गोइ न रहिहैं॥
जब इमि ऊधव बात बखाने। सुनिकै कौरव अतिरिसियाने॥

दो० लगे ओंठ फरकाइबे, करते मलि कर बीर।
कहत सुयोधन आज सब, जे जोधन महँ धीर॥

क० कालकी करालगती आज है दिखात अहो, स्यार आज मारत मृगेन्द्र शिर लातरी। मेरो दियो खात मेरो कियो भूप जग ख्यात, सरप समान पय पीकै करै घातरी॥ कादर सदाके नहीं आदर भटन बीच, बांदर सुकूदि आज बादर उड़ातरी। ऐसे खल अबल बिचारै हैं अभल बात, जाके बीच बैठि खात छेदैं सोई पातरी॥

दो० भीष्म द्रोण कृप करण जहँ, तहँ मांगत हैं भेंट।
लरिका सों यह कहहु तुम, हम न देब कछु ठेंट॥

जाहिंभवनफिरिरखिनिजलाली। नतु यमसदन जाय हैं हाली॥
सुनि ऊधव हरिसुत ढिग आये। तिनको सब बिरतान्त सुनाये॥
सुनि प्रद्युम्न कोपते पूरे। बोले बचन बीर से रूरे॥
हतिहौं कुरुनसेन ते आजू। जो मतिनिबल गही दुखसाजू॥
मम शरते मरिहैं ते कैसे। अध अङ्गज निज मनते जैसे॥
तब यादव सब छपन करोरा। चले सङ्ग चतुरङ्ग अथोरा॥
उततें चली कौरवी सैना। सङ्ग बीर कोटिन बलऐना॥
साठि सहस गजसहित पताका। चले सुभूषित जिमि नभराका॥

दो० साठ सहस कुञ्जरन पर, डङ्का बाजत भूप।
द्विलख द्विरद पर सुभट बहु, चले भयानक रूप॥

ते सब धरे लोह कर बरमा। कर महँ भल्ल भयानक करमा ॥
चामीकर भूषित लख दोई। चले द्विरद चढ़ि बर छवि सोई ॥
तितनेइ गज पर सुभट अभीता। सुमन विभूषित अम्बर पीता ॥
रक्तबसन भूषण गजभूला। द्वैलख चले सुभट रिपुशूला ॥
तैसेइ हरित कृष्ण सित पीरे। चले द्विरदपर बर भट धीरे ॥
कोटिन गज इमि चले रसाला। अरु कोटिन छोटे नरपाला ॥
रथ चढ़ि चारु पताका राजे। कोटिन सुरथ साजवर साजे ॥
अङ्ग बङ्ग सैन्धव के घोरे। अमित सैन मधि इत उत दौरे॥

दो॰ इतनी सैना भूपकी, निकरी सुनिये भूप।
भीषम करणादिकनकी, कोटिन और कुरूप ॥

लोह कवच धरि बहु सामन्तक। आये लरनहेत अरिअन्तक ॥
मागध बन्दी सूत सुजाना। कौरव के गुण करहिं बखाना ॥
भेरी शङ्ख मृदङ्ग जुझाऊ। पूरिरहो बाजनकर राऊ ॥
सिंहकेत घोरे अवदाता। मुरछल पंखा चँवर बिभाता ॥
परत चार योजन लव छाया। इन्द्रदत्त अस छत्र सुहाया ॥
ताके नीचे सुभट सुयोधन। लिये संग यमगणसे जोधन ॥
तथा सकल दुर्योधन भाई। चढ़ि चढ़ि सुरथ चले हरषाई ॥
सोमदत्त भीषम कृप द्रोना। शल्य यज्ञध्वज बिदुर सलोना ॥

दो॰ कर्ण धौम्य लक्ष्मण सकुल, दुश्शासन बाह्लीक।
अश्वत्थामा भूरिसह, सुन्दर सुभट अनीक ॥

तिनमहँ लसत सुयोधन कैसे। मरुतन माहिं मरुतपति जैसे ॥
द्वै पृतना पाण्डवन पठाई। कुरु सहायहित सोउ सँगआई॥
षोड़श अक्षौहिणि लै साथा। चल्यो सुयोधन कुरुकुलनाथा ॥
अमित और औरन की सैना। चली प्रमाण तासु कछु हैना ॥

घरकी घरणि तिमिर दिशि छायो। धूर सूर पै नूर छपायो॥
शब्दित भयो सकल आकासा। संशय सुरउर प्रकट खुलासा॥
तेहि क्षण उमड़ि उभयदलराजा। लरनलगे धरि धीर दराजा॥
गजमर्दन लागे परसैना। नृत्यहिं तुरँग परम बलऐना॥

दो० हयते हय गजते द्विरद, रथते रथ रण होइ।
नरते नर नृपते नृपति, लरहिं बरोबर जोइ॥

सूत सूत गज बाण महावत। समर करहिं उरकोप बढ़ावत॥
खड्ग कुन्त शर शक्ति कुठारा। मुद्गर गदा पट्ट करधारा॥
भिन्दिपाल अरु तोमर तोपा। मुसल सुचक्र समर आरोपा॥
यहि बिधि भयो भयद रणभारी। लागी होन परस्पर मारी॥
तहँ प्रद्युम्न धनुष टंकारी। भिरे सुयोधन नृपहिं प्रचारी॥
भट अनिरुद्ध भीष्म के साथा। दीप्तिमान सो कृप द्विजनाथा॥
भिरे साम्ब बाह्लीक समरमें। द्रोण भानु अभिरे तेहि थरमें॥
बृहद्भानु अरु शल्य नरेशा। मधुराधेय भयानक भेशा॥

दो० अश्वत्थामा बृक भिरे, अरुण धौम्य मुनिनाथ।
बेदबाहु शकुनी लरे, लक्ष्मण पुष्कर साथ॥

संजय और सुनन्दन सङ्गा। गद अरु बिदुर कीन्ह रणरङ्गा॥
दुश्शासन श्रुतदेव सुशरमा। भूरि साथ अभिरे कृतबरमा॥
उद्धव अरु बिकर्ण रणशूरा। अभिरे यज्ञकेतु अक्रूरा॥
यहि बिधि जुटे सकल जयकेतू। तेहिक्षण धुनिकमानझखकेतू॥
समरबार बारिद से बरखत। भे अरि प्रबल पराक्रम परखत॥
दुर्योधन हरिसुवन परस्पर। भिरिकै करत भये रण दुष्कर॥
अमित अश्वरथ गज बधिडारे। दुहुँन दुहूँ दल प्रलय पसारे॥
महाराज तेहिक्षण सुनि लीजै। दुहुँदलके अगणित भट छीजै॥

दो० गिरहिं समर महँ टूटिकै, अगणित मोती भूप ।
अम्बर परते अवनिपै, ताराके अनुरूप ॥
इमि भो समर सुनहु दे काना । तेहिक्षण नृपसुत कुरुपरधाना ॥
अहि समान दश शायक मारी । काटेउ कवच कार्ष्णिकर भारी ॥
भेदि वरम शर हृदय समाने । रविमहँ किरण समान दिखाने ॥
सहस बाण तड़ितासे मारी । बधे सहस रथके हय भारी ॥
शतशर मार धनुष कहँ काटो । रथहि तोरि हरिसुत कहँ डाटो ॥
तब प्रद्युम्न सुरथ चढ़ि दूजे । धनु हरिदत्त धारि रणपूजे ॥
एकबाण मन्त्रित वर मार्‍यो । सो अरि सुरथ शीशपर धार्‍यो ॥
एक मुहूरत व्योम फिराई । पटक्यो बहुरि भूमि पर आई ॥
दो० गिरे सुरथ चूरण भयो, मरो हयन सहसूत ।
पुनि दूजे रथ चढ़िभिरो, दुर्योधन मजबूत ॥
गनिकै दश शर सर्प समाना । मारेउ हरिपुत्रहि रिसियाना ॥
ताकहँ सहि इक शायक हयऊ । सो रथ कहँ ऊपर लै गयऊ ॥
दौरि दूसरो शर तब मारो । पुनि तीजो शर ताकि प्रचारो ॥
लै तेहि सुरथ सहित शर सोई । गो धृतराष्ट्र धाम वर जोई ॥
तहां गिरायो रथ कहँ भारी । मुरछि परो महिपै व्रतधारी ॥
तेहिक्षणइमिसुजीतिकुरुनाथहि । अरिदलदल्योचपलकरिहाथहि ॥
हाहाकार भयो कुरुदल में । सोलखि भीष्मभट तेहि थल में ॥
धनु टङ्कार चले शर छाड़त । शिखिसमअरिदलबनभयमाड़त॥
दो० श्वेतमश्रु शिर त्रानधर, गौर किरीटी वृद्ध ।
देवव्रत कबिगङ्गसुत, वैष्णव शास्त्र समृद्ध ॥
सो अनिरुद्ध सैन महँ धसिकै । बकरिन माहिं बाघसे लसिकै ॥
शरते छाइ दियो वर सारा । हय गज रथ पदाति बहु मारा ॥

आयुध धरे बिदारन चाहत । तबते बध्यो अमितभट बाहत ॥
ऊरध अधो बदन करि गिरहीं । छिन्नाभिन्न तन प्राण न थिरहीं ॥
कवच कटे शिर त्राण बिहीना । भट रथ हय ध्वज चूरण कीना ॥
भूषण शस्त्र रुधिर की सारी । करि अस्तन शरकेश करारी ॥
भोजन करत प्राण अरिनेता । महामार्य जनरूप समेता ॥
कुण्डल रथके अङ्ग कटेजे । सेंदूरण रणधीर डटेजे ॥

दो० भूत प्रेत नृत्यनलगे, जम्बुक गिद्ध उड़ाहिं ।
शम्भुमालाहित शूरशिर, बहु पिशाच लै जाहिं ॥

अ० गग्गग्गग्गोमायु बहु खक्खक्खेलैं सम्बन्ध ।
जज्जज्जोगिनि पिवैं भम्भम्भ्रमैं कबन्ध ॥
भम्भम्भ्रमैं कबन्ध मकि मद धद्धस्सैं ।
बव्बव्बीर असल्लल्लपकि करलल्लस्सैं ॥
गग्गग्गराजि सव्बव्बव्बमकि अरव्बव्बस्सैं ।
कक्कीट बिलक्खक्खेल करक्खक्खस्सैं ॥
सस्सस्सोनित सरितदद्दिशान बिरज्ज ।
घग्घग्घग्घोरेघने डड्डड्डुबैं गज्ज ॥
डड्डड्डुबैं गज्जज्ज बिरज्जज्जोधा ।
सस्सस्सुभट बधिक्ककरन अधिकक्कोधा ॥
चच्चाप बिकस्ससुभट अकस्सस्सोधा ।
तत्तत्तमकि तरत्तव तौन परव्बव्बोधा ॥
धद्धद्धनुधर भरै घग्घग्घने इकट्ठ ।
सस्सस्सस्संग्राम मैं पप्पप्पूरे ठट्ठ ॥
पप्पप्पूरे ठट्ठरकि सुलट्ठट्ठोकैं ।
बव्बव्बीर बिकट्ठठौर इकट्ठट्ठोकैं ॥

शश्शस्त्र विगट्टट्टसकि सुसट्टट्टोकैं।
गग्गग्गाहि हट्टट्टलि इकट्टगट्टोकैं॥
भम्भम्भीषम बानते गेवहु जज्जज्जुम्भक।
भम्भम्भट मेवसो सस्सस्समर अरुम्भक॥
सस्सस्समर अरुम्भम्भमकि असम्भम्भम्भकैं।
कक्कुपित विम्भम्भम्भमकि अबुम्भम्भम्भकैं॥
भम्भम्भोल सुभम्भम्भपटि सखुम्भम्भमुकैं।
पप्पप्रबल अबुम्भम्भम्भपटि विजम्भम्भम्भकैं॥

दो० इहि विधि भीषम के समर, भीषम भई सभूमि।
बारिद सम बरष्यो शरहि, समरधुरंधर भूमि॥

छ० जादिशि भीषम लखत काल ताको जनु आयो।
याहि विधान भरि जोर सकल यदुदल विचलायो॥
सो लखिकै अनिरुद्ध युद्ध में धनु टङ्कार्यो।
मारि अनेकन बाण काटि धनु भूपर डार्यो॥
तब भीषम धनु आनिधरि तिनसों रण करतेभये।
बालक जानि सुशान्तचित हस्तलोल लरतेभये॥

दो० संगरमैं शन्तनुसुवन, ब्रह्मअस्त्र कहँ छांड़ि।
मर्ख्यो सैना यादवी, दशादिशिमैं भयमाड़ि॥

तब अनिरुद्ध जानि रणरोगा। करतभये ब्रह्मास्त्र प्रयोगा॥
द्वै ब्रह्मास्त्र भिरे रण कैसे। सूरयदोयन हत द्युति जैसे॥
भीषम अरु प्रद्युम्नकुमारा। धुनि धनुषहि बरषे शरधारा॥
मण्डल सरिस शरासन दोऊ। शरकर अन्तर पाव न कोऊ॥
गहिकर लाखभार की गदा। मारेउ हरिसुतसुत कहँ तदा॥
तेहि अनिरुद्ध हाथ महँ धारी। गङ्गसुतहि प्रचारि पुनि मारी॥

भीषम ताहि लियो निज ऊपर। गिरे मुरछि रविके सम भूपर॥
इमि बूढ़े कौरवहि निहारी। कोपे कृपाचार्य धनुधारी॥
दो० शक्ति चारु तड़िता सरिस, तज्यो तुरन्तहि डाटि।
दीप्तिमान असि मारिकै, दीन्हों बीचहि काटि॥
कृपाचार्य तब अति रिस कीन्हो। ताकहँ विरथ विधनु करिदीन्हो॥
द्रोण भानुते भिरि बलमाड़ा। अद्रिअस्त्र रिस करिकै छांड़ा॥
ताते निकरि निकरि गिरि भारे। अमित किये यादव भटसारे॥
भानु देखि दल चूरण कोप्यो। तजिअनिलास्त्रअनिलआरोप्यो॥
ताते उड़े शैल सब भारी। द्रोण भानु तब भिरे प्रचारी॥
तब बाह्लीक क्रोध बिस्तारो। अग्निअस्त्र यदुदलपर मारो॥
परजन्यास्त्र साम्ब तब मारी। शान्ति कीन्ह सो आपदभारी॥
तेहि क्षण कर्ण मधुहि मुरछाई। भिरेउ साम्बते ओज बढ़ाई॥
दो० बीस बाण मारत भये, सो अरि सुरथ उठाइ।
अम्बर गयो उड़ाइकै, तहँ द्वै घड़ी घुमाइ॥
पटक्यो एक कोस पर जाई। टूटो सुरथ धूरि उधराई॥
व्याकुल होइ साम्ब तेहिकाला। चल्यो बहुरि गहि गदाकराला॥
लकारि कर्णकहँ मारी। मुरछि पर्यो सूतज धनुधारी॥
सुरथ चढ़ि धनु टङ्कार्यो। मद्रपतिहि शर बीस प्रहार्यो॥
मदत्त कहँ पांच ललामा। दश लक्ष्मण दश अश्वत्थामा॥
षोड़श बाण धौम्य गुणधामहि। पांच बाण शकुनी सरनामहि॥
दुश्शासनहि बीस शरमारी। संजय के तन साठप्रहारी॥
भूरिहि द्वै पचास परिमाना। यज्ञकेतु कहँ कितनेहि बाना॥
दो० यहिविधि सबकहँ मारिकै, साम्ब धनुष टङ्कारि।
हयी रथी द्विरदी पदी, बधि दीन्हे महिडारि॥

सबन भयो लखि विस्मय भारी। सावश साम्ब कहहिं धनुधारी॥
तेहि क्षण उठि रण गङ्गकुमारा। ह्वै रथस्थ निज चाप सुधारा॥
तुरत सर्प से दशशर मारी। काट्यो धनुष साम्बको भारी॥
तेहि क्षण करण द्रोण गाङ्गेया। मिलिकै विक्रम कीन्ह अमेया॥
त्यागत तीव्र तीर समुदाई। यादव सैन दल्यो अधिकाई॥
दुर्योधन पुनि स्यन्दन चढ़िकै। लैसँग दश अक्षौहिणि बढ़िकै॥
देत दुन्दुभी घरते कढ़िकै। अभिरतभो सवेग रिसि मढ़िकै॥
यादव कौरव भिरि तेहिकाला। कीन्ह अमित वीरनकर काला॥

दो० अश्वत्थामा भीष्म कृप, करण सुयोधन द्रोन।
प्रवल वर्षि शरशस्त्र कहँ, बल बढ़ाइ निज यौन॥
पावससम नादत अतिहिं, बरविक्रम दरशाय।
बिचलायो यादव दलहिं, चाप बजाय बजाय॥

छं० निज चाप चारु बजाइ रणमहँ रावसों पूरतभये।
कर चरण जंघा शीश कटिते शरनते तूरतभये॥
तेहिकाल लखिकै हाल उभय अजेय मनमहँ जानिकै।
कुरुराजगादी बहुरि बर सुत जातिको अनुमानिकै॥
दोउ सैनके मधि रथचढ़े बलराम हरि प्रकटत भये।
बर तालकेतु खगेशकेतु निरेखि सब आनँद भये॥
दशदिशन जयजयकार लावा सुमन सुरनावतभये।
दुन्दुभि बाजहिं नाचहिं अप्सरा गन्धरब गावतभये॥

दो० कौरव यादव मुदितह्वै, निजनिज शस्त्रहि त्यागि।
दुहुँदिशि सो पूजतभये, बन्दिचरण सुखपागि॥

हाथ जोरि ठाढ़े दुहुँओरा। मुदित निरेखहिं नन्दकिशोरा॥
हरि निजपुत्रनको तेहिकाला। खीझे करि सुनीति प्रतिपाला॥

भीष्म आदि कहँ बन्दन करिकै। दुहुँदल मैं आनन्द बितरिकै॥
दुर्योधन ते मिलि मतिमाना। राम श्याम यह बचन बखाना॥
तुम अतिसज्ञ बीर शिरताजा। अहहु चक्रवर्ती महिराजा॥
क्षमहु बालकन कर अपराधू। जो कछु कटु कह कह्यो असाधू॥
सो सब क्षमा क्षितीश्वर कीजै। नातरु बदले मोहिं कहिलीजै॥
कुरु यदुते रण दुखकर जोई। हे भगवान कबहुँ नहिं होई॥

दो० हम तुम सम्बन्धी अहैं, यहि बिधि बहु समुझाय।
आप भेंट लीन्हीं अमित, परम चतुर यदुराय॥

यहिबिधि बिदा कौरवनकीन्हा। अतिआनन्द यादवन दीन्हा॥
राखी सकल नीतिबिधि राजा। पुनि प्रमुदित बजवावत बाजा॥
सबन समेत मोद सरसाये। इन्द्रप्रस्थमहँ केशव आये॥
भ्रातन सहित युधिष्ठिर राजा। आये मिलन प्रेमपथ साजा॥
बाजहिं दुन्दुभि शंख सुबाजे। बर्षहिं सुमन दूब दधि लाजे॥
हरिते मिलि पाण्डव भे कैसे। योगी पाय ब्रह्मपद जैसे॥
प्रद्युम्नादि धर्म कहँ बन्दे। तिनहिं देत आशीश अनन्दे॥
मिले भीम अर्जुन सम भेवा। बन्दे चरण नकुल सहदेवा॥

दो० कुशलप्रश्नकरिबिबिधाबिधि, परिपूरणतम ईश।
अमितअण्डपति जगतगुरु,नमितशम्भुबिधिशीश॥

प्रद्युम्नादि सुतन यह भाषा। जीतहु जगत जौन अभिलाषा॥
हरिबल पाण्डु सुतन उरलाई। द्वारावती गये हरषाई॥
यहिमहँ चरित कृष्ण कर कह्यऊ। अब कह सुनिबे तवमनचह्यऊ॥
पुनि बोले मिथिला के राई। जब द्वारका गये दोउभाई॥
कहा कीन्ह हरिसुत तब कहिये। मोहिं हरिरसतजिऔरन चहिये॥
अद्भुत चरित अहै श्रवनीया। भक्तसुफल सुभक्त करबीया॥

अरथ रथीकहँ अर्थ प्रदाता। भक्ति मुक्ति कारण रणज्ञाता॥
किमिपुनिविजयकृष्णसुतकीन्हा। कौन कौननृपसोंबलिलीन्हा॥
दो॰ सो कहिये श्रीकृष्णमन, ज्ञानखानि वरवाणि।
इमि महीप के वचन सुनि, बोले वीणापाणि॥
भले भूप हरिचरितहि पूछा। जाबिन जगत अहै सब छूछा॥
हरिके गये धर्म गुणि स्वारथ। हरिसुत साथ दियो करि पारथ॥
तिनके सङ्ग जङ्ग उमदाये। तुर्त त्रिगर्त नगर चलिआये॥
तहँको भूपति रहेउ सुशर्मा। सो भेंटहि दीन्हो भरि भरमा॥
लै विराटते बलि बलधारे। सरस्वती कुरुक्षेत्र पधारे॥
बहुरि पृथूदक बिन्दु सरोवर। तृत वापी नहाइ यादव बर॥
तीर्थ सुदर्शन होइ सुहाये। सारस्वत कौशाम्बी आये॥
भूप कुशाम्ब भेंट नहिं दीन्हा। दुर्योधन बश सो रिसि कीन्हा॥
दो॰ चारुदेष्ण भद्रचारु पुनि, चारु सुदेष्ण सुचारु।
चारुगुप्त शीशाचारु बर, चारुदेह सुबिचारु॥
ये नव रुक्मिणिनन्दन बारे। ताके जीतन हेत पधारे॥
चढ़ि घोड़न पर घेरेउ नगरी। पूरण कियो शरन ते सगरी॥
ध्वज अराम गृहद्वार कँगूरा। शरके बेग भये सब चूरा॥
तब डरिकै कुशाम्ब लै भेंटहि। दीन्हो आय रुक्मिणी बेटहि॥
करि प्रणाम निज पुरमहँ आयो। अरिभय को दुख दूरि दुरायो॥
तिमि सुदेव सौवीर महीपा। आभिरपति विचित्रको दीपा॥
सिन्धुभूप चित्राङ्गद नामा। काश्मीरी सुमित्र बरधामा॥
लाक्षेश्वरपति धर्म महौजा। नृप गान्धार सुनाम बिडौजा॥
दो॰ इन सबहिन ते भेंट लै, कृष्णसुवन बलवान।
अर्बुद नगर म्लेच्छ महँ, आये यादवत्रान॥

चण्डयवन तहँ कालकुमारा। मम मुखते सुनि कथा अपारा॥
कृष्णहि शत्रु बापको जानी। लड़नचल्योउरअतिरिसियानी॥
दशकरोड़ सँगलिये मलिच्छा। बरषत बाण लरन की इच्छा॥
यवनयूथ लखि गुरबर तोलत। हरिसुत भये सैनमहँ बोलत॥
जो लावै शिर आजु इहांही। करिहौं मैं सेनापति ताहीं॥
सुनि कपिकेतु बीर बिधिचाही। प्रबिशो एक शत्रु दलमाही॥
बर्षत शर करषत गाण्डीवहि। परखत अरिदल दलिबरसीवहि॥

दो० सुरथ सुभट हय गजन कहँ, चल्यो करत द्वै टूक।
समर सव्यसाची सरस, बीरबली अनचूक॥

भु० घनेछिन्नबाहू महीमाहिंलोटैं। घनेचोटखाये महीको खसोटैं॥
भगे बीर भारे रथी औ मतङ्गी। सके देखि नाहीं अकेलो निषङ्गी॥
दशै कोटिमें एक सो सव्यसाची। महाबानको जाल बीशालशाची॥
हृदय जानिकै कालसे म्लेच्छसारे। भगे चण्डके अग्र हाहा पुकारे॥
रबीके मरीची समा बाणसारे। अरीयूथनीहारको काटिडारे॥
तबै चण्डनामा अतीचण्ड सोई। तज्यो शक्ति भारी अरी ओर जोई॥
दियो काटि ताको तबै बाणमारी। तबै चण्ड सक्रोध चापै सुधारी॥
तजो बाण काट्यो धनू सव्यसाची। महामारि सो ठौर लै रूपनाची॥

दो० यवन धरो दूजो धनुष, तब तेहि पारथ डाटि।
अर्धचन्द्र सो बाण तजि, दीन्ह प्रतिज्ञा काटि॥

बहुरि बिभत्सु खड्ग निज गहिकै। मार्यो म्लेच्छहि थिर थिर कहिकै॥
ताके लगे दोयचै बारन। गिर्यो चिकारिसह्यो नहिं भारन॥
तब करमाहिं खड्ग धरिचण्डा। चलेउ करत पैंतरा प्रचण्डा॥
तेहिक्षण अर्जुन असि बिधिठाटी। तुरत तासु शिर लीन्हों काटी॥
सो शिर निजशर बीच लगाई। तज्यो कानलौं चाप चढ़ाई॥

गिरेउ जाइ हरिनन्दन आगे। जय जय करन अमर नर लागे॥
बरष्यो सुमन पार्थके ऊपर। हरिसुत मुदित मिले नर भूपर॥
जिष्णुहिं कीन्ह सैनकरनायक। वेदमन्त्र मन्त्रित गुणिलायक॥
दो० यादव सेनापति भये, परमबीर कपिकेतु।
चमर छत्र पंखन सहित, राजे रिपुजयहेतु॥
बेगवान अर्बुद पति डरिकै। भेंट दीन्ह कर संपुट करिकै॥
मन्दहास मौरङ्ग नरेशा। बलिदीन्हों बल जानि विशेशा॥
भरतखण्डकी जय इमि लहिकै। हिमके दाक्षिण चले उनहिकै॥
सिन्धु नदी नद दीन्हो रस्ता। हरिप्रभाव अरि भे सब अस्ता॥
गिरि कैलास पास सुख रसई। शोणित पुर बाणासुर बसई॥
मांगत भये भेंट यदुराई। सुनि सो बाण महान रिसाई॥
द्वादश अक्षौहिणि दल साजी। चलेउ लरन प्रचण्ड अतिगाजी॥
तेहि क्षण पुरुष पुरातन बूढ़े। शिवा समेत वृषभ आरूढ़े॥
दो० शूली शम्भु कृपायतन, आशु आय वृषकेतु।
बाणहि समुझावत भये, ज्ञानसेतु हितहेतु॥
परिपूरणतम गोपुरबासी। अमित अण्डनायक सुखरासी॥
जासु कला हरि हर ब्रह्मादी। सोइ यदुनन्दन कृष्ण अनादी॥
तिनके पौत्र तुम्हारे व्याहो। बाहुकाटि जिमि पन निर्वाहो॥
ताते पूजनीय सनबन्धी। मिलहुमित्रबनितजिमतिअन्धी॥
हे अतिप्रबल यदू मतिमाना। निज मूठी मति खोलहु बाना॥
सो सुनि कामसुतहि बुलवाई। भलीबिधान करी पहुनाई॥
प्रद्युम्नहि पूज्यो सहसैना। कुञ्जर अयुत दियो बल ऐना॥
कोटितुरँग रथ पाँच सुलक्षा। बिदा कियो बलिनन्दन दक्षा॥
दो० तिनते पूजित सुचितचित, राजराजके धाम।

भेंटकाम आवत भये, अलकानगरी काम ॥
श्रीनन्दा अरु अलक सुनन्दा । मण्डितअलकाझलकअमन्दा ॥
रत्नसिद्धी शोभित अलिनादित । पुरी सुरी कुबेर समतादित ॥
अहिकन्या गन्धर्बिन डोलहिं । कोकिलके सम बाणी बोलहिं ॥
धनद न दीन्ह यदुहि बलिदाना । हे नृप लोकपाल मतिमाना ॥
हरिमाया प्रेरित रिसिलैके । लरिहौं यह बिचारि निरभैके ॥
धनसमान मद नाहिं जग कोऊ । ताते अति बौराना सोऊ ॥
हेमसुकुट दूतहि समुझाई । दीन यादवन माहिं पठाई ॥
सो करिकै हरिसुतहि प्रणामा । बोले बचन जानि बलधामा ॥
दो० राजराज अलकाधिपति, लोकपाल धननाथ ।
यह बाणी भाष्यो अहै, सुनिये सो सुखसाथ ॥
इन्द्र देवपति और न होई । तिमि हमधनपति औरन कोई ॥
नरपूजित सब अमर कहावैं । नहिं दैहौं बलि जो चढ़ि आवैं ॥
लरिहौं तिनते सहित समाजा । यमपुरमाहिं पठैहौं आजा ॥
सो सुनि परमकोप बिस्तारी । बोले हरिसुत अतिरिसिधारी ॥
यदुपति राजराज के राजा । जानततिनहिंनकुमतिदराजा ॥
पारिजात असतभा सुधर्मा । दीन्हेउ इन्द्र भयानक कर्मा ॥
श्यामकर्ण हय जलपति दीना । है यह धनद महामति भीना ॥
भयो गरूर घनो धन पाई । ताते बोलत बात बनाई ॥
दो० परिपूरणतम जासु ढिग, केशव रहत सदाहि ।
अमितअण्डमण्डन सभू, देत न बलि यह ताहि ॥
जा शिर कणसर सातहु लोका । मन्त्री जासु सदा बल ओका ॥
सो न देत बलि तेहि अज्ञानी । हम बलवान देत अभिमानी ॥
इमि कहि निज कोदण्ड चढ़ाई । पूरत भये नाद अधिकाई ॥

पूरत भयो सकल ब्रह्मण्डा। पविसमान धनुचमकअखण्डा॥
निज निषङ्गते शायककाढ़ी। धनुधरि तनेउ तासु द्युतिबाढ़ी॥
द्वादशरवि समान सो जाई। छत्र चमर दिय काटि गिराई॥
धनपतिकेर छत्र जब गिरेऊ। धनपति हृदयक्रोध अतिथिरेऊ॥
पुष्पकपर चढ़ि सैन समेता। निकरे धनद समरके हेता॥

दो० घण्टानाद महान बल, पार्श्वमौलि भटसीव।
सैनापति सुत दोय पुनि, नलकूबर मणिग्रीव॥

झख शिशुमार सिंह हयमुखके। चले पक्ष कढ़ि नानारुखके॥
आधे पीरे आधे कारे। ऊरधकेश प्रचण्ड करारे॥
बक्रदन्त अति जिह्वाधारी। ओंठपरयो अतिशिर रणचारी॥
मुख कराल अरु बरसन धारे। शर असि चरम भुशुण्डि सुधारे॥
परिघा शक्ति शरासन तोपा। कठिन कुठार धरे रणरोपा॥
रथ हय गज बिमान चढ़ि धाये। बन्दि सूत गावहिं छबि छाये॥
यक्ष जक्ष हित कोटिन आये। लरनहेत आतुर ह्वै धाये॥
हरघर के बहु फिरत पिशाचा। आये करन शरापहि साँचा॥

दो० भूत प्रेत बैताल बहु, चक्रवाक उनमाद।
डाकिनि ब्रह्म निशाचरा, कूष्माण्डहु अविषाद॥

चढ़े मयूर षड़ानन आये। मूषक पर गणेश छबि छाये॥
बीरभद्र सैनाके आगे। प्रमथन सहित समर अनुरागे॥
यादव पक्ष भिरे इमि बढ़िकै। दुहुँदिशि परम कोपते मढ़िकै॥
बारन बारन करहिं लराई। बाजि बाजि बाजहिं बरिआई॥
रथते रथ गथि मार मचावहिं। भटते भट फिरि तनहिं चबावहिं॥
भयो दुहुँनकर समर अपारा। धूरि भरो नभमण्डल सारा॥
तेहि क्षण तजत बाण बलसीवा। अरिदल दलतभयो मणिग्रीवा॥

ताकेबाण लगे तन छिदि छिदि । गजरथअश्वगिरेरणभिदिभिदि॥
दो० चन्द्रभानु केशव सुवन, सतभामाते जौन।
काट्यो धनु मणिग्रीव को, मारि पाँच शर तौन॥
दशशर बहुरि यक्षकहँ मार्‌यो । तब मणिग्रीव शक्ति गहिडार्‌यो॥
आवतलखि पबिसरिस अडरते । रबिशशि पकर्‌यो बायें करते॥
फिरि फिराय गरज्यो अतिभारी । अतिबल मणिग्रीवकहँ मारी॥
मुरछिगिर्‌यो लखिहृदयदुखठयो । नलकूबर राक्षस बपु पठयो॥
ते सब तजत बाण की धारा । बिकल कर्‌यो यादव दलसारा॥
दीप्तिमान प्रबिशो असिधारी । जिमि कैंची बड़ बसन मँझारी॥
कर पग शीश करन अरु नाका । ओंठ उदर कुण्डल रथचाका॥
अश्वबितुण्ड द्विधा करिडारे । प्रलय सरिस बिक्रम बिस्तारे॥
दो० छिन्न भिन्न गत प्राण बहु, भागे किते भगैल।
यक्ष सैन अतिदुख भयो, हाहा दशादिशि फैल॥
सो लखि परमप्रबलअरि परखत । नलकूबर अभिरो शर बरखत॥
पांच बाण कृतबरमहिं मारा । पारथ कहँ दश बाण प्रहारा॥
बीस सरपसम दीपतिमानहि । लखि कृतबरमाधुन्योकमानहि॥
पांच बाण मार्‌यो अति खेदी । ते सब धसे कवच कहँ छेदी॥
भेदि शरीर धरणि मधि पैसे । बांबी बीच ब्याल बर जैसे॥
सो लखि सारथि कञ्चनमाली । लै रथ भगो परम बुधिशाली॥
घण्टानाद जल्यो तब बढ़िकै । पार्श्वमौलिसहअतिरिसमढ़िकै॥
बर्षत भये बाण की धारा । बज्र समान कराल अपारा॥
दो० तेहिक्षणअर्जुनसुभटमणि, मारि बाण प्रतिबान।
मण्डल सम धनु करतभो, बिश्वबिदितबलवान॥
लस्यो तहां अर्जुन धनु कैसे । चपल चाकपर जुगुनू जैसे॥

काटिवाण तिनके तेहिकाला। दोय कोसलौं बीर बिशाला॥
अलख अटुट शरपञ्जर कीन्हो। परदलकहँ गोपित करिदीन्हो॥
मन्त्रिन बिगत प्राण अनुमानी। भागे सकल यक्ष अभिमानी॥
कोटिन भूत चले तेहिकाला। तोरि तोरि शिर पहिरत माला॥
डाइनि डगरीं नरन चबावत। गजन घुमाइ अकाश पठावत॥
दशादिशि भूत अमित भे गच्छत। नर रथ हय मतङ्ग कहँ भच्छत॥
नर शिर प्रमथ दांत तर दाबहिं। यातुधान गहि गहिकै चाबहिं॥

दो० भरि भरि रुधिर कपालमहँ, पिवत चले बैताल।
नाचन लगे विनायका, गावहिं प्रेत कराल॥

शीशान लेहिं अमित उनमादा। शिवमालाहित करत कुनादा॥
कूषमाण्ड छटकहिं रणमाहीं। छोटे छोटे नरन चबाहीं॥
मातृ ब्रह्मराक्षस अरु भैरव। शिर कन्दुक खेलहिं करि भैरव॥
गावहिं नाचहिं हँसहिं पिशाचा। संगरभूमि करहिं मिलि नाचा॥
शिशुन पियावहिं रुधिर पिशाची। नरदृग काढ़ि खियावहिं नाची॥
शिवगणकर दल इमि अवरेखा। गर्जत कठिन काल के भेखा॥
गद गहि लाखभार की गदा। मर्दत भयो प्रेत कहँ तदा॥
कूषमाण्ड उनमाद बिताला। राक्षस ब्रह्म पिशाच कराला॥

दो० यातुधान अरु प्रमथको, काट्यो शिर बलवन्त।
डाकिनि भूतिनि यूथको, बदन कियो बिनदन्त॥

भागे भभरि भूत भय छाये। धनी धनी के आगे आये॥
जगत बिदित साँचहु अनुरागे। भागत भूत मारके आगे॥
कोपहि बीरभद्र बिस्तारो। भारी गदा गदहि पुनि मारो॥
सोऊ अपनी ताहि प्रहारी। मिलिकै कियो गदा रणभारी॥
तब दोउ बीर गदा के टूटे। मल्लसमान समर महँ जूटे॥

करि अति युद्ध क्रुद्ध बिस्तारो। बीरभद्र करबीर उखारो॥
अट्टहास करि गदपर मारो। सो पुनि तापर पकरि पवांरो॥
बीरभद्र तब गदहि उठाई। लखयोजन नभ तज्यो रिसाई॥
दो० गदगिरि कछु व्याकुलभयो, मद भरि उठा रिसाइ।
ऊपर योजन लाख लौं, फेंक्यो आशु घुमाइ॥
सो कैलास शिखर पर गिरेऊ। घटिका दोय चेत नहिं थिरेऊ॥
कार्त्तिकेय तबै रिसिआई। मारेउ रण निज शक्ति घुमाई॥
ऊषापति अरु साम्बहि भेदी। तिनको सुरथ हयन सह छेदी॥
हय गज गज नर लाखन मारी। दशदिशिफिरीकरतफुफकारी॥
अहिसम धसी धरणि महँ जाई। सो लखि साम्ब महारिसिआई॥
कीन तहां इक लीला भारी। धनुपर धार्‍यो शरहि सुधारी॥
क० एकरूप तूण में निकारत दिखायो दश, जोरत धनुष बीच शत सरसायो है। खींचत सहस्र अरु तजत सुलाख भयो, अरियूथ जातसो करोर दरसायो है॥ कोटिन सुभट भये प्रकट अप्राण तहां, केते कीशकेतमें अधीर करिनायो है। शिखिके समेत शिखिबाहन बिशिख लागे, बिषधर काटे कैसो खेद उरपायो है॥
दो० देखि कछुक व्याकुल गुहहि, मूषक चढ़े गणेश।
समर माहिं दौरत भये, किये क्रोध आवेश॥
छं० वर बदन मृगमद चारु चर्चित बक्रतुण्ड सुहावनी।
नम कलित कुंकुम ललितछबि सिन्दूर चर्चित भावनी॥
कर्पूर धूर समान धवल सुजान कर्ण कुबर्ण है।
व्यालोल निकट कलोल षटपद दिशि सुगन्धा भर्णहै॥
शशिनिकटते संगीत मानहु करत अलि कलगानसों
गुणिभीरगणपति तेहि दुरावति चपल अपने कानसों॥

उरहार कञ्चन कनकमणिमय मुकुट मस्तक सोहई।
रदएक तन अस्थूल वरद्युति देखि उपमा मोहई॥
पटपीत आखुसवार पैंजनिचरणशब्द अपार हैं।
अम्बुज कुठार सुपाश अंकुश लसत वरभुज चार हैं॥
वर वरण आनँदकरण संकटहरण क्रोधावेश हैं।
तेहि काल हे नरपाल यादवदलहिं दलत गणेश हैं॥

दो॰ अंकुश पाश कुठार ते, करत चले संहार।
दौर दौर मूषक चढ़े, भे यदु दुखद अपार॥

अ॰ जज्जज्जज्जादवदलतकक्करकरिलम्ब।
सस्ससस्समरजितभम्भम्भटहेरम्ब॥
भम्भम्भटहेरम्बव्बमकिदुअम्बव्बज्जत।
रिस्ससस्सवनसुदिस्ससस्सरकिविदस्ससस्सज्जत॥
मग्गग्गराजिअडग्गग्गहतसलग्गग्गज्जत।
धर्र्रहसिगरर्रपटिसमर्र्रज्जत॥
दद्दद्दद्दइकचच्चूवतमद्द।
मम्मम्ममूषकचढ़ेवज्जज्दव्बलहद्द॥
बव्बव्बलहदद्दवरिमरद्दतद्दें।
जज्जज्जज्जुभभ्भाविभभ्भभ्भपटिसुरभभ्भभ्भट्टें॥
पप्पप्पप्पासलपक्ककरनभ्भपक्कट्टें।
बव्बव्बीरगनन्ननन्ननरगिरनन्नन्नट्टें॥
पप्पप्पड़फहरातहैंबव्बव्बाढ़योमोद।
सस्ससस्ससमरमेंथथ्थथ्थलकैथोंद॥
थथ्थथ्थलकैथोंदद्दवरिबिनोदद्दैं।
भभ्भभ्भभ्भट्टविकक्कटनिकट्टट्टैं॥

झम्मझम्मझप्पप्पप्पारप्पप्पप्पैरैं ।
बब्बब्बल्लकरैजिमिमल्लप्रबल्लल्लैरैं ॥
धद्धद्धद्धनरतिओरसोंकक्कोपावेश ।
कक्केशवसोंलरतगग्गजबदनगणेश ॥
गग्गजबदनगणेशस्समरकुम्भेसस्ससैं ।
कक्कोपगरब्बब्बमकिसरब्बब्बरसैं ॥
भम्भम्भटनअलभम्भभकिसलम्भरमैं ।
मम्मम्मारतमूकक्करनअसूककरमैं ॥

दो० बिष्णुकला हेरम्ब कहि, कोप कियो बिकराल ।
झटकि पटकि झट लटकि शिर, कीन्हो लोढ़ा ढाल ॥

साम्बकेर रथ लीन्ह उठाई । पटकत भये हृदय रिसिआई ॥
गणपहि क्रुद्ध करत लखि युद्धहि । भे प्रद्युम्न कहत अनिरुद्धहि ॥
कृष्णकला गणेश यह अहहीं । बिचर तासु जादिशि ये रहहीं ॥
हरि इन कहँ दीन्हो बरदाना । हर अस्थान करन कल्याना ॥
सो अरिपक्ष गये गणराई । करि उपाय कछु देहु भगाई ॥
आखु आशु भगिहै लखि बिल्ली । सो बनि करहु बिनायक खिल्ली ॥
इन कहँ पूजै ध्यावै जोई । ताहि न नेकु अमङ्गल होई ॥
यह तो आये आपु सहाई । ताते इनहिं भ्रमावहु भाई ॥

दो० भे बिलार अनिरुद्ध तब, जान्यो नाहिं गणेश ।
हरिकी माया प्रबल अति, जानेहु सत्य जनेश ॥

परमभयंकर करि फुफुकारा । नख ते द्रुत बहुभूमि बिदारा ॥
गो मूषक सम्मुख रिस पागा । लै इक रद सो आतुर भागा ॥
गणपति पुनि पुनि रोकत ताही । सो कि रुकै सुकाल भै जाही ॥
पीछे पीछे चल्यो बिलारा । सप्तद्वीप सब सिन्धु पहारा ॥

नहिं हरिसुत मूरखपन ठये। पञ्च कहेते बिल्ली भये ॥
मूषकारि मूषप के पाछे। इत उत सो दिखात छबिआछे ॥
जहँ जहँ मूसा तहँ तहँ बिल्ली। यादव करनलगे लखि खिल्ली ॥
जब गणेश रण त्यागि पराये। भागे भभरि यक्ष भय छाये ॥

दो० पुष्पक बैठि कुबेर तब, धनु गहि नौमि महेश।
गुह्यक की माया करी, जो भय करी विशेश ॥
छाये घन सम्वर्त से, व्योम बीच सब ओर।
परन लगोपय घोर अति, शोर भयो अति जोर ॥

गज से बिन्दु शुण्डसम धारा। बरषे पर्वत टूक अपारा ॥
उड़हिं पहार हिमाचल विन्धू। भये एकसे सातहु सिन्धू ॥
प्रलय जानिकै जे सगरायुध। हरि हरि यदु मे कहत निरायुध ॥
लखि प्रद्युम्न चाप शर धरिकै। सत्यमयी विद्या बिस्तरिकै ॥
मध्य कामके बीजहि राखा। मुखमहँ प्रणव धस्यो मुख चाखा ॥
पुङ्खमाहिं श्रीबीजहि धारी। तज्योतड़ितसम शब्द अपारी ॥
सो शर भयो नशावत माया। ज्ञान उदय जिमि भरम नशाया ॥
जानि कुबेर कुबेर अपानी। गो गृहभागि राखि निजपानी ॥

दो० यादव जय भाख्यो सुरन, बरषि प्रसून अपार।
मनुज सबै हँसते भये, जयजय कृष्ण उदार ॥
तब डरिकै सँग भेंट लै, राजराज हित काज ॥
आइदयो प्रद्युम्न कहँ, साजबिबिधबिधिसाज ॥

छप्पय दोय लाख गज दिये दोय शुण्डा जिनकेरी।
चार दन्त मदवन्त पवन सम चलत अदेरी ॥
दश लख सुरथ जराऊ कञ्चन की द्युति ताजी।
वायु वेग सम जामें लागे बाजी ताजी ॥

दश अर्बुद घोरे दये कौन बखानै चालकी ।
दीन्ही कञ्चन रतनकी चार लाख गनि पालकी ॥
पञ्जर बैठे दोइ लाख नाहर पुनि दीन्हा ।
चित्रित मृग बहु अरु अनेक चित्ता गुनि दीन्हा ॥
कोटि शिकारी श्वान दियो अरु पक्षिन दीन्हा ।
हंस सुवा मैना सारस बर लक्षन दीन्हा ॥
धरि धरि पिंजरा पुरट महँ इन सब कहँ देते भये ।
लाख लाख इक जातके गनि यादव लेते भये ॥
ऊंचो योजन आठ कोस छत्तिस लम्बाई ।
बिसुकरमाकृत कलशा लाख ध्वजा फहराई ॥
मुक्तामणिते जटित सहस्र शिखर सरसाये ।
हरिको दियो बिमान सोऊ धननायक लाये ॥
सहस कल्पपादप दियो कामधेनु शत भेंट किय ।
शतपारसचिन्तामणी दिय अतिलै आनन्दजिय ॥
छत्र चमर अरु ब्यजन हेम सिंहासन शतबर ।
भूषण बिबिध प्रकार रँगीन दिये बहु अम्बर ॥
दीन्ह दुशाले शस्त्र अमित बाजन बहु रनके ।
बरतन रतनन जड़े धरे अगिनित सोनन के ॥
दीन्ह भारबरदार पुनि धन सरदार अपार धन ।
पुनि सप्रेम बन्दत भये नन्दनन्दनन्दनचरन ॥

दो० करि प्रदक्षिणा जोरिकर, पूरयो उरमें ज्ञान ।
अस्तुति करत नवाइ शिर, जानिस्वयंजगत्रान ॥

तो० जय परपुरुष भगवान । निर्गुण अनाम महान ॥
तुमप्रकृतिपुरुष परधान । मतिमान ज्ञाननिधान ॥

कृत सर्वधाम निवास। वपुश्याम स्वयंप्रकास॥
जय वासुदेव महान। बलदेव ज्ञाननिधान॥
प्रद्युम्न जय अनिरुद्ध। यदुनाथ जयजयशुद्ध॥
कन्दर्प दर्पण मार। जयमदन गुण आगार॥
जय पञ्चशर जय काम। जय दलन शम्बर नाम॥
कुसमेषुभव भगवान। जय मीनकेतु महान॥
मन्मथ मुकुन्द अनङ्ग। झषकेतु जय रतिरङ्ग॥
जय पुरुषधनु जगजीत। वरआत्मभुवनअभीत॥
रति रतिकरण रतिनाथ। जय वर शरासन हाथ॥

दो० भूलिरह्यो अज्ञान जग, करता आपुहि मानि।
हमहिं कियो करिहैं करत, यह सुख दुख अनुमानि॥

स० तनको अभिमान धरे अतिही, करता निजको करि मानत हैं। नहिं जासु ठिकान घड़ी यकहू, तेहि ब्रह्महुते बढ़ि जानत हैं॥ गिरिधारण नाम भुलाय दियो, सुख दुःख वृथाहि प्रमानत हैं। कबहूँ जल ढारिदियो दृगते, रद्काढ़ि कबौं सुख आनत हैं॥ जगजीवनमरण प्रमाण करैं, गतितासु भविष्य दिखावत हैं। जनमें सुमिरे हितके मिलिकै, मृत जीवत चाम बजावत हैं॥ गिरिधारणनाम बिना भवमें, अवलम्ब न एकहु पावत हैं। तब नाहिं रहो अब नाहिं अहै, न विचार हृदय अस लावत हैं॥

दो० क्षमहु मोर अपराध सब, दीनबन्धु हितलाग।
दीजै इतनी चीज कहँ, भक्ति ज्ञान बैराग॥

सो० पढ़ै सुनै चितलाय, अस्तव यह प्रद्युम्न को।
सङ्कट ताको जाय, कृपाकरहिं प्रद्युम्न पितु॥

भये मुदित झखकेतु प्रवीना। पङ्कज राग शिरोमणि दीन्हा॥

लीला छत्र चँवर सिंहासन । दैकरि अभय कियो संभाषन ॥
हरिहिं बन्दि सँग हाथी हलका । जातभये कुबेर निज अलका ॥
चले बहुरि अनिरुद्ध समेता । डरे भूप लखि यदु जगजेता ॥
देत नगारे आनँद धारे । प्राग्जोतिष पुर बीच पधारे ॥
नीलनाम नृप नरककुमारा । डलि बलि दीन्ह कीन्ह मनुहारा ॥
गोपुर तहां द्विविद कपि रहेऊ । निजरिपुजानिक्रोधधुनिगहेऊ ॥
उठिकर पग ते नरन बिदारी । क्षणमहँ यादव सैन बिडारी ॥

दो० रथ गज नर हय पकरिकै, लांगूलहि लटकाय ।
कोटिन डार्यो सिन्धुमहँ, कोटि नचाय नचाय ॥

पुनि हरिसुवन बाणबर मारा । सो लै किष्किन्धा महँ डारा ॥
शर पुनि आय निषङ्ग समावा । षट्कुल बहुरि चलत हरषावा ॥
देखत बर कुसुमित बन शोभा । सरससरोज शिलीमुख लोभा ॥
यक्षन सुन्दर राह बताये । हरि किंपुरुष खण्ड तब आये ॥
रङ्गबल्लिपुर जहां नगीचे । हेमकूट परबत के नीचे ॥
तहँ किंपुरुष भक्त सब आये । प्रेम पूरि यह अस्तुति गाये ॥
अहो धन्य मधुपुरी सुजाना । जहँमे प्रकट स्वयं भगवाना ॥
अहो धन्य यदुकुल रिपुघालक । जहँमे प्रकटबिश्वप्रतिपालक ॥

दो० धन्य शौरि को भवन सो, गऊलोक की ठाम ।
माथुर मण्डल धन्य अति, जहँ बिचरे घनश्याम ॥

गोकुल अहै धन्यतम भारी । पितुगृह ते जहँ रहे मुरारी ॥
बज ग्वालन सह माधव खेले । यशुमति दुग्धोधर मुख मेले ॥
बृन्दाबन परते पर धन्या । हरिपद रेणु बिराजत अन्या ॥
जहँ गोचारत नित गोपाला । संग लिये ग्वालनकी माला ॥
दानमान की लीला कीनी । बनिता बहुरि रासरस भीनी ॥

ो कानन पुनीत मन भावै। जाकर सुयश वेद सब गावै॥
हो धन्य वृषभानुकुमारी। लीलावती लालकी प्यारी॥
रि सँग भानुसुता तट विहरत। जेहिलखिरतिरतिपतिमनाबिहरत॥
दो० अहो धन्य यमुनानदी, वाम अंस ते जौन।
जा तट सारस हंस अलि, करहिं प्रेम भरि रौन॥
हो धन्य गोवर्धन शैला। जो हरिके उरते कढ़ि फैला॥
जमण्डलमहँ राजत सोई। जाहि लखे पुनि जन्म न होई॥
हो धन्य मण्डली यदुन की। जहँ परिपूरणतमछविमन की॥
रम धन्य द्वारावति गाई। श्रीबैकुण्ठलोक ते आई॥
जत राम सहित जगदीशा। जहां पुण्य डोलत दशशीशा॥
ग्रसेनकहँ कीन्ह धरापति। हमवन्दति सो हरिहि महामति॥
ज्ञहेतु मकरध्वज स्वामी। होत भये हमरे पथगामी॥
रि तिनको दर्शन हम आजू। भये कृतारथ सहित समाजू॥
दो० ऐसे हरिके चारु यश, विशद तिहूं पुर माहिं।
ताहि कहा हम कहिसकैं, कृपा कीजिये वाहिं॥
मि निजयशसुनि आनँदभीना। शम्बरारि तिनकहँ धनुदीना॥
र रतन केयूर मनोहर। मणिकुण्डल किरीटबर अम्बर॥
ट दीन्ह तहँ को नरनाहू। चन्द्रबेध सुत नाम सुबाहू॥
रिसुत दै इनाम चूड़ामनि। पूछत भये हृदय आनँद गुनि॥
ब्वल्लि यह पुरकर नामू। किमि भो कहहु भूप बुधिधामू॥
कर तबै बोल्यो गहि सुखघन। सागर जबै मथ्यो सुर असुरन॥
रह रतन चारु प्रकटाये। तब पीयूष दरश सर पाये॥
हि क्षण मुदित भये भगवाना। लोचन ते जलबिन्दु खसाना॥
दो० ताते तुलसी तरु भयो, तासु धस्यो हरिनाम।

रङ्गबल्लि शोभा भरी, इहै खण्ड मै धाम ॥
यह पर्वत के तट तरु सोई। हरि थापित परमायुत होई ॥
रङ्गबल्लिबर सदा बिराजै। यही नाम ते पुर यह छाजै ॥
हनुमत आर्ष्टिसेन गन्धर्बा। नित इत आवत पूजनपर्बा ॥
समय मध्याह्न माहिं ये दोऊ। जिनसम रामभक्त नहिं कोऊ ॥
सुनि शम्बररिपु तरुहि निहारी। करि दण्डवत पूजिकै भारी ॥
आगे चलि बन लख्यो अपारहि। जहँ झिल्लीझनकारझकारहि ॥
चित्ता सिंह द्विरद मतवारे। जाब जाहँ जाज्याहनिहारे ॥
खदिर बंश बट पीपर भोजा। हरे बिशाखि मदार महोजा ॥
दो० परमभयंकर बिपिन ते, दश योजन के सर्प।
निकरिखानलाग्यो गजन, फुंकारत भरि दर्प ॥
हाहाकार भयो तब भारी। जरहिं श्वास ते पादप झारी ॥
भानु स्वभानु तथा अतिभानू। बृहदभानु स्वर्भानु प्रभानू ॥
चन्द्रभानु श्रीरबि प्रतिभानू। भानुमानु सह दश मतिमानू ॥
सत्यभामसुत बढ़िकै आगे। अहिकहँ बाण प्रहारन लागे ॥
ताते तुरित त्यागितन खर्बा। तुरतहि दिब्य भयो गन्धर्बा ॥
स्वर्ग गयो प्रताप को ऐना। हरिनन्दन प्रबिशे निज सैना ॥
सुनि बहुलाश्व बचन यह कहेऊ। को यह पूर्ब गन्धरब रहेऊ ॥
किमि भो अजगर अजगुत एहू। सुनि मुनि कहतभये गुणएहू ॥
दो० आर्ष्टिसेन गन्धर्ब को, अनुज स्वमति असनाम।
कनक कूटपर बायुसुत, हरिगुण कहहि ललाम ॥
नित रामहिं पूजत हनुमाना। चौदह घड़ीकेर परिमाना ॥
ध्यान धरेउ कपि तहँ यह जाई। श्वास बड़ो कर दीन्ह जगाई ॥
शाप दीन कपि कोपि कराला। दीरघ श्वास होसि तूबाला ॥

तब धरि चरण जोरिकर भाषा। मैं तव चरणशरण अभिलाषा॥
ह्वै प्रसन्न तब हरि यह कहा। द्वापर हरिसुत ऐहैं तहां॥
तिन्ह शरते कढ़िहै तव प्राना। तव पैहो निजरूप सुजाना॥
सन्त शाप ह्वैहै सुखदाई। सुनहु कथा चितदै नरराई॥
चैत्र देश हरिसुत दल आयो। लखत माधवी वृन्द सुहायो॥

दो० गिरहि रेणु जहँ जलज की, रहे मत्त अलि भूलि।
लोल लवङ्ग लतान लगि, सुमन रहे शुभ फूलि॥

अयुत नाग बल जहँके नरहैं। त्रेता सरिस चाल घर घर हैं॥
जरा स्वेद मदिरादि कुगन्धा। रहित रहहिं भरि आनँदकन्दा॥
आयुस अयुत सरिस जब सोना। सुधा सरिसजलसरिससलोना॥
खानि मणिनकी अमित रसाला। प्रमुदित प्रमदा केलि बिशाला॥
घन बसन्त तिलकावनि नगरी। परम प्रेमते पूरित सगरी॥
तहँ शृङ्गार तिलक नरराई। सो चैत्री बीरन बुलवाई॥
आयव लरन हेत बलवाना। करत चापको शब्द महाना॥
जाम्बवतीके सुत दश धाये। ताके दलमहँ बहु शर छाये॥

दो० साम्ब सुमित्र सहस्रजित, चित्रकेतुपुर जीत।
विजयसुकृतद्युतिभान पुनि, अरुद्धिबिन्दुशतजीत॥

इनहिं सैन निज मर्दत देखी। गहि त्रिशूल सो भूपति तेखी॥
साम्बहि छेदि भूमिपर डारयो। अरु शरते सबहिन महि पारयो॥
इहि बिधि तिनहिं सुताइ धरापर। लसेउ अनलजिभि सूखरूखबर॥
गद तब आइ पकरि गज तासू। पटकत भो भ्रमाइकै आसू॥
दूरि गिरयो गज सह नरराई। डरिकै दीन्ह भेंट तब आई॥
अर्बुद हय रथ लक्ष नवीने। अयुत मतङ्ग मनोजहि दीने॥
जीति खण्ड किंपुरुषहि ऐसे। तब हरिवर्ष खण्ड महँ पैसे॥

ताकी सींवा निषद पहारा। चले निषाद साथ रह दारा॥
दो० परमशब्ददलको सुनत, तेहिक्षण अगणित गिद्ध।
उड़े कोसलौं रोसभरि, औगुण ऐन प्रसिद्ध॥
गरुड़ सहित तीक्षण पग तुण्डा। खानलगे चतुरङ्गक भुण्डा॥
खगते भस्यो व्योम नरपाला। अन्धकार अति भयो बिशाला॥
गरुड़ अस्त्र हरिसुवन प्रहारा। निकरे गरुड़ नभग भरतारा॥
चरण नखन पर तुण्ड प्रहारे। गिद्ध कुलिङ्ग गरुड़ गनबारे॥
भग्न दर्पभरि डरि खग सारे। भागि गये खगपतिके मारे॥
तबलै शत अक्षौहिणि सैना। गये दशार्ण देश जग जैना॥
तहँ को नृप सुभोग बलवाना। बेदव्यास तेहिं सकल बखाना॥
हरि गुणि हरिपुत्रहि सो राजा। भेंट दियो गहि हर्ष दराजा॥
दो० हरिसुत पूछ्यो देशको, भो दशार्ण किमिनाम।
मोहिंकहहु सो अवनिपति, बुद्धिधाम अभिराम॥
कहत सुभोग सुनहु चितलाई। नरहरि हत्यो कनककश्च भाई॥
लखि प्रहलादहि आनँद पाये। जानि भक्त अतिबचन सुनाये॥
तुमसे भक्त तासु पितु मारा। अब न मारिहौं बंश तुम्हारा॥
ताके मधि अघ रह्यो अपारा। करिभो प्रेम नृसिंहहि भारा॥
लोचन ते जल बहेउ ललामा। भयउ मङ्गलायन सर नामा॥
तब प्रहलाद मुदित बरपाये। बोले बाणी शीश नवाये॥
हम पितु मातुहि पूज्यो नाहीं। तिनऋण किमि न रहै मममाहीं॥
कह नृसिंह मेरे लोचन जल। भयो मङ्गलायन सर इहि थल॥
दो० मातु पिता त्रिय पितृ सुर, गुरु द्विज ऋषि सुप्रपन्न।
शतसह दश ऋण जात है, जेहि नहाय कै धन्य॥
तहँ नहाहु तुम ऋण सब जाई। याकर यह प्रभाव अधिकाई॥

जब यहि भांति बखानेउ माधव । ऋण विन भे न्हाइ कायाधव ॥
दश ऋण मुक्त जाइ तेहि न्हाये । सो दशार्ण तीरथ जग गाये ॥
तहँ हरिसुवन सबन सहगये । न्हाय दान बहु देते भये ॥
जो दशार्णकी कथा सुनत है । तिनको ऋणसब शीश धुनतहै ॥
कार्ष्णि बहुरि कुरुखण्ड पधारे । शृङ्ग वाण उत्तरहि निहारे ॥
भद्रा गङ्गा न्हाइ परेख्यो । बाराही नगरी कहँ देख्यो ॥
कुरुखण्डेश गुणाकर नामा । रहत चक्रवर्त्ती गुणधामा ॥

दो० अश्वमेध सो दशम कहँ, करत भयो सोइ भूप ।
देव ऋषिन संयुक्त अति, परम प्रताप स्वरूप ॥

श्यामकर्ण घोड़ा कहँ छोरा । तासुत बीरधन्व प्रति जोरा ॥
रक्षत दश अक्षौहिणि सैना । सोउदलगैल मिल्यो जगजैना ॥
वीरचन्द्र बसु आम बेगधर । ऋषि श्रीमान कुन्त शंकूबर ॥
सेन चित्त गूनाम सुधारे । नग्नजितीके ये दश बारे ॥
सो मख अश्व पकरि हरषाये । हरिसुत समर माहिं लै आये ॥
मदनभालके पत्रहि पढ़िकै । बिस्मितभये सदल सुखमढ़िकै ॥
तब हय खोजत तिन्हन परेखा । दूरि धूरि पूरण वर देखा ॥
कहहिं गुणाकर नृप चक्रवर्ती । इतनहिं चोर भ्रमहि भय धरती ॥

दो० गऊ न आवत बिपिनते, बातचक्र नहिं होय ।
इत काहे अति उड़त रज, कारण लखिये सोय ॥

बिस्मित कुरु महीपकी सैना । सुनेउ शब्द धनुको जग जैना ॥
हय हिंसन करिन्द्र चिक्कारा । जानेउ कोउ है भूप अपारा ॥
तब ऊधव हरि आज्ञा पाई । गये बीरधन्वा ढिग भाई ॥
बन्दि तबै महीपके पुत्रहि । कहत जोरिकर गिरा पवित्रहि ॥
उग्रसेन यादव महिपाला । जम्बूद्वीप जीत के हाला ॥

करि नृपसूय पुण्यतम ह्वैहैं। अबकी शैल सत्य बस ध्वैहैं॥
भेंट लेन हित तिनके भेजे। आये श्रीप्रद्युम्न सहेजे॥
भारत किंपुरुषहि हरिबरषहि। जीत्यों धनाधीश गुरु बरषहि॥

दो० शत अक्षौहिणि संग है, घने बीर बलवान।
जग ऐसो नाहिं समरजित, शस्त्र धरण भटत्रान॥

जासु सहाय कृष्ण जगदीशा। तिनहिं हर्‍यो मखबाजि महीशा॥
तिनके मिले होइ कल्याना। बीरधन्व मुनि बचन बखाना॥
कृतपूजित नरनाह गुणाकर। नहिं देहौं बलिबीर गुणाकर॥
सूकर बिश्व सिंगवत पासा। अहहि धरा पूजित गुणरासा॥
तहँ तप कीन्ह पिता मम जाई। अयुत बर्षलौं उर हरषाई॥
हरि तब कह्यो मांगु बरदाना। बन्दि तबै मम बाप बखाना॥
तुमहिं त्यागि हम होहिं अजेया। यह बरदेहु दयाल अभेया॥
दे बरगये बराह कृपाला। ताते हों अजेय नरपाला॥

दो० जब हयमेधहि करिचुके, सकत जीति नहिं शक्र।
ताते नहिं बलि देइहै, करिहै संगर बक्र॥

सुनि ऊधव हरिसुत ढिग आये। तितकर बर बृत्तान्त सुनाये॥
श्रुतिकर्मा दश शान्ति सुबाहू। बृषी बीर भद्रक भट नाहू॥
ऊर्णमास सोमक बर योधा। कालिन्दीसुत दश गहि क्रोधा॥
दश अक्षौहिणि लै सँग सैना। भिरे कुवेणन ते बलऐना॥
भा रण तुमुल कहा नहिं जाई। मनहु सिन्धु द्वै करत लराई॥
बाहन बाहनु बीर बिराजैं। बिबिध भांति के बाजे बाजैं॥
परिघ मुसल असि अशनि भुशुण्डी। चलनलगे बाढ़िरथी बितुण्डी॥
गदा पाणिते भिरिभिरि तदा। मुरदन कह पहार बर लदा॥

दो० क्षणमहँ तहँ प्रकटतभई, नदी भयानक भेष।

रुधिर भर्‍यो दशहू दिशन, चालिस कोस अशेष ॥
पूर्णमास हरिसुत तेहि काला। विरचिविविधवाणन के जाला ॥
सुभट वीरधन्वा सो भिरिकै। कीन्हो युद्ध भयंकर थिरिकै ॥
तेहिक्षण दश भटसो भिरिभिरिकै। कुरुपतिवाणभर्‍योदशादिशिकै ॥
पूर्णमास अतिलाघव कीन्हो। घोरन मारि तोरि रथ दीन्हो ॥
विरथतमकिकै तब कुरुईशा। मार्‍यो हरिपुत्रहि शरवीशा ॥
पूर्णमास तजिशर अतिवारे। काटि मध्यते शरन बिदारे ॥
करिलाघव तेहिक्षण ब्रत धन्वा। काट्यो धनुष डोरि बलअन्वा ॥
लाख भारकी गदा उठाई। हरिसुत तिनपर तज्यो घुमाई ॥
दो० ताकहँ सहिकै परिघकहँ, मारतभयो रिसाइ।
आशुलियो हरिसुत तबै, यवन प्रहार उठाइ ॥
पारिपात्र अरिपर्वत भारा। ताहि गुणाकर सों न उखारा ॥
दुहुन गर्जि गिरि दोय पवांरे। बीचहि चूरभये ते भारे ॥
बहुरि वीरधन्वा बलवाना। मूका लरन लग्यो घमसाना ॥
समरभयो न जातकहि भाई। हरिसुत अरिसुत लीन्ह उठाई ॥
फेंक्यो जाइ सभा नरपतिके। गिर्‍यो वीरधन्वा दुख अतिके ॥
रुधिर बमन लाग्यो निज मुखते। कुरुगण निरखिभये गतसुखते ॥
पूर्णमासपर सुर समुदाई। फूल बरषि जय गिरा सुहाई ॥
सुतहिविकललखिनृपतिगुणाकर। उठिमखते करलीन्ह चापशर ॥
दो० जात देखि नरपालकहँ, क्रोध बिबशगुणिभेव।
हाथ पकरि भाख्यो बचन, वामदेव द्विजदेव ॥
नृप तुम पूर्णतमहिं नहिं जाना। सुरहित यदुकुल भे भगवाना ॥
भार उतारन भूको भाई। द्वारावती बसे हरषाई ॥
हरिसुत प्रद्यूमन इतआये। यदुपति मखहित सैन सजाये ॥

सो सुनि कहो गुणाकर बानी । परिपूरणतम हरि अतिज्ञानी ॥
लक्षण तिनके कहिय अमोले । बामदेव मुनि सुनि यह बोले ॥
जामहँ लीन तेज सब होई । परिपूरणतम कहिये सोई ॥
पूरण अंश कला आवेशा । सृष्ट और अंशांश बिशेशा ॥
परिपूरणतम कृष्ण न दूजे । कोटि काज करि हैं जग पूजे ॥

दो० सुनि आचारज के बचन, बैर बिहाय नरेश ।
बैष्णव धार्मिक मुदितचित, आवतभो तेहि देश ॥

दै बलि नौमि प्रदक्षिण करिकै । कहत बचन गदगद दृगभरिकै ॥
आज सफल कुल जन्म हमारा । सफल भयो मम हयमख सारा ॥
भक्ति तुम्हारि परमपद दाता । सदा होइ सतसंगति ज्ञाता ॥
तुम निजभक्त हेत जगदीशा । पाहि पाहि क्षमिये अघईशा ॥
तब प्रद्युम्न कह्यो बड़ भागा । तुम कहँ होइ ज्ञान बैरागा ॥
प्रेम लक्षणा भक्ति समेता । भागवती श्रीसुन्दर हेता ॥
इमि दै बर मख अश्वहि दीन्हो । नृपपद बन्दि गमन गृहकीन्हो ॥
कुरुखण्डहि जयकरि सह सैना । गये हिरण्मयमहँ जगजैना ॥

दो० श्वेतअद्रिजा खण्डके, सीमा जानहु श्वेत ।
देव तहांके कमठहरि, पूजनीय बरदेत ॥

पुष्पमाल सरितट बन भारी । चित्रनाम फल फूल कतारी ॥
तहँ नलनील बंशके बांदर । रहहिं प्रदलमठ चरहिंअकादर ॥
द्वापर माहिं राम के राखे । तथा सकल संगर अभिलाखे ॥
नख कर दन्त चरण ते मारन । लागे गज हय पकरि प्रहारन ॥
पूंछ लपेटि द्विरद रथ घोरे । पटकहिं अम्बर जाहिं अतोरे ॥
कपिध्वज के ध्वजमहँ लपटाये । तबकपिराजअतिहिरिसिआये ॥
कूदे कोपि दृगन अरुनाई । शतयोजन को रूप बनाई ॥

गांधि पूंछ ते सब कहँ पटका। विह्वल कीन्हसकलबलसटका॥

दो० जानि मित्र निजवायुसुत, रामदास बलधाम।
हाथ जोरिकै मुदित सब, लागे करन प्रणाम॥

मिलत कोऊ कोउ कुशलहि पूछा। कोउ प्रमुदित चूमहि पदपूंछा॥
तिनते मिलिकै आशिष देई। कुशल पूछि समुझायो सेई॥
ते सब बिदा होइकै गये। कपि पारथध्वज बैठत भये॥
मकरदेश हरिसुवन सिधारे। सदल मकरध्वज देत नगारे॥
मकरनाम गिरिकेर तरेटी। कढ़ी भ्रमर मगडली अखेटी॥
काटन लगे सकल चतुरङ्गा। पौन अस्त्र छांड़ेउ रतिरङ्गा॥
तिनते ते सब भ्रमर नशाये। डिरिंडम नगर काम चलिआये॥
तहँ गजमुख के नरन निहारे। सबन हृदय लखि अचरजभारे॥

दो० बहुरि त्रिशृङ्गनगर गये, तहां शृङ्गधर लोग।
स्वर्ण चर्चितापुरी तित, स्वर्णमयी सुख योग॥

तहँके नर नारी छवि छाये। जातरूपसम रूप दिखाये॥
निशिकर कान्ता नदी किनारे। नागसुतन कहँ केलि निहारे॥
गये कृष्णसुत सहित समाजा। रहेउ देवमुख तहँ को राजा॥
मेरेमुख ते यदुबल सुनिकै। दीन्हो भेंट जगतगुरु गुनिकै॥
तिनते कह्यो कृष्णसुत बानी। तुमसबकिहिहितहौद्युतिखानी॥
कारण यासु कहौ बलवाना। सुनि सुदेवमुख बचनबखाना॥
अर्यमपित्रपती यक बारा। कमठ विष्णुकर चरण पखारा॥
ताते यह सरिता सरसाई। गिरिशृङ्गवत शीशते आई॥

दो० मनुसुत रह्यो प्रसिद्धकहि, तिनके गुरु सुबशिष्ठ।
आज्ञा पाइ चरावई, नित सुरभी घरमिष्ठ॥
तहां सिंह धोखे हत्यो, निशिमहँ कपिला गाइ।

तातै दीन्हो शाप गुरु, पुष्ट भये नर राइ॥
घूमत रह्यो भूमि भरि पीरा। इत नहाइ भो स्वच्छ शरीरा॥
चन्द्र सरिस तन भयो ललामा। भई सरिस शशिकान्ता नामा॥
हम सब तामें न्हाइ कृपाला। ताते शशिसम कान्ति रसाला॥
सदल मदन सुनि सरित नहाये। दान दिये उर हरष बढ़ाये॥
जीति हिरण्मय खण्डहि ऐसे। रम्यकके मधि सम्यक पैसे॥
नीलनाम गिरि सींवा ताकी। ताके उत्तर नगरी बांकी॥
परम करालक कालक देशा। तहँ कलङ्क निशिचरखलभेशा॥
कालनेमिसुत रहत दुजन में। भगेउ लङ्कते रावन रन में॥
दो० निशिचर गन सह कोपिसो, सुनि नरदल आगौन।
कृष्णबरण रासभ चढ़यो, आयो रणहित तौन॥
सिंह प्रशोषक ओज सह, अपराजित बलनाम।
प्रबल ऊरधा गात्रवत, महाशक्ति अभिराम॥
ये लक्ष्मणा कुमार दश, बढ़िकै धनु टंकारि।
सदल भिरे राक्षसन सों, भूप भयो रण भारि॥
भु० घनेबानमारैंघनेलक्षकारैं। घने मानवा भीति भागौ पुकारैं॥
महाराज भो युद्ध सो कालभारी। भिरे हैं मनुष्यानसों रात्रिचारी॥
हरीके कुमारै सबै बान मारैं। घने शत्रुको काटिकै भूमिडारैं॥
लसैं बानते पूरिकै रात्रिचर्ता। मलै शत्रु अङ्गै करैं पीसिभर्ता॥
भयो घोर संग्राम यों बीर डोलैं। धरौ मारु औ मारु यों बीर बोलैं॥
कोऊछिन्दिभाषैकोऊभिन्दिभाखै। कोऊअश्वचाखैकोऊअश्वनाखै॥
घने रात्रिचारे लरैं शस्त्रधारी। अहे मालपूआ करैं हैं पुकारी॥
कलंकाधिआयो महाकोप छायो। महाहांक दै दै प्रवीरै लरायो॥
टुटैं औ छुटैं औ जुटैं बीर भारे। करैं शस्त्र बरषा जनो मेघकारे॥

घने गिद्ध जम्बूक खींचैं सुआंतैं। खगा मांस खाहीं करैं प्रेमघातैं॥
विना शीश केते कहैं मारु मारू। धरो औ लरो युद्ध फोरो कपारू॥
प्रलयकालसो कालभोकालसोई। नच्योकालआनन्दकोकालजोई॥
जनौशम्भु लै शूलभो और दोऊ। बिदाख्योन जामैंबचैबिश्वकोऊ॥
अरे आउरे आउरे बीर टेरैं। घने कोपते आपुहीं जाइ घेरैं॥
ध्वजा छत्र नाना पताका फरक्कैं। लखे कादराकी सुछाती धरक्कैं॥
घने शूलव्योमा भुशुण्डी चमक्कैं। कृपाना घने बीजुरी से दमक्कैं॥
झपट्टैं दपट्टैं रपट्टैं लपट्टैं। कटाकट्ट कट्टैं पलट्टैं झपट्टैं॥
घने बीरको फेंकि आकाश दीन्हो। घनेको मही मारिकै चूर कीन्हो॥
घने शीश तोरैं धरैं मुक्खमाहीं। जनौं गांवबासी बचंनावबाहीं॥
घने मारुरे मारुरे मारु बक्कैं। घनेआंखको काढ़िकै लालतक्कैं॥
चढ़े शीतलावाहने रात्रिचारी। करैं लक्षकारी धरे शस्त्रधारी॥
घने बीर मारे मिले दोय जुम्भझैं। कितेआपहीसोंरिसायेअरुभझैं॥
बजैं शंख औ दुन्दुभीघोर बाजे। चहूं ओर सों युद्धके साजसाजे॥
किते ढालधारी धरे भट्ट लट्टैं। किते क्रोधपूरे गहे शस्त्र अट्टैं॥
मरैं जायँ ते बीर देवेन्द्रधामा। लखैं जाय बैठी घनी देवबामा॥
घने गीध औ श्यारके यूथ टुट्टैं। लहूमांस मज्जासु औमासलुट्टैं॥
घने बीर बाजैं घने शंख बाजैं। घने सङ्ग राचैं घने जङ्ग साजैं॥
घने कोप पूरे तजी हट्ठ बट्टैं। जनौं त्यागिबांबी महासर्प कट्टैं॥
करैं रात्रिचारी घनी भांति माया। नशैअस्त्रसोंबिश्वजोज्ञानआया॥
भगौना भगौना कहै शस्त्रधारी। कँपैभूमिआकाशमें शब्दभारी॥
लगे नाचिबे केतने तत्र रुण्डा। परे भूमिके बीच कइएक मुण्डा॥
कटे अश्वबीरा सुरत्थौ बितुण्डा। घने हैं भये भिन्न शुण्डा भुशुण्डा॥
तहां मोद पूरे लसैं बीर झुण्डा। झपट्टैं घने मल्लसे धीर गुण्डा॥

परे अङ्ग नाना कटे भूमि माहीं। लखे जो रहे कादरैं धीरताहीं॥
दो० तब प्रघोष हरिसुत प्रबल, कपिपति अस्त्र उठाय।
मारयो ताते कढ़त भे, हनूमान हरिराय॥
गहि मुद्गर कर कुलिश समाना। लेनलगे निशिचरके प्राना॥
कज्जल गिरिसे रिपुन उठाई। फेंकहिं अम्बर पुच्छ फिराई॥
इभि मारेगे निशिचर सारे। डरे देखि उर शेष दुखारे॥
तब कलङ्क हनुमानहिं जानी। गदा भार लख की गहिपानी॥
मारेउ तमकि कीश तब कूदे। मूकप्रहार हृदय अपि मूंदे॥
नींद किरीत उठ्यो सो बहुरो। तजेउ त्रिशूलकहत छिनठहरो॥
गिरयो कीश जब दीन्ह झपेटा। हतेउ चरण धरणी जब लेटा॥
ऊपर धरेउ लसुनिया शैला। प्रानगयो सुरपुरकी गैला॥
दो० जय जय भो अरि मरिगयो, हरिभे अन्तरधान।
सुर हरिसुवन प्रघोष पर, बरषे सुमन सुजान॥
बहुरि सदल हरिसुवन सुहाये। चर मनुनगरी के मधि आये॥
कञ्चनमयी छयी सुखनाना। मिश्रेयश बन जहँ सरसाना॥
हरिचन्दन मदार परिजाता। केतक चम्पक कुटज बिभाता॥
चारु बयार बहत सब क्षण है। माधवि फूलिरही सब दिन है॥
जा रुधि परबत लावत भारी। कोस सहस द्वै उच्च बिचारी॥
ताके नीचे अहै बगीचा। शतयोजन सुन्दर जलसींचा॥
कोकिल सारस चक्र मयूरा। हंस चकोर शब्द जगपूरा॥
झरहिं फूल फल तरुवर गणते। मृगपतिकेलिकरहिं शुभगणते॥
दो० नकुल सर्प इक सँग रमैं, बैरबिगत नरराव।
अयुत अयुत कमलनसहित, सोहहिं अयुततलाव॥
फूलेते सब अतिछबि होती। तिनमधि बारि बिन्दु जनु मोती॥

इमि बन देखि मुदित भगवाना। तहँ के नरसों बचन बखाना॥
कासुपुरी यह कानन कासू। नागर मोहिं बतावहु आसू॥
सुनिके तहँके जन सब कहहीं। आजकाल जो मनु नृप अहहीं॥
बैवस्वत भक्त बिष्णु उपासी। जगतगुरू गिरि मानव बासी॥
तिनकर यह पुर बाग पहारा। हरिपुर सरिस सरस निरधारा॥
यह बैकुण्ठधामकी धरणी। आई इत अति आनँदकरणी॥
इत तप करत महामनु सोई। जाके वंश भूप सब कोई॥

दो० भानुबंश शशिबंश सब, जग जितने उत्पन्न।
करत तपस्या शैलपै, बिमल बुद्धि सम्पन्न॥

श्राद्धदेव मनुकहँ जब जाना। अपने पर पुरषहि पहिंचाना॥
यदुनसहित यदुकुल भरतारा। मानव गिरिचढ़ि मनुहिं निहारा॥
शतरबि सरस कटी आसीना। सांख्ययोगधर परम प्रबीना॥
व्यास बशिष्ठ बृहस्पति कीरा। कहहिं कृष्णयश पुलक शरीरा॥
काम कियो दलसहित प्रणामा। मनु जान्यो मधुरिपु घनश्यामा॥
उठिकै आसन दीन्ह अमोले। बैठि सबन सह यह मनु बोले॥
बासुदेव संकर्षण नामी। रतिपति ऊषापति यदुस्वामी॥
पुरुष परात्म अनादि प्रकृतिपर। निर्गुणपर पुराण करुणाकर॥

दो० बशकरिकै मायहि करत, बिश्व सकल कल्यान।
स्वच्छअमलगुणरहितपर, भजहु तजहु अभिमान॥

जानि मनोमय जग यह झूठा। भजिय कृष्ण अजईश अनूठा॥
अगिनि अकाश धूरि नहिं लागै। उड़त एकसम संशय जागै॥
तिनसम तुम निर्मल अबिकारा। जैसे फटिक सुस्वच्छ बिचारा॥
रङ्ग सङ्गते दरशत तैसा। तिमितुमजगदिखातगुनिजैसा॥
लक्षण व्यङ्ग बचन असफोटा। ज्ञान बुद्धिपद जानन छोटा॥

बेदन बेदत बेदन बेदा। कह लौकिक सुतुच्छ निरबेदा॥
कर्मकाल बिज्ञान बिचारा। योग ब्रह्म कोउ कोउ निरधारा॥
जेहि जस आवा सो तस गावा। यही अहै नाहिं कोउ ठहरावा॥
दो० इन्द्री मन गुण काल बुधि, चितहु जहाँ नाहिं जाइ।
बिस्फुलिङ्गसम जगत कढ़ि, तुम शिखमाहिं समाइ॥
देव हिरण्यगर्भ तुम अहहू। जगकृत धृतहित जामनचहहू॥
ऐसो रूप धारि मन माहीं। हमजगहितकछुसमुझत नाहीं॥
सुनि मनु बचन कहत हरषाई। मदन सदन सुख बदन नवाई॥
तुम गुरु अहहु सुबृद्ध पितामह। क्षत्री पूजनीय या जगमहँ॥
हम सब पालन पोषन योगू। तुमरे सुवन भुवन कृत भोगू॥
तुमसम साधु आतमा धारी। जितइन्द्री जग करुणाकारी॥
नर अन्तर तम काटन हारे। साधु अहै नाहिं रबि निरधारे॥
इमि कहि लै आज्ञा पति बन्दी। निज सैना चलिगये अनन्दी॥
दो० जीति रम्यकहि मेरुके, पूरबगे सह सैन।
केतुमाल बर खण्डमहँ, सुनहु कथा सह चैन॥
नील शैल तहँ सुन्दर नगरी। मन्मथसालिनि सुन्दर सगरी॥
माल्यवान गिरि सींवां ताकी। चक्षुनाम तहँ गङ्गा बांकी॥
जहँके पुरुष श्याम छबि सदना। नलिननयनजनु सब बर बदना॥
पीताम्बरधर सब त्रिय लोला। क्रीड़हिं कन्दुक करहिं कलोला॥
अलिसमूह गुञ्जहिं जहँ आई। शत योजन लौं सरस निकाई॥
तहँके पुरबासी सब आई। गावनलगे सुयश अधिकाई॥
पुरुषप्रधान आदि हितकारी। अम्बु शयन कर पङ्कज धारी॥
नमो रमापति ज्ञाननिकेता। देवनते बन्दित जग हेता॥
दो० प्रकटभये बसुदेव गृह, बेरी दीन्ही काटि।

नन्दराय गृह जाइकै, ब्रज दीन्हो सुख पाटि ॥
यशुमति लालित प्रेम प्रकाशा । कीन्हो कुटिल बकीकर नाशा ॥
शकट प्रभञ्जन भञ्जन करिकै । तृणावर्तके प्राणहिं हरिकै ॥
मातहि विश्वरूप दरशावा । नाम प्रतापहि गर्ग सुनावा ॥
नव नवनीतहि चोरि अभीता । मोही ब्रजकी बाल पुनीता ॥
फोरि दहीघट दाम बँधाये । धनदतनय के शाप छोड़ाये ॥
बच्छ चरावत बालक लीने । बत्सासुर का निज पुर दीने ॥
तृणसम बक असुरहि पुनि मारो । जय जय जय देवन उच्चारो ॥
विचरत बन अति लीला लालन । मोहत सबन ग्वाल ब्रजबालन ॥
दो० गो ग्वालन अघ लीलिगो, ताकहँ कीन्हो नाश ।
जैसे कृष्ण सुनामसों, अघ नाशत गुणराश ॥
आदि अनन्त क्षेत्रके दाता । पूर्ण प्रधान पुरुष जगत्राता ॥
सतचित जगदाधार कृपाला । विधिमनमोहन श्रीगोपाला ॥
पुनि बलदेव हस्यो खरप्राना । काली नाथ्यो कृपानिधाना ॥
पावक पियो कियो अवलम्बहि । बहुरि हलायुध हत्यो प्रलम्बहि ॥
गोचारत मुरली धुनि कीना । गोपीगनके मन हरिलीना ॥
अम्बर चोस्यो यमुना तीरा । द्विजत्रिय अन्न भुजो बलबीरा ॥
बरष्यो बासव कोप बढ़ाई । इक अँगुरी गिरि लीन्ह उठाई ॥
सात रातलौं तिमि भो ठाढ़े । पूज्यो सुरपति संशय बाढ़े ॥
दो० वरुणलोकते नन्दकहँ, लाये करुणाधाम ।
दरशायो ब्रज नरनकहँ, पुनि बैकुण्ठ ललाम ॥
रासमाहिं ब्रज सुन्दरि साथा । रमण कीन्ह प्रमुदित ब्रजनाथा ॥
देखि तहां गोपिनकर माना । अन्तरगत भे अन्तर्धाना ॥
पुनि तिनको जब गर्व नशायो । तब निजरूप सरस दरशायो ॥

बन ठन बृन्दाबन बनवारी। मुकुटन मण्डित यौबन सारी॥
कीन रास प्रमदन के सङ्गा। बढ़्यो उमङ्ग सुरङ्ग अनङ्गा॥
नन्दहि फणिते दीन्ह छुड़ाई। शंखचूड़ मार्‌यो दौराई॥
बृषभरूप धरि परम गरिष्ठा। मार्‌यो माधव असुर अरिष्टा॥
सभय कंस केशी पठवायो। अश्वरूप सो गरजत आयो॥
दो० मुखमहँकरि कर गिरिधरन, लीन्हों ताके प्रान।
नारदते यदुपति सुन्यो, केशवको आख्यान॥
ब्योमनाम असुरहिं संहार्‌यो। मिलि अक्रूर चलन चित धार्‌यो॥
बिदा होइकै गोपीजन ते। दुःख दूरिकरि तिनके मनते॥
जलमहँ निजस्वरूप दिखरायो। लखि अक्रूरहि अचरज आयो॥
सबन सहित पुनि कुञ्जबिहारी। मथुरा नामा पुरी निहारी॥
रजकहि कीन प्राणते हीना। बर बर बहुरि बायकहि दीना॥
माली कुबिजा कहँ बरदैकै। भञ्जत भये धनुष निरभैकै॥
गजहि मारि मल्लन संहारी। कंसहि कीन्ह अप्राण मुरारी॥
मात पिताकर बन्ध निवारो। उग्रसेनाशिर टीको सारो॥
दो० नन्दहि पुनि कीन्ही बिदा, यादव नगर बसाइ।
पढ़ि बिद्या गुरुसुवन हित, मार्‌यो असुरहि जाइ॥
ऊधव कहँ गोपिन पहँ भेजो। अक्रूरहि कुरुबंश सहेजो॥
जरासुतहि बहु बार हरायो। यवनहि नृप जगवाइ जरायो॥
अस्थल चारु द्वारका करेऊ। कुण्डिनपुर नृपकन्यहि हरेऊ॥
तिनके सुत शम्बर कहँ नासा। भालुसुता हरि ब्याहि खुलासा॥
शतधन्वाते लिय सतभामा। कालिन्दी कहँ ब्याहि ललामा॥
भेदि सात बृष कीन्ह बिवाहू। सुता सरस जैजै नरनाहू॥
दो० भद्रा कैकय पति सुता, करि विवाह भगवान।

बहुरि लक्ष्मणाते कियो, पटरानी परमान॥
भौम प्रबल मद मन्दिर ढाहो। अबला षोड़श सहस विवाहो॥
सुरतरु सभा इन्द्रते लीन्हा। जब तेहि दण्ड समरको दीन्हा॥
बल रुक्मीकर किय संहारा। बाणबाहु पुनि कृष्ण विदारा॥
सोइ नृप उग्रसेन के काजा। निजसुत पठयो सहितसमाजा॥
जो इत आये जीतत राजन। हम सबबन्दत तिनहिं महाजन॥
सुनि हरिसुवन मुदित मणिहेमा। भूषण बसन दिये भरिप्रेमा॥
तहँको नृप संवत्सर नामा। दीन्ह भेंट करि विनय ललामा॥
तहँते बहुरि कामबन आये। जहँ विधि कन्यहिं देखि लोभाये॥

दो० मनमथ तहँको भूपबर, जग जेहि सम नहिं और।
जेहि लखि गिरत सुगर्भत्रिय, सो निकस्यो तेहि ठौर॥

छं० तिहि ठौर निकस्यो अङ्ग सहित अनङ्ग गुणि रँगरङ्ग हैं।
शर पांच धनुष चढ़ाइ छोड़्यो हृदय पूरि उमङ्ग हैं॥
सो बानते खग पशु मनुज सब कामते मन भङ्ग हैं।
महि गिरत लज्जा त्यागि अति बिपरीति जङ्ग कुसङ्ग हैं॥

दो० सन्मुख हरिसुत महँ मिल्यो, अङ्ग समेत अनङ्ग।
जिमि जलमें जल मिलत है, जै जै भयो उमङ्ग॥
काम मिल्यो जब कामते, भयो यदुन को काम।
काम बनहिं जीतत भये, इमि हरिसुत बलधाम॥

जीति केतुमालहि जगजैना। गे भद्राश्वखण्ड सह सैना॥
शैल गन्धमादन तहँ सींवा। बहत नदी सीतावर जीवा॥
बेद क्षेत्र सुन्दर अघहारी। जहँ निबसत हयग्रीव सुरारी॥
भद्रश्रवा नृपति बलवाना। पूजत विष्णुहि बुद्धिनिधाना॥
तहँ प्रद्युम्न कियो निज डेरा। आयो भूप हरष उरघेरा॥

दैबलि बैठो शीश नवाई। कहत महत सच्चुपाइ सुभाई॥
तुम पूरण यदुपति झषकेतू। प्रकटे जगत भलेके हेतू॥
तुम शम्बरकहँ जीत्यो सांई। उतकच नाम तासु लघु भाई॥

दो० गोकुल मार्यो कृष्ण तेहि, तासु अहै गुरुभ्रात।
शकुनि नाम तेहि बधिय प्रभु, जीतनयोग प्रभात॥

सुनि प्रद्युम्न कहा सुललामा। काकर बंश नाम अरु ठामा॥
ताकर बल पुनि कैसो होई। भूपति भद्रश्रवा सुनि कहई॥
द्वैसुत भये कश्यपहि भारे। कनककशिपु कनकाक्ष करारे॥
नवसुतभे कनकाक्षहि बलधर। शकुनि भूतसन्तापन शम्बर॥
हृष्ट बृकादिक नव बलवाना। तामधि दोय भये गतप्राना॥
जठर नाम गिरिकेरि तराई। चन्द्रावती पुरी सरसाई॥
शकुनि बसत षट भ्रात समेता। होइ यज्ञ जब बिप्रनिकेता॥
भङ्ग करत तब जाइ रिसाई। लायो इन्द्र अश्व सो जाई॥

दो० कामधेनु अरु कल्पतरु, लायो बलते जीत।
ताते इन्द्रादिक डरत, लड़त न भरि अतिभीत॥

जगजीतन प्रण अहइ तुम्हारा। ताते करहु असुर संहारा॥
चतुर व्यूह प्रद्युम्न कृपाला। हम बन्दत धरि तवपद भाला॥
सुनि सो बचन काम भगवाना। नरन सुरन हँसि अभय बखाना॥
सदल कृष्णसुत अमरष छाये। चन्द्रावती पुरी महँ आये॥
मम मुखते शकुनी सो सुनिकै। शीश उठाय कहत भो गुनिकै॥
देखा देखा मम रिपु आयो। हतिहौं तेहि जिन भ्रातनशायो॥
शम्बर हत्यो छली अभिमानी। हतिहौं तेहि अपनो अरिजानी॥
प्रथम मारि यादव समुदाई। पुनि मारिहौं देवतन जाई॥

दो० सो सुनि हृष्टमहान बल, हृष्ट भयो खलनाथ।

आयो यदुगणते लरन, कोटि दैत्य लै साथ॥
सो गुणिकै मनमथ धनुधारी। विरच्यो गिद्धव्यूह अतिभारी॥
तुण्डभये अनिरुद्ध महारथ। वीरजसींव ग्रीव परमारथ॥
साम्बपीठि अति शोभा सोई। दीप्तिमान गदपद भो दोई॥
पुच्छभानु प्रद्युम्न उदर में। इमि रचि भिरे वीर सव थरमें॥
भो रण कठिन दनुज यदुगणसों। चले शस्त्र दुहुँदिशि वररणसों॥
दैत्ययूथ बढ़िकै बलओका। मारि मारि यादवदल रोका॥
तेहि क्षण सकल यादवी सैना। व्याकुल भई यदपि जग जैना॥
सो लखि दशसुत हरिके भारे। चले मित्रविन्दा सुकुमारे॥
दो० एकहर्ष निलगृद्ध पुनि, पवन वह्नि उन्नाद।
शुद्धि महाशव धनदसम, चले सहित अहलाद॥
तब वृक हरिसुत धनुटङ्कारी। दलत भयो दानवदल भारी॥
गज रथ अश्व पदातिन मारे। कर पग शीश बिगत करिडारे॥
बहु दैत्यन कर लीन्हो प्राना। तजिद्रुततरणितरुणसम बाना॥
यहि विधि दहतदेखिरणकानन। हृष्टचलो बढ़ि चढ़ि पञ्चानन॥
दश शर मारि धनुषकहँ काटो। चार बाणते हयशिर छांटो॥
द्वै शरते सूतहि बधिडारा। ध्वजा तीन शरते महिडारा॥
बीसबाण ते रथहि नशायो। वृक दूजे रथ चढ़ि पुनिधायो॥
जबते वृक निजधनु धरि डांटो। तबते हृष्ट सोऊ धनु काटो॥
दो० तबवृक गहिकै गुरुगदा, मास्यो कठिन कराल।
सहित केशरी तेहिलगी, सुनहु तबै नरपाल॥
तब मृगपति उछरो रिसधारी। मर्दन लाग्यो सैना सारी॥
करि हुंकार जीह थहराई। वृकहि गिराय दयो मृगराई॥
गहि वृक तेहि पटक्यो महिमाहीं। मर्दतभयो मस्यो हरि नाहीं॥

उठिकै लरन चह्यो मृगराजा। हरिसुत मार्यो मुष्टि दराजा॥
पञ्चानन पञ्चता सिधाये। दुष्ट बृकहि तब शूल चलाये॥
आवत लखि भयबिन सो शूलहि। गह्यो झपटि बृक ताके मूलहि॥
असुर असिहि ललकारि प्रचारा। नदितभयो महिमण्डलसारा॥
सो असि असिते काटि महाना। ताके शिर निज हत्यो कृपाना॥

दो० ताते ताको शीश कटि, गिर्यो धरातल आइ।
कुण्डल कीट समेत छबि, सो कछु कही न जाइ॥

तासु मरे सब दितिसुत भागे। दइत दइत कहि रोवनलागे॥
सुरन दीन्ह दुन्दुभि सुखमूला। बृकपर बर्षत भे बहुफूला॥
सो सुनि शकुनि परम रिस छाई। चल्यो आप सँगलै सबभाई॥
गज चढ़ि चल्यो भूतसन्तापन। बृक खर कालनाभ शूकरपन॥
महानाभ चढ़ि ऊंट रिसाये। हरिश्मश्रु अति मङ्गल छाये॥
रथ जयन्तमय निर्मित भारी। बीस कोसको अश्वकतारी॥
शतपताक का मग अभिरामा। कलशसहस पुनि चक्रललामा॥
सहस अश्व अरु शब्द अपारा। रबिरथ सरथ सरिस निरधारा॥

दो० शकुनि चलो चढ़ि बीर ढिग, करत शब्द बिकराल।
द्वादश अक्षौहिणि लिये, शत्रुबंशको काल॥

गज चिकार हय हिंसन भारी। शब्दभयो अतिशय भयकारी॥
डगतधरा गिरि गिरत गरारे। सिन्धु उच्छलत करि ललकारे॥
इन्द्रादिकन भयो भय भारी। आयो अरिदल तमकि सुरारी॥
लखि अरिदल प्रद्युम्न कृपाला। यादवगण सों बचन निकाला॥
यह शरीर जग कर्म बनायो। फेनसरिस सरभौतिक गायो॥
आवत जात रहत नहिं वैसो। बुध शोचहिं न बालकृत जैसो॥
ऊरध सात्त्विक जाहिं सुजाना। मध्यमाहिं राजस परिमाना॥

तामस जाहिं अधोगति भाई। कर्मविवश इमि भ्रमहि सदाई॥
दो० घूमतमह घूमतलगै, महिन फिरत यह सांच।
जसदेखहुतासि लखिपरै, पटरँगीन पर कांच॥
मण्डलवर्तिहि जो सुख होई। अधिक चक्रवर्ती पुनि जोई॥
ताते अधिक इन्द्र परिमानो। यह विचारि जगतृणसमजानो॥
बायुवेग जिमि घन नभ छावैं। क्षणमहँ बहुरि बिचलिकै जावैं॥
तिमि तन होत कर्मसंयोगा। तुच्छ सकल नाशी जगभोगा॥
जबलौं वस्तु न परै दिखाई। तबलौं दीप प्रयोजन भाई॥
खगसम ज्ञानी फिरै असङ्गा। क्षण क्षण प्रति न थिरै मनभङ्गा॥
इक शशि घटप्रति घनो दिखाई। इक शिखिप्रति अँगार सरसाई॥
इमि हरि एक अनेक लखाई। करहु बिवेक कुटेक दुराई॥
दो० ज्ञाननिष्ठ हरिभक्त जे, सदा चित्त आनन्द।
तिनहि न जगपरसै सुनहु, जलमहँ जलज स्वच्छन्द॥
शिशुसमान सुख दुखहि नशाई। योगी विचरहिं सुचित सदाई॥
तनकी चेत रहत नहिं कैसे। मत्तहिं तनकर अम्बर जैसे॥
भानुउदय तम यथा नशाई। भवन बस्तु सब सरस दिखाई॥
ज्ञानउदय तिमि गुणकर नाशा। सत्यानन्द दिखात तमाशा॥
जिमि इन्द्री निजगुणअनुसरहीं। गुण दूजेको एकन करहीं॥
तिमि योगी केशवपद त्यागी। होत न दूजे पथ अनुरागी॥
कोउ परमपद करहिं बखाना। कोउ बैकुण्ठ कीन्ह परिमाना॥
शान्ति कहत कोउ बृहत प्रतापी। कोउ गोपुर कोउ अक्षर थापी॥
दो० निज निज मत अनुसार जग, परपद करहिं प्रकास।
कृष्णसत्य अरु असत सब, जानहु गिरिधरदास॥
ताते लखहु डरहु मति भाई। जामहँ दोऊ लोक भलाई॥

सो सुनि यदुसमूह भय त्यागी। गहि गहि शस्त्र चले रिसिपागी॥
भो रण सीतातटः अति भारी। सीताहितजिमिकपिनिशिचारी॥
रथते रथ गजते गजवाना। पदचर पदचर हय हय जाना॥
बहुमतङ्ग अति भयद दिखाहीं। उच्चशीश रण चिकरत जाहीं॥
शुण्ड उठाइ दन्तते मारहिं। हयपर चढ़ि भट भल्ल प्रहारहिं॥
करते पकरि सुरथ नर तेहीं। कुपित फेंकि अम्बरमहँ देहीं॥
पगते बहुतन मरदहिं धाई। करहिं द्विरद इमि कठिन लराई॥

दो॰ तुरँग सपक्ष उड़ाहिं नभ, रण धावहिं भरपूर।
सुरथ द्विरदकहँ लांघिकै, निकरि जाहिं अतिदूर॥

शक्तिधरे बहुभट समुदाई। छेदहिं गजरथ दपटि रिसाई॥
बहु हय चढ़ि असि बाहत जाहीं। करत अमित शिर करकी नाहीं॥
घने करहिं बढ़िकै रण भारी। मरहिं परस्पर बाहि कटारी॥
खङ्ग परशु चक्रहि छटकाई। काटहिं मस्तक ओज बढ़ाई॥
तब भद्राके दशसुत भारे। चले लरनहित चाप सुधारे॥
जय सुभद्र रणजित अरु शूरा। बाम आयु प्रहरन बलपूरा॥
अरिजित अरु सत्यकहतसेना। चले लरन हित ये अरिजेना॥
निरखि भूत सन्तापन योधा। गजचढ़ि भिरत भयो भरि क्रोधा॥

दो॰ ताते निजदल ललितलखि, रणजित धीरधुरीन।
भिरतभयो बरषत बिशिख, परमपराक्रम पीन॥

शतशर असुरहि मारि प्रचारी। तब सोधारि शरासन भारी॥
धनुडोरी काट्यो रिसि छाई। तब रणजित धनु और चढ़ाई॥
तानि तज्यो शत तीर रिसाई। ते सब धसे कवचमहँ जाई॥
तेहिधनुषहि कवचहिगजराजहि। छेदि धसे महिबिवर दराजहि॥
तब कछु व्याकुल है बलवाना। गजहि बढ़ायो असुर महाना॥

प्रावत देखि द्विरद असिधारी। मार्‍यो शम्बरजीति प्रचारी॥
ताके लगे शुण्ड महिगिरी। रुधिर बहो उर शङ्काथिरी॥
तजि सवार कहँ बारण भागा। करत चिकार महतभय पागा॥

दो० चन्द्रावति नगरी गयो, भागि भीरु गजराज।
भयो शब्द दोउसैन महँ, लखि हरिसुत कर काज॥

तब गहि चक्र भूतसन्तापन। अरिपर त्यागत भयो महापन॥
सो लखि रणजित चक्र घुमाई। ताहि काटि महि दीन गिराई॥
जठरशैलकर शिखर उखारी। मार्‍यो कृष्णसुतहि ललकारी॥
गहिसो शिखर समरजित योधा। पुनि तापर पटक्यो अतिक्रोधा॥
जठरहि लीन्ह उठाय बहोरी। तजन चहो सो दानव होरी॥
याते हतिहौं भाष्यो बानी। खड़ो भयो उद्भट गिरिपानी॥
देवकूटगिरि कहँ तब धारी। रणजित मारत भयो प्रचारी॥
ते सब जठर और सुरकूटा। परिके अरिके प्राणहि लूटा॥

दो० मर्‍यो कराल प्रचण्ड अति, सुनहु तबै तहँ तात।
तासु ज्योति तामहँ गई, जानहु सत्य सुबात॥

सुर नरके तब बजे नगारे। हरिसुत पर बर पुष्प पवांरे॥
मर्‍यो भूतसन्तापन जबहीं। असुरन हाहा कीन्हो तबहीं॥
कालनाभ बृक शकुनी धाये। हरिश्मश्रु अतिनाभ रिसाये॥
श्रीप्रद्युम्न शकुनि सँग लरहीं। बृक अनिरुद्ध परमरण करहीं॥
कालनाभ अरु साम्ब सुभाई। दीप्तिमान अतिनाभ लराई॥
भानु हरिश्मश्रूते भिरिकै। करतभये रण अनुपम थिरिकै॥
तिनमहँ बढ़ि अनिरुद्ध प्रचारी। दलतभये बृकको दल भारी॥
मर्दहिं मनुज दनुज के जूहा। लसहिं कटे कटि शीशसमूहा॥

दो० गिरनलगे मरि मरि असुर, पत्रपात हततुल्ल।

शोणितपूरे अङ्ग सब, जिमि तरु टेसूफुल्ल ॥
गजगतकुम्भ परहिं महिभिरिकै। दन्त रहित भागहिं चिकरिकै ॥
द्विधा परहिं धरणी पर कैसे। पबि प्रहारते पर्वत जैसे ॥
फटे कुम्भ गजमुक्ता दरशाहिं। बनमहँनखतसरिसद्धबिपरशाहिं॥
कोउडरिपरहिं भगाहिं कोउआतुर। दारहिं दरहिं कोऊ रणचातुर ॥
कोउ महिगिरे रथिन सहभारे। जिमिकपित्थफल दण्ड प्रहारे ॥
क्षणमहँ अरिदल में नरनायक। रुधिर नदी प्रकटी भयदायक ॥
द्वीप द्वीप कच्छप कर घोरा। सूइस सुरथ भिन्न अतिघोरा ॥
केश सिवार सर्प भुज भारी। पद झष रेती रतन बिचारी ॥
दो॰ शस्त्र छत्र सो सीपसम, चमर शंखके रूप।
चक्र सुमण्डल मण्डिता, तटदल उभय अनूप ॥
छं॰ दल उभय अतिहि अनूप भूपति रुधिर की सरिता भई।
बैताल भैरव भूत प्रेत पिशाच नृत्यहिं मुदमई ॥
करि घोर जोर सजोर पीवहिं मुण्डमाल बनावहीं।
बन्दी सरिस संगरसुयश शम्बर रिपूरण गावहीं ॥
लै योगिनिन सँग भद्रकाली सिंहपै चढ़ि डोलहीं।
भरि रुधिर खप्पर पिवत रण धरु मारु बाणी बोलहीं ॥
विद्याधरी अरु अप्सरा बर बरहिं झगरहिं नागरी।
अनुरूप शूरहिं बरहिं कूरहि सकल आनँद आगरी ॥
बहुवीर बलकरि प्रबल मरि रबि भेदि कहँ हरिपुर गये।
संग्राम महँ तन त्यागिकै दुर्लभ गतिहि पावत भये ॥
बहुगृद्ध लैलै आँत जात अकाश बहुसुख छावते।
जनु दिविनिवासी रुधिरसरहित भरन दाम बनावते ॥
इक एकते छिनि लेहिं दूजेहि देहिं प्रमुदित नाचहीं।

कोउ खाहिं अरु जमुहाहिं केते खड़े इकते यांचहीं ॥
इक कहहिं के इत लरहु यांचहु कहह मूरख मण ठयो ।
ऐसें सदावर्तहु भये नहिं अजहुं मूरखपन गयो ॥
तब कहहिं ते उर चहहिं तुमतो सत्य यह गाथा कही ।
पर शूर जनको रुधिर दुर्लभ मिलत नहिं हम कहँ कहीं ॥
अवनी अकाश मनुष्य दानव खग सुरनते भरि रह्यो ।
तेहि काल हे नरपाल मानहुँ काल दुहुँदिशि लरि लह्यो ॥

दो० निरखि युद्ध अनिरुद्ध को, भगे असुर बिकराल ।
सो सब लखि रासभ चढ़ो, बृक तब चलो बिशाल ॥

धनुटङ्कारि बाण संधानी । चल्योसमरमहँबढ़ि अभिमानी ॥
दश शरते बिशिखासन काट्यो । बहुरि क्रुद्ध अनिरुद्धहि डाट्यो ॥
दुसरो धनुष धारि अनिरुद्धा । दशशरते धनु काट्यो क्रुद्धा ॥
तब त्रिशूल लै बृक ललकारी । मारत भो हरिसुतहि प्रचारी ॥
अबहीं लेत प्राण मैं तेरो । रे खल देखु पराक्रम मेरो ॥
तब अनिरुद्ध कह्यो सुनु पापी । बकहिं ते न करिसकहिं कदापी ॥
अबहिं मारि तोहिं महिमें डारत । नतरु शपथ निज ऊपर धारत ॥
गो द्विज भ्रूण बालके मारे । होइ न जो तव प्राण बिदारे ॥

दो० बृकहु शपथ करि बज्रसम, मारेउ शूल घुमाइ ।
बाम हस्तते तेहि धर्‍यो, हरिसुतसुत हरषाइ ॥

मारतभे घुमाइ सो लागा । खरसह भेद्यो पुनिकढ़ि भागा ॥
तुरित धरातल माँहिं समाना । गोमयागिरिमहँ तड़ितसमाना ॥
गिर्‍यो असुर खरभो गत प्राना । उठि बृक गह्यो गदा रिससाना ॥
करि गर्जना कालसम सोई । मार्‍यो सुरथ शत्रु को जोई ॥
चूरण भयो कामसुत जाना । तब कूदे यदुयूथप्रधाना ॥

गहि असि आइ हाथ करिआड़े। भुजा काटि डार्यो भयमाड़े॥
तब बृक दौरो बदनहिं बाई। ताके चलत धरा थहराई॥
जीभ बढ़ाइ क्रोध कहँ छाई। लीलगयो हरिसुतहि उठाई॥

दो॰ तिमिहिंतिमिंगिलजिमिगिलै,तिमिकियअसुरकराल।
प्राण गयो नहिं भूपमणि, दाता तासु कृपाल॥

स॰ काम गये झषके मुखमें, जिमि मारेउ शत्रुहि चोट न आई। गोप गये अघके मुखमें, अरि वृत्रहृदय जिमिगे सुरराई॥ केशवजू बकके उरमें, चलिजाइ सुभांति निजातहि पाई। तैसेइ ये बृक के उरमें, नहिं संशय पै अति होति रुबाई॥

दो॰ गद मार्यो गरवी गदा, मस्तक अरिके जाइ।
फूटो शिर निसरतभई, रुधिरधार अधिकाइ॥

कज्जल गिरिके शिरते जानो। कुमकुम को नद कढ़ो महानो॥
पारस असिते दोउ पद काट्यो। गिरेउअसुर भरि लोचन डाट्यो॥
असिते उदर भेदि तेहिकाला। कढ़त भये अनिरुद्ध कृपाला॥
तूरण काटि लीन्ह शिरतासू। भगिगो निकरि तबै असु आसू॥
सुर हर्षहिं बर्षहिं परसूना। तिनते मोद नरन कहँ दूना॥
तब महिपाल कह्यो सुनिलीजै। आगे कहा भयो कहिदीजै॥
अद्भुतचरित सुनत चितचहहीं। नारद भरे प्रेमरँग कहहीं॥
कालनाभ शूकर असवारा। गर्जत चलो अधम सरदारा॥

दो॰ कृतवर्मा अक्रूर कहँ, बीस बीस शरमारि।
दशदशशर अर्जुनगदहि, शतमनमथहि प्रचारि॥
सात्यकि दीप्तिमतहि हत्यो, पांच पांच अवनीश।
बीसबाण अनिरुद्ध कहँ, मारेउ लै उर रीश॥

सो शर सबन घुमाइ घुमाई। महिमहँ दीन गिराइ गिराई॥

चमर बिछौना छत्र पताका। घोड़े सूत सुरथ सह चाका॥
जरनलगी यादव चतुरङ्गा। लखिभो मन सबहिनकर भङ्गा॥
दीप्तिमान अति आपद काजा। आपद अस्त्रहि त्याग्यो राजा॥

दो० ताते निकरे मेघगण, प्रलय सरिस जलधार।
नादि नादि बरषनलगे, तेहि क्षण घेरि अपार॥
पावसऋतु रणमहँ भई, निकस्यो इन्द्र कमान।
सारस मोर पपीहरा, पूर्‌यो शब्द महान॥
चपलाचहुँ चमकत भई, गर्जत भांति अचूक।
टर्र टर्र टरकन लगे, दशहुँ दिशा मण्डूक॥

शान्तअगिनिलखिशूलकराला। दीप्तिमान पर दानव डाला॥
आवत ताहि देखि असि काढ़ी। काढ़ेउ क्रान्त तड़ितसम बाढ़ी॥
ऊंट चल्यो पकरन अतिगातिसों। काटेउ कण्ठ तासु हिकमतिसों॥
कण्ठकटे सो लम्बकग्रीवा। गिर्‌यो धरणिके बीच अजीवा॥
शूलधारि वारन पर बैठी। असुर चल्यो निज मोछहिऐंठी॥
दीप्तिमान हय चढ़ि असिधारी। महानाभते भिर्‌यो प्रचारी॥
सम्मुख जाइ सुबाजि कुदाई। तजत शूल काट्यो रिसिछाई॥
बहुरि शीश असिवरकर काटो। आनँद यादवदलमहँ पाटो॥

दो० तासु सैन अतिप्रबल लखि, धनुधरि त्यागत बान।
क्षणमहँ सब मरदत भयो, दीप्तिमान द्युतिमान॥

भो अनन्द कछु कहो न जाई। किन्नर नाचहिं साज मिलाई॥
इहिबिधि तिनकर नाशनिहारी। आयो हरिश्मश्रु धनुधारी॥
चढ़्यो तिमिङ्गिल दीरघ ठाढ़ी। सर्प समान जीह मुख काढ़ी॥
चलत चलत सोदलतदलतदल। बोलत भो यदुदलके मधिभल॥
तुम सब मेरे अहहु अहारा। ताते तृणसम तुच्छ बिचारा॥

त्यागि शस्त्रकर कूदहु आई। करि कुश्ती कहँ देत दिखाई ॥
सुनि चुप होइरहे सब बीरा। लरहु परस्पर भाषहिं भीरा ॥
भानुनाम सत्राजित नाती। सुमिरतापितुहिचल्योअरिघाती ॥

दो० निज निज आयुध त्यागिकै, दनुज मनुज बलवान।
दै दै ताल कराल रण, कीन्हो शब्द महान ॥

भुजते भुजहि पकरियुग योधा। निजनिजदिशिखींचहिंकरिक्रोधा ॥
भानुज शत योजनलौं पाछे। लै गोपाल असुर बिधि आछे ॥
हरिश्मश्रु कहँ कृष्णकुमारा। तितनी दूरगये लै पारा ॥
अरिकहँ करि पीछे पुनि धाई। भानुजानु महँ हाथ लगाई ॥
पटकतभो उर मोदहि छाई। उठि हरिसुतकहँ कण्ठ लगाई ॥
दूजे करहि जान्हुमहँ करिकै। पटक्यो पुहुमि बीररस भरिकै ॥
पुनिउठिदोउठोंकतनिजतालहि। भिरतभये शोधत परकालहि ॥
भानुहि नभदिशि असुर घुमाई। लख योजन फेंक्यो रिसिछाई ॥

दो० गिस्यो भानु आकाशते, लगी न तन कछु चोट।
कृष्ण कृपा प्रहलादसम, उठे बालसम लोट ॥

हरिश्मश्रुकहँ पकरि घुमाई। तिनेइ ऊपर तज्यो रिसाई ॥
गिरिकैसो अति ब्याकुल होई। उठेउ प्रबल अरि सम्मुख जोई ॥
भिरे बहुरि दोउ मूका बांधी। अपने अपने इष्ट अराधी ॥
बटतरु असुर भानुपर मारो। सो पुनि तापर फेरि पवांरो ॥
हरिश्मश्रु तब अतिहि रिसाना। पकस्यो कुञ्जर शुण्ड महाना ॥
मारत भयो घुमाइ कराला। भानुहु तापर गाहि गजघाला ॥
इमिते उभय परस्पर भिरि भिरि। कीन्हपराक्रमफिरिफिरिथिरिथिरि॥
गज गज मूक मूक तरु तरुते। गिरिगिरि चरणचरण शिरशिरते ॥

दो० ब्योमबाणि भाषत भई, याहि शम्भु बरदान।

मुखको केश उखारिहौ, तब तन त्यागिहि प्रान ॥
सुनि हरिसुत गहिकै पद दोई । भये घुमावत हरषित होई ॥
बहुत घुमाइ भूमि महँ डाऱ्यो । करते मुखकर केश उखाऱ्यो ॥
छातीपर धरि हाथ अचूका । मारेउ तमकि शीशपर मूका ॥
कढ़िकै ताको प्राण सिधारा । लखि रण अमरन दीन्ह नगारा ॥
भयो हरष बरषत बर फूला । परखत यादव कर बल मूला ॥
इमि हरिसुतके बलकहँ भाषा । अबका तुमहिं अहै अभिलाषा ॥
सो सुनिकै धृतसुवन उचारे । जब सब अनुज शकुनिके मारे ॥
तब सो कीन्ह कहा रिसि छाई । सुनि ब्रह्मासुत कहत बुझाई ॥
दो० अनुजन कहँ लखिकै मरो, मनुजनते तेहिकाल ।
दनुजनते बोलेउ बचन, शकुनी सुभट कराल ॥
कालकेय पौलोमक सुनहू । कठिन कालकी गति उर गुनहू ॥
कालनाभ यम जीतनहारा । ताकहँ मनुजन रणमहँ मारा ॥
रविजित शम्बर तेहि इन मारा । कृष्ण उत्कचहि ब्रज संहारा ॥
देवन जित्यो भूत सन्तापन । करिनसक्यो सोउ रक्षण आपन ॥
महानाभ रण हारे बायू । सो रण करते भोगत आयू ॥
बृक त्र्यम्बक सों कीन्ह लराई । सोऊ मऱ्यो मनुजकर भाई ॥
इन्द्रसुवन जीत्यो बलभारो । हरिश्मश्रु सोउ मरो बिचारो ॥
हृष्ट जगतजित मऱ्यो लराई । आठ मरे मेरे लघुभाई ॥
दो० ताते भूमि अयादवी, करिहौं यह प्रण ठान ।
शाल्व जरासुत बक्रदद, चेदिपाल अरु बान ॥
असुर सुतल के लेब बुलाई । करिहौं रण सँग जोरि सहाई ॥
इन कहँ मारि देवतन मारी । गिरि गहवर महँ देहौं डारी ॥
गो द्विज साधु बेद बिनु भूमी । करिहौं दशहु दिशा महँ घूमी ॥

यज्ञ श्राद्ध तीरथ अरु दाना। यह सब लैहौं शत अनुमाना॥
धन्य कंस सब देवन जीतो। सो नहिं है नत लरत अभीतो॥
इमि कहिकै डङ्का बजवावत। भयो यदूदल सम्मुख आवत॥
लै धनु लाख भारको भारी। करत भयो टङ्कार मुरारी॥
ताते डगे तिहूं पुर कैसे। चढ़त द्विरद लघुतरणी जैसे॥

दो० शेष विशेष कँपातभे, कच्छप छपत डेराइ।
कोल हृदय अति होलभो, लोल दिशागजराइ॥

भट पर भट गिरते भय पागे। तजि रणसींव बिचलिकै भागे॥
दल बिचलत लखिकै भट सगरे। धरि धरि धनुषगदादिक अगरे॥
इमियदुदल कहँ झुकतबिलोकी। शकुनी लीन्ह शूलते रोकी॥
बिरचत बिबिध बाणके जाला। करत करोरन भटकर काला॥
चरन करनकर शीश नशावत। बीरनकर यमलोक बसावत॥
शरते बीरन व्योम उड़ावत। परम पराक्रम निज दरशावत॥
मण्डल सरिस चाप सरसावत। यदुदल बीचभयो भय छावत॥
दश शरते अर्जुनहिं उठाई। दीन्हो चार कोस पर नाई॥

दो० गद कहँ द्वैदश बाणते, रथ सह लीन्ह उठाइ।
क्षणलौं व्योम घुमाइकै, दीन्हो दूरि गिराइ॥

चालिस शरते भट अनिरुद्धहिं। फेंक्यो दूरि पूरि उर क्रुद्धहिं॥
षोड़शकोस गिस्यो सो जाई। बहुरि अरिन पर बाण चलाई॥
साम्बहि रथ समेत द्रुतलेको। दूर मुबत्तिस योजन फेंको॥
पुनि आवतमनमथहि निहारी। लिय उठाय शत शायक भारी॥
नभ घुमाइ द्वै घरी यथारथ। फेंकि दियो शतकोस महारथ॥
इमि जे जे भट सम्मुख आये। शरपर धरिधरि व्योम पठाये॥
सो लखि बिस्मित यादव सारे। बहुरि बहुरिकै भिरे निचारे॥

गद अनिरुद्ध साम्ब अरु पारथ। लरनलगे धरिधीर महारथ॥

दो० सुरथ बैठि प्रद्युम्न तब, तहँते द्रुत दौराइ।
शकुनीते भिरते भये, अरिकी घात बचाइ॥

छं० अरिकी सुघात बचाइ दशशर मारि धनुडोरी हई।
शर सहसते हय बीसते सारथिहि बधि भटता लई॥
अब मारिलेत पुकारिकै बहुबार हरि गरजत भये।
तेहिकाल शकुनी कोपकरि रथ दूसरे ऊपर गये॥
शतबाण धनुमहँ धारिकै ललकारि यह बोलत भयो।
यह बाण है तव प्राणहर मम सत्य मन तोलत भयो॥
तोहिं मारिकै यदुसैन बिन हम करहिंगे सब भूमिको।
इमि भाषिकै हँसतो भयो निज सुरथपै खल भूमिको॥

दो० सो सुनिकै प्रद्युम्न हँसि, बोले बचन अनूप।
मैं करिहौं भाषत बृथा, हे परतन्त्र स्वरूप॥

क० कालही करत सब निज अनुसार जग, सुख दुख जीव पावैं ताके अनुमानते। खेत जिमि बोय सोऊ काल पाय बस्तु होय, घन बरषावै बन काल परमानते॥ करिहौं करत मैंहौं करता कहहिं जौन, बात सब झूठ तौन केवल अज्ञानते। गिरिधरदास काल अहइ प्रधान जग, भाषत असुर काहे मिथ्या अभिमानते॥

दो० हँसि बोले शकुनी तबै, मुनि सम भाषत बात।
तदपि त्रिगुण महँ जगतजन, ऐसेइ भाषहिं तात॥

इमि कहि कहि दोउ भिरे बढ़ाई। बलि बासव सम बाजु बजाई॥
ताके शत शर सर्प समाना। काटेउ काम काढ़ि निजबाना॥
लक्षभार की गदा उठाई। शकुनि शत्रु पर तुरत चलाई॥
बीचहि मारि गदा निज भारी। तेहि प्रद्युम्न दीन सहिडारी॥

तब शकुनी निज शूल प्रहार्‍यो। तेहि प्रद्युम्न शूलते वार्‍यो॥
गरजि कृष्णसुत कुन्तहि लैकै। मार्‍यो हृदय मध्य रिस छैकै॥
सहि तेहि परिघ कठोर घुमाई। हरिसुतके उर हत्यो रिसाई॥
तब मन्मथ यमदण्डहि धारी। चूरण कीन्ह परिघ सों भारी॥

दो० सहस अश्व सूतहि हत्यो, पुनि अरिकन्ध प्रहारि।
मुरछि गिरायो भूमिपै, शम्बरारि ललकारि॥

त्रि० पुनि दण्डहि धारी हृदय विचारी सैन सुरारी बीच धसे।
कुञ्जर पदचारी रथ हय भारी दीन्ह बिदारी क्रोध फँसे॥
भागहिं चिक्कारी त्राहि पुकारी काल निहारी भीतभरे।
सो समरबिहारी कर ललकारी सैना सारी आशु दरे॥

दो० उठि शकुनी करि क्रोध अति, चढ़ि रथ धनु टङ्कारि।
दलत भयो यादवदलहि, प्रद्युम्नहि परचारि॥

लखि सम्मुख कामहिं शर जोरी। कहत भयो बर गिरा बहोरी॥
कर्म प्रधान धरातल माहीं। गुरु ईश्वरता सम कोउ नाहीं॥
ऊँच नीच कर्महि ते होई। विजय पराजय है जग सोई॥
साहिय गऊ सह जैसे बच्छा। निज मातहि ताकत परितच्छा॥
जैसे मानव निज कृतकर्मा। लहहिं सुफल जगबीच अभर्मा॥
करि हम बीरकर्म रिपु जीती। लहिहौं कहत शपथ की रीती॥
सत्य करहु तुम कर्म बड़ाई। न तरु समर महँ हरिहौं भाई॥
सुनि बोले प्रद्युम्न बिचारी। जो तुम कर्म कह्यो धनुधारी॥

दो० कालबिना नहिं होत फल, मुख्य काल बिख्यात।
किये पापको स्वाद जिमि, द्रुतशुभ पुनि न सुहात॥

जब सब होइ तयार तयारी। करता पाप करै तब भारी॥
ताते करता अरु सामाना। दोउनते जग होत बखाना॥

जब सब साज होइ नहिं पासा। करता कैसे करै प्रकासा॥
करता पाक बनावे जोई। काल पाइके पावे सोई॥
ताते कर्म काल आधारा। कालहि मुख्य चलावन हारा॥
परिपूरणतम अकथ अनूपा। है यह काल रसाल स्वरूपा॥
तिन कहँ हम बन्दत मतिपीना। काल कर्म जिनके आधीना॥
शकुनी कहत धन्य तुम ज्ञानी। कैसी कहत अमृतसी बानी॥

दो० तुम्हरो दर्शन पाइकै, होहिं कृतारथ जीव।
जे तुम्हरे सँग रहहिंते, धन्य भाग सुख सींव॥

इमि कहिकै उरगास्त्र प्रहारा। दन्तशूक भे कढ़त अपारा॥
बिच्छू गोजर काटन लागे। सो लखि सभय यदूगण भागे॥
हरिसुत गरुड़ अस्त्र तब मारे। निकरे कोटिन गरुड़ गरारे॥
नीलकण्ठ आदिक खग साथा। नोचन लगे अहिन के माथा॥
सब कहँ खाइ नशाइ भगाई। अन्तर्धान भये समुदाई॥
तब शकुनी पिशाच की माया। पढ़िकै यदुदल बीच चलाया॥
भूत प्रेत कोटिन कढ़ि ताते। लगे भटन दाहन उलकाते॥
आसुरि माया ताहि बिचारा। सत्त्व अस्त्र हरिनन्दन मारा॥

दो० ताते कोटिन निकरिकै, हरिजन बर भुज चार।
क्षणमहँ भूत पिशाच को, करत भये संहार॥

तब गुह्यक की माया कीन्हो। ब्योम बारिधरते भरि दीन्हो॥
मूत्र रुधिर मज्जा मल हाड़हि। बरषत भये अँगार पहाड़हि॥
काम तबै कोड़ास्त्र चलायो। ताते हरिकर दरशन पायो॥
घर घर स्वनकरि आदि बराहा। नख रदते माया गिरि ढाहा॥
इमि गुह्यकी नशाई माया। पुनि न कोलकर दरशन पाया॥
पुनि शकुनी अतिशय रिसछाया। करत भयो गन्धर्बी माया॥

प्रकटी कोटिन त्रिय मृदुहासा। हावभाव सुकटाक्ष प्रकासा॥
बाजन लगे सुसाज रसाला। नृत्य करनलागीं वरबाला॥
दो० थिरकहिं घुँघुरू चरण के, गिडागिडाहिं करताल।
सबको मन मोहत भईं, मायारूपी बाल॥
ताकहँ जानि मोहिनी माया। ज्ञानअस्त्र हरिसुवन चलाया॥
ताकर नाश देखि रिसभीनी। असुर राक्षसी माया कीनी॥
गिरि सपक्ष अम्बरमहँ पूरे। गरजि गरजि घन धावहिं रूरे॥
शिलतरुरुधिरआगिनिअसिबाना। बरसनलागे आयुध नाना॥
भो अँधार सूझै नहिं नेको। राक्षस चले शूल कर लेको॥
दौरि दौरि इत उत रणमाहीं। हय नर कुञ्जर पकरि चबाहीं॥
यातुधानि बहु निकरी डाइनि। नरशिर खाहिं मौजजन्तुपाइनि॥
सिंह व्याघ्र बाराह करारे। निकरे बहु नरभक्षणहारे॥
दो० भागिगये यादव सकल, लखिकै कृष्णकुमार।
नरसिंहास्त्रहिं तजत भे, करन तासु संहार॥
प्रकटे तब नृसिंह विकराला। चमकतशरनख जिह्वविशाला॥
भयप्रदबदन रदन अतिचोखे। गर्जत तर्जत प्रकट अनोखे॥
लै लै सब सपक्ष गिरि भारी। रजसम कीन क्रोध विस्तारी॥
निशिचरि निशिचरिके समुदाई। व्याघ्र वराहन दीन्ह नशाई॥
बलप्रकाशि मायाकहँ नाशी। अन्तर्धान भये बलराशी॥
मायागत लखि बिगत विषादा। हरिसुत कीन्ह कम्बुकर नादा॥
जय जय यदुन कीन्ह हरषाई। सुमन तजे सुमनस समुदाई॥
सरससदल शकुनी बलवाना। भयो तौन क्षण अन्तर्धाना॥
दो० दैतेई माया कियो, हियो कोपते पूरि।
जो सीख्यो मयदैत्यको, शकुनिसुभटविधिरूरि॥

साम्बरतक घन दशादिशि छाये। धार शुण्डगजसी बरसाये॥
क्षण महँ सात सिन्धु उमड़ाने। बातके बेग पहाड़ उड़ाने॥
बूड़िगई महि बरषत पानी। भो अँधेर नहिं सूझत पानी॥
सभय यदुन आयुध तजिदये। कृष्ण कृष्ण मुख भाषतभये॥
निजधनु तब प्रद्युम्न सुधारा। पढ़िकै कृष्णअस्त्र कहँ मारा॥
नवकरोड़ विद्युत तेहिकाला। प्रकट भये श्रीकृष्ण कृपाला॥
द्वारावति दिशिते चलिआये। मायारूपी तमहि नशाये॥
मेघ बरण अम्बर तड़ितासे। मुक्तमाल बकजाल प्रकासे॥

दो० चारभुजा श्रीवत्सउर, बैजन्ती बरमाल।
क्रीटमुकुटकुण्डल ललित, लोचन लोल बिशाल॥

नूपुर हार किङ्किणी सोहै। निरखत कोटि मदनमन मोहै॥
कृष्णहि देखि हरष उरभीना। सब यादवन दण्डवत कीना॥
देवन मुदित कुसुम बरषाये। तेहिक्षण हरि शारङ्ग चढ़ाये॥
शरते छेद्यो धनुधरतासू। लखि शकुनीगृहभागेउ आसू॥
हेति संघेति लियावन हेता। गयो पराक्रम सेत निकेता॥
तब केशव यादवन बुलाई। बोले बचन सुनहु समुदाई॥
पूरब शकुनी अन बन त्यागी। कीन्ह महातप शिवहितलागी॥
परबतपति सुमेरु के पासा। बीतिगये युग चार खुलासा॥

दो० तब प्रसन्न ह्वै शम्भुप्रभु, आय दरश निजदीन।
बर मांगहु भाषतभये, सुनि सो कहत प्रबीन॥

जो मैं मरौं भूमिके माहीं। महि शिर परसे उठौं तहांहीं॥
नभ महँ जो मोहिं मारै कोई। दोयघरी लौं मृत्यु न होई॥
दैकै यह बरदान पुरारी। बोले बहुरौ गिरा बिचारी॥
दीन एक शुक परम सुजाना। कह्यो याहि जानेहु निजप्राना॥

जब यह मरिहै तब तुम मरिहौ। याते यासु यतन तुम करिहौ॥
सो शुक राख्यो यतन कराई। ताके मरे मरै सो भाई॥
इमि कहि हरि खगपतिते बोले। तात करहु यह काज अमोले॥
चन्द्रावती पुरी महँ जाहू। शत योजन विस्तृत खगनाहू॥

दो० सो सुनि आयसु शीशधरि, चलतभये खगपाल।
जाइ पुरी देख्यो परम, चन्द्रावती बिशाल॥

दुर्ग दुर्ग महँ बहुभट राजहिं। परम भयंकर भट बिधि साजहिं॥
लघुस्वरूप धरि बिनतानन्दन। शकुनिभवन गे सर्पनिकन्दन॥
खोजतशकुनिमिल्योतेहिकाला। देख्यो बैठो शकुनि कराला॥
तासु त्रिया मँदालसा नामा। पति से ऐसे भाषत बामा॥
हे प्रभु सब तव भ्रात गरारे। नरकर परे समर महँ मारे॥
आये लरन हेत भगवाना। करहुमिलापतजहुजनिप्राना॥
सुनि शकुनी भो कहत गरारा। करिहौं सब यादव संहारा॥
मृत्यु मोरि मम मरे न अहई। अनतहि जीवरूप शुक रहई॥

दो० चन्द्रनाम उपद्वीप मैं, गिरि मतङ्ग पर जाइ।
शकुनि बसत मम जीव तित, राख्यो यतन कराइ॥

शंखचूड़ अहि रक्षत ताहीं। कोउ यह भेदहि जानत नाहीं॥
यह सुनि गरुड़ प्राणके काजा। चन्द्रत द्वीप चले खगराजा॥
बर समुद्र ऊपर नभमाहीं। चले गरुड़ आनँद अवगाहीं॥
शतयोजन समुद्र के पारा। बर सिंहल उपद्वीप निहारा॥
पूछ्यो नाम नागरन काहा। सिंहलजानिचलनपुनिआहा॥
लङ्कानांघि नभग भरतारा। पाञ्चजन्य बर द्वीप निहारा॥
क्षुधित पक्षपति सिन्धु किनारे। खान लगे गहि जलचर भारे॥
तहँ एक नक्र द्वियोजनकेरो। ऐंचो खगहि क्रोध उर प्रेरो॥

दो० गरुड़ लगे खीचन तटहि, सो जलहू लैजात।
एक मुहूरत्त बीतिगो, हारिजीति बिन तात॥
खग प्रचण्ड मारेउ निजतुण्डा। लागेउ सो मानहु यमदण्डा॥
झष बपु तजि बिद्याधर होई। बोलत भयो बन्दि पद सोई॥
मैं बिद्याधर अहउँ कृपाला। नाम हेम कुण्डल खगपाला॥
नभ गङ्गा नहात एकबारा। ऋषिकयूथ कहँ न्हात निहारा॥
बारि बूड़ि खीच्यो गहि चरना। मुनि तब शाप कोपमइबरना॥
नक्र होसि तैं बक्र कुचाली। तब मैं कीन्ह बीनती हाली॥
ऋषि दयाल तब कह्यो बिचारी। गरुड़ युद्धमहँ मुक्ति तुम्हारी॥
सो तव कृपा मुक्ति मम भई। मुनि अपराध व्याधि सब गई॥
दो० इमि कहि सो सुर उड़िगयो, नभ मग चले खगेश।
हरिन द्वीप आवतभये, गतिहि प्रकाश बिशेश॥
तहाँ करत तप मुनि तपध्याना। चारु अपान्तरतम यह नामा॥
तहँ यक पंख गरुड़को खसेऊ। पक्षीपति उर संशय बसेऊ॥
कह मुनि राखि पंखममशीशा। तब चलिजाहु मुदित खगईशा॥
खगपति ले तेहि मुनिशिर धारेउ। तहँ तैसेइ बहुपंख निहारेउ॥
पूछेउ बिस्मित कारण तासू। मुनिसोगुणिगुणिकीन्ह प्रकासू॥
जब जब होत कृष्ण अवतारा। तब तब निपतत पक्ष तुम्हारा॥
कल्प कल्पमहँ प्रकटहिं स्वामी। करुणा कारण अन्तर्यामी॥
अजअनन्त प्रभु आनँदधामा। कोटिकोटिमम तिनहिं प्रणामा॥
दो० सुनि मुनि के पद बन्दिकै, चलत भये खगराज।
रमणक उपद्वीपहि गये, जहँ बहु सर्पसमाज॥
तिनते लै बलि खगकुलदीपा। जातभये आवर्तक द्वीपा॥
सुधा पानकरि आनँद मढ़िकै। शुक्लद्वीप अवरेख्यो बढ़िकै॥

मेरे कहे सो उत्तर जाई। चन्द्रद्वीप देख्यो खगराई॥
सजल दुर्ग देखे मुख फारी। चञ्चुमध्य भरिलीन्हो वारी॥
अग्नि दुर्ग महँ छोड़्यो सोई। बुत्यो हुताशन आनँद होई॥
तहँ मतङ्ग गिरि गुफा निहारी। निकरे लाख असुर अतिभारी॥
वैनतेय ते भिरे प्रचारी। तिनते होत भयो रणभारी॥
दोय घरीमहँ सबन सँहारी। जाहि लख्यो सर्पहि सर्पारी॥

दो० करे कुण्डली रहत नित, जल में पिंजरा पास।
ऊपर फण छाया करे, होइ न नेकहरास॥

गुणिसन्दूक सर्प के अङ्का। मारत भये चरण निश्शङ्का॥
पिंजरा त्यागि भागिगो नागा। जानि सर्प अरि संशय पागा॥
चोंचमाहिं पिंजरहिं उठाई। उड़ि आकाश चले खगराई॥
लागे सङ्ग असुर समुदाई। विविध प्रहारहिं शोर मचाई॥
तिनकहँ निजपग पक्ष प्रहारत। युद्धकरत पिंजरहि सँभारत॥
परम बेगते वेगनिधाना। चले व्योमपथ खगशिरत्राना॥
शुक गो शुक गो शब्द अपारा। सुनि शकुनी उर भयो खभारा॥
शूलपाणि आकाशहि आयो। कोप भरो खग पाछे धायो॥

दो० ऊपर योजन कोटिपै, मास्यो तमकि त्रिशूल।
ताकहँ सहि अहिअरिलियो, तज्यो न अरिको मूल॥

कहतकि चहत छुड़ावन सूआ। मोहिं कहा मारत तैं मूआ॥
सातद्वीप सागर खग दौरा। पाछे शकुनि करत अतिहौरा॥
लाखन बार वारकहँ कीन्हा। पै खग खगहिं फेरि नहिं दीन्हा॥
योजन कोटि मेरुके ऊपर। दीन्हो त्यागि पिंजरहि भूपर॥
चूर चूर देख्यो जब शुग्गा। शकुनि नयन पोछत लै लुग्गा॥
इहि बिधान खग बधि खगनाथा। आइ कह्यो केशवते गाथा॥

शकुनी ताकर नाश निहारी । निजनगरी चलिगयो सुरारी ॥
लै सँग अमित दैत्य बलवाना । आशु यदूदलपै घहराना ॥
दो॰ उचैश्श्रवा तुरंग चढ़ि, निज धनुकहँ टङ्कारि ।
छाइदियो यदुसैन पर, कोटिन शर ललकारि ॥
सो॰ तब यादव समुदाय, आयो जान महान अरि ।
चाप चढ़ाय चढ़ाय, लरन लगे रसबीर भरि ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द ॥

भयो घोर संग्राम सो कालमाहीं । महीपालमोतेकह्योजातनाहीं ॥
भिरे बीर भारे करैं लल्लकारैं । घने शस्त्र डारैं खड़े ह्वै प्रचारैं ॥
असीभिन्दिपालैं गदाशक्तिघालैं । हृदयशत्रुशालैं भिरैंठोंकितालैं ॥
न भागो प्रचारैं महाबाण डारैं । शिरैं काटिडारैं घनीमार मारैं ॥
महाघोर देख्यो अरीको परेख्यो । भरे जङ्गमें द्वारकानाथ तेख्यो ॥
लिये हाथ कोदण्ड शारङ्गनामा । भिरे शत्रुसों कोपलै तौन ठामा ॥
बने बाण हैं दैत्यके जे प्रहारे । अपाने शरै मारिसो काटिडारे ॥
तबैदैत्य कोप्यो प्रलयकालरोप्यो । महाजङ्ग ऊमङ्ग उत्तङ्ग ओप्यो ॥
दशै बाण मारे जनौ सांप कारे । सोऊ शार्ङ्गके बाणसों काटिडारे ॥
तबै चाप ताको हरीने सुकाट्यो । लियोआशुदूजोद्दगैकाटिडाट्यो ॥
भयो दोय पच्चासरूपी महाना । लग्यो मारिबे शत्रुके बीरनाना ॥
हरी होयके पाँचसै दोय रूपा । कियोक्रोधकैरोध योधा अनूपा ॥
चले शस्त्रभारे महारङ्ग राच्यो । मनोकालसोंकालदैतालनाच्यो ॥
तबै दैत्य लीनो महाशूल भारी । तज्योकृष्णकोमारिलीन्होपुकारी ॥
हरीताहि काट्यो घने बानमारी । अपानी प्रहारी गदाललकारी ॥
लगेताहिमूर्च्छा गह्योदैत्ययोधा । उठ्यो द्वै घरीमें भयो भूरिक्रोधा ॥
गदाहस्तधारी कर्‌यो शब्दभारी । भिर्‌यो कृष्णसों तालदैकैसुरारी ॥

गदाहाथ लै कृष्णहू दूरि आये। भिरे मल्लसे ते दोऊ क्रोध छाये ॥
प्रभूकी गदा से गदा तासु टूटी। जनौ गागरी दण्डके चोटफूटी ॥
तबै ठोंकिकै ताल गोपालदानो। भिरे कोप लैकैहरी दोय मानो ॥
दो॰ शतयोजन भगवान कहँ, फेंक्यो असुर उठाय।
ताकहँ योजन सहसपै, तज्यो कोपि यदुराय ॥
भुजतें पकरि ताहि भगवाना। पटक्यो महिमहँ गेंद समाना ॥
सो उठि जारुधि शैल उठाई। मारयो हरिके शीश घुमाई ॥
गहि गहि गिरिहिं परस्पर मेलैं। जनु मिलिकै शिशु कन्दुकखेलैं॥
टूटत गिरि पुनि रमानिवासा। फेंकि कस्यो कछु अरिपुर नासा ॥
तब करधारि ढाल तलवारी। चल्यो पैंतरा करत मुरारी ॥
केशव काटि चर्म असि तासू। चण्ड बानभे मारत आसू ॥
सो शर तासु काटिकै शीशा। आशुदियो महिडारि छितीशा ॥
धरनि धसो शर शिर महिछीयो। बरप्रभाव सो दानव जीयो ॥
दो॰ करतें शिरधर कन्धपै, करै भयानक युद्ध।
सातबार ऐसेइ भयो, छायो अचरज शुद्ध ॥
सतई बार उठ्यो बलवाना। चल्यो समर बनि कालसमाना ॥
एकाकी यदुसैनहि मर्दत। अतिकराल घन सरिसननर्दत ॥
तृणबनमहँ दावा सम दपटत। चल्यो जहरधर समतनलपटत ॥
जात चबात गात रिसियाता। रथगज हय नरधूरि मिलाता ॥
पदते करते धरणि मरद्दत। गजपङ्कज बनसरिस अरद्दत ॥
कोउन कहँ आकाश उड़ावत। कोउनकहँ पगते भिलिनावत ॥
मत्तमहान अरुझ्झत जुझ्झत। सबहिनभयोकालसमसुझ्झत ॥
ताहि देखिदलदशदिशिभग्गत। चिन्ता पग्गत यमसमलग्गत ॥
दो॰ यहि बिधान मर्दत भयो, जङ्गी यादव जूह।

मारि मारि दशदिशि कियो, बहु मृतकनका दूह ॥
तब आरति यदुसैन पुकाऱ्यो। सो लखिके हरि दयाबिचाऱ्यो ॥
यह दूसरो काल गुरुभाई। किमि बचिहैं यादव समुदाई ॥
काल काल पैं मारत काला। यह खल एककालही घाला ॥
अहै कुम्भकरनौ कर चाचा। कैधौं कालरूप धरि नाचा ॥
इमि आरत लखि धनु टङ्कारी। तज्यो सुदर्शन अस्त्र मुरारी ॥
महाचक्रसो चल्यो बिशाला। कोटि दिवाकर समसुरशाला ॥
तुरतहि काटि लीन्ह अरिमाथा। जिमि वृत्रासुर कर सुरनाथा ॥
दूजे शरते हरि शिर सोई। फेंक्यो अम्बर ऊरध जोई ॥
दो० कह्योसबनतेकृष्णइमि, निज निज बाण चलाय।
दोय घरीलौं नाहिं गिरे, जिमि सो करहु उपाय ॥
सुनतैं यादव निज निज बाना। मारतभये बीर बिधि ठाना ॥
दीप्तिमान शर मारत भयऊ। ताते शिर शतयोजन गयऊ ॥
तब निज बाण साम्ब भटमारा। ताते योजन गयउ हजारा ॥
अर्जुन शरते अरिको शीशा। योजन अयुत गयो नरईशा ॥
ऊषापति निज शायक नाखा। ताते गो नभ योजन लाखा ॥
तब प्रद्युम्न तज्यो शरसाथा। दशलख योजनगोचलिमाथा ॥
तब श्रीकृष्णबाणते शीशा। योजन कोटिगयो अवनीशा ॥
यहि बिधान द्वै याम बिताये। पुनिनिजशायककृष्णचलाये ॥
दो० सो शरयोजन कोटिपै, ऊरधते तेहि काल।
डारि दियो पाथोदमें, मऱ्यो असुर बिकराल ॥
ताकर तेज कढ्यो तेहि काला। लीनकीन निज मध्य गोपाला ॥
जय जयशब्द ब्योममहँ भयऊ। प्रमुदित देवन दुन्दुभि दयऊ ॥
नाचहिं राचहिं प्रेम अप्सरा। यह सुख तीनिलोकमहँ पसरा ॥

किन्नरताल बजावहिं नाना। सिद्धकरहिं अस्तुति कर गाना॥
सुर बरषहिं फूलन विधिनाना। मुनिगणअस्तुतिकरहिंसुजाना॥
बिधिशिवादि परसहिं प्रभुचरणा। मुखते कहहिं जयति दुखदरणा॥
भगे असुर हत शेष डराई। तब केशव दुन्दुभि बजवाई॥
ससुत ससैन मनुज परहूता। गावहिं बन्दी मागध सूता॥

दो० शंख चक्र अम्बुज गदा, धरे रूप घनश्याम।
चन्द्रावति प्रबिशत भये, लज्जत कोटिक काम॥

पतिके मरे दुखित मदालसा। लैनिजसुत हरिदरश लालसा॥
हरिके चरण आइ तेहि राखा। हाथ जोरि गदगद यह भाखा॥
भुवके भार नशावन हेतू। प्रकट भये यादवकुल केतू॥
लै माया लीला दरशाया। जगके हेत जयत यदुराया॥
ममसुत पालहु भीत बिचारी। याके शिर कर धरहु मुरारी॥
ममपति कीन तौन फल पावा। अब यापर करिये शिशुभावा॥
सुनि हरि करशिशुशिरपर कीना। पितुको राजतिलक शिरदीना॥
कल्प अन्तलौं आयसु होई। ज्ञान बिराग भक्ति सँग सोई॥

दो० कामधेनु अरु कल्पतरु, उच्चैश्रवा तुरङ्ग।
दियो इन्द्रकहँ करि कृपा, जासों जीत्यो जङ्ग॥

करि तेहि बैष्णव दीन्हो राजू। भे गत तौन सकल सुखसाजू॥
सुनि मैथिल नृप बोले बचनहिं। अहो धन्य केशवके रचनहिं॥
केये असुर परमपद पाये। सुनिकै पुनि मुनि बचन सुनाये॥
ब्रह्मकल्प महँ हो गन्धर्बा। नाम परावसु तेहि सुतसर्बा॥
मन्दरमम्बर मन्दी सौधक। सुधन सुदेव महाबिलनामक॥
मन्दहास श्रीभानु समेता। नवसुत ये अतिरूप निकेता॥
कामसमान सरूप अपारा। बिधि सम्मुख बैठे इकबारा॥

गिरासुता लखि बिधि बिपरीते । तहां हँसे ये नवहु अभीते ॥

दो० ब्रह्मा के अपराध तें, हिरण्याक्ष गृहजाय ।
नवसुत ये प्रकटत भये, नाम सुनहु नरराय ॥
शकुनी शम्बर हृष्टबृक, कालनाभ अतिनाभ ।
भूतसँतापन उत्तकच, हरिश्मश्रु जलदाभ ॥

कोलकल्प इन लिय अवतारा । सुमुनि अपान्तरतम यकबारा ॥
इनके भवन गये छबिधारे । पूजि मुनिहिं इन बचन उचारे ॥
शुकमुख सुना सुयश हरिकेरो । सोई मुक्तिप्रद निश्चय हेरो ॥
हम सब असुर भक्ति नहिं जाना । नित दुःसंग दुष्टपन ठाना ॥
कहहु उपाइ मोहिं अस स्वामी । मुक्तिदेहिजिमि खगपतिगामी ॥
नव कनकाक्षतनय की बानी । सुनि बोले मुनिनायक ज्ञानी ॥
गुन तजि भजहिं हरिहि जो कोई । परममुक्ति कहँ पावत सोई ॥
सौहृदस्नेह काम भय क्रोधा । मित्रपनो करिकै हरि शोधा ॥

दो० कोउ प्रकार केशव भजै, पावै तिनका पास ।
दीनबन्धु बिनु कृष्ण नहिं, दूजो गिरिधरदास ॥

छ० इन्द्रादिक सम्बन्ध मित्र ब्राह्मण ह्वै छूटे ।
सौहृद करि प्रहलाद मोह तृष्णाते टूटे ॥
स्नेहरूप ह्वै सुत पासुनि अति आनँदलूटे ।
भयते कनककशिपु आदिक हरिपुरलौ जूटे ॥
क्रोधहि करि भवते छुटे तुमरे पितु कञ्चननयन ।
श्रुतिगनपायो कामकरि बासुदेव दायकचयन ॥

दो० कोउ प्रकार पारस परसि, लोहो सोनो होइ ।
ताते भजिय मुकुन्दपद, जगपद पञ्चन लोइ ॥

सो सुनि शकुनि आदिते सारे । बैरभाव मननी क बिचारे ॥

करिकै वैर विष्णु ते राजा। लड़े असुरगण सहित समाजा॥
सुनहु कथा अब करि उरप्रीती। इभि भद्रासुखण्ड कहँ जीती॥
लै सँग यदुगणकी अतिसैना। इलावृतहिं आये जगजैना॥
जहँ राजत इक परवत कैसे। भूमि पद्मको केसर जैसे॥
फुरत कनकमय देवस्थाना। मेरु पहार मुकुट जगजाना॥
मन्दर मेरु मन्दरहु भारे। कुमुद सुपार्श्व सुचार बिचारे॥
ये गिरि चारहुदिशि हैं ताके। कनकमये द्युति भरे प्रभाके॥

दो० जाम्बूनद कञ्चन तहां, स्वतह सिद्ध नरपाल।
जाकहँ पहिरहिं सुरवधू, भूषन बिरचि रसाल॥

कदम बृक्ष उद्भव मधु जहँवां। पीवहिं भाग्यवान नर तहँवां॥
शीत उष्ण दुरगन्ध परिश्रम। जासु पिये नहिं होत कबहुँ भ्रम॥
बटउद्भव जहँ कामद पय है। मांगे मिलत सुरथ गज हय है॥
शय्या अशन बसन सुख होई। कल्पबृक्षनामक तरु सोई॥
तहँ सुन्दर अस्थान अनूपा। संकर्षण निवसहि सुखरूपा॥
शिव गिरिजा सह करहिं बिहारा। मनुज होहिं त्रिय भूमरतारा॥
कनककमल बसन्त तरुमाला। इला लवङ्ग जाइफल जाला॥
देवद्रुमादि मलिन्दन नादित। राजत उत्तरखण्ड इलावृत॥

दो० देखि सकल शोभा तहां, जीति खण्ड भगवान।
बलि तहँ के नृपतें लियो, सुनिये नृप सज्ञान॥

शोभन नाम तहां नरत्राता। नृप मुचकुन्द केर जामाता॥
एकादशि करि जिन सुख पावा। मन्दर ऊपर बसत सुहावा॥
अजहुँ करत सो राजसमाजा। लिये चन्द्रभागहि नरताजा॥
लै बलि सो हरि सम्मुख आयो। प्रेम सहित ताकहँ बैठायो॥
तब नृप कह्यो सुनहु मुनिताजा। होइ गयो जब शोभन राजा॥

तब का कीन्ह जनार्दन ज्ञानी। सुनि भे कहत बिपञ्ची पानी॥
तहँ सर देखि कनक मय भारी। अर्जुन कृष्णहि कहत बिचारी॥
कनकलता अरु कमल समेता। कासु कुण्ड यह कृपानिकेता॥
दो० कृष्ण कह्यो पृथु पूर्वनृप, स्वायम्भू के बंश।
सो इत तप किय कुण्ड यह, अहइ सुतपको अंश॥
जासु बारि पीवैं जन जोई। पापबिगत सपुण्य सो होई॥
इमि कहि ताते कृपानिधाना। तपोभूमि गे मनुजप्रधाना॥
आठ सिद्धि तहँ रूपहि धारी। नृत्य करहिं आनँद बिस्तारी॥
ऊधव हरि ते बचन बखाना। तप महिकासु अहै भगवाना॥
नाचहिं सिद्धि जहां धरिरूपा। सुनिकै केशव कहत अनूपा॥
स्वायम्भू मनु इत तप कीन्हा। महिश्रेयासि सो अहहि प्रबीना॥
इत बसुसिद्धि सदारहि नाचहिं। मानहु तपकी महिमा बांचहिं॥
इत तपि मनुज देव सम होई। पूजनीय देवन ते सोई॥
दो० इमि कहिकै भगवान हरि, सैनसहित मतिमान।
उतकट देशहि जातभे, बाजत बिबिधनिशान॥
कनककशिपुजिततपकियभारी। पुनि लीलावति पुरी निहारी॥
तहँ के नाह देवहुतबाहा। मूरतिमान बसति भरिचाहा॥
सोउ श्रीकृष्णहि दै बलिदाना। अग्निकीन्हअस्तुतिबिधिनाना॥
देखि इलाबृत इमि छबि छाये। जम्बूद्वीप बेदपुर आये॥
निवसत निगम मूर्तिधर तहँवां। गिरा सभासद राजित जहँवां॥
उरबशि आदिक नाचहिं बाला। हाव भाव कहँ करहिं रसाला॥
बर गन्धर्ब करहिं कलगाना। परितोषहिं बेदै बिधि नाना॥
सैतुंबल बिस्वाबसु नामा। शुभदर्शन रथचित्र ललामा॥
दो० ये सब बीन मृदङ्ग मुरु, षष्टबीन अरु ताल।

बाजन विविध बजावहीं, वेद सभा नरपाल ॥
ह्रस्व दीर्घ प्लुत सरिस बखाना। अरु उदात्त अनुदात्त सुजाना ॥
अनुनासिक निरअनुनासिकहूं। भेद अठारह इमि सुअनिकहूं ॥
आठ ताल स्वर सात बखाने। तीन ग्राम तित लसहिं सयाने ॥
भैरव मेरु मलार हिंडोला। मालकोश श्रीद्वीप अमोला ॥
ये षटराग लसहिं तनुधारी। पांच पांच इक इक कहँ नारी ॥
आठ आठ आतमज बखाने। औरहु विविध वंश सरसाने ॥
इनकर रङ्ग सुनहु नरत्राना। भैरव प्रथम विभूति समाना ॥
मालकोश रँग हरित अनूपा। मेघ मलार मोर सम रूपा ॥
दो० हंस सरिस हिण्डोल है, दीपक कनक समान।
लालरङ्ग श्रीराग को, इमि जानहु मतिमान ॥
तब इमि कहत भये क्षितिपाला। ग्राम नृत्य स्वर अरु जे ताला ॥
इनके भाषहु भेद अमोले। मुनिकै वचन सुनारद बोले ॥
रूपक पञ्चरीक परमट पुनि। कमठ विराट वलीक नाम गुनि ॥
बहुरि कहिय कटिंजराताला। ये सब तुम जानहु नरपाला ॥
ऋषभ निषाद और गन्धारा। तीन ग्राम ये भूभरतारा ॥
ताण्डव राग गान्धव जानो। कैद बनाय अपसरस मानो ॥
गुह्यक विद्याधर कर कहहीं। येते भेद नृत्यमहँ अहहीं ॥
हावभाव अनुभाव बखाने। भेद अठारह कहहिं सयाने ॥
दो० इहि विधान यह सब कह्यो, जो तुम पूछी बात।
रसिकशिरोमणि कृष्णप्रिय, अब का सुनिहौ तात ॥
मैथिल कहत भये तेहि काला। रागतनय अनुराग कि बाला ॥
तिनको नाम बखानहु ज्ञानी। मुनि बोले नारद गुरुज्ञानी ॥
काल देश अरु भेद बखानी। छपनकोटि संख्या अनुमानी ॥

पञ्चम ललित महर्षि बिलावल । अरु बौशाख सुमाधव पिङ्गल ॥
सहित समृद्ध आठ संताना । भैरव के जानहुँ नरत्राना ॥
चित्रा और बिचित्रा नामा । ब्रजमलार अँधकारी बामा ॥
जैजैवन्ती बहुरि बिचारी । अहैं पाँच भैरवकी नारी ॥
ब्रजरंहस जलधार केदारा । मल्लारी बिहाग निरधारा ॥
दो० नारि मेघ मल्लार की, ये पाँचहु भूपाल ।
आठ तनय के नाम अब, कीजै श्रवण रसाल ॥
कामरूप कान्हरा बखानत । सुख कल्याण बहुरि पहिंचानत॥
गौड़ कल्यान रगा संजीवन । मन्दहास शुभकाम आठगन ॥
स्वर्मनिगुनाकरी गन्धारी । सुर गान्धारि धनाश्री भारी ॥
दीपक की ये पाँचहु नारी । सुतकर नाम सुनहु ब्रतधारी ॥
सिन्धु धवल आभीर बिमोहक । मारब पूर्ब सुभ्राम सुसोहक ॥
चन्द्रकास सह आठ गनाये । तितनेइ मालकोश के जाये ॥
माधव कौशिक मारु मेणरा । कन्तल अरु कान्हरा बिचारा ॥
नायक शोभन सहित सुहाये । मालकोश के सुवन गनाये ॥
दो० गोरावठि गौरी बहुरि, चतुर चन्द्रकल नाम ।
कर्नाटी बैराटिका, पाँच अहैं बरबाम ॥
गोर गोबिन्द हमीर पञ्चक्षर । सारँग मरुत भिगारक साँगर ॥
अहैं आठ ये श्रीके बारे । नाम पाँच त्रियके सुनु प्यारे ॥
त्रिवनि पूरबी मालव गौरी । पाँच रङ्किका पाँचहु गोरी ॥
हारि परज सुन्दरी बसन्ती । तैलङ्गी ये योबनवन्ती ॥
ये हिण्डोल त्रिया गुणखानी । आठ सुवन सुनिये नृपज्ञानी ॥
मङ्ग बसन्तक कुमुद बिमोदा । शङ्कराभरन और प्रमोदा ॥
मोहन पुनि बिभास सुरसाला । इहि बिधि राग भेद नरपाला ॥

तब बोले नृप बुद्धि विशाला। वेद अङ्गकह कहिय कृपाला॥

दो० विशद धृष्णिको प्रश्न मुनि, कृष्णदास मुनिनाथ।
वानी मनमानी कहत, ज्ञानी गानी गाथ॥

छ० बेद बदन व्याकरण नयन ज्योतिष पहिंचानो।
रसनावर गान्धर्व चरण पिङ्गल कहँ जानो॥
मीमांसा द्वै हस्त उदर धनु वेद वखाना।
आयुर्बेद पीठि बर मानो वैशेषिक जाना॥
सांख्यबुद्धि कहँ जानिये अहंकार यह न्याय कहि।
चित्त बेदान्त विहार थल रागरूप यह सकल चहि॥

दो० नृप पूछ्यो पुर वेदमहँ,कीन्ह कहा भगवान।
मुनि कह सुनि हरि आगमन, चले वेद बुधिवान॥
ग्राम ताल स्वर अप्सरा, मान गन्धरव वेद।
गिरा सहित हरिचरण गहि,पूज्यो वहुविधि बेद॥

कहत भये राधावर बानी। काकहँ बरहु वेद बरज्ञानी॥
हम प्रसन्न कछु दुर्लभ नाहीं। निगमकहततवगुणिमनमाहीं॥
जो प्रसन्न तव कृपा करीजै। राधा सह मोहिं दरशन दीजै॥
गऊलोक के रूप अनूपहि। लखहिसकलयेतिहुँपुरभूपहि॥
सुनि हरि निज स्वरूप दरशायो। राधारसिक सहित सरसायो॥
लखि सो छबि हे नीतिनिकेता। सब महि मुरछि परे गत चेता॥
मुदित सकल उठि पुनि नरपाला। नाचनलगे ललित दै ताला॥
बाजन बजे सजे सब रागा। परम प्रेम सबके मनपागा॥

दो० तहँ हरिकी अस्तुति कियो, सबन पृथक महिपाल।
कहत गिरा गद्गदगिरा, दृगजलगिरा रसाल॥

छं० जेहि बेदनजाना रूप महाना बेदनजाना सो सबकी।

नर ह्वै प्रकटाना ज्ञाननिधाना मुदअधिकाना प्रभु अबकी ॥
बर पुरुष प्रधाना आदि जहाना तिहुँपुर त्राना बधनबकी ।
ममभाग्यमहाना दृगदरशाना हे भगवाना बलिछबिकी ॥

दो० बाणी की बाणी सुनत, बर बाणी गन्धर्ब ।
सरसानी मति प्रेममय, कहत गहत सुखसर्ब ॥

स० यह श्याम सुगौर स्वरूप दोऊ, परधाम स्वधाम बिराजत हैं । लखि अङ्ग अनङ्ग अनङ्ग रिपू, मुखचारु समेतहु लाजत हैं ॥ मगसनमुखसो अति आनिदया, जगदीश महाछबि छाजत हैं । जिनके पदके परसे परसे, जरसे तरुपाप पै गाजत हैं ॥

दो० तेहि क्षण सगरी अप्सरा, हरिपद शीश नवाइ ।
बर अस्तुति लागीं करन, प्रेम भरी नरराइ ॥

क० जैसे तरु तरुण तमालको रसाल अति, तापर कनक बेलि तनक रसाल की । सुन्दर कसौटी बीच ललित लकीर जिमि, मेघमें चलाका जैसे शोभा प्रेमजाल की ॥ तैसेही अनूपरूप रूपहूके भूप रूप, भवकूप काढ़िबेको डोरीलोल डाल की । मूरति मनोहर सुनोहर सुरादिहू को, देखी है दृगन आज राधिकागोपाल की ॥

दो० रूपग्राम कहँ देखिकै, तीन ग्राम गुणग्राम ।
करि प्रणाम बोले बचन, निरखि श्याम अभिराम ॥

स० जासु कृपा बिधि सृष्टि रचैं अरु बिष्णु सुपालत लोक ललाम हैं । शंभु सँहार करैं सबको बढ़ि बासवको सुरनायक नाम हैं ॥ भानु प्रकाश करैं दह पावक चन्द्र सुधाधरदायक काम हैं । कृष्ण सुऐसे प्रभू गिरिधारण आठहुयाम तिन्हैं परणाम हैं ॥

दो० रूप रसाल गोपाल लखि, सुख बिशाल नरपाल ।
कहत चरणपर भालधरि, साततालं मतिमाल ॥

स० साहब आप निवाहब मोकहँ कोर कृपादृगतें अवगाहब। गाहब हाथ निगाह दया करि जानिकै दीन महाअघ दाहब॥ दाह बड़ी भव पावक की तेहि दिष्ट अमीजल तें अति चाहब। चाह बनी रहै रूपदुकानन लाल दृगै मिलि मोद बिसाहब॥

दो० ज्ञानमान मतिमान सब, मान सुबुद्धिनिधान।
कहत बन्दि भगवानपद, हृदय ज्ञान अधिकान॥

स० जा पगतें शिर गङ्ग कढ़ी बर न्हाय तरङ्ग करै भवभङ्गा। शीश चढ़ी जगईश महेश के ब्रह्म कमण्डल बास सुढङ्गा॥ नामहिलेत तरे बहु प्रेत सुमुक्तिको खेत उयो सुखसङ्गा। ताकर ध्यान धरो नितही जन जाकहँ योगी धरैं उरसङ्गा॥

दो० तेहिक्षण स्वर करि मेघस्वर, राधाबरहि निहारि।
अस्तुति कहँ करिबे लगे, जै जै देव मुरारि॥

छं० शरदकमल शशरुचिर चलत लखिबारन लज्जत।
रतन रचित अति मधुर मधुर स्वर नूपुर बज्जत॥
अंकुश अम्बुज कुलिश सुरथघट बिद्रु बिरज्जत।
अंगुरीपर नखनव सपेद नखतन सम छज्जत॥
बिधिबाशिष्ठशिवशेषमुनि बन्दितबरआनँदकरण।
उर धरत ताहि जैजै करत चारु उभय केशवचरण॥

दो० इमिसब तिनको कहब सुनि, भैरवादि सब राग।
पृथक पृथक अस्तुति करत, बढ़्यो हृदयअनुराग॥

सो० जिन निरख्यो सो अङ्ग, सो ताहीकी छबि कहत।
बाढ़्यो हृदय उमङ्ग, देखि श्याम शोभा महत॥

दो० तामहँ भैरव रागबर, हरिके चरण निहारि।
बर अस्तुति लाग्यो करन, बार बार बलिहारि॥

क० पङ्कज बरुनबिधि अर्कजादि धरैं ध्यान, मुनिसे मलिन्दन के मनके हरण हैं। अंकुश कुलिश छत्र रथन बिराजमान, कोमल अतिहि नवनैनूके बरण हैं॥ परशैं महेश शेश ब्रह्माबिबुधेश जाहि, निरखे बिशेश पाप लेशके दरण हैं। दर्शनीय पर्शनीय बन्दनीय पूजनीय, कामनीय पीय प्यारे कृष्णके चरण हैं॥

दो० हरिको उर अवरेखिकै, राग मेघ मल्लार।
हाथ जोरि भाषत भयो, सुनहु भूमि भरतार॥

क० रम्भ खम्भ सरिस ललाम लगै शोभाधाम, मण्डित सुवर्ननतें चारुरस पुरु हैं। चलत हलत शोभा अतिही अनन्द ओभा, प्रमदा प्रबीन और अङ्गनमें गुरु हैं॥ किंकिणी झलक होत करत उदोत काम, ध्यान किये चार कामदायक सुकुरु हैं। बिशद बिशालहैं रसाल शत्रुकुलकाल, रसिक सुखाल कृष्ण प्यारेके ये उरुहैं॥

दो० दीपकनामक रागबर, सो कटि कहँ अवरेषि।
कुलदीपक भाषत भये, आनँद आनि बिशेषि॥

क० केहरिसी कहिये तो बिचारि उरबीवर हौं, कहां मृग बनचारी कहीं रुधररहै। कहौं जो कमानमूढ़ तौहू जड़ जानिपरै, बेली जौं बखानौं तौ निसत्त्वता ठहर है॥ चलत लचाकिजात देखि लोग जकिजात, थकिजात कामबाम छकिजात थर है। कमर समान द्युति किंकिणी के बीच बर, समरसफेटा कृष्ण प्यारे की कमर है॥

दो० मालकोश गुणकोश तब, कटि करधनी निहारि।
बरबाणी बोलत भयो, उर आनँद निरधारि॥

क० चामीकर जाल आलबालसो रसाल अति, रतन समूह बीच राजमान ही रहै। झांझसी झमक झट झुकिकै झनकि जात, थहराल बातबेग हलत शरीर है॥ भक्तनके मनजे उड़ात हैं

उपाधि पाय, बांधिबे के हेत मानो सो दृढ़ जँजीर है। भीरुभीरहरण अभीरजात मोदकर, पापभीर अरिकृष्ण प्यारेकी मँजीर है ॥

दो० श्रीधरकी वर नाभ लखि, मुदित होइ श्रीराग।
वर अस्तुति लाग्यो करन, हृदय बढ़्यो अनुराग ॥

क० अतिही अनूप रूप सुखमा स्वरूप भूप, उदर अगाध सिन्धु मध्य कञ्ज आभ है। बावड़ी सुधाकी सोहै त्रिवली सोपान ताकी, रोमकी कतारी सो निकारी परडाभ है ॥ द्वार चार ओरते सुद्वार है बिचारि देखो, ध्यान धरे जासु होत सब भांति लाभ है। जनमें जहांते हैं जगतकारसाज बिधि, शोभाके निधान कृष्ण प्यारेकी सुनाभ है॥

दो० कमल माल लखि कृष्णकी, भृङ्ग समूह समेत।
कहत भयो हिंडोल हँसि, जय जय कृपानिकेत ॥

क० अक्षरकी पंक्ति जैसे कागद सुजान बीच, उदरशिरोमणिते लसत रसाल है। मिलिकै मलिन्दगण लेत अरविन्दरस, वायुमकरन्द मिलि चलत सुचाल है ॥ जनो श्याम चूनरी पहिरिलीन्हों कण्ठ बीच, कैधों पद्मरागबीच लीलो जड़्यो हार है। विश्वमनरञ्जन गुही है चारु कञ्जनते, भञ्जन त्रिताप कृष्ण प्यारेकी सुमाल है ॥

दो० भैरवकी त्रिय पांच तब, पीताम्बरहि निहारि।
वर वरणन वरणन लगीं, चरणनपै शिर डारि ॥

क० पीतरङ्ग बर्धन अनङ्ग सुख सङ्ग राजै, मनो घनबीचचारु चञ्चला लपट है। कनक किनारा अति ललित लसत शोभा, हलत चलत काम छलत निपट है॥ पापी मुख पीरो और दासनकी पीर हरैं, दुःखभवहेत कोटि भानुसी दपट है। कपट कपटडार रे मनगवाँर भट, देखु नवनट कृष्ण प्यारेकी सुपट है ॥

दो० भैरवके सुत आठ तब, देखि कृष्णकी बाहु।

अस्तुति कहँ लागेकरन, सुनहु सचित नरनाहु ॥

क० चार सिन्धु सरिस अपार बिश्व भरतार, देतहैं पदारथ सुचार शोभाधरहैं। चारि दिगदन्ती शुण्ड सरिस धरणहार, चारुचार आयुधन भूषित सुघर हैं॥ भूषण बिभूषित अदूषित सकल भांति, जगत बितान चारु चोपसे रुचर हैं। चारबेद बन्दित बिचारके अधारभूत, ललित अपार कृष्ण प्यारेके ये कर हैं॥

दो० राग मेघ मल्लारकी, पांच प्रिया महिपाल।

ते सब तब लागींकरन, अस्तुति अतिहि रसाल॥

क० लालरङ्ग अतिहि रसाल सब शोभा जाल, बिम्बफल रूप पै अनूप सुख घर हैं। चिक्कन सुचाल चन्द्र सुजन चकोरनके, कोरन के रसिक करोरनके बर हैं॥ गोलसो अमोल लोल मोती पास बेसरको, रचित तमोल औ कपोल छबिकर हैं॥ चार फल देनहारे भक्तमन लेनहारे, अतिप्रेमधर कृष्ण प्यारेके अधर हैं॥

दो० राग मेघ मल्लारके, आठ सुवन महिपाल।

बदन सदन महँ रदनलखि, अस्तुति करत रसाल॥

क० अवसी सुकेतुकीसी भलीभांति लसैं शुभ्र, कुन्दकी कतार क्रान्ति शोभाके सदन हैं। मोती एक जात और नखतन पांति बनी, सुन्दर दिखात मुसकात जौन छन हैं॥ केवड़ा कपूरचूर उठत सुबास अति, नास होत दुःख रास संकट कदन हैं। मदन महीप मन बदन सुखद चारु, गदन सुबोल कृष्ण प्यारेके रदन हैं॥

दो० दीपक की तहँ रागिनी, पांच गहे मति सांच।

हाथ जोरि लागी करन, कृष्ण नयन रस रांच॥

क० कञ्जकेसे पत्र फूल भूले देखि मध्यअलि, खञ्जनसे मीनसे चपल मोद मन हैं। चितवनि चित्तहूके चोर ह्वैके मोहलेत, तानेधन

वीर जानो जगतीजयन हैं ॥ सुन्दर गुलाबीलाल स्वामी आवी कोर दोऊ, गयन चयनदानी सुखमा अयन हैं । दोयकोरवारे दुहूँओर तीखेधारधारे, असिते अधिक कृष्ण प्यारेके नयन हैं ॥

दो० दीपकके सुत आठ तव, मगन लगन करि नैन ।
छबिसानी बानी कहत, जै जै आनँद ऐन ॥

क० कैधौं कञ्ज अतिही अनूप देखि रूपराशि, आई अहिसुता दोय बर छबि सोह हैं । कैधौं है कमान वलवान मनमथकेरे, तानत सरोष राग शङ्कर के द्रोह हैं ॥ कैधौं तजके मियान आड़ी असि कढ़ी दोय,देखि रणबीच बहुबैरीके गरोह हैं । कैधौं शशिबीच सुधा पीवत भ्रमर आय, जगमोहहारी कृष्ण प्यारेकी ये भौंह हैं ॥

दो० मालकोशकी रागिनी, अनुरागिनी अनूप ।
पाँचहु इन बोलत भईं, देखि कृष्णको रूप ॥

क० कुण्डलके बीचते कढ़ी हैं अति शोभा देत, रविते यमुनधार सुन्दर झलक हैं । कञ्चन के शैलपैते झकत भुजंगिनीसी, देखतहीं डसि लेत एकही पलक हैं ॥ बनी हैं उमेड़िके जञ्जीर भारी क्षुति कारी, तामें बाँधि काढ़े ऐसे कोऊना खलक हैं । शोभा कीसी सीढ़ी और रचित फुलेलमेल, मोहन मलक कृष्ण प्यारेकी अलक हैं ॥

दो० मालकोशके आठ सुत, कुण्डलकहँ अवरेखि ।
ताही कहँ बरणत भये, परमा परमपरेखि ॥

क० बाल रबिलालसे रसाल छबिदेत दोऊ, मकर अकार चारु उत्तम अमल हैं । सकता सटकि मन भक्तको झटकिलेत, रहेसो अटकि रबिसंग ताराभल हैं ॥ काननकी शोभा चतुरानन न भाखिसकै, शम्भु सहसाननादि भूलत अकल हैं । अतिहि सुडौल नग जटित अमोल जामें, लोल छबिपूरे कृष्ण प्यारेके कुँडल हैं ॥

दो० रागिनि तब श्रीरागकी, पागि हृदयमहँ प्रेम।
बहुबिधिबरणत नासिका, करनहेत निजक्षेम॥

क० मानो दोय खञ्जनकरैं हैं रारि बीच आय, शुकसो बचावै ऐसी उपमा प्रकास है। बेसर बिराजै छबि छाजै सो अनूप अति, दोय शुक्र बीच लीन्हों तुल्य रबिबास है॥ कैधौं कीर चुगत सुमोती बाल-चन्द्र जोती, कैधौं उडुगण दोय शशिमें बिलासहै। श्यामकञ्जकली जापै बैठे जो सपेदअली, देखो कैसी भली कृष्ण प्यारेकी सुनास है॥

दो० पुत्र तबै श्रीरागके, सुमिरत श्रीभगवान।
सबतनकी अस्तुति करत, उर आनन्द महान॥

क० लाल है तिलक शिर शोभा है रसाल अति, मुकुट मनोहर सुबैजयन्तीमाल है। भाल है सुबालनको पीतपट बेनुधरे, छरी चारु धरी हाथ परमबिशाल है॥ शाल है मदनको दुशाल है सुकन्धपर, दरश सुजाको देवतनको मोहाल है। हाल है न ऐसोरूप अधिक सुरेशहू को, जगत मुकुटमणि प्यारो नन्दलाल है॥

दो० तबहिं राग हिण्डोलकी, रागिनि पांच सुजान।
बन्दि मुकुन्दहि बर बचन, बोलीं हरष महान॥

क० अतसी कुसुमसम शोभा चारु दरशात, राधिका समेत सुखरूप रूपशाली हैं। यमुनाके कूलमें कदम्बतरु मूलराजैं, अति अनुकूल देखि शूलजात हाली हैं॥ पार नाहिं बेद पावै यशुदा नचावै ताहि, बन्दत चरन शम्भु क्रीड़त गुवाली हैं। मङ्गलकरन दुख दरन हरनअघ, बारिद बरन बनमाली बनमाली हैं॥

दो० आठ सुवन हिण्डोलके, निज निज हाथन जोर।
बिमलबुद्धि बोले बचन, जै जै नन्दकिशोर॥

क० हमरे समान जग पतित न कोऊ अहै, पावन पतित नाहिं

आपके समान है। पापी नहीं मोसों पापहारी नहीं तोसों कोऊ, दीन हौं दयाल तुम विदित जहान है॥ अधम महीं हौं तुम अधम उधारनहौ, दोऊ ओर समभाव मिल्यो भगवान है। करुणानिधान और आरतिहरणहार, आरति निवारो देखि करुणा महान है॥

दो० इमि रागन कीन्ही विनय, पूरि हृदय आनन्द।
जेहि पढ़ि सुनि गुनि नरलखै, राधापति गोबिन्द॥

बेद गये जब शीश नवाई। तब हरि निज पुत्रन समुझाई॥
द्वारावती चले हरषाई। बैठि सुरथछवि बरणि न जाई॥
सुग्रीवादिक चञ्चल घोरे। दारुक लाय सुरथ महँ जोरे॥
गरुड़ध्वज चढ़ि आनँद छावत। जयधुनिमण्डितदिशिचमकावत॥
बेदपुरहि तजि कृपानिधाना। आये द्वारावती सुजाना॥
जब हरिगे प्रद्युम्न ससैना। गे नँद कामदुघहि बलऐना॥
तहां बसत मालती सुनामा। शतयोजन की पुरी ललामा॥
तहां बसहिं गन्धर्ब गरारे। भारे बीर धनुषधर सारे॥

दो० केसर लौंग इलायची, जावित्री श्रीखण्ड।
जातिफलादि अनेकतरु, प्रकट सुबास अखण्ड॥

करहिं सुमत्त मधुप मिलि नादा। दशादिशि पूरिरह्यो अहलादा॥
तहँ पतङ्गनामक महिपाला। करत शक्रसम राज रसाला॥
सुनि प्रद्युम्नागमन रिसाई। चल्यो सदल रण भेरि बजाई॥
रथ गज हय गन्धर्व शत कोटी। भिरे आय दोउ करि मत मोटी॥
भल्ल गदा तोमर असि बाना। चलतदुहूंदिशिविविधविधाना॥
तहँ पतङ्ग अति रथ धनु तानी। दलतभयो दुहुँदलअभिमानी॥
तब गदधारि गदा इमि पलमैं। प्रलयकाल पूरयो सब थल मैं॥
द्विरद शीशहति हयगजचरना। रथ टूटे मनुजन कर मरना॥

दो० मारु भागु धरु पकरु लरु, मति डरु डरु गहु काटु।
हाय हाय अब नहिं बचत, पटकु पछारो डाटु॥
ाणमहँ रुधिर नदी दश दीशा। प्रथम उड़ावहिं झटके शीशा॥
ंह चढ़ी काली लै डाकिनि। पीवत रुधिर प्रेत अरु शाकिनि॥
ाब पतङ्ग गरज्यो रणमाहीं। लक्ष द्विरद बाजा तनुमाहीं॥
ादहि गदा घुमाइ निजमारी। गदतेहि आपुनि गदा प्रहारी॥
ोय घरी इमि लरे करारे। तनते चटचटाहिं अङ्गारे॥
ब गन्धर्ब गदा गहि भारी। तमकि शीशमहँ गदके मारी॥
रछि पर्यो गद धीर धुरीणा। यदुदलभो हलचल बलक्षीणा॥
ब द्वारावति दिशिते आयो। तेज कोटिरबिसम सरसायो॥
दो० ताते प्रकटे गौरतन, अतिबल श्रीबलदेव।
भक्तहेत हलमुसलधर, बिक्रमजासु अभेव॥
ीचि घींचि हलतें अरिसारे। मुसलमारि चूरण करिडारे॥
ा गज तुरँग बीरसमुदाई। मर्दत भे हल मुसल चलाई॥
रथ पतङ्ग भागि पुर आयो। बहुरि लरनहित साज सजायो॥
तहलते लिय खींचि तहांहीं। सिगरी पुरी काम दुख माहीं॥
ः गृह आराम अटारी। हाहा शब्द होत भो भारी॥
रि पतङ्ग गन्धर्बन साथा। बल लायो पद नायो माथा॥
चित हेममय सुखद बिमाना। मानिगामीध्वज कलशमहाना॥
श योजन लौं अम्बर छाये। बिसुकर्मा के चारु बनाये॥
दो० तुरँग सुदश अर्बुद सुरँग, चारलाख गजराज।
अर्बुद सहस सुरत्नबर, सुरथ सजाये साज॥
लौंग इलाची जातिफल, जावित्री कशमीर।
इनकी किश्ती लाखभर, लाये गन्ध्रब बीर॥

कै प्रणाम करि दोउ कर जोरे। कहत पतङ्ग सुनहु प्रभु मोरे॥
राम न बिक्रम हम तव जाना। तिलसम जाशिरजगदरशाना॥
देव देव श्रीशेष अनन्ता। कामपाल प्रभु रेवतिकन्ता॥
जै जै अच्युत देव परात्पर। आपु अनन्त दिगन्त धराधर॥
सुर मुनिन्द्र बन्दत फनिन्दवर। मुसली हली बली करुणाकर॥
मैं पतङ्ग तुम दीप समाना। मैं पतङ्ग तुम जल भगवाना॥
मैं पद बन्दत दास तुम्हारा। कृपा करहु रोहिणी कुमारा॥
पुनिप्रमुदितबल आनँदलीन्हा। अभयदान गन्धर्वन दीन्हा॥

दो० बन्दित सब यादवनते, कृष्ण सुतहि तित राखि।
राम गये द्वारावती, विजय कीजियो भाखि॥

तब प्रद्युम्न सदल सुख छाये। चलि नँद मधुधारा तट आये॥
कनक शैल वेशम्भ्रक बन हैं। मनिके तहँ पक्षी तरुगन हैं॥
हेमावती पुरी सुर मण्डित। बेत्रवती सरिवर पुर मण्डित॥
दानवकहँ अगम्य अति अहई। बसु दिगपतिकी निधितहँ रहई॥
शक्रसखा तित करहिं निवासा। सब धन रक्षत दक्ष खुलासा॥
तहँ हरिसुत ऊधवहि पठाये। सो मुनि शक्रसखा ढिग आये॥
करि प्रणाम देवहि कर जोरी। कर हित भाषत भये बहोरी॥
उग्रसेन नृप मन यदुमण्डन। राजसूय करि हैं अरिखण्डन॥

दो० जम्बूद्वीपहि जीतिबे, कार्ष्णिहि आज्ञा दीन्ह।
सो निजबलते अतिबली, आठ खण्ड जय कीन्ह॥

अब सो खण्ड इलावृत आये। देहु तिन्हैं बलि कलह मिटाये॥
नतरु होइ है कठिन लराई। इन्द्रसखा सुनि कहत रिसाई॥
देव मोहिं पूजहिं का नर हैं। सिद्ध अहों सबनिधि मम घर हैं॥
मम घर सब दिगपति कर धन है। लाख द्विरद तब मेरे तन हैं॥

कोष कुबेर इन्द्रसम बल है। नहिं देहौं बलि ममपन भख है ॥
ताकहँ कहहु देहि म्वहिं भेंटा। सुनि सो कह जे जिते अखेटा ॥
धनद भये जिमि तिमि ह्वै हौ तुम। चैत्रभूप शिङ्गारतिलक जिम ॥
जिमि सुभाग नृपहरिसुखण्डकर। उत्तरेश बलवान गुनाकर ॥
दो० शकुनी सम होइ देइहौं, बलिकहँ हे भूपाल।
सुनि सकोप बोल्यो बचन, शक्रसखा तेहिकाल ॥
जबलौं हम न ताहि बलि देहीं। तबलौं रहु इतरे नर देहीं ॥
तब ऊधव बोले नरनाहा। तुमहिं दीन्ह हम नीक सलाहा ॥
परि कुबुद्धिवश जौनहिं मनिहौ। देउ होइ तब आपुहि जनिहौ ॥
सुनि सो दृष्टि बन्द कर लीन्हा। ऊधव कहँ तित जान न दीन्हा ॥
चिन्तत यादव दिन बहु गये। हम तब खबरि कहत सबभये ॥
सुनि रिसाइ बजवावत डङ्का। यदुभट चलतभये निश्शङ्का ॥
जिमि त्रिपुरारि त्रिपुरपुर जाई। शम्बरारि तिमि चले सजाई ॥
मकरकेतु चापहि टङ्कारी। भिरतभये बहुभटन प्रचारी ॥
दो० दश अक्षौहिणि सैनलै, शक्रसखा रणधीर।
भिरतभयो यदुजूह सों, त्यागत तीक्षण तीर ॥
तो० दुहुँ ओर तें भट क्रुद्ध। भो करत अद्भुत युद्ध ॥
धरु मारु मारु पुकारि। अभिरे अनेक प्रचारि ॥
बहु धनुष कहँ संधान। त्यागहिं अनेकन बान ॥
बहुशीश डारहिं छेदि। मारहिं हृदयकहँ भेदि ॥
बहुबधहिं कुञ्जर जूह। बहुबधहिं तुरग समूह ॥
बहु सुरथ डारहिं तोरि। बहुभिरहिं भटसम जोरि ॥
बहु फिरहिं रण महि रुण्ड। शोभितपरे बहु मुण्ड ॥
बहु लरहिं सुरथी जूटि। अरिप्राण लेहिं सुलूटि ॥

बहु गजी द्विरदी वीर। संगर करहिं रणधीर॥
हय बाँह सों, हय बाँह। रण करहिं जयके चाह॥
पदचारि सों पदचारि। मिलिकरहिंबहुविधिमारि॥
कहुँ रथी द्विरदी क्रुद्ध। मिलि करहिं अद्भुत युद्ध॥
बहु रथी अश्वसवार। मिलि करहिं बहुविधिमार॥
अश्वी गजी के साथ। रण करहिं हे नरनाथ॥
सुरथी गजी तें जूटि। कहुँ लरत पैदल ऊटि॥
इहिभांति संगर घोर। नृप होत भो तेहि ठोर॥

दो० कटे शीश कर करन पद, कुण्डल स्यन्दन केत।
हय शिर शुण्ड वितुण्डके, रणमहिं शोभा देत॥

तु०तो० बहु शूरवढ़ि मरतेभये। अघनाशते तरते भये॥
जैसे गुवारा जात हैं। तिमि जात शूर दिखात हैं॥
बहु भूत भैरव डोलते। धरु मारु बानी बोलते॥
शिर खाहिं लैलै डाकिनी। हरषाहिं रणमहँ शाकिनी॥
चढ़ि सिंह डोलत कालिका। गरसोह शिरकी मालिका॥
खग उड़हिं लैलै आँतरी। पुनि खाहिं भरि भरि पातरी॥
बहु स्यार भोजन करत हैं। दुख दूर अपनो करत हैं॥
निकरी रुधिरकी आपगा। रसबीर अति तहँवापगा॥
अति रङ्ग राच्यो जङ्गमें। भट भिरहिं पूरि उमङ्गमें॥
भरि रुधिर सरित तरङ्गमें। भट तरहिं जैसे जङ्गमें॥
यहि भांति संगर घोर भो। धरु मारु धरु चहुँओर भो॥
जय कीन्ह हम यह शोर भो। प्रकटत उभय दल जोर भो॥

दो० तब सारन बलको अनुज, रोहिनिसुत रिसियाइ।
गजचढ़ि भो मर्दत सुरन, रण कोदण्ड बजाइ॥

तो० अहिसे बहु शायक मारत भो। बहुबीर द्विधाकरि डारतभो॥
मुकता गजके शिरते जुखसैं। नभते उडसे महिबीच लसैं॥
शरतें अँधियार भयो रनमें। रबिके सम बाण चले घनमें॥
लखिकै इमि बिक्रम सारन को। तजि देवन दीन्ह महारन को॥
दलमें अपने अति हानि लखा। धनुतानि चलो बढ़िशक्रसखा॥
दश शायक पारथ के तनदै। अरु भानुहि बीसतिही छनदै॥
शतशायक साम्बहि मारत भो। तितनों अनिरुद्धहि डारत भो॥
गदके तनमैं शत दोय गनो। शर सारन अङ्ग सहस्र हनो॥
सबबीरन बाण उठाइ लयो। नभके मधि जाय घुमाइ दयो॥
सुकुम्हारके चक्र समान फिरे। पुनि भूपरते सब बीर गिरे॥
दो० अश्व सूत सबके मरे, बचे मुख्य बरबीर।
तेहि क्षण चढ़ि दूजे सुरथ, भिखो साम्ब रणधीर॥
शतते घोरन द्वैते सूता। दशपर शरते धनु मजबूता॥
सहस बाणते स्यन्दन काख्यो। बहुरि बलिष्ठ कोप भरि डाख्यो॥
शक्रसखा तब गजपर चढ़िकै। माख्यो शूल साम्ब कहँ बढ़िकै॥
व्याकुल साम्ब भये तेहिकाला। गजहि बढ़ायो सुर धनपाला॥
सोलह कोस उच्च गज भारी। रद द्वैद्वै कोसनके धारी॥
तीन शुण्ड अति करत चिकारा। सिकरी पटकत बेग अपारा॥
चतुरङ्गहि मरदत बढ़ि हदतें। मद पूरित पुष्कर रद पदतें॥
भागे यादवके भटभारे। व्याकुल महा द्विरद के मारे॥
गद गहि गदा तदा रिसिआई। गज मस्तकपर माख्यो जाई॥
दो० फूख्यो शिर गजराज को, गिख्यो धरापर आय।
बज्रलगे गिरिराज सम, तरके नरन दबाय॥
गदा गहन चाह्यो सुर सोई। तबतें गद माख्यो तेहि जोई॥

राजकरहु यह कह्यो सुभाई। तहँते आगे चले बजाई॥
नदी अरुण उदका तट आये। तहँ बहु किन्नर सिद्ध सुहाये॥
शक्रसखाकर सुनिकै हारी। रण न कीन्हबलिदीन्हबिचारी॥
दो० तहँ हरिसुत डेरा कियो, कोटिन तने बितान।
हरहरात ध्वज छत्र बहु, बाजहिं शंख निशान॥
हरिसुत सदल बिराजे कैसे। सहित तरङ्ग नदीपति जैसे॥
गजारूढ़ दुन्दुभि बजवावत। तेहिक्षण भये पुरन्दर आवत॥
यदुन शत्रु गुनि शस्त्र उठायो। इन्द्रहि जानि हरष पुनि छायो॥
कामसभा महँ बासव गये। मिलि आसन बैठावत भये॥
सुरपति तहँ बोले यह बाता। सुनहु बचन मम हे नृप ज्ञाता॥
लीलावती पुरी इत यदुबर। तहँकर नाथ सुकृत विद्याधर॥
तासु सुता शुभ सुन्दरि नामा। कहि न जात कछुरूप ललामा॥
तहाँ स्वयम्बर अहइ अनूपा। आये सकल देव अरु भूपा॥
दो० जेहि लखि मुरछित होउमैं, सो ममपति अनठानि।
लै माला देखति सभा, परमरूप की खानि॥
चलहु तहाँ तुम भ्रातन साथा। लखहु स्वयम्बर बर यदुनाथा॥
सो सुनि काम सदल क्रतुसङ्गा। लीलावती गये सउमङ्गा॥
देखेउ तहाँ स्वयम्बर भारी। रत्नरचित जहँ सकल तयारी॥
छिरक्यो गलियन चन्दन बारी। मोतिन बन्दनवार सँवारी॥
तहां दिब्य आसन पर जाई। बैठे छबि कछु बरणि न जाई॥
गिरि सुमेरु पर सिंह समाना। लखहिं सभासद तेज महाना॥
तहँ प्रजेश सुर रुद्रहु आये। बसुरबिमरुतआगिनिसुखछाये॥
शशि यम बरुण धनद सुरनाहू। देव बैद दोउ दीरघबाहू॥
दो० बिद्याधर गन्धर्ब अरु, सिद्ध सुकिन्नर आदि।

सबसमाज बटुरो तहां, ब्याह हेत अहलादि ॥
लख्यो सबन हरिसुतहि खुलासा । दूरि करी विवाह की आसा ॥
तहँ सो बाल चली लै माला । श्रीरति उमा शची छबिभाला ॥
सबन बिलोकत उत्तम नारी । शतशशिके सम आननवारी ॥
तेहि लखि रहे सभासद जेते । मुरछि परे पृथिवीतल तेते ॥
देख्यो कृष्णसुतहि तब आई । बर शोभा कछु कही न जाई ॥
पङ्कज से लोचन दुख मोचन । गुनिमनरोचनसहितसकोचन ॥
मुरछित परी भूमि पर सोई । मन बिचारि यह ममपति होई ॥
उठि उर डार्यो कञ्चनमाला । सुकृतकीन्हलखिहरषबिशाला ॥
तुरतहिं कर बिवाह कर साजा । ब्याहदीन्हनिजकन्यहिराजा ॥

दो० मङ्गल शब्द बिवाहको,सुनि न सके तब देव ।
बटुरिसकलधरुमारुकहि, लगे जनावन भेव ॥

सो० करि धरि शर धनु ढाल, असि असिनी तोमर परिघ ।
मारन लगे कराल, लेहु बान कहँ भाषि यह ॥

जल्पहिं बृथा अल्पमति धारी । मारहु याहि छड़ावहु नारी ॥
लालच बश नर कहा न करहीं । अधरम धरहिं धरम परिहरहीं ॥
ते सब तेहि क्षण गरजहिं कैसे । सिंह सौंह सियारगण जैसे ॥
तब प्रद्युम्न सदल धनु तानी । गर्जि भिरे उर अति रिसियानी ॥
लागे तजन तीर तेहि काला । कर शिर छेदि छेदि महिडाला ॥
अमर मरन लागे तेहिकाला । निर्जर जरे बानकी ज्वाला ॥
तीन त्रिदश भे त्रिदश बरूथा । कादर भये शूर सुरयूथा ॥
बिबुध बिगत बुध भे नरपाला । नभग भगे धरि दुःख बिशाला ॥

दो० इहि बिधि जीति इलाबृतहि, कृष्णसुवन बलवान ।
दुन्दुभि बजवावत भये, घहराने सुनिशान ॥

मुदित चित्त परमा बिस्तारे । भरतखण्ड हरि सुवन पधारे ॥
देखत देश सुबेश नरेशा । गये द्वारका हरष बिशेशा ॥
काम पठाये ऊधव जाई । नृप बल हरि कहँ शीश नवाई ॥
जो जो भये खण्ड प्रति चरिता । कह्योसकलसुखसरिताबितरिता॥
उग्रसेन बल कृष्ण समेता । बृद्धन सह निकरे अरिजेता ॥
आगे ते आनन के काजा । चले साजि सब मङ्गलसाजा ॥

छं० सब साज मङ्गल साजिकै बाजे बिबिध बजवावहीं ।
नाचहिं मुदित मन बारत्रिय आनन्द उरसरसावहीं ॥
द्विज बहुतबेदन पढ़हिं अस्तुति सूत मागध गावहीं ।
मणिपुष्प अक्षत दूब लाजा द्रव्यदधि सुउड़ावहीं ॥
करकलश मङ्गल लिये नारी दूब दधि पूगीफला ।
सँगशंखदुन्दुभिबजहिंआनँदबजहिंसोसुखअतिभला॥
सँग धूप दीप प्रसून आरति सजे अति सुखमामये ।
हरिसुवन इततें भूप उततें प्रेमभरि सम्मुख भये ॥
प्रद्युम्न असि धरि भूप सम्मुख दण्डवत करते भये ।
हरि शूर बल बसुदेव आदिक बृद्धपद परते भये ॥
गुरु गर्गके पद बन्दिकै मग शोक सगरो गिलतभे ।
तेहिकाल सबअतिधन्यकहि प्रमुदित परस्पर मिलतभे॥

दो० गज चढ़ाइ हरिसुवन कहँ, यदु नृप सह समुदाय ।
द्वारावति प्रबिशत भये, दुन्दुभि बहु बजवाय ॥
घर घर प्रति मङ्गल भयो, सुख सो भाषै कौन ।
कौन कथा सुनिहौ अबै, सो भाषहु क्षितिरौन ॥

कह नृप उग्रसेन यदुराजा । लहि इमि जीति भरे सुखसाजा।
केहि बिधि राजसूय कहँ कीन्हो । मुनि सोई नारद कहि दीन्हो

उग्रसेन श्रीकृष्ण सहाई। यज्ञ करतमे अति अधिकाई॥
आचारज गरगादि बुलाये। नरपालन कहँ न्योति पठाये॥
सिगरे ऋषिन मुदित बुलवाये। शिष्य पुत्र लै ते सब आये॥
बेदव्यास शुक पैल पराशर। दुर्बासा मइत्रेय विप्रवर॥
जैमी भार्गव बयशम्पायन। रामदत्त सित बेद परायन॥
गौतम अत्रि बशिष्ठ सुमन्ता। इनहिं आदि आये बुधिमन्ता॥

दो० ब्रह्म शम्भु गुह रुद्र रबि, चन्द्र गणेश हुताश।
मरुत धनद अश्विनसुवन, बसु बासव बलराश॥

सिद्ध यक्ष अप्सर बिद्याधर। गन्ध्रब देवयूथ सह किन्नर॥
दानव दैत्य भूत बैताला। बलि प्रहलाद बान अरिकाला॥
निशिचरगन सह निशिचर ईशा। हनूमान लीन्हे सँग कीशा॥
जामवन्त सँग रिच्छसमाजा। खगन सहित आये खगराजा॥
बासुकि अहिन सहित चलि आये। अक्षयबट प्रयाग मनभाये॥
कामधेनु सँग धरनि बिचारी। मेरु हिमादिक नग तनुधारी॥
गङ्गा यमुना नदिन समेता। सात पुरी आईं मख हेता॥
रतनाकर आये तेहि काला। मुर्च्छन मान राग सुर ताला॥

दो० नवारण्य ऊखलन बहु, चौदह गुह्यस्थान।
दण्डकादि कानन सकल, आये तित नरत्रान॥

जेते जगके तीरथ भारी। आये बन सर सरित सुधारी॥
गोबर्धन गिरिनायक आये। कृष्णादिक सुकुण्ड छबिछाये॥
बृन्दाबन आदिक बन ब्रजके। आवतभये सुसाजहि सजके॥
नव उपनन्द नन्द नँदराजा। षट बृषभान सहित बरताजा॥
कीरति यशुमति राधा आईं। संग गोपिगन अति सुखछाईं॥
शतहु यूथ शोभासे पूरे। अरु बहु ग्वालयूथ बिधिरूरे॥

गोपी ग्वाल बसे नृप जहँवाँ। गोपी भूमि भई बर तहँवाँ॥
तिनके तन से गोपीचन्दन। भोजेहिलगेमिलाहिनँदनन्दन॥

दो० गोपीचन्दन धरत नर, नारायण है जाय।
महिमा जासु महेश बिधि, शेशहु सकत न गाय॥

चारबरण आश्रम सब आये। दुर्योधन धृतराष्ट्र सुहाये॥
भीष्म कर्ण शलधर्म बृकोदर। अर्जुन नकुल समेत सहोदर॥
नृप दमघोष और जयसैना। भीष्म धृष्टकेतु जगजैना॥
बहुरि बृद्धशर्मा अतिसैना। भूप नग्नजित आनँदऐना॥
धृततवजनकजनक मिथिलेशा। अरु अनेक महिपाल सुभेशा॥
अरु अनेक अवनीश सुहाये। कहँलौं नाम कहिय छबिछाये॥
सिन्धुशैल रेवति मधिभूपा। भो पिण्डारक तीर्थ अनूपा॥
तहां यज्ञकी करी तयारी। कुण्डपांच योजनको भारी॥

दो० ब्रह्मकुण्ड होतो भयो, चार कोसको साँच।
दोय दोय बर कोसके, कुण्ड बनाये पाँच॥
दशबेदी मखमहँ भई, बरबिस्तार बिचार।
यज्ञखम्भ कञ्चन बन्यो, ऊंचो हाथ हज़ार॥

योजन पांच सुमण्डफ राजैं। कनकबितान सरस छबिछाजैं॥
रम्भखम्भ तोरण बिस्तारे। भोजविष्णु मधु अन्धकभारे॥
शूर दसारह महँ यदुराजा। लसे यथा सुरमहँ सुरताजा॥
परिपूरणतम सह परिवारा। राजहिको कहि बरणै पारा॥
उग्रसेन तहँ दिक्षा लीन्हा। गर्गहि बर आचारज कीन्हा॥
होता भे दशलाख सुहोते। तितने दिक्षित मन्त्र उदोते॥
पांच लाख अध्वर उदगाता। शुण्डसरिस गजभार बिभाता॥
भोजनकरिअगिनिहिमहिपाला। भयो अजीरन तहँतेहिकाला॥

दो० कोऊ जीव जहानमें, भूखे रहे न भूप ।
सोमपानकरि देवता, भये अजीरन रूप ॥
उग्रसेन रुचिमती समेता । चले नहान सकल जगजेता ॥
व्यासादिक श्रुतिऋचा उचारहिं । नृप नहात आनँद बिस्तारहिं ॥
पतिनी सहित लसे नृप कैसे । सहित दक्षिणा वर मख जैसे ॥
मनुजन देवन दये नगारे । नृपपर सुमन प्रसून पवाँरे ॥
चौदह नियुत कनक भरि हाथी । भूषित हय शत अर्बुद साथी ॥
बिबिध रतन धन बसन रसाला । गर्गहि देतभये नरपाला ॥
सहस द्विरद हय अयुत सजाई । सुबरण मन पचास लदवाई ॥
द्विज प्रति देत भये यदुराजा । मरुत सरिस सब साजेसाजा ॥
दो० कञ्चन के बासन सकल, रहे नये नित खात ।
तिनकहँ तजि तजि तुष्टसब, भयेमुदितद्विजजात ॥
सो० लै लै अपनो भाग, देव दनुज निशिचर नभग ।
पूरि हृदय अनुराग, कपि गिरि तरु तीरथ गये ॥
सरितन्ह के सह सागर साता । पूजित भये भवन निजजाता ॥
जे जे तित जगतीपति आये । ते ते प्रमुदित धाम सिधाये ॥
नन्दादिक सिगरे गोपाला । धाम गये भरि हरष बिशाला ॥
सब कहँ दान मान परिधाना । पूजेउ उग्रसेन मतिमाना ॥
यह हम मखकर चरित बखाना । तितनहिंकाजितश्रीभगवाना ॥
जो यह कथा कथइ सुनि गुनई । चारि पदारथ लै दुख धुनई ॥
प्रभु पुराण हरि पूर्ण परेशा । पूज्य परम परब्रह्म सुभेशा ॥
तिनकी कथा सुनहिं जे गावहिं । तिनके कुल तीरथ कहवावहिं ॥
दो० चारव्यूह अवतार धरि, मख को करिकै नाम ।
भार हरतभे भूमि को, तिन कहँ कोटि प्रणाम ॥

यदुमण्डन खण्डन कलुष, दण्डन असुर घमण्ड।
सुमिरि प्रात मार्तण्ड द्युति, भयो बिश्वजित खण्ड॥
कृष्ण बिना औरहि भजै, सो नर पशू समान।
तजि गङ्गा कूपहि खँदै, तट बैठो अज्ञान॥
सो० कृष्ण कृष्ण करि जाप, पूरण कीन्हों खण्डकहँ।
तिनको सकल प्रताप, नाहिंमम बुधिबलयासुमहँ॥
इति श्रीभाषाप्रकाशेकृष्णप्रियेगिरिधरदासविरचितेप्रेमपथरचिते
गर्गसंहितायांसप्तमंविश्वजितखण्डंसमाप्तंशुभमस्तु॥ ७॥

अथ बलदेवखण्डप्रारम्भः॥

सो० खलहि चण्ड मार्तण्ड, जनकमलहि मार्तण्डसे।
कहत हलायुध खण्ड, होत पापगन खण्डसे॥
दो० श्यामगात गुरु भ्रातसह, देवत्रात अवदात।
कृपा करहु करुणाकरन, दीनबन्धु तुम ख्यात॥

कह नृप हम हरिकर यश सुनेऊ। तुम्हरी कृपा भलीबिधि गुनेऊ॥
सुधा समान सुयश यदुबरको। अतिरुचिकरदुखदरअघहरको॥
षोड़श सहस नारि हरिकेरी। दश दशसुत जेहि भाग्य बड़ेरी॥
मोहिं अहै संदेह अथोरा। बलहिंनभे किमि एकहु छोरा॥
कहहु जाइ जिमि यह संदेहू। मुनि भाषा तुम सुनहु बिदेहू॥
हे नृप सुनहु कथा हलधरकी। पापदरन आनँदआकर की॥
इक दिन प्राकाबिपाक मुनीशा। गये हस्तिनापुर की दीशा॥
शिष्य सुयोधन भवन सिधाये। तिनहिं सोऊ सुपूजि बैठाये॥
दो० करि प्रदक्षिणा कुरुमुकुट, दोउ करजोरि बिदेह।
बुधि बलते पूछत भयो, निज मनको संदेह॥

संकर्षण काके अवतारा। केहिहित तन धरणी में धारा॥
जिन ममपुर कहँ हलते खींचा। जिनके बलते सब बल नीचा॥
गदायुद्ध महँ मम गुरु अहहीं। कहहु कथा मुनिसो मुनिकहहीं॥
कुरु युवराज सुनौ चितलाई। जामें अघको ओघ नशाई॥
द्वापर अन्त भूमि भरिभारा। गऊरूप धरि बिधिहि पुकारा॥
बिधि हर सहित धरत्रि लिवाये। बिष्णु पास बैकुण्ठ सिधाये॥
तिनके कहे सकल सुर भाये। तब ब्रह्माण्ड के बाहर आये॥
बामन बिबर ब्रह्मद्रवधारा। बहु अण्डन के थोक निहारा॥

दो० लख्यो जाइ बिरजा नदी, चलिकै ताके पार।
कोटिन रवि समतेज लखि, कीन्ही सबै जुहार॥

शेषहि लख्यो सकल सुखसदना। सितबपु उन्नतदशशतवदना॥
करी कुण्डली सहित उमङ्गा। गऊलोक गिरिके उच्छङ्गा॥
बृन्दारण्य यमुन गोबर्धन। कुञ्ज निकुञ्ज लख्यो सुखवर्धन॥
गोपी गोकुल संयुत लोका। करि प्रणाम प्रबिशे सुरथोका॥
सखी बचन प्रेरित ते जाई। देख्यो राधा सहित कन्हाई॥
पीत बसन शिरमुकुट बिराजत। छबिलखि कोटिकंदरप लाजत॥
बरभूषण भूषित करुणाकर। अलकभलकसबखलकमनोहर॥
कर अरबिन्द माहिं अरबिन्दा। कोटिन अण्ड ईश गोबिन्दा॥

दो० देवनबहु अस्तुति करी, और कह्यो निजहाल।
तब हरि आवन प्रणकियो, दीनबन्धु गोपाल॥

पुनि भे शेषहि कहत तहाहीं। तुम बसुदेव देवकी माहीं॥
जाइ बहुरि रोहिणि महँ जाई। नन्दसदन जन्महि हरषाई॥
तब हम निज लेहैं अवतारा। सुनि सो बचन सर्प सरदारा॥
आगुनि चारि सभा महँ आई। चहै चलन की करन उपाई॥

सुनत सिद्ध चारण गन्धर्बा। दुखित भये तेहि पर्बहि सर्बा॥
सुमति सूतरथ साज सुल्यायो। तालध्वज बिशाल फहरायो॥
अरिमददलन मुसल हद गाढ़े। भे निजरूपहि धरि धरि ठाढ़े॥
परब्रह्ममय मूरति माना। सोउ सँग चाहो करनपयाना॥

दो० सुनहु भूप तेहिक्षण तहां, भये आवते शेष।
जौन रमा बैकुण्ठ के, सहस बदन बरबेष॥

पाणिनि पातञ्जलि सँग जिनके। चारण चामर फेरहिं तिनके॥
अहिन समेत पराक्रम पीना। भे संकर्षण बपु महँ लीना॥
पुनि आये बैकुण्ठ अजितते। मण्डित भूत प्रेत अगणितते॥
अजइकपाद अहिर्बुधनादी। सेवहिं सहसमुखहि मरयादी॥
सोउ करि अस्तुति आनँदछाये। संकर्षण तन बीच समाये॥
श्वेतद्वीप के दशशतबदना। आये श्वेतबरण सुखसदना॥
अम्बर नील प्रताप सुरङ्गा। कुमुद कुमुद अक्षादिक सङ्गा॥
परम तेजधर परम प्रबीना। भये अनन्त अङ्ग महँ लीना॥

दो० बहुरि इलाबृतखण्ड ते, आये दश शत नाथ।
करत प्रकाश दिनेश सम, नाम भवानी नाथ॥

अर्बुद सहस नारि संग सोहैं। तेसबमुख निजपति को जोहैं॥
कुण्डल कीट हार पटनीला। करत प्रकाश श्वेततन मीला॥
सोउ तिनके तन बीच समाये। तब धरणीधर फणिबर आये॥
लोक पताल महा द्युतिधारी। हरि तामसी कला बलभारी॥
सहसबदन अति उन्नत सोहै। मुकुटसमूह देखि शशि मोहै॥
कुण्डल एक सोह अधिकाई। संगदेव मुनिके समुदाई॥
ब्यास पराशर सनक सनन्दन। नारद सनतकुमार सनातन॥
सांख्यायन पुलस्त्य बागीशा। मैत्रेयादिक और मनीशा॥

दो० महाशंख बासुकी कह, कम्बलाश्व धृतराष्ट्र।
कालो तक्षक धनंजय, श्वेतादिक अतिराष्ट्र॥
सर्पसमूह चँवर शिरकरहीं। अस्तुतिवर बहुविधि विस्तरहीं॥
नागसुता बन्दित सँगसर्बा। सँग सोहहिं किन्नर गन्धर्बा॥
सिद्धादिक गावहिं भरिरङ्गा। त्रिपुर हाटकेश्वर बलसङ्गा॥
कालकेय कलिकवच निवाता। इनहिं आदि सँग दानवजाता॥
रुद्र एकादश अरु सुरसुरभी। तिनके सँग यदुनाथ अउरभी॥
बेणु मृदङ्ग ताल डफ बीना। बजहिं सजहिं त्रियरागनबीना॥
जाके इकशिर सब महि कैसे। कुञ्जरशीश धूरिकन जैसे॥
भूधर परम तेज छबि छाये। संकर्षणके मध्य समाये॥
दो० चकित सबनलखि शेष तब, शिष्यन भाष्यो बात।
महिमण्डल महँ होहु तुम, क्षत्री यादवजात॥
हे सारथी सुमति मतिमाना। बसहु शोचतजि इतहि सुजाना॥
जब हम तुमहिं बोलावैं रणमें। तुम तबतित आयहु सो क्षणमें॥
हे तालाक मुसल हलबरमा। तुमहुँ बसहु इत अद्भुतकरमा॥
सुमिरन समय तुमहुँ इमि कीजो। म्वहिं सुमिरत सानन्दरहीजो॥
हे पाणिनि व्यासादिक मुनिबर। बासुकिआदिकसकलजहरधर॥
बरुण कामगो सह मरयादी। हे दानव निवात कवचादी॥
हम यदुबंश लेब अवतारा। तहँ तुम दरशन करेहु हमारा॥
मनमहँ कछु गलानिजनिआनेहु। औरहुअधिकदेखिसुखमानेहु॥
दो० सो सुनि ते सब जातभे, करि प्रणाम निजधाम।
नागसुतागण ते तबै, बोले अहिपति राम॥
तुम सब ब्रजमण्डल महँ जाई। प्रकट होहु गोपी समुदाई॥
कबहुँ यमुनतट सबनसमेता। करिहौं रासगूढ़ यह हेता॥

कलि निवातकवचन कर राजा। सो प्रणाम करिहै नरराजा॥
दै पुष्पावलि दृगभरि बारी। बोले बचन बिचार बिचारी॥
जित तुम तित हम रहे सदाई। अतिबियोग दुख सह्यो न जाई॥
आज्ञा करहु सुगुनि मनमाहीं। जहँ तुम रहहु तहँइ हम जाहीं॥
सुनिकै चारु बचन नरपाला। कहत कली ते हली दयाला॥
भरतखण्ड जनमहु गुनि मनमैं। कौरवपति धृतराष्ट्रसदन मैं॥
दो० तहां तुम्हारो होयगो, दुर्योधन यह नाम।
गदायुद्ध महँ शिष्य मम, ह्वैहौ बिक्रमधाम॥
सोइ भयो तुम्हरो अवतारा। हरिमाया बश ज्ञान न धारा॥
तेहि क्षण तहां शेषकी नारी। नाम नागलक्ष्मी अतिप्यारी॥
पतिहि जात गुनि अतिदुखधारी। कोटि चन्द्रसम मुख छबिभारी॥
बैठि महारथ सखियन साथा। गई सभा महँ जित अहिनाथा॥
पास बैठि निज हाथन जोरी। बोली बचन निरखि मुखओरी॥
जो तुम म्वहिं तजि जैहौ नाथा। तौ नहिं प्राण करहिं तनसाथा॥
शेष कह्यो तब बचन सुनाई। रेवति के बिग्रह महँ जाई॥
लीन होइ नर पुर म्वहिं भजहू। हे प्रिय प्रिया शोच सब तजहू॥
दो० दुःखनिवारण बिश्वके, कारण धारण धर्नि।
बालनगतिवारी त्रिया, तिनते कहत बिवर्नि॥
कासु सुता कित रेवति नामा। सुनि बोले अनन्त गुणधामा॥
कृष्ण कहे हम कश्यप भौना। शेष भये कद्रू के छौना॥
महिमण्डल अखण्ड शिरमण्ड्यो। गत श्रम होइ सकल दुखखण्ड्यो॥
तब मनुचाक्षुष चक्षुष बेटा। सप्तद्वीप धृतराज अखेटा॥
परम प्रचण्ड जासु भुजदण्डा। मण्डित मण्डल भूमिअखण्डा॥
सिद्युम्नादि भये सुत ताही। भई सुता तिनके मखमाहीं॥

ज्योतिष्मती नाम गुणरासी। पितुकहँ ब्याहयोग सो भासी ॥
इकदिन पूछ्यो कन्यहि ऐसो। तुम अपनो पति चाहत कैसो ॥
दो० तब कन्या भाषत भई, जो सबमहँ बलवान।
तेहि मैं अपनो पतिचहति, सुनिनृपकियअनुमान ॥
इन्द्रहि द्रुत बोलाइ बैठाई। पूछ्यो मनु उर हरष बढ़ाई ॥
तुमते पर कोउ है बलवाना। सत्य कहो निर्जरशिरत्राना ॥
सत्य समान धर्म नहिं कोई। पाप असत्य सरिस नहिं होई ॥
सुनि बिचार करिकै सुरनायक। बोलत भये बचन वर लायक ॥
मैं न बली हमते बड़ बायू। जाबश सकल सकलकी आयू ॥
इमि तहँ गये शक्र हरषाई। तब मनु पूछा वायु बुलाई ॥
तुमते अधिक कोउ जग अहई। सुनत बचन वर मारुत कहई ॥
गिरि हमते अधिकी सब अहहीं। मोते नहिं चलगति कहँ लहहीं॥
दो० मनु तब भाष्यो गिरिनते, तुमते कोउ बलवान।
सुनि ते तब भाषत भये, सुनु कौरव शिरत्रान ॥
भूमण्डल सबते बड़ अहहीं। जापर शैल समूहन रहहीं ॥
तिनहिं बिदाकरि मनु महिराई। पूछत भे भूखण्ड बुलाई ॥
तुमते कौन अहै बलधारी। सुनि बोलेउ भूखण्ड बिचारी ॥
हमते बली शेष भगवाना। सदानन्द गुणसिन्धु महाना ॥
बासुदेव सो आदि अनन्ता। सहसबदन जेहि वेद भनन्ता ॥
शुक्लप्रकाश मनहु कैलासा। कमलनैन रबि कोटिन भासा ॥
फणसमूह मणि मण्डित भारे। घनसमूह नखतन तजिधारे ॥
शक्तिस्वरूप भक्तिभयहारी। अच्युत आदिदेव हलधारी ॥
दो० रजसम सातहु द्वीप सह, महि जाके इकभोग।
जासु भजनकरि लहहिं नहिं, नरकुरोग भवभोग ॥

सबके कारण द्विरद बिदारन। बल कृपाल अहिबर महिधारन॥
जगतमूल फणिगण के ईशा। तिनते बड़ कोउहै न महीशा॥
तब भूखण्ड गयो चलि प्यारी। पितु आज्ञा लै सोई नारी॥
मम हित बिन्ध्याचल पै जाई। लाख बरस तप किय अधिकाई॥
ग्रीष्म पञ्च हुतभुक कहँ तापै। पावस धार शीश निज थापै॥
निशिमहिशैन शीत जल ठाढ़ी। जलके माहिं डुबाये डाढ़ी॥
ताकर सुन्दर रूप निहारी। मोहित भये सकल सुरभारी॥
ताहि लोभावन हित सब आये। जे अति जगतप्रमाणिक गाये॥

दो० क्रतु यमबरुण कुबेर शिखि, रबि शशि कुज बागीश।
बुध उशनासन तिन्हन महँ, प्रथम कहत सुरईश॥

हे सुन्दरी तपत तप काहे। हम सब करि हैं जो तोहिं चाहे॥
योबन गये न योबन आवैं। सो सुनिकै सो अबला गावैं॥
सहस बदन अनन्त भगवाना। मैं तिनकहँ पति चहति अपाना॥
सो सुनि हँसे अमर अमरखलै। बोल्यो इन्द्र मोहिं किनरखलै॥
बृथा सांप कहँ चाहत स्वामी। मैं नाकेश इन्द्र बड़नामी॥
नागबाह भजु नागहि त्यागी। तब यम कहत काममतिपागी॥
मैं जगदण्डत उत्तम नेता। मोहिंबर करहु जगत बरजेता॥
धनद कह्यो मैं धनकर स्वामी। राजराज धनदायक नामी॥

दो० मोकहँ अपनो पति करहु, सब गुन धन आधीन।
तब बोले हुतबाह यह, मोहिं किन बरत प्रबीन॥

देवन को मुख मैं मखनायक। बड़ो सुरन महँ सबते लायक॥
बरुण कह्यो मोहिं ब्याहहु चाही। सातासिन्धुकी बैभव जाही॥
लोकपाल पाशी जग जाने। सो सुनि सबिता कहत सयाने॥
जगतचक्षु मैं चाक्षुष कन्या। तमनाशकबिवाहुमोहिं धन्या॥

सोम कह्यो मोहिं बरहु सचाहा। नखतनाहगुनि ओषधिनाहा॥
द्विजपति तियबल्लभ निशिकारी। सुनिकुजकहत सुबात विचारी॥
महि मम मातु जनक बाराहा। जगमङ्गल मङ्गल कुलवाहा॥
बुधभे कहत सुबुध मैं लायक। मोहिं बरकर तरुनी सुखदायक॥

दो० देवगुरू बोलत भये, देवगुरू मैं नारि।
धिषना अरु बागीशबरु, मोहिं किनवरत विचारि॥

शुक्र कह्यो तब मैं भृगुबंशी। दानवगुरु कवि दुख विध्वंशी॥
बिद्यानिधि आनँद के राशी। बरहु मोहिं अहिआशानाशी॥
तबै शनिश्चर बचन बखाना। नाहिंजगकोउममसमबलवाना॥
प्रबल सुरन पर गहि गहि थूरौं। लखि तेहि नाशौं लखि तेहि पूरौं॥
इमि कहि कहि सब रहे चुपाई। ज्योतिष्मतीअतिहि रिसिआई॥
फरकत अधर अरुण दृग दोऊ। भृकुटी धनुसम चञ्चल सोऊ॥
करि मम ध्यान क्रोधकहँ कीना। तीनलोक माधिअतिदुख भीना॥
महिमण्डल समेत बिधि लोका। कम्पतभयो साहितगुर थोका॥

दो० भयो भयंकर भय सबन, तब ते देवडेराय।
थरथरात चिन्ता मगन, गहे नारि के पाय॥

सो० सब कछु गहि सन्तोष, दोष जानि अतिसबनको।
पृथक पृथक सहरोष, शाप देत शनिआदिकहँ॥

स० छलते खलता भरि बातकहै सबते बड़वा न बड़ो बनिरे। अबहीं कृशरूप निरेख न नीच सुपंगुल होसि सुखै हनिरे॥ मतिमन्द सुनामहु मन्द परै नितर्तैलहि मासहि खागनिरे। सनिसंकट दोषनि पूरि सदा रहु मोसनि ढीठ भयो शनिरे॥ हे दितिनन्दनके गुरु मूरख आँख बिहीन रहौ तुम काना। हे धिषना तुम नारि कहावह जो उर कीन्ह महाअभिमाना॥ हे बुध बार तुम्हारो रहै जग

छूंछ सदा बिन पूंछ सुजाना । हे कुज आनन बानर सो तव होइ जो आपहिं सुन्दर भाना ॥ हे शशि तोकहँ रोग छई अब होइ सदा यह शाप हमारो । दाँत बिना तुम होहु सदा दिननाह सवाद मुखै नहिं धारो ॥ पानीपति लायक रूपबने सो होइ जलंधर रोग अपारो । हे शिखि भक्ष अभक्षहु जो लखि मोहिंकहा तुम पापबिचारो ॥

दो० धनपति तुम्हरे पुष्पकहि, हरिहैं निशिचर नीच ।
यम तुमहूं मनुजादते, भगिहौ रनके बीच ॥

स० मद तोहिं भयो सुरराज महा, खल निन्दाकरै धरनीधरकी । कबहूं कोउ भूप महादिवि मैं, तवराज करै छबि भाकरकी ॥ शचि पै अति चाह करैगो सोई, तुम भागे रहोव त्रिया उरकी । रजनीचर जीतिकै कैदकरै, सब दौलत आइहरै घरकी ॥

दो० यहि बिधि दीन्हो शाप तब, सब कहँ कठिन कराल।
तब ताते बोलत भये, क्रोध भरे सुरपाल ॥

रे तैं दीन्ह बृथा मोहिं शापा । थोरेहि बात क्रोध अतिब्यापा ॥
ताते कबहुं न सुत तोहिं होई । नहिं यह जन्म मिलै पति सोई॥
इमि कहिकै सब सुरन समेता । नाक गये चलि नाकनिकेता ॥
मुनि सो कीन्ह तहां तप भारी । तब तन ताप बिरञ्चि बिचारी ॥
लै मरीचि आदिक कहँ भाये । चढ़ि सुमराल चाल चलि आये ॥
बोले सुन्दर बचन बिचारी । हे शिशु चक्षुकुमार कुमारी ॥
तुम तप कीन्हो प्रीति अनन्या । निजइच्छित बर मांगहु कन्या ॥
सो सुनि कढ़ि जलते पद बन्दी । बोली द्वै कर जोरि अनन्दी ॥

दो० हे प्रभु अहिपति होहिं पति, दीजै यह बरदान ।
सुनि ब्रह्मा भाषत भये, देवन के शिरत्रान ॥

बैवस्वत मनु बन्दत माहीं । मिलिहैं तुमकहँ मिथ्या नाहीं ॥

बीस आठ चौकड़ी बिताई। मिलिहै जो दुर्लभ अधिकाई॥
तबसो झिझिकि कह्योखिजलाई। सब तव हाथ अहै सुरराई॥
आशु मिलै सो करहु उपाई। नतरु शाप देहौं रिसिपाई॥
सुनि बिधि मनकर तासु बिचारा। दै धीरज यह बचन उचारा॥
तुम अनर्तपति रैवत धामा। ह्वैहौ सुतारूप अभिरामा॥
तहँ एकसैबारह युग जैहैं। घरी सरिस विचार महँ ऐहैं॥
सो कछु होइ बिकल्पित बाता। इमि कहिगे निजसदनबिधाता॥

दो० तब सो रैवत भूप गृह, भई रेवती नाम।
रूप शील योबन जमा, ब्याह योग अभिराम॥

पूछेउ रैवत सुता बोलाई। कस पति चाहति करउँ उपाई॥
तब सो कहति भई पूरब सम। सबते बली जौन सो पति मम॥
तब रैवत त्रिय सुता समेता। रथचढ़ि चलत भये जगजेता॥
पूछन हित बिधिमन्दिर आये। तिनकी सभा अजहुते छाये॥
अट्ठाइस चौकड़ी बितानी। घरी समान सबन करिजानी॥
तुम अब तामहँ निवसहु जाई। होइहि ब्याह काल कछु पाई॥
आहिलक्ष्मी शिरधरि पतिबानी। जाइ रेवती मध्य समानी॥
तब संकर्षण भार उतारन। निजअवतारकीन्हमहिधारन॥

दो० यह भाषी हलधर कथा, पुण्य बीज को खेत।
अघसमूह को परशु सम, आशु नाशु करि देत॥

बोले दुर्योधन हरषाई। मैं अति धन्य अहौं मुनिराई॥
संकर्षण कर भक्त अहौं मैं। तव प्रभाव यह मतिहि गहौं मैं॥
कहिय कृष्ण बल किमि अवतारे। बहुरि गुप्त किमि ब्रजहि पधारे॥
मोहिं कथा सब कहहु अमोले। प्रागबिपाक सुनत तब बोले॥
देवकसुता दीन्ह बसुदेवहि। कीन्ह बिदा दै दान अभेवहि॥

कंस बहिन पहुँचावन काजा। चलेउसुरथचढ़ि तेहिक्षणराजा॥
व्योमबानि तब भाषा हेतू। याके अष्टम गर्भ मरैतू॥
सो सुनि कंस निकार कृपाना। लेन चह्यो भगिनी कर प्राना॥
दो० शौरि बोध कीन्हो तबै, खलको अति बुधिमान।
कंस कैद करिकै दुहुँन, धर्यो लेन संतान॥
प्रथम पुत्र जब दीन्हो शौरी। हत्यो न ताहि दया कछु दौरी॥
नारद कह्यो अङ्क गति बामा। तिमिपुत्रन जानहु बलधामा॥
तब बोलाइ सो शिशुकहँ मारो। इमि षट्सुत अप्रान करिडारो॥
यादवगण तब भये पराये। सप्तम गर्भ शेष चलि आये॥
हरि आज्ञाते लै तब माया। जाइ गर्भ रोहिणि महँ नाया॥
नन्दभवन बसुदेव पियारी। निबसे जाय तहां हलधारी॥
गायब गर्भ भयो देवकी को। करतभये मथुराजन साकिको॥
भादव पञ्च दिवस बुधबारा। शुक्र उच्च गृह पांच बिचारा॥
दो० तुला लगन मध्याह्न मैं, बरसहिं सुमनस फूल।
प्रकटे बल जयधुनि दिशन, बाढ़्यो हरष अतूल॥
नन्द कियो सब जातककरमा। गऊ नियुत दीन्हीभरि परमा॥
बिबिध भांति बजवायउ बाजा। गोपन पहिरायउ सह साजा॥
देवकि अष्टम गर्भ मुरारी। प्रकटे प्रभु सन्तन हितकारी॥
हरि आज्ञा ते शौरिकुमारहि। लै द्रुत गये यमुनके पारहि॥
तहां सुता यशुमति के जाई। धरि सुत ताकहँ लीन्ह उठाई॥
आये भवन बन्द भे तारे। प्रात सुता तब शब्द उचारे॥
आय कंस लै सुता रिसायो। पटकन हेत उठाय फिरायो॥
तुरत तमकि देवी है सोई। नभमहँतड़ितसरिस द्युति होई॥
दो० बिद्याधर चारन समानि, सिद्धदेव गन्धर्व।

बन्दित सो बोली गरजि, गर्ब करत किमि खर्ब ॥
रे खल भयो काल कहुँ तोरा। इमिकहिगई बिन्ध्यागिरि ओरा॥
कंस भगिनि मन्दिर तब आयो। तिनकहँ बहु मनाय समुझायो॥
निज गृह जाइ सलाह बिचारो। गोद्विजदेव शिशुन कहँ मारो॥
सो सुनि ते फिरि मारन लागे। कामरूप अघ औगुण पागे॥
नन्द कीन्ह सुतउत्सव भारी। शिशु स्वरूप कहँ शेष मुरारी॥
लागे अलख करन ब्रजलीला। शिशु सम सुन्दररूप रसीला॥
कहत भये तब भूप सुयोधन। बलहरिजन्म भूमिसुख सोधन॥
कीन्ह चरित जो आनँद अति मैं। गोकुल मथुरा द्वारावति मैं॥

दो० कहहु सकल संक्षेपते, मोकहँ प्राकविपाक।
सो सुनि मुनिबोलतभये, सुनहु श्यामकरसाक॥

प्रथम पूतना कहँ बधिडारो। शकट तृणावर्तहि पुनिमारो॥
बिश्वरूप दरशन दधिचोरन। यमलार्जुन दरखत करतोरन॥
दुर्बासा मायाकर दरशन। गर्गकथितसुनाम अघमरशन॥
बहुरि राधिका कृष्ण बिवाहा। पुनि जिमिरासकीन्हब्रजनाहा॥
पुनि ब्रह्माण्ड दिखायो जौना। कही कथा गोकुलकी तौना॥
जिमि बृन्दाबन आप पधारे। बत्सा बक अघ असुरहि मारे॥
गोचारत जिमि बृन्दाबन में। गये सबनसह तालबिपिन में॥
धेनुक असुर शीतलाबाहन। चल्यो घोर गर्जत रणचाहन॥

दो० आइलात मारतभयो, बलगहि ताको पाँव।
पटकि प्राण हरते भये, मुदित किये सब गाँव॥

कालिदमन दावानल पाना। पुनि राधाकर प्रेम बखाना॥
सामल सखी चरित सब भाखा। दान मान कर रस जिमिचाखा॥
रास शंखचूड़हि पुनि मारा। शिवआसुरिजिमित्रियबपुधारा॥

गोपन पूज्यो शैल ससाजा । तब रिसाइ धनु लै सुरराजा ॥
ब्रज बोरन मनमाहिं बिचारा । गरजि गरजि बरसेहु जलधारा ॥
गोबर्धन तब कान्ह उठायो । दिवस सात जल बरसि सिरायो ॥
तब लै गऊ सभय सुरराई । आयकरी बिनती अधिकाई ॥
करि अभिषेक टेक पदमाथा । सादर धाम गयो सुरनाथा ॥

दो० अद्भुतगिरि धारणनिरखि, बिस्मित सब गोपाल ।
मोतीतरु प्रकटाइ कै, दरशायो नदलाल ॥

क० श्रुतिरूपा ऋषिरूपा यज्ञसीता रमासखी, लोकालोकाचलवारी तीनब्रतधारी हैं । कौशिला पुलिन्दी श्वेतदीपवारी मैथिला सु, ऊरध बैकुण्ठवारी भूमिगोपी प्यारी हैं ॥ अवधनिवासिनी अजित पदवारी दिव्या, बिष्णुपुरवारी औअदिव्या जलधारी हैं । अप्सरापुरन्ध्रीलतागोपी और बरहिष्मती, अहिकन्या सुतलानिवासिनी बिचारी हैं ॥

दो० इनसबतें केशव कह्यो, प्रमुदित रासबिलास ।
भयो मनोरथ सबनकर, उर आनन्द प्रकास ॥

बट भाण्डीर निकट गोचारत । खेलतरहे सुजीतत हारत ॥
असुर प्रलम्ब तहां बनि ग्वाला । बलहि पीठ धरि चल्यो कराला ॥
मथुरादिशा जात बलजाना । आंखखोलि निज मूकहि ताना ॥
मारतही महि पर्यो प्रलम्बा । प्राण बिना बलवान प्रलम्बा ॥
इकदिन ग्रीषममहँ भगवाना । मुञ्जाटवी गये मतिमाना ॥
प्रकटो तहँ दावानल भारी । शिशुन पुकार्यो त्राहि मुरारी ॥
कृष्ण सबनकर नैन मुँदाई । कीन्ह कृशानु पान हरषाई ॥
पुनि भतगाँव गये भगवाना । द्विजपत्नी कर भोजन ठाना ॥

दो० बरुणदूत गहि नन्दकहँ, लैगो तिनहिं छोड़ाइ ।

निज थल दरशावतभये, गोपन हरि हरषाइ ॥
बिपिन अम्बिका महँ इकवारा। निकस्यो सर्प सुदर्शन कारा ॥
सो नँदराइ चरण गहिलीनो। तेहि वधि कृष्ण परमपद दीनो ॥
आंख बुझउवल महँ शिशुरूपा। व्योमासुर छल कीन्हिसि भूपा ॥
कन्दर अन्धर ग्वालन धरेऊ। हरिकरते मारेउ सो तरेऊ ॥
असुर अरिष्ट बैसवपु आयो। ताहू कहँ हरि मारि गिरायो ॥
नारद कहे कंस रिसिआई। शौरिवधन चह खड्ग उठाई ॥
नारद कहे न किये संहारा। केशी पठयो तेहि हरिमारा ॥
इमि ब्रज चरित किये ब्रजराई। ताकहँ शेषहु सकत न गाई ॥

दो० मथुराकेर चरित्र अब, सुनहु भूपनरशूर।
कंस पठायो कृष्णहित, ब्रजमण्डल अक्रूर ॥

सो तित जाइ कह्यो यह बानी। नन्दचले गोपनसह ज्ञानी ॥
हरिहि जात लखि रोईं बाला। तिनहिं बुझायो श्रीनँदलाला ॥
हरिबल सुफलक सुत रथ चढ़िकै। उतरे यमुना के तट बढ़िकै ॥
अक्रूरहि निज धाम देखायो। मथुरा माहँ प्रात रथ आयो ॥
उपबन बसे नन्द के सङ्गा। लखन चले पुरसहित उमङ्गा ॥
पुरनारिन ललचावत नाना। शिशुदल सोहैं संग सुजाना ॥
तहां रजक राजाकर देखा। बिबिधवरण के बसन परेखा ॥
कीन अनादर हरि तब मारा। लीनो बसन कीन सुखभारा ॥

दो० पुनिलायक गुनि बायकहिं, यदुनायक भगवान।
सारूपहि देतहि भये, सुखदायक मतिमान ॥

माली ते मिलि पूजा देखी। ताहिदियो हरिरूप बिशेखी ॥
मिलिके महाजनन तेहिकाला। धनुस्थल महँ मध्य कृपाला ॥
सहस पुरुष मण्डित सुबिशाला। ऋतुधनुसमलाखो अपिताला ॥

अष्टधातु लख भार बनायो। शेष कुण्डली सम छबि छायो॥
हरिधनु परशुराम को दीनो। सबन लखत उठाय सो लीनो॥
सूखदण्ड जिमि दीरघ शुण्डा। खण्ड करै बलचण्ड बितुण्डा॥
तिमि भुजदण्ड अखण्ड उठाई। तीन टूक करि दीन्हो नाई॥
दिग्गज डगे भूमि थहराई। ब्रह्मण्डे हलचल अधिकाई॥

दो० चापरक्षकन मारिकै, तादिन डेरा आय।
प्रात गये महिरङ्गमहँ, हरि हलधर दोउ भाय॥

द्विरद कुबलयापीड़हि मार्‌यो। इक इक दन्त कन्धपै धार्‌यो॥
रङ्गभूमि प्रकटे नटबेखा। जेहि जसभाव सो तस हरिदेखा॥
शल चाणूर कुष्टि मुष्टीका। बध्यो मल्ल तोशल यदुटीका॥
दोउ भाई जब सबन गिरायो। कंस तबै कटुबचन सुनायो॥
तुरत कूदि केहरी समाना। गये मञ्चपर कृपानिधाना॥
मृत्युसरिसलखि उठि गहि गंसा। असि अरु चर्म गहे कर कंसा॥
तबहरि गह्यो कंस खलताजहि। दैत्यशिरोमणि मानवराजहि॥
तब सो निकरिगयो हरि करते। जिमि अहि निकरै मुखखरबरते॥

दो० कंस कंससूदन उभय, बिलसे सिंह समान।
यदुपतिबर रद द्विरदको, यदुपति चर्म कृपान॥

चल्यो कंस अम्बर दिशि धाई। झपटि ताहि पटक्यो यदुराई॥
पुनि घुमाइकै कृपानिधाना। डार्‌यो मञ्चोपरि नरत्राना॥
टूटत भयो मञ्च को पावा। दानव उठा चोट नहिं पावा॥
तब हरि तासु केश कर गहिकै। मामा मारनकी बिधि चहिकै॥
धरणि गिराइ दियो भरि जोरा। ऊपर कूदे नन्दकिशोरा॥
बहुरि अनन्त आप गिरिपरे। तेहिक्षण कंस धरापति मरे॥
महि कम्पी सब दिग्गज डोले। हाहाशब्द भूपगण बोले॥

कच गहि कृष्ण फिरायो भूपर । देव सुमन बरषे हरि ऊपर ॥

दो० सारूपहि देते भये, दीनबन्धु भगवान ।
बैरभावते भृङ्गसम, भयो कंस कल्यान ॥

कंस मरो लखि ताके भाई । चलतभये असि चर्म उठाई ॥
मुद्गर लै बलि तिनकहँ मारा । भयो दिशनमहँ जयजयकारा ॥
कंसराय की क्रिया कराई । मातुलत्रियकी सुनो रोवाई ॥
मात पिता के बन्ध छोड़ाये । यादवगणकहँ बोलि बसाये ॥
नन्दहि बिदा कीन्ह गोपाला । उग्रसेनकहँ करि नरपाला ॥
करि उपवीतहि बिद्याहेतू । गे सन्दीपन विप्रनिकेतू ॥
देन दक्षिणा सागर जाई । असुरमारि तित दीन्हो नाई ॥
शंखहि लै यममन्दिर आये । द्विजसुत लै दीन्हो मनभाये ॥

दो० ब्रजमहँ भेज्यो ऊधवहि, सो तित करि संवाद ।
जाइ कह्यो श्रीकृष्णसों, इतको अतिहि बिषाद ॥

तब प्रभु आयगये ब्रजमाहीं । लीला कीन्हो विविध तहांहीं ॥
ऋषिउधार करि मिलि गोपनते । आये मधुपुर बृन्दावनते ॥
इत बलदेव कोलअरि मारो । जो रणमहँ अतिप्रबल गरारो ॥
इमि बलदेव कृष्ण मधुबन में । कोटिनचरितकिये यदुगन में ॥
कृष्णचरित संक्षेप बखाना । सुनहु द्वारकाकर गुणगाना ॥
जरासन्ध ते करी लड़ाई । दीन्हो सत्रह बार भगाई ॥
बहुरि द्वारकापुरी बनाई । निशिमहँ सबन तहां पहुँचाई ॥
नृपदृग ते जराइ यमनेशा । गिरिचढ़ि कीन्हो नगरप्रवेशा ॥

दो० ब्रह्मलोक ते आय तब, रैवत कन्या साथ ।
ब्याहि दियो बलदेव कहँ, गो तप हित नरनाथ ॥

रुक्मिणि कुण्डिनपुर ते हरी । निज बिवाह गृह कीन्हो हरी ॥

जाम्बवती भद्रा सतभामा। नाग्नजिती कालिन्दी नामा॥
बहुरि मित्रबिन्दा लक्ष्मना। हरि बिवाह कीन्हो आपना॥
षोड़श सहस एकशत नारी। कृष्ण बिवाहेउ भौमहि मारी॥
हार रुक्मिणि कहँ मनमथ जाये। सो प्रद्युम्न नाम कहवाये॥
तिनके भे अनिरुद्ध कुमारा। राजसूय यदुराज बिचारा॥
लै बीड़ा मनमथ दलसाजी। जीतन चले शक्रसम गाजी॥
जीतन गये कामदुघ नदपै। पुरी बसन्त मालती हदपै॥

दो० तहँ पतङ्ग गन्धर्बते, गदते भो रन घोर।
गदा धारि ललकारि कर, दुहुँन दिखायो जोर॥

सो० गन्धब गदा प्रहार, गद मूर्च्छित महिमें गिरे।
प्रकटे राम उदार, बध्यो रिपुन हल मुसलते॥

क० भागिगो पतङ्ग पुरमदलउतालअति, हरषे सकल यदुबल बलवन्तसे। बहुरौ लरनहेत करतभयो उपाय, मूरख बिचार्यो नहीं बीर श्रीअनन्तसे॥ हलते पकरि घींच लीन्हों है नगर सारो, डरे सब जैसे निशाचर हनुमन्तसे। ज्वररूपीपुरी सो बसत मालती बिशाल, भये कामपाल तहाँ मालतीबसन्तसे॥

दो० हाहाकार महा भयो, डरि लै भेट पतङ्ग।
दीन्ह आय बलदेव कहँ, बन्ध्यो सहज उमङ्ग॥

तैसेइ साम्ब छोड़ावन आये। हलते तुमरो नगर ढहाये॥
टेढ़ो लगत आजलौं ज्ञानी। तिमि खींच्यो यमुनाकर पानी॥
और सुनहु चरित्र यक भारी। भौमसखा सुद्विबिद बनचारी॥
प्रथम रह्यो सुग्रीव सचिव सो। नारद प्रेरित रिपु बनि जिवसो॥
रैवतगिरि आयो बलभारा। तहाँ लख्यो बलदेव बिहारा॥
बैठेउ साठ सखा मृगशाखा। बलते अधम समर अभिलाखा॥

करि गर्जना दिखावै अङ्गा। कीन्हेसि परम रङ्गमें भङ्गा॥
तोरि तोरि डारै तरु डारी। नारिन देखि बजावै तारी॥

दो० बहुरि बारुणीकुम्भ लै, फोरि हँस्यो अज्ञान।
तब सकोप हल मुसल लै, उठे सुबल बलवान॥

बानर तब तरु शाल उखारी। बलके मस्तक हत्यो प्रचारी॥
तब बल ताहि मुसल ते गहिकै। मुसलहत्यो शिरमारतकहिकै॥
निकरि चली शोणित की धारा। कढ़ि हलते कीन्ही किलकारा॥
गहिगहिशाल सताल तमालन। लग्यो आशु हलधर पै डारन॥
तरुते रहित कियो बनभारी। शिला तजन लाग्यो बनचारी॥
बल हलमुसलसकल बलभलते। अरिकी वार बिफलाकियेचलते॥
तब सो कूदि मुष्टि निज बांधी। चलेउ सवेग चलै जिमि आंधी॥
मास्यो हृदय माहिं पुनि भागा। अँगुरी अधम बिरावन लागा॥

दो० इहि बिधान हरिभ्रात हरि, हरिसमान बलवान।
परम युद्ध करते भये, सत्य सुनहु नरत्रान॥

छ० नट्टसरिसमरकट्टसमरपरघट्टदट्टदट।
कटाकट्टकरिफट्टकीन्हदहपट्टअट्टअट॥
मारुमारुधररट्टभट्टवीकट्टहट्टहट।
संकर्षणनीकट्टठट्टदैतालचट्टचट॥
पूस्योहृदयकपट्टअतितरुनलपट्टनछट्टछट।
ठट्टतेजनट्टतकबहुँभट्टफ्फपट्टलपट्टपट॥

दो० गहि भुजते गिरि पटकिकै, मास्यो मूक अहीश।
बननसहित नगडगत भो, प्रभो प्राण बिनकीश॥
कहां दास यह रामको, कहां रामते नास।
पाय कुसंग नशाय जग, कोनहिं गिरिधर दास॥

सुनिहैं जब पाण्डवको झगरा । तब जैहैं तीरथ की डगरा ॥
द्विज पुरजन सब साज सुजाना । लखिहैं तीरथ मुख्य महाना ॥
करि द्वारका प्रदक्षिण भाये । सिद्धाश्रम परमासनहाये ॥
सरस्वती सैन्धव बनचर्ता । जाम्बुमाल उत्पल आवर्ता ॥

क० अर्बुदसुहेमवन्तसागरपृथूदकादि, बिन्दुसरत्रितकूपआत्रितसुदर्शना । उशनाआगिनिबायुसहितसौदासगुह, श्राद्धदेवआदि तीर्थपश्चिममैंपर्शना ॥ शम्भुशैलकरवीरमहायोगगननाथ, घननाथप्रागज्योतिरङ्गबल्लीदर्शना । सीतारामक्षेत्र चैत्रदेशऔ बसन्तटीका, औदशार्णभद्राकूर्मदेशदेखिहर्षना ॥ पुष्पमालाचित्रबनचन्द्रकान्तामनुशैल, चक्षुगङ्गाकामशालिनीसुकामबनमें । बेदक्षेत्रपृथुसीतातपोभूमिलीलावती, बेदपुरगान्धरबशक्रतीरथनमैं ॥ न्हाइ इमिउत्तरसुपूरब सिधायेपुनि, ब्रह्मतीर्थऔबिशालचक्रतीर्थघनमैं । सरस्वतीबद्रीबनहोयकैकेदारगङ्गा, यमुनाऔहरद्वारपुन्यकेसदनमैं॥

दो० कुरुक्षेत्र मथुरा बहुरि, पुष्कर संभव होय ।
बैष्णव तब आवत भये, अति उत्तम थल जोय ॥

कथाकथत तित सूत निहारा । शौनक सुनहिं सुप्रेम अपारा ॥
उठे सकल हलधरहि निहारी । आवो धन्य धन्य हलधारी ॥
ब्यास लोमहर्षण अभिमानी । उठे न ब्यासासन निजजानी ॥
तब बलदेव कोप बशमास्यो । करकुशतें शिर भूमधिडास्यो ॥
हाहाकार मुनिन अति कीन्हा । हत्या निज यदुनन्दन चीन्हा ॥
तीरथ करिहौं द्वादश मासा । प्रणकरि पुनियह कह्यो खुलासा॥
बल्वल बध करिहौं तेहि काला । सोई आय गरज्यो बिकराला ॥
बड़ी जीह कज्जलगिरि भेशा । अतिबआङ्ग लालरँग केशा ॥

दो० हलतें गहि मास्यो मुसल, बल बल्वलहि रिसाय ।

मस्यो असुर जय धुनिभई, कण्टक गयो नसाय ॥
करत रह्यो खल मखबिध्वंसा। भलो भयो नाश्यो मुनिगंसा ॥
सूतसुतहि गादी बैठाई। तीरथ करन गये बलराई ॥
सरयू कौशिकि मानसरोवर। गाण्डकिगौतमिअवधनगरवर ॥
नन्दिग्राम बर्हिष्मति गये। ब्रह्मावरतहि आवत भये ॥
दै प्रयागमहँ अयुत मतङ्गा। चित्रकूट गे सहित उमङ्गा ॥
बिन्ध्याचल काशी नदशोना। सर बिपास मैथिलपुरलोना ॥
गया होय गे गङ्गासागर। गो शतकोटिदियो गुणआगर ॥
दक्षिणगिरि महेन्द्र गोदावरि। पानी पम्पासरमरि सुखभरि ॥

दो० भीमरथी गुहक्षेत्र पुनि, श्रीगिरि व्यङ्कटजाय।
काञ्ची कावेरी निरखि, श्रीरङ्गहि गिरिनाय ॥

क० ऋषिभाद्रिसिन्धुसेतुकृतमालाताम्रपर्णी, मलयाचलहिजाइ कुबलाचलजायकै। दक्षिणसमुद्रफालगुनपञ्चअप्सराख्य, गऊकर्ण सूर्यारकतापीमेंनहायकै ॥ सरिसपयोष्णिनिरबिंध्यबनदण्डकाख्य, रेवामाहिष्मतीऔ अवन्तिकामेंआयकै । द्वारकामेंजैहैंदेखितुम्हरोसमरभूप, धरौंपताकासाकाअतिसरसाइकै ॥

दो० यह बलदेव चरित कह्यों, मङ्गल करन महीप।
अबका सुनिबे चहतहौ, कहौ तौन कुलदीप ॥

कहत सुयोधन हे मुनिनाथा। राम रमे किमि रमणिन साथा ॥
कालिन्दी तट कैसी लीला। कीन्हो करुणा करण सुशीला ॥
तब बोले मुनि प्रागबिपाका। इकदिनबलब्रजकीदिशिताका ॥
द्वारावतिते चढ़ि रथ आये। नन्दलखन आनँद उरछाये ॥
यशुदानन्द मिले मनभाये। पुनि गोपनकहँ कण्ठ लगाये ॥
सबन सहित करि प्रेमप्रकासा। ऋतुबसन्त तित कीन्ह निवासा ॥

तहँ की त्रिय बिहार चित दैकै। बलपञ्चाङ्ग गरबते लैकै॥
सिद्धमई तनद्युति बिस्तारी। तिनहिमुदितइकदिनहलधारी॥

दो० पूरण शशि यमुना निकट, शोभा कही न जाय।
रमन लगे संकटशमन, सब गोपी समुदाय॥

छं० समुदायअलिके भ्रमहिं जहँ अवलोकिसुमनसमूहको।
शीतलसमीर शरीर परसत मिलि सुमनके जूह को॥
यमुना पुलिन परमाभरी शोभा अनूप निकुञ्जकी।
अतिबिमलजलशशिसहितआभाबासपङ्कजपुञ्जकी॥
कोकिल मयूर सुराग पूरहिं मत्त मधुकर डोलहीं।
जनु भाटलै पहिरावनी गुणगान करते डोलहीं॥
तहँ कुनित नूपुर रुनित कङ्कन चारु कङ्कन करधनी।
शिरमुकुट कुण्डल करन पङ्कज पत्रकी शोभाघनी॥
त्रियसहित बिहरत भद्रबपु बलभद्र प्रभु त्रिभुवन धनी।
मुख लसत चन्द्रसमान पूरण सखी सब उडुगणबनी॥
पटनील बजत बिशाल बंशी सात सुरबर तालसो।
आवज उपङ्ग मृदङ्ग बीना चङ्ग मिलि करतालसो॥
तहँ बरुण पठई बारुणी बहु सुमन गन्ध बढ़ावती।
अलियूथनादित बृक्षकोटर ते भई तब आवती॥
अवरेखि इमि मदपान करि बल कमललोचन रँगरँगे।
मनमथ सहाई रासश्रम जलबिन्दु कहुँ परिखेलगे॥
मद चुवत मत्त बितुण्डसम भुजदण्ड शुण्डबिराजहीं।
कबहूं सिंहासन बैठि लै हल मुसल अतिही छाजहीं॥
शशिकोटिसमआननलसतमनबसतलटकनमुकुटकी।
मुरली बिशाल बजाइ गावत बहुरि टेकन लकुटकी॥

शिर खौर राजत भौंर गुञ्जैं काशमीर सुवासते।
इमि रमत तरुनिनसहितअतिश्रम भयोअनुपमरासते॥
जलरमनकी इच्छा करी विह्वल हली मदरँगपगे।
रविसुता यमुनानाम कहि इत आउ यह टेरनलगे॥

दो० जब यमुना आई नहीं, हलते ऐंचि फनीश।
कोप बचन बोलत भये, सुनहु तौन अवनीश॥

टेरत नहिं आई मदधारी। करिहौं शतधा मुसल प्रहारी॥
सुनत सभय आई करजोरे। कहत बचनकरि विविधनिहोरे॥
हलधर संकर्षण बलरामा। तव विक्रम नहिं जान्यो बामा॥
जो शिर यह महिमण्डल रहई। राई सरिस एक फन वहई॥
क्षमिय चूक अपनी दिशि जोई। सन्त हृदय न संगसम होई॥
सरित शैल पादप अज्ञानी। इन सबकी जड़ जाति बखानी॥
सो सुनिकै बिहँसे हलपानी। छोड़ दियो यमुना कर पानी॥
पुनिजलप्रबिशिकीन्हअतिक्रीड़ा। लखिजेहि होतसुरेशहि ब्रीड़ा॥

दो० जलते काढ़ि यमुना तबै, अम्बर अभरण लाय।
भेंट दीन्ह बलदेव कहँ, नीलाम्बर समुदाय॥

पृथक पृथक गोपिन पहराई। आपु बसन आभरण बनाई॥
माल पहिरि राजे बलदेवा। सो कोउ कहि न सकै बरभेवा॥
तव पुर यमुना गन्ध्रव नगरी। हलते तिरछी लागत सगरी॥
यह यश सुनै रासकर जोई। होत पुण्यधर प्राणन सोई॥
यह बलरास कह्यो हम भाई। कह सुनिहौ सो कहत बुझाई॥
कहत सुयोधन भूप प्रबीना। बलपञ्चाङ्ग गर्ग किमि कीना॥
गोपिन कहँ सो मोते भाषो। सुनिमुनिनाहकथनअभिलाषो॥

दो० हे नृप यकदिन गर्गमुनि, यमुना न्हाइ सचैन।

ब्रजमण्डल आवतभये, गुणी ज्ञानके ऐन ॥
तहां यकान्त ललित तरुछाया। यमुनातट सुन्दर छबिछाया ॥
बैठि कृष्णके ध्यानहिं धाखो। गोपिनइमि मुनिबरहिंनिहाखो॥
अहिकन्या सब सुरतसँभारी। कीन्हदण्डवत मुनिहि बिचारी॥
दोउ करजोरि कहत सब ऐसे। श्रीबलदेव उपासिय कैसे ॥
तब मुनि पांचहु अङ्गहि दीन्हा। तिन तब ताको धारण कीन्हा॥
सुनिहौ कहा कहौ सो भाई। तब बोले दुर्योधन राई ॥
कहौ मोहिं पद्धति भगवाना। तब मुनि प्रागबिपाक बखाना॥
तात सुनहु पद्धति करभेवा। जाते सुबश होत बलदेवा ॥

दो० भूधर हलधर मुसलधर, अहिबर बल बलवान।
भक्तिबिना नहिं होत बश, कोटियज्ञ जपदान ॥
गुरुमुकुन्द में प्रीति अति, साधु जननमहँ बास।
किमि न होहिं ताके सुबश, गिरिधर गिरिधरदास ॥

ब्रह्ममुहूरत उठि सुखसाथा। गावैं रामकृष्ण की गाथा ॥
गुरुमहि बन्दिधरै महिपाऊ। नित्य कृत्यकरि उर सह चाऊ॥
बैठ कुशासन ध्यान सुधारै। कर उछङ्ग धरि नाक निहारै॥
ध्यानकरै बलकेर रसाला। गौर शरीर गले बनमाला॥
नीलबसन द्युतिचन्द्र समाना। इहि बिधि ध्यान धरै मतिमाना॥
तीनकाल संध्या कहँ करई। मौनी शुद्ध क्रोध परिहरई ॥
काम लोभ मद मोह बिहीना। सत्यबचन महिशयन प्रबीना॥
अम्बर क्षौम पायसाहारी। यकबेर भोजन द्वैबेर बारी ॥

दो० इमि मनकहँ एकाग्रकरि, करै प्रीतिके भेव।
तापर होत प्रसन्न अति, देवदेव बलदेव ॥

अबका सुननचहत मतिमाना। सुनि धृतराष्ट्रकुमार बखाना ॥

पटलकहिय अघपटल बिदारण। मुनितबकह्योमुनहु महिधारण॥
बलकर पटल सकल सुखदाता। इहि नारद कहँ कह्यो विधाता॥
अहइ गुप्त अतिउत्तम बीजा। प्रणव कहैं पुनि मनमथ बीजा॥
चतुर्थ्यन्त द्वै कहि पुनि स्वाहा। मन्त्रराज यह हे नरनाहा॥
षोड़श अक्षर सब अघ तपई। षोड़शसहस ब्रती नर जपई॥
यहां वहां तेहि सिद्धि अपारा। जपता पूजै सहित प्रकारा॥
पञ्च बरणको कमल बनावै। बत्तिस दलके सर सरसावै॥

दो० थण्डिलपै इमि बिरचिकै, धरै सिंहासन हेम।
तापर श्रीबलदेव को, थापै उर भरि प्रेम॥

छं० प्रणव नमो भगवते बहुरि पुरुषोत्तमाय कहि।
कहि संकर्षणायपुनि कहै सहस्र शब्द चहि॥
अरु बदनाय महानन्ताय बखानै स्वाहा।
बांधसि दावा यह मन्तरतें प्रणवै नरनाहा॥
प्रणय जयजयानन्द बलदेव भाषि बलभद्रपुनि।
कामपाल तालाङ्ककहि कालिन्दीभञ्जन सुगुनि॥

दो० आवीरानिर्भूय मम, सन्मुखो भवेतेति।
मन्त्रकरै आवाहनहि, उर आनन्द समेति॥

छं० प्रणव नमस्ते बहुरि सीरपाने हलगहई।
सुमुसलधर अरु रौहिणेय नीलाम्बर चहई॥
राम रेवतीरमण नमस्तेस्तू यह भाखै।
आसनपाय नहान अर्घ मधुपर्ककहि भाखै॥
धूप दीप नैवेद्य पट भूषण अरु पुष्पाञ्जली।
गन्धारति उपवीतते पूजै रामहि विधि भली॥
प्रणव विष्णवे मधुसूदन बामन सुत्रिविक्रम।

श्रीउष्णीधर हृषीकेश पुनि पद्मनाभक्रम ॥
दामोदर संकर्षण बासुदेव प्रद्यूमन।
पुनि अनिरुद्ध अधोक्षज पुरुषोत्तम सुकृष्णधन ॥
इति पादगुल्फ जानू उरू कमरउदर कोखासहित।
पृष्ठभुजाकन्धरकरण नाक अधर दृगाशिरसहित ॥

दो० पृथक अङ्ग कहि देवतहि, पूजयाम यह भाखि।
पूजै सबन बिधान सह, ध्यान इष्टकर राखि ॥

शंख चक्र असि पङ्कज गदा। कौस्तुभ बाणमुसल हलमुदा ॥
धनु बनमाल सुमति दारुक अथ। खगपति अङ्कित ताल अङ्करथ ॥
बंशी बेत्र पीत पट नामा। कुमुद कुमुदलोचन श्रीदामा ॥
सहश्रीवत्स प्रणव ते चहिकै। पूजै नाम सहित नम कहिकै ॥
ग्रहदिगपाल बिनायक ब्यासा। दुर्गा बिष्वकसेन खुलासा ॥
निजनिज थान कमल पर धरिकै। पूजै मन्त्ररीति अनुसारिकै ॥
थालीपाक बिधान अगिनिको। पूजै रँगे प्रेम में मनको ॥
पूरब मूलमन्त्रकहँ लेई। सहस पचीस सुआहुति देई ॥

दो० द्वादश अक्षर मन्त्रते, आठ सहस कर होम।
चतुर्व्यूह के मन्त्रते, तितनोइ करे सुसोम ॥

देवहि नौमि प्रदक्षिण करिकै। आचारजहिं देइ मुद भरिकै ॥
कनक बसन भूषण गोदाना। द्विजन जेंवावै पुनि पकवाना ॥
आचारज कहँ शीश नवावै। ले आशीस अनन्द बढ़ावै ॥
यह बलदेव पटल हम कहा। भये सिद्ध जेहि चाहिये कहा ॥
सर्बसिद्धि पावै नर सोई। जाके पास पटल यह होई ॥
इच्छा औरहु है कछु ज्ञाता। तब बोले दुर्योधन बाता ॥
बल अस्तोत्र कहौ मुनिराई। सर्बसिद्धिकर सुखद सदाई ॥

सो सुनि प्रागविपाक उवाचे। धन्य महीप रामरँग राचे॥

दो० बलको अस्तवराज यह, बिरच्यो वेदव्यास।
सुनहु तौन कैवल्यप्रद, होइहि संकट नास॥

छं० देवाधिदेव अनन्त भगवन कामपाल नमोस्तुते।
श्रीशेष भूधर राम पूरण सीरधरं यादव हिते॥
निजधाम आननसहस रेवतिरमण संकर्षण हरे।
बलदेव अच्युतभ्रात हलधर पुरुषश्रेष्ठ मुसलधरे॥
बलभद्र बलतालाङ्क गौर सुनीलपट परमाम्भरे।
खर रुक्मकूट प्रलम्ब मुष्टिक बल्वलारि कृपाकरे॥
कूष्माण्ड बधकर यमुनभेदन कूपकर्ण बिदारणं।
हस्तिनापुरकर्षक द्विविदअरि भूमिमण्डलधारणं॥
यदु इन्द्र ब्रजमण्डल बिमण्डन गुरुसुयोधन भूपके।
तीरथकरनि कंसानुजान्तक जयदमित्रअनूपके॥
जयदेव अच्युत परपरमते मुसल हलधरबलप्रभू।
बन्दितमुनीन्द्रफणीन्द्रबरद्युतिजगतब्रजपतिहौविभू॥

दो० याहि पढ़ै हरिपद लहै, दहै शोक संताप।
सोइ मिलै वह जो चहै, पृथ्वी पुरै प्रताप॥

गान्धारीसुत बोले बाता। जो बलबर्म दीन्ह मुनि ज्ञाता॥
सो मोहिं दीजै मुनि सिरताजा। प्रागविपाक कह्यो सुनु राजा॥
जल नहाइ बर अम्बरधारी। मार्जन करै कुशासन भारी॥
बन्दि सुमिरि बल कहँ नर सोई। धरै कवच कहँ सब सुख होई॥

छं० गऊ लोकपति परम मोहिं अरिगणमहँ रक्षैं।
महिमण्डल जासिर सरसपसम उनमहँ रक्षैं॥
सीरपाणि सेना के मधि सबहनमहँ रक्षैं।

हली बली सरदार सदा मोहिं रण महँ रक्षैं ॥
मुसली रक्षैं दुर्गमहँ संकर्षण रक्षैं बिपिनि।
जलसुयमुनजल बेगहर नीलाम्बर रक्षैं अगिनि ॥
रामनाम बलधाम सदा बायूमहँ रक्षैं।
नभमहँ बल जग बिदित चारु आयूमहँ रक्षैं ॥
बासुदेव बसुदेव सुमन परबतमहँ रक्षैं।
सहस्रशीर्षा बिषके मधि आनँद गहि रक्षैं ॥
रौहिणेयवतु रागते कामपाल बिपदाहरण।
धेनुकारिवतु कामते रिसितेवतु बानरदरण ॥
महामोहते बल्वलारि करुणाकरि रक्षैं।
महामोहते मागधारि आनँद भरि रक्षैं ॥
वृष्णि धुरंधर प्रातसदा सब लायक रक्षैं।
पहरदिवसकी समय सुमथुरानायक रक्षैं ॥
पातु मध्यदिन गोप शरब पातुस्वराटपराह्णमहि।
सायंकाल फणीन्द्रवतु पर प्रदोष आनन्द गहि ॥
बीरज जासु दुरन्त सुअर्धनिशा महँ रक्षैं।
पिछिली निशिमहँ ईश अपानहिसामहँ रक्षैं ॥
देखनमें करि कृपा सदा प्रलम्बअरि रक्षैं।
यदुउत्तम अघ सदा परम करुणा करि रक्षैं ॥
ऊरधमहँ बलभद्रवतु सब दिशि ते बलदेव पुनि।
पुरुषोत्तम अन्तर अवतु नाग इन्द्र बाहर सुगुनि ॥
दो० अन्तरातमाते सदा, मोहिं पातु भगवान।
इमि यह बर्म तुम्हैं कह्यो, सुनहु भूप मतिमान ॥
देव असुर के भय कहँ नाशन। अघ इन्धन कहँ प्रकट हुताशन॥

विघ्नसमूहहि आशु निकासन। बलकर बर्म सकल सिद्धासन॥
सुनिकै बचन नीतिपथ शोधन। बोलत भये भूप दुर्योधन॥
बलकर भाषहु दश शत नामा। प्रागविपाक कहत मतिधामा॥
साधु भूप मति उत्तम तोहीं। सुरदुर्लभ जो पूछा मोहीं॥
कहत नाम हम सहस प्रवीना। गर्गजाहि गोपिन कहँ दीना॥

छं० प्रणव अश्व अरु श्रीबलभद्र सहस्र नाम कहि।
कहै स्तोत्रमन्त्रस्य गर्ग आचारज ऋषि चाहि॥
कहै अनुष्टुप छन्द बहुरि संकर्षण आनै।
परमात्मा देवता तबै बलभद्र बखानै॥
इति बीजमरेवति शक्ति पुनि अनन्तेति कीलकमश्री।
बलभद्र प्रीतिअर्थे जपे विनियोगहि भाषै सश्री॥

दो० इहि बिधान संकल्प करि, धरि आनन्द महान।
सहसनाम सुमिरण करै, प्रथम करै बलध्यान॥

छं० शोभित किरीट सुकिङ्किणी कङ्कण कनक अभिराम हैं।
मुखकमल अलक कपोलकुण्डल लसित पूरणकाम हैं॥
कैलास गिरिसमरूप अम्बर नील अरु बनदाम हैं।
श्रीकामपाल बिशालकर हल मुसल भल छबिधाम हैं॥

क० बलभद्र रामभद्र संकर्षणकामपाल, रेवतीरमण देव हलायुध राम हैं। श्वेतवर्ण बलदेव नीलबासा महाबीर, सीरपाणि पद्मपाणि बेणुपाणि नाम हैं॥ अच्युत सुअच्युत के भाई बीर बासुदेव, बासुदेव कला औ अनन्त अभिराम हैं। तालअङ्क मुसली हली बली सुरौहिणेय, होय यदुउत्तम प्रताप बलधाम हैं॥ ऊर्धग प्रबलबल सहसबदनधारी, फूर्तिकाधर स्वराट बसु औ अनन्त हैं। बसुमती भर्तार बसुउत्तम यदुबर, यादवेन्द्र माधव सुदानी भगवन्त हैं॥

द्वारकेश माथुरेश मानीपरिपूर्णतम, पुरुषपुराणपूर्ण परमगनन्तहैं। शाश्वत प्रकृतपर वृष्णिहित महामति, शेषध्रुव औ प्रधान भगवान सन्त हैं ॥ परमात्मा अन्तरात्मा जीवात्मा पुरुषोत्तम, चतुर्व्यूह चतुर्मूर्ति चतुर्वेद बुद्ध हैं। चतुर्भद प्रकृतीसंघात शशमुखी संधि,बुद्धि सखज्ञानवान अहंकार सुद्ध हैं॥ महात्मान इन्द्रियेश देवआत्म कर्म शर्म, अद्वितीय निगकार भूमिसत्ता क्रुद्ध हैं। साकार गगनाकार अम्बर्दद्वितीयवारि, जलतेज निर्मलाभ आदि अनिरुद्ध हैं॥ हिरएमयनीरञ्जन बीरजबिराज ऋष्ण, मान औ स्मराट फणी फणिकफणीशहैं। दशशतफण फणीहार औ महौजफणी, फण सफूर्तिफुतकारीउतकरमहीश हैं॥ प्रभूविभू मणिधर स्वामीबितलीसुतली, अतलीतलातली महातली तलीश हैं। पाताली औभोगतली दन्तधारे महाबल, कामपाल शंखचूड़ बासुकीमहीश हैं॥ कम्बलाश्वदेवदत्त धृतराष्ट्रअतिबाहु, बारुणीधनञ्जय सुमत्तमदकीश हैं। मदतेद्वकित नैन पद्मनैनपद्ममाली, मधुत्रवानागसुतायुत बनमाली हैं॥ कोटि कामरूपधारे नूपुरीशिखरडीदराडी, कुराडलीकटकी कटकाङ्गदी सुमाली हैं। कटिसूत्री मुकुटी कमराडली महाग्निकाल, कालिकाल कलिप्रिय रुद्रबपुवाली हैं॥ प्रलयमहाहिलै भाष्यकारउरङ्गम,शास्त्रवानपतञ्जलि पाणिनिअभङ्ग हैं। फक्किकाभूकात्यायनि फोटायनयज्ञ हरि, याज्ञिकहरिण कृष्णबामनभुजङ्ग हैं॥ बिष्णुप्रभुबिष्णुहंस करमी निवातबर्मी, योगईशश्रीबैकुराठसूकर सुठङ्ग हैं। नारदबिशेषमितसनककपिलमत्स्य,देवमङ्गलाख्यकूर्मदत्तजितजङ्ग हैं॥ पृथूकाल्किनारायणनर औपरशुपाणि, धन्वन्तरिऋषभनृसिंहरामचन्द्र हैं। काकुत्स्थकरुणासिन्धु राघवेन्द्र कोशलेन्द्र,दाशरथीशूद्ररघुउद्वह अमन्द हैं॥ राजकलत्राता सर्बलक्षण भरतभ्राता, कौशल्यापुत्र शत्रुतापकर

स्वच्छन्द हैं । लवणरिपुभ्रमर्त कवची निषङ्गी खङ्गी, शलीहलकोष्ठ और भोगताबिलन्दहैं ॥ गोधाङ्गुलित्राणबद्ध शम्भुधनुनाशकर, यज्ञत्रातायज्ञकर्ता सुमारीचमारी हैं । ताड़काारिपत्रवाक्य करताबि-राध अरि,बिभीषण मित्रबनईश असुरारी हैं ॥ मुनिप्रिय हरपी कवन्ध शत्रु दण्डकेश, चित्रकूटबासी राम मुनिबेषधारी हैं । पञ्चवटीईश बन बिहरमतङ्गनेता, राजिवनैन भालुमानसुखरारी हैं ॥ सुग्रीवसखा हनुमान हित बालिरिपु, सेतुकारि रावणारि लङ्काको जरावने । पुष्पकस्थ जानकीबिरहबाण लवणारि, अवधनिवासी सुर अर्चित बिभावने ॥ सूर्यबंशी चन्द्रबंशी बंशीधर श्रीनिवास, गोपति गोबृन्द-ईश गोपी गोपपावने । गोकुलेश गोपपुत्र गोगणेश पूतनारि, बकशत्रु शकटारि गोयुत सुभावने ॥ तृणावर्तघाती धेनुकारि वत्स शत्रुजानो, केशिहा प्रलम्बशत्रु व्योमहा गुपालहैं । दूधपान अ-ग्निपान बृन्दाबन लतावान, बृषभानिकन्दन यशोदा नन्दलाल हैं ॥ भव्य शिशुलालित सुद्रोणी रासमण्डलेश, गिरिहित गिरिधारी शंखचूड़ काल हैं । कालिन्दीभेदन नवलसुखरास रासकर, गोपी शतजूहहित लोचन बिशाल हैं ॥ ब्रजरक्ष शक्रजित बरबृषभानु-नन्द, नन्दको अनन्ददेत नन्दरायसुत हैं । श्रीनिवास कंसशत्रु कालीहा मुकुन्दबीर, रजकारि मुष्टिकारि चाणूरारि उतहैं ॥ कूटहन्ता तोशलारि शलशत्रुमल्लयुद्धी, कंसधनुभञ्जन महानबलयुत हैं । कंसकेअनुगहन्ता कंसकेअनुजहन्ता, मुनिमहदात्मवान परमाबहु-तहैं ॥ गजहन्ता कंसहन्ता कालहन्ता मागधारि, म्लेच्छहा कलङ्कहा सुपाण्डवसहाई हैं । श्यामलाङ्गचारभुज सोम उपगवीप्रिय, युद्ध करउद्धवेशमन्त्रीमन्त्रदाईहैं ॥ बीरहा सुबीरशत्रु शंखचक्र गदापाणि, [illegible] हैं । रेवतीहर्षकर्ता रेवतीके चित्रहर,

रेवतीकेप्रिय रेवतीके प्राणराई हैं॥ धृतिनाथ धराध्यक्ष दानाध्यक्ष धननाथ, रैवताद्रिबासी मैथिलाच्युतचरण हैं। गर्वाभक्तवत्सल सुयोधन गुरुसुजान, मानप्रदगदा शिष्यकारप्रेमतन हैं॥ सुरशत्रुमर्दन क्षमीय मुदाअतिशुद्ध, कल्पबृक्ष कल्पबृक्षी कल्पबृक्षी बन हैं। कौरवेश धन्वी ईश श्रीशीमन्त मतिमान, कूपकर्ण शत्रूकुष्माण्ड जित रैमारण हैं॥ सैव्य मधुमाधव निसेवित गाण्डीवी इष्ट, पुष्ट अङ्गतुष्ट औ बलिष्टहर्गर हैं। रैवतदमाद सौभपौण्ड्रकारि औसुनन्दी, शिखरी महाबल द्विविद प्राणहर हैं॥ काशीके निवासी अबिनाशी मारचक्रकाशी, नृपनाशी कौरवेश पूज्य दीर्घकर हैं। बिश्वकर्मा बेदधर्मा देवशर्मा हेमबर्मा, महाराज सिद्धगीत धीर छत्रधर हैं॥ महाराजलक्ष्मण सुसिद्ध कथाकीर्तनासा, तारा अक्ष बिम्बओठ श्वेतछबिघन हैं। चामरप्रवीजित प्रचण्ड मण्डमेघलाख्य, पद्मनाभ पीनअंस द्युतिशाशिमन हैं॥ पापहाकपाट बक्ष सुन्दरआजानुबाहु, बासहितकारी औ बिभूतिईशजन हैं। बन्धु मोक्षईक्षन सुदन्तबक्र शिशुपाल, शाल्वशत्रुशालबाहुतीरथकरन हैं॥ नैमिषबनेशऔ अजातशत्रुगोमती, सुगण्डकी बनेशऔ बैजयन्तीधरहैं। पद्मधर शौनन्हायबिपाशीप्रयागतीर्थ, सरयूसमुद्रसेतु गयाशिर कर हैं। अन्धनद पुलहपुलस्तिवान गङ्गासिन्धु, शत्रुगोदावरी नाथ तीरथबिचर हैं। बेणीगोदाभीमरथी ताम्रपर्णी महापुण्या, कृतमाला बटोदकापयास्विनीबर हैं॥ कृष्णबेणागङ्गा रेवा औ काबेरी भागीरथी, प्रतीक्री सुप्रभाबेणी शर त्रिबेणीधर हैं। सिद्धासन बिन्दुसरबिन्दु जम्बू औप्रभास, सैन्धवसुपुष्कर बदरिबनयात्राकर॥ कुरुक्षेत्र पति राम जामदग्नि महामुनि, इल्वलतनयशत्रुगुणसिन्धु गुणाकर।

नाशकर॥ गदगद्यगदभ्राता पूर्णार्णव गुणसिन्धु, गुणयात्री रङ्गव-
लीजलाकारीभल हैं। भूत औ भविष्य वर्तमान सुताहष्टमव, हरषी
बसन्तमालसी बिकर्षीकल हैं॥ निर्गुणसगुणहीन विग्रहबृहतरूप,
आदिऔ अनादिनिरञ्जन्तरअछल हैं। प्रत्यधाम निरानन्द गुणा-
तीत समसाम्य, समदृष्टकल्पक गुणागृहीश बल हैं॥ गूढ़रूढ़ गुण
गौण गुणाभासनित्यक्षर, अक्षर विकार सुविकुञ्जमुख ब्रह्म हैं। सार्थ-
कपीयूष सम बुद्धिसमग्रसुनाथ, आपरण सर्वबितशंकरस्वयम्भु हैं॥
अक्लेद्यछेद्य शिष्यकोकके निबर्तकाथ, ब्रह्माकविब्रह्मधर व्यापकसु
शम्भु हैं। उपायकाधिभूत आधिदेव आध्यात्मसेव, आश्रय अपाने
श्रेष्ठनाशक निशुम्भ हैं॥ महावायु महावारि श्रेष्ठारूपअंकथित, बो-
धकप्रबोधी गुणतेइसभरत हैं। प्रेरक आवेश अंश अंशकधरौपरस्थ,
महाजन तपसत्यभूर्भुवस्वगत हैं॥ त्रिधाईश प्रकृत नैमित्तिकआ-
त्यन्तिकमैलय, बिसरगसरग सुसर्ग आदिमत हैं। अधऔनिरोधग
तमन्वन्तर अवतार, मनुमनुपुत्र अघबार्जितप्रबर हैं॥ स्वभावशम्भु
शक्रस्वायंभूकृतसहाय, देवालय देवगिरिमेरु हेमहार हैं। गिरिश
गणेश गौरीगिरिगौह्वरगौरीश, हेमअरचितविन्ध्यतीन कूटाधार हैं॥
शिशिरपतङ्गकङ्क सुमैनाक पारिभद्र, जारधिसुबेल शैल धौत सर-
दार हैं। कालञ्जर बृहत्सानुनन्दिकेशिदरीबानु, संजादक बृक्षपारि-
जात पूज्यचारु हैं॥ जयन्ताङ्गकुज्जयन्त औजयन्त वृत्रशत्रु, देव-
लोक कुमुदशशी मन्दारनाम हैं। दिग्जयाकुलाख्या वन्धु सुधा-
सिन्धुमृगपुष्य, पुनर्बसु अभिजित हस्त गुणधाम हैं॥ वैधृति श्रवण
ऐन्द्र ब्रह्मसाध्यशुक्ल शुभ, ब्यतीपात शिवदेवमय अभिराम हैं।
भास्कर उदय औ नक्षत्रईश शिशुमार, विचक्षण ब्रह्मलोकस्वामी को
[illegible]

गोलोकेशईश हैं । गऊलोकधाम धिष्णगोपिकाके कण्ठभूष, हीधर श्रीधर लीलाधरणक्षितीश हैं ॥ धुरीअट्टराजधर कुन्तधारी शूली गजी, धर्ध सुनुबीरभासी अन्तधराधीशहैं । शूलसूची अयोगजगज चर्मधरभारी, मुण्डमाली ब्याली बारिपति श्रुतिईश हैं ॥ दण्डीऔ कमण्डली बैतालभृत्य भूतस्वामी, कूष्माण्डसंवृत प्रथम ईशकाल हैं । पशुपति मृडानीईश मृडबृषकृतान्त, कूटभैरवसंहर्ता बीरभद्रकाल हैं॥ कल्पान्त षडाननदक्षयज्ञनाशकारी, शर्पराशीविपानी शिवार्थ प्रदपाल हैं । धनुष्टङ्कारी हस्तीहस्ततर्क सिन्दुबुध बलतववतुपांव नूपुरसुतालहैं॥ बिद्यावानबेदयाजीसांख्यशास्त्री बैद्यपती, मीमांसी सुकण्वनाम गौतमकणादिहैं । बादीबाद नैयायकनयधारी धर्म शास्त्री, सर्बशास्त्रतत्त्वग प्राकृतभाषा आदि हैं ॥ बैयाकर्णकीनि और शब्दबैयासकजानो, पञ्चरात्रसंहिताख्य काव्यमरयादि हैं । स्मृतिकर पुराणीककाव्यज्ञाताकबिराज, बैद्यबैद्यवान अलंकार बाहसादि हैं ॥ बाक्यस्फोटपद असफोटवृत्ति अर्थवान, स्वच्छलक्षणार्थ उज्ज्वल शृँगारहास्यनामहैं । अद्भुतभयानक अश्वत्थ पञ्चभोजीअम्बरीषअक्षयवक्रीतयवसतधाम हैं ॥ ऐलबंशबरधन प्रहलादरक्षाकर, अतिस्निग्धउत्तरीय धरणबिश्राम हैं । पूरणोच्चहेम कञ्चुपीतबासी सित बासी, रक्तबास दिव्यअङ्ग दिगबासकाम हैं ॥ नानामणि समाकीर्ण नानारत्न तनधारे, नानापुष्पधर पुष्पीपुष्पधनुपूजे हैं । नाना अङ्गरागधर नानापुष्परसबासी, नानाबर्णमयबर्ण नानाबासकूजे हैं ॥ नानापद्मधरकोशी नानाबासुबेणुधर, रत्नसालधारी धौतबस्त्र धरकजे हैं । पीतोष्णिसासितोष्णिसरक्तोष्णीस श्यामोष्णीस, दिव्य अङ्ग दिव्योपम सुखमाप्रपूजे हैं ॥ गोलोकाङ्ककृत और उतसंग मथुराख्य, माथुरम धूपुरेशकअसेनयनहैं । दधिहर्तादुग्धहृतनवनीतचोर

तक्री, तक्रभोजी चक्रधारी दधिचोरवनहैं ॥ प्रभावती वद्धकर दामोदर दमीदाम, सिकता बिहारीबालकेलि सुखमन हैं । धूलि धूसराङ्ग ब्रजअर्भक कलिन्दीकूल, बिदानाख्य मुक्तकेश मधुरेवचनहैं ॥ सुधी काकपक्षधर कुलीकोलाहली जल, पङ्कप्राङ्गलेपक वृन्दावनचारी हैं। बंशीबट तटस्थित महाबनबासकर, लोकअर्क बनवासी साधुप्रिय भारीहैं॥साधीसो सुगतसाधुरङ्गनाथ बिन्धतेस, समुक्तनाथसाधस्पति सुयशकीर्तिधारी हैं । रङ्गरञ्जनाख्यराग खटगम प्रयुक्त चारु, रागिनी रमणमेघसुमल्लारकारी हैं ॥ दीपक श्रीमालकोश भैरवादि लोलसुर, जातिसुरमृदुजानतालयानकारी हैं । अक्षरकला अगम्य श्यामाईश औप्रमाण, शतानन्द शतफण शतक्रतु आसुप्त हैं ॥ उर्वरस्वप्रण ऊर्जस्फूर्जाविज्वरज्वरण, पूज्यज्वरकर्ता ज्वरेशक सुसुप्तहैं । जाम्ब-बाण जम्बुक अंशकी औद्विपारिशत्रु, जम्बूद्वीप ईश और त्रिजरा प्रसुप्त हैं ॥ शाल्मलि शाल्मली द्वीपप्लक्षप्लक्षवन ईश, कुशधारी कुश कौशी कौशिक प्रगुप्त हैं । कुशस्थली स्वामीनामी काशीनाथ कुश, विग्रहाख्य भैरवाख्य शासनमहीप हैं ॥ दाशारह भोजवृष्णि अ-न्धक निवास दाता, अभिद्योत प्रभिद्योत सात्त्वत प्रदीप हैं । सूरसेन भोजस्वामी अन्धकेश आहुकाख्य, उग्रबाक उग्रसेन उग्रबान द्वीप हैं ॥ उग्रसेन प्रियप्रिय पार्थपार्थ प्रियसभा, स्वामी सुधर्माधि ईश वृष्णि चक्रक क्षितीप हैं । सभाशील सभाद्वीप सभाअग्नि सभा सूर्य, सभाचन्द्र सभाभाश सभापति नाम हैं ॥ सिञ्चित प्रजार्थपद सद्योदय प्रजाभर्ता, प्रजा पालतत्पर अनूप गुण ग्राम हैं । द्वारका नगरचारी द्वारका विग्रहकारी, द्वारकाके दुःखहारी द्वारका सुठाम हैं ॥ जगमाता जगत्राता जगभर्ता जगभ्राता, जगमित्र जगसखा औबिंगादि राम हैं । श्रीब्रह्मण्यदेव ब्रह्मपदरजशीशधारी, ब्राह्म-

हर्षकारी महामुशली ब्रह्मराय हैं ॥ ब्रह्मपादसेवक सुब्रह्मसेवाका-रकाख्य, ब्रह्मपाद्य जलपूत बिप्र मुख्य धन्य हैं । बिप्रहित बिप्रगीत बिप्रपाद जलप्रीत, बिप्र यादवारि प्रिय सुकथ अनन्य हैं ॥ बिप्रभक्त बिप्रगुरु बिप्रबिप्र पदगामी, बिश्वबाप द्वारका सुमङ्गलप्रजन्य हैं । अक्षौहिणिपतियोधा पृतना समेतक्रोधा, उग्रवन्ती चतुरङ्ग गज कोटिचाई हैं ॥ रथकोटि जयकेतु सामन्तक ध्रुतयाद, महारथी अति-रथी रथी विश्वशाई हैं । नारायण अस्त्ररण श्लाघी ब्रह्मअस्त्रधारी, जैत्ररथसुस्थित रणोद्भव लराई हैं ॥ मदोत्कट युद्धबीर देवासुर भय-देत, करिकर्णपादधरि कुन्तक बिदाई हैं । प्रोच्च भट्टप्रतिभट्ट संम-र्दक अग्रजाख्य, बाणबर्षी सूतमदकुण्डलधरण हैं ॥ रणमण्डलाख्य खड्ग खण्डित बिसूरअङ्ग, षोड़शाब्द पटचारु अक्षरबरण हैं । बीरघोष क्लिष्टबपु बज्र अङ्ग बज्रभेदी, रुग्नवर्ण भग्नदण्ड अट्टहास पन हैं । शत्रु भर्त्सनाख्य पट्टधारीपट्टनारीपति, पट्टधारी पटहाख्य बादप्रिय मन हैं ॥ हुमकार गरजित महास्वनसाधुभक्त, पराधीन औस्वतन्त्र साधुआभरन हैं । अश्वतन्त्र साधुमय साधुग्रस्त साधुचिन्त, साधु-ज्ञाति साधुप्रिय साधुजाकोधन हैं ॥ साधुचारीपरमः सुयोधनाख्य साधुवश्य, साधुकेसमूहहेतआनँदअयन हैं । शुभअस्य दाता बिश्वत्राता साधुचितवारे, बाधागतराधापति मङ्गलकरन हैं ॥

दो० यह सहस्र बरनाम बर, कह्यो सुनहु नरनाथ ।
अहैभद्र बलभद्र को, परमपुराय की गाथ ॥

शतावर्त करि बिद्यालहई । चारबर्ग फल आनँद गहई ॥
श्रीबिभूति बलओज अपारा । यहि पढ़ि पावै मनुज अपारा ॥
गङ्गयमुन तट सुरगृहमाहीं । सहसबार यहि जपै तहाँहीं ॥
[illegible]

धनअर्थी धनपावै राजा। रोगी तजै रोगको साजा ॥
कैदी मनुज कैदते छूटै। अयुतवार जो पढ़ि सुख लूटै ॥
पुरश्चरण बिधिते करियज्ञा। तर्पण द्विज पूजन सर्वज्ञा ॥
गऊदान पुनि पटल सुपद्धति। अस्तवकवच नाम यह पद्धति ॥

दो० तासु बार बारणघने, खड़े डुलावहिं कान।
मण्डलीक ठाढ़े रहैं, बर मण्डली समान ॥

जो निष्काम पढ़ै सुखरूपा। जीवत मुक्त गुनहु तेहि भूपा ॥
ताके गृह नित बसहिं अनन्ता। सुभगस्वरूप सरसभगवन्ता ॥
पापी अपने पाप नशाई। गऊलोक निवसै सुखपाई ॥
हे बहुलाश्व कथा सुनि येहू। दुर्योधन उर प्रकटा नेहू ॥
पूज्यो प्रागबिपाकहि भारी। धारेउ पांचअङ्ग ब्रतधारी ॥
बिदा होइ मुनि प्रागबिपाका। गे आश्रम जाका जग शाका ॥
यह अनन्त की कथा अपारा। कहै सुनै जो गुणै उदारा ॥
ब्रह्मानन्द ब्रह्ममय सोई। तासम जगजन और न कोई ॥

दो० खलखण्डन खण्डनदलन, ब्रजमण्डन सुखरूप।
दण्डन द्विबिद समेत भज, कीन्हो खण्ड अनूप ॥
करतल बंशीमुसलहल, हितसित असित स्वरूप।
राम श्याम अभिराम अति, बसहु हृदय यदुभूप ॥

सो० है बाणी मधि ब्यास, कीन्हो खण्ड समाप्तबर।
दासहि भोजसमाप्त, सुमिरत गिरिधर मुसलधर ॥

इति श्रीभाषाप्रकाशेकृष्णप्रियेगिरिधरदासविरचितेप्रेमपथरचिते
गर्गसंहितायामष्टमंबलदेवखण्डंसमाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ विज्ञापनखण्डप्रारम्भः ॥

सो० यहजग जासु बितुण्ड, सो अखण्ड गिरिवरधरण।

बर बिज्ञानक खण्ड, कर बिज्ञान चाहत धरण ॥

दो० जगतबीच जाकी भगति, लगति परम हितरूप।
प्रेमपगति अतिमति गठति, बरणत सुमति अनूप ॥

कहत जनक गहि सुन्दरमतिको। जो मारग श्रीकृष्ण भगति को ॥
कहहु तौन जिमि होउँ भगतमैं। बोले यह मुनि सार जगतसैं ॥
कथिहौं व्यास कथित आख्याना। जाते द्रवहिं तुरत भगवाना ॥
हरि निजभुजबल सभा सुधर्मा। लाये इन्द्रजीति बर पर्मा ॥
मण्डल जहँ बैडूरजमनिको। कोटिनखम्भकनकमणिबनिको ॥
बिश्वकर्म बिरच्यो अतिछबिसों। पद्मरागमहि अधिकतिरबिसों ॥
बर बितान बहु तने तनावन। मणिझालरिझूलरिलटकावन ॥
सिंहासन मधि रतन बनकके। छाजहिंकोटिककलशकनकके ॥

दो० नृत्य करहिं गन्धर्बिनी, आनन शत शशितूल।
पद नूपुर कटिकिङ्किणी, कर कङ्कण शिर फूल ॥

बिद्याधरी करहिं कल गाना। बाजहिं बाजन सुरँग समाना ॥
नन्दन और चित्ररथ घनसे। लजहिं सर्वतोभद्र सुवनसे ॥
पारिजात भरि बानिनमहकत। सरससुगन्धदशहुदिशिलहकत ॥
सरजहँ लाख सरोजन राजत। भ्रमरे भ्रमहिं इतै उत भ्राजत ॥
चालिसकोस सभा बिस्तारा। ऊंचो योजन पांच निहारा ॥
तोरण ध्वजा पताका माला। तहँ सिंहासन लसत रसाला ॥
जापर बैठि होइ बासवसों। जग चातुरी धरै तब सबसों ॥
जो तापर बैठै नर राई। षट बिकार ताकर नाशिजाई ॥

दो० सभा सुधर्मा धर्ममय, भासत भानु समान।
जबलौंतित निवसै मनुज, तबलौं अमर अमान ॥

[illegible] तिगतहिं यादव। हरिमख बरबरषहिं जनु भादव ॥

अति परिवार उदार चारु छवि । सो शोभा कहिसकै कौन कवि ॥
उग्रसेन की उग्रसैन है। चैन सहित सब विश्व जैन है ॥
राजत तित अतिराजी राजा । आये तितहिं व्यास मुनिताजा ॥
श्याम शरीर सोह शिर जटा । नील शैलपर जिमि घनघटा ॥
सभा सहित नृप कीन्ह प्रणामा । बोले दै आसन अभिरामा ॥
जन्म भवन भो सफल हमारा । लखिमन हरषन दरशतुम्हारा ॥
जामहँ रहैं प्रसन्न कन्हाई । सो मोकहँ कहिये मुनिराई ॥

दो० जहां साधुके पदपरैं, तहां सकल आनन्द ।
दुहूं लोक सुखसों रहै, कृपा करहिं गोविन्द ॥

यकक्षण बास करहिं जहँ सन्ता । तहँ निजधाम करहिं भगवन्ता ॥
पूरबजन्म सुकृत मम काहा । जाते भये यदू नरनाहा ॥
हरिनाती तुमसे मुनि आये । कहिये तौन हमारे भाये ॥
सो सुनि कहत भये द्वैपायन । धन्य भूप भगवन्त परायन ॥
तुम पूरब नृप मरुत महाना । कीन्ह यज्ञ हरदिय भगवाना ॥
ताके फल धन सासल स्वामी । यह पद दियो प्रेम पद पामी ॥
अमित अखण्डपति प्रभु परिपूरन । गऊलोकपति बिभु करुणातन ॥
राधारवन भवन में तुमरे ॥जिमिनिवसततिमिनहिंउरहमरे ॥

दो० तुम सम धन्य न अन्यजग, पायो सुख हरिजन्य ।
भक्तहि सींचत प्रेमजल, श्यामश्याम परजन्य ॥

तब यदुनायक बचन उचारा । अहो धन्य अतिभाग हमारा ॥
कर्म केर दृढ़ लक्षण कहहू । जग बहुवाद भ्रमहिं द्रुत दहहू ॥
सुनिकै इमि नरबरकी बाता । कहत बादरायण बिज्ञाता ॥
जग सब कर्म सूत महँ गाथा । किये फलहि पावहिं नरनाथा ॥
सहित निमित्त कर्म हैं जेते । अहहिं बन्धकारी जग तेते ॥

जे निष्काम करहिं शुभ कर्मा। सोई मुक्त अहैं गतभर्मा॥
सत रज तम मायाके गुन हैं। यामहँ फँसे सकल जगजनहैं॥
सत सुरपुर रज महि तम नरका। हरिपुर जाहिं प्रेमपथ गरका॥
दो० पञ्च अगिनि कहँ तपहिं जे, कानन कीन्हे ओक।
ते योगीजन जात हैं, सप्तऋषिन के लोक॥
संन्यासी बर ब्रती बिदण्डी। सत्यलोकनिवसहिंद्युतिमण्डी॥
करि अष्टाङ्ग योगकहँ योगी। होहिं महर जनपुरके भोगी॥
मखकर बसहिं शक्र रजधानी। ब्रती भानुपुर शशिपुरदानी॥
तीरथयाजी शिखिपुर माहीं। सत्यसन्ध बारुणमहँ जाहीं॥
शैव शम्भुपुर बैष्णव हरिके। स्मार्त स्वर्गसरपूजन करिके॥
पितृभक्ति जे करहिं सुजाना। ते नर जाहिं पितृ अस्थाना॥
प्रजापती कहँ पूजहिं जोई। तिनकर बास दक्षपुर होई॥
भूती भूतहि यक्षी यक्षण। प्रेती प्रेतन रक्षी रक्षण॥
दो० पापी यमपुर जात हैं, सहैं यातना घोर।
निज निज कीन्हे कर्मसब, भ्रमहिं लोककी ओर॥
ब्रह्माआदि लोक हैं जेते। हे नृप पुनरावर्ती तेते॥
करम बायु बश मनुज गुबारा। अध ऊरधादिशि भ्रमै बिचारा॥
करम भरम मय जाल महाना। नर झष कठिन सकै नरत्राना॥
ताते त्यागि करम ब्यवहारा। भजहु कृष्ण निष्काम उदारा॥
प्रेमलक्षणा ज्ञान बिरागा। लै हरि भजहु कर्म करित्यागा॥
कृष्णचरण सरसीरुह ध्यावहु। जाते सिगरो दुःख नशावहु॥
मुक्त सोई जो कृष्णहि ध्यावै। उग्रसेन सुनि बचन सुनावै॥
पुनरावर्ती सिगरे लोका। मोहिं न चाहिये तिनके थोका॥
दो० कृष्णचन्द्र कर लोक जो, अच्युत कीन्ह प्रकास।

ताकहँ मोहिं बखानिये, सुनि बोले मुनि व्यास ॥
ब्रह्मअण्ड ते पर गोलोका। नाशतशोक कृष्णकरओका ॥
आवागवनरहित तेहि गुनहू। यह ब्रह्माण्डकथा अब सुनहू ॥
योजन कोटि पचास बखाना। दुहुँ दिशिते शतकियपरमाना ॥
ऐसे कोटिन अण्डनभूपा। देखैं तहँते मनुज अनूपा ॥
रवि शशि अग्नि जहांनहिंजाहीं। कामक्रोधकी गति है नाहीं ॥
जरा मृत्यु भ्रम लोभ विमोहा। काम वासना तहां न सोहा ॥
शब्दब्रह्म जेहि कहै न बानी। मनकी निपट पंगु गति जानी ॥
केवलभक्ति तहां पहुँचावै। अलखअकथतेहिकोकहिगावै ॥
दो० उग्रसेन बोले वचन, तुम मोहिं यह दृढ़ कीन्ह।
कृष्णभक्ति बिन नहिंअहै, कोउहित सावनपीन ॥
तब रुचि मोहिं भई अतिभारी। सबते अधिक भक्तिहरिप्यारी ॥
कै विधि भक्तिभेद हरिकेरो। पृथक सुनन चाहत मनमेरो ॥
कहिकै कीजै मोहिं निकन्दन। बोले सुनत पराशरनन्दन ॥
धन्य पुरी द्वारावति एहू। धन्य भूप जेहि कृष्ण सनेहू ॥
जेहि सुनि महाअघी अघ दाहै। सो हम कहत तुम्हारे चाहै ॥
निर्गुण सगुण भेद हैं दोई। याके बीच सुनहु तुम सोई ॥
हिंसादर्प मातसर करनो। भिन्नभाव अरु द्वेषहि धरनो ॥
पूजत क्रोध हृदय महँ होई। तामस भक्ति जानिये सोई ॥
दो० अति धनते मनमानते, यत्न सहित नर जौन।
परमेश्वर कहँ पूजई, राजस जानहु तौन ॥
बैरबिगत जो हरिभजै, मोक्षहेतु शुचिसन्त।
ताकहँ सात्त्विक जानिये, कृपाकरहिं भगवन्त ॥
आरत अर्थार्थी जिज्ञासू। ज्ञानी जो कर भक्ति प्रकासू ॥

चारप्रकार भक्त ये हरिके। भजहिं मोद अतिउरमहँभरिके॥
सगुणरूप ये नन्दसुवन के। दीनबन्धु राधिकारवन के॥
निर्गुणभक्त जौन गिरिधरके। ते सब हेतुहि खण्डन करके॥
भजहिं एक निर्गुण गोपाला। सर्बाधार उदार दयाला॥
सिन्धुसरित सुख निर्गुण भक्ती। एकहिरस जिमि अक्षरपंक्ती॥
सारसभौम शक्रबिधि पदको। लेहिंनते रबिशशिकी हदको॥
सालोक्यादि मुक्ति नहिं लेहीं। यद्यपि तिन्हैं जनार्दन देहीं॥

दो० सामीपहि नहिं लेतहैं, तजि साधुनको सङ्ग।
निपट निकट नृपके बसे, मान होतहै भङ्ग॥

स्वामीकर स्वरूप नहिं लेहीं। दासभूत भगवन्त सनेहीं॥
तजि संकल्प बिकल्प कलपना। भजहिंकृष्णगुनिकैहितअपना॥
शान्तउपेक्षा गत समदरशी। सदा अनन्यशोक आकरशी॥
तिनकहँ बात होत सो पद में। ब्रह्मबिशद सुखहदजगजदमें॥
सो तजि ब्रह्म और नहिं जानै। सर्व एकरस सम पहिंचानै॥
श्रवण नास ईक्षण जिमि अहहीं। श्रवण बास बीक्षणगति गहहीं॥
तजि निज गुण गुण करहिं न दूजे। तिमिते ब्रह्म भजहिं जगपूजे॥
तिनकहँ जगसुख प्राप्त न कैसे। करहिं स्वाद ब्यञ्जन करजैसे॥

दो० निर्गुण ह्वै गुणको करै, परम फजीहति होइ।
ऊंट बैलको जोतिकै, मंजिल पहुँच्यो कोइ॥

ताते भक्ति योग पर सबते। सो निष्काम अनूप सरबते॥
सुमिरण भजन श्रवण पदसेवा। अर्चन बन्दन दास सुभेवा॥
सखापनो अरु आत्मनिवेदन। नवधा भक्ति बखानी बेदन॥
प्रेम भक्तियुत भावत भावन। दुर्लभ भक्ति सोई जगपावन॥
हरि प्रसन्नता जे जन चाहैं। सदा सबन पर दया निबाहैं॥

कृष्णचरण पङ्कज के भँवरा। सदाजासुमनहरिदिशिदवरा॥
सुमिरहिं आठ याम हरि कैसे। पतिब्रता निजपति कहँ जैसे॥
सुमिरत जिनके पुलकहिं रोमा। नित्यानन्द पियो जनु सोमा॥

दो० कृष्ण बिष्णु गोबिन्द हरि, भाषहिं ऐसी बात।
आठ याम घनश्यामपद, ते भागवत सुभात॥
नभ जल ज्योती बात शशि, सबमहँ देखतकृष्ण।
सदानन्द सुखकन्दधर, सोई धिष्णाधिष्ण॥

छ० यदुधुरीण को ध्यान सदा चिन्तत सोइ दरशण।
तेहीके मधि मदन बिरह सोई दुख करषण॥
गावहिं नाचहिं हँसहिं थिरहिंरोवहिं पुनि धावहिं।
अति उदार उनमत्त सरिस जगमें दरशावहिं॥
जितइन्द्री आनन्द मय त्रास तजे भव फन्दके।
तिनकहँ निश्चय जानहू रूप नन्दकेनन्द के॥

दो० तिनको करि दरशन मनुज, होत कृतारथ रूप।
मृत्यु दूरि डरती रहै, नमैं प्रेत के भूप॥

छ० बामगदा पुनि दक्षिण चक्रसुदर्शन नामा।
आगे शारँग पाञ्चजन्य पाछे अभिरामा॥
नन्दक नामा खड्ग ढाल शतचन्द्र महाना।
सब दिशि रक्षा करहिं यथा प्राणी निजप्राना॥
ऊपर छाया करत तेहि महाजलज परमा भरो।
गरुड़उड़ावहिं अशुभकहँ पक्षहिधुनिसुखविस्तरो॥
जहँ जहँ जावहिं सन्त कृष्णातित राजहिं राजा।
पृथ्वी पावन करहिं तीर्थसम सब सुख साजा॥
जहां साधु क्षण बैठे सोइ थल तीरथ होई।

तहां मरैं जे लोग लोकहरि गवनैं सोई ॥
दूरिहितेलखिसन्तकहँ आधिव्याधिनशिजाहिंसब।
प्रेतपिशाचौ डाकिनी देखि सम्हरहि सकहिंकब ॥
दो० नदीसिन्धु नदनादसब, दुखप्रद बनके जीव।
मारग सन्तहि देत हैं,जानिस्वरूप अतीव ॥
ज्ञान बिशिष्ट अजातरिपु, परम महान बिरक्त।
तिनहिं नहीं प्रतिबन्धकहुं, सदा कृष्ण आसक्त ॥
तप करिकै शत जन्मनर, जनमत भारतमाहिं।
तब तिनकी संगति मिलति, भूपति ऐसे नाहिं ॥
क० जाके कुल हरिभक्त होतहैं उदोत नाम, पावन है सोई बंश सुन्दर जगत में। माता पिता दाराके सुदश पुरखान तारै, तिनको दरश पाप दरत चलत में ॥ परशे पिपील कीट मक्षरादि मुक्त होत, पावै भक्ति चारु पद पङ्कज लगत में। गिरिधरलाल तापै सदाई निहालरहैं, अति खुशियाल रहै प्रेमके पगत में ॥
दो० सांख्य योग तप तीर्थ ब्रत, मखते मिलैं न श्याम।
बिना सुसंगति साधुकी, यह सतगिरा ललाम ॥
देशरहित जो द्विजनते, कीटम्लेच्छ सौबीर।
हरिजनअतिपावनकरहिं, दूरि दरहिं भवपीर ॥
यह हरिभक्त कथा मैं कहा। उग्रसेन तुम सुनिहौ कहा ॥
कह नृप परिपूरणतम श्यामा। योगिनकहँ अगम्य अभिरामा ॥
दन्तबक्र भो तिनमहँ लीना। मोहिं अहै यह अचरज पीना ॥
साधुहि दुर्लभखल किमि पावा। बेदव्यास मुनि बचन सुनावा ॥
हे नृप जीवहि गुण व्यवहारा। तहां न नेक यासु अधिकारा ॥
कोऊ भावते भजै मुकुन्दा। पावै पद निर्बान अदुन्दा ॥

स्नेह काम भय क्रोध लगनते। सौहृदकरि सोमिलैं मोहनते॥
कोउ बिधि लोहा पारस लगई। कञ्चन होइ जगत जगमगई॥

दो० भजन किये भगवान के, योगी भये सनाथ।
निशिचर दानव द्वेष करि, तरे महा भवपाथ॥

कुं० कृष्णहि गोपीगणमिलीं, काम विवश नरनाथ।
कंसादिक खल बैरकरि, मिले श्यामके साथ॥
मिले श्याम के साथ, चैद्य आदिक करि रोषा।
नन्दयशोदा शौरि, आदि सुत सम परिपोषा॥
मित्रभाव यदुबंश, सुबश कीन्हो हरि धिष्णहि।
कोऊ भावते ध्यावै, सो नर पावै कृष्णहि॥

दो० काम क्रोध मद लोभ भय, हरिमहँ करैं सुजान।
ताहि मिलत भगवान हैं, यह युग चारि प्रमान॥

छ० बच्छ पाञ्चजन शंखचूड़ अरु द्विविद बकीबक।
मधुकैटभ केशी प्रलम्ब रावण अरु धेनुक॥
कनककशिपु कनकाक्ष आदि सिगरे बिबहिर्मुख।
सदा कियो जग पाप दियो जीवन कहँ अतिदुख॥
सकल समर लरिलरिमरे तरेमरे आनन्द हिय।
दुख जरे बैर बिधि उरधरे करे कृष्णभल मुक्तिदिय॥
नारद सुरगुरु असित पराशर बाण सनन्दन।
बलि बशिष्ठ प्रहलाद बिभीषण शुकमुनिनन्दन॥
सनक सनातन सनतकुमार मरीच महामति।
द्वैपायन आदिक मुनीश हरिचरण गहारति॥
गिरिधरणभजतसबदुखदह्योलह्योपरमआनन्दाहिय।
तिनहूं कहँ पावन परम सदा कृष्ण भल मुक्ति दिय॥

गाधि भरत अर्जुन रुक्माङ्गद जनक प्रियव्रत।
अम्बरीष सुग्रीव बालिसुत गरुड़ हनूमत॥
ऋक्षराज गृध्रेश भुशुण्डीकाक ज्ञानधर।
गुह बायक उद्धव सुदाम आदिक हरिजनबर॥
कुन्ती तारा द्रौपदी कुबजा गौतम नारिसह।
अनसूया भद्रातरीं सकल सुभद्रा प्रेम मह॥

दो० जिन जिन जाबिधि हरि भज्यो, तिन तिन ताबिधि पाव।
उड़ो कबूतर दश दिशा, निज छतरी पर आव॥

क० योग ब्रत तीरथ नियम स्नान दान यज्ञ, सांख्य छन्द दक्षिणा तेही ऐसी प्रीति है। जैसी श्रीगोपालजीको भगति सप्रेम कीन्हे, सदाते सुजान जान लीजै यही रीति है॥ जे जे भये पार या अपार भवसागरते, ते ते तेई भक्तजन दुख लीन्हो जीति है। नाहीं तौ कपार करधार रोय सब जीव, लिखित कपार करधार यह भीति है॥ नरक निकारनी है भवदुख मारनी है, अतिसुख धारनी है भवसिन्धु तारनी है। संकट सँहारनी है करम बुहारनी है, पापक्षय कारनी है काल की भखारनी है॥ भयते उबारनी है प्रेमकीसीवारनी है, गिरिधर प्यारनीहै बेदन बिचारनी है। भगति गोपालकी सुधारनी है नर देह, जगत आधारनी है जगत उधारनी है॥ भानकी कुमारी सुखदानकी महानकी है, बेद औ पुराण की शिवादिक बखानकी। खानकी सकल पुण्य ज्ञानकी सुत्राणकी सी, गिरिधर जानकी के जानकीनिसानकी॥ सानकी सरस शत्रुत्रानपै कृपान कीसी, सीढ़ी के समान भगवानके मकानकी। कानकी दुकान की मिठाई कुल कानकीहै, गुरुदेव कानकी भगति यदुमानकी॥

दो० दिव्यलता भगवति भगति, सन्त हृदय शुभसन्त।

सदा प्रफुल्लित रहत हैं, प्रेम सुबास बसन्त ॥
मोह मेघ उजियारहि नाशत। पुस्तक तड़िता तहां प्रकाशत ॥
कातिक भक्त भगतदीपावलि। करत प्रकाश नाश शोकावलि ॥
भवते बिजय देत जय कारण। जिमिबिजयादिनविजयप्रधारण॥
परम भक्ति हरिकी बिशाल की। धरहि भक्तउर रुचिर सालकी ॥
सांख्य योग दुहुँदिशि है जाके। बेद भाव सबकीलाताके ॥
कथा छत्र शिर फरै सुजाना। भक्ति सिढ़ी चढ़ि हरिपुर जाना ॥
सो सुनि उग्रसेन यह कहहीं। कर्मग्रसित गृहस्थ सब अहहीं ॥
केहि प्रकारते सेवा करहीं। अरु आचरण कहा आचरहीं ॥

दो० जामें तिनकहँ हरि मिलैं, कहिये सहित हुलास।
ज्ञानरास सुनि ब्यास तब, बोले सकल खुलास ॥

बिन सतसंग नहीं यह पावै। प्रथमाचरण इहै श्रुति गावै ॥
कृष्णचन्द्र सेवा विधि जौना। हे नृप तुमहिं कहत हम तौना ॥
गुरुबंशी नँदनन्दन बल्लभ। असगुरुकरै न तेहि सुखदुर्लभ ॥
तिनतेबिधिहि करै अभ्यासा। सेवाकर परकार हुलासा ॥
बिना भक्ति सब साधन बृथा। बिना लोनको व्यञ्जन यथा ॥
निर्गुण जनकहँ लखिकै मानव। पुरायदहैजिमिबनहिंदानव ॥
उत्तरमुख हरिमन्दिर करिये। तहँ उन्नत सिंहासन धरिये ॥
सतचितआनन्दहि धरि ध्याना। आगे धरे तीनसौ पाना ॥

दो० सुन्दर बसन बिछायकै, खरडपाट लघुपाट।
सिंहासन पीठक सहित, साजै हे नरराट ॥

सब दिशि तोरण बीच फुहारे। जाली बिबिध प्रकार सुधारे ॥
अङ्गन पुनि मण्डप सरसावै। तहँ तुलसी अस्थान बनावै ॥
भवनद्वार द्वै द्विरद बनावै। द्वै कृत्रिमके सुर बैठावै ॥

गरुड़ शिखरपर चक्र सुदीखै। द्वारनाम माधव के लीखै॥
शंख पद्म धनु गदा बनावै। भात दोऊ दिशि भावहि भावै॥
ढाल खड्ग मन्दिर के पाछे। लिखैमुसलहलको बिधि आछे॥
गो गोपी गोपन सुख छावै। सिंहासन के पीठि बनावै॥
कल्पबृक्ष देहली लिखावै। द्वारकपाट बिजयजय भावै॥

दो० बृन्दाबन गङ्गा यमुन, गोबर्धन बर कुञ्ज।
जहां तहां बिरचै सुभग, चीरहरण सुख पुञ्ज॥

राम बनावै केलि अपारा। पञ्चबटी पुनि चित्र पहारा॥
रावण रास समर बनवावै। पै नाहिं सीताहरण लिखावै॥
दश अवतार चित्र सरसावै। नरनारायण आश्रम भावै॥
सातपुरी अरु तीन सुग्रामा। नवआरण्य नवो खरधामा॥
इमि करिकै मन्दिर निर्माना। कृष्णबरण थापै भगवाना॥
बामचरण महिधरे अनूठा। दक्षिण पद को एक अँगूठा॥
बंशी बेत्र धरे बर ठाकुर। गुरु करते पधराय सरुचि उर॥
सेवा करै तथा गुरु शिच्छा। कहतजाइ हरि यह तव इच्छा॥

दो० नहिं मेरी सामर्थ्य कछु, सदा दाससम दीन।
ताके ऊपर द्रवत हैं, दीनबन्धु मति पीन॥

सो० दश शत बाजीमेध, राजसूय मख शत तथा।
लेत नशाइ निषेध, नर सुनि हरि अर्चनकथा॥

आठ पहर हरि ध्यावै जोई। दुर्लभ बिश्व भागवत सोई॥
जेते यज्ञ जगत महँ अहहीं। हरिसेवाफल एक न लहहीं॥
दरशन करहिं कृष्णकर जौना। कोटि जन्म अघ नाशै तौना॥
जे सेवहिं दरशहिं पद परशहिं। कहत सुनत उर में अतिहरषहिं॥
अन्तकाल ते चढ़ि रथ भारी। चले जाहिं गोलोक सुखारी॥

ब्रह्ममुहूरत उठि नर सोई । गुरु गोविन्द नाम ले जोई ॥
बन्दि धरणि कहँ कर पग धोई । बैठे आसन सुस्थिर होई ॥
कर उछङ्ग धरि समै सबेरा । ध्यानकरै गुरु गोविंद केरा ॥

दो० शान्त ज्ञान मुद्रा धरे, स्वस्तिकासनासि पीन ।
श्याम स्वरूप किशोरतन, धारे बेणु प्रवीन ॥

प्रातसमय जब शौचहि करै । अश्वक्रान्त मन्त्र उच्चरै ॥
एक लिङ्गमहँ गुदमहँ तीनी । दश करवाम मृत्तिका लीनी ॥
तीनि तीनि पद आधि आधि करमैं । लाय मनुज धोवै गुनि धरमैं ॥
याते दुगुन लगावै सोई । बानप्रस्थ ब्रह्मचारी जोई ॥
तिनते दुगुन यती जो योगी । आधी मृदा लगावै रोगी ॥
अर्ध शूद्र तिय ताकी लावै । शौच बिगत न क्रिया फल पावै ॥
कण्टक बट कपाट तरु छीरा । ब्रह्म बृक्ष सुगन्ध युत बीरा ॥
निर्गुण्डी को दारु बिहाई । करै दन्तधावन हरषाई ॥

दो० आयुसबल यश कान्ति सुत, पशु बसु मेधा सेवि ।
देहु ब्रह्मप्रज्ञा हमैं, अहो बनस्पति देवि ॥

कहि मन्त्रहि दाँतुन करि सोई । रबिहि प्रणाम करै कर धोई ॥
प्रह्लादादिक भक्तन बन्दी । तुलसि मृदा लै न्हाइ अनन्दी ॥

छं० अवध मधूपुरि माया काशी काञ्चि अवन्ती ।
द्वारावति सहसातपुरी निर्वान करन्ती ॥
शालग्राम अरु नन्दिग्राम पुनि शम्भल ग्रामा ।
न्हात समै महँ लेइ सबै ये सुन्दर नामा ॥
दण्डक सैन्धव पुष्कर कुरु नैमिष हिमवन्त बर ।
जम्बु मार्ग उत्पल बिपिन अर्बुद नवसे पुण्यकर ॥

दो० गङ्गा यमुना आदि कहि, पहिर बर अम्बर धारि ।

बसु मुद्रा द्वादश तिलक, धारै अङ्ग सुधारि॥
तब घण्टा को नादकरि, जय कहि ताल बजाइ।
मुदित जगावहि केशवहि, उठिय कृष्ण यह पाइ॥
भोग धरै हरि भजन उचारै। तब मङ्गल आरती उतारै॥
हरि अन्हवाइ बसन पहिरावै। भूषण चारु शृँगार धरावै॥
करि आरति पकवान अनेका। राज भोग राखै सबिबेका॥
राजभोगकी आरति करिकै। शैन करावै आनँद भरिकै॥
लेइ प्रसाद प्रेम अधिकाई। हरि प्रसाद ते परपद जाई॥
शंखनाद करि बहुरि उठावै। एक याम जब दिन रहिजावै॥
यथाभांति तब भोगहि धरई। संध्याऽऽरती तबै नर करई॥
बहुरि भोग धरि रजनीमुखमें। शैनाऽऽरती करै भरि सुखमें॥
दो० शैन करावहि केशवहि, बहुरि तौन मतिमान।
कहा राज सेवा तुम्हें, राजा यही बिधान॥
जन्माष्टमी राधाष्टमी, रामनवमि अनकूट।
नरहर चौदाशि द्वादशी, बामन दिन सुखलूट॥
अधिक अधिक सेवा बिस्तारै। अरु जो करै सो बहु कुल तारै॥
हे नृप अब बिधान जो दूजा। कहत कृष्णकी सुन्दर पूजा॥
न्हाइ क्रिया करि नित्य अपानी। पाँच बरण को थरिडल आनी॥
बारिज बत्तिस दलको रचई। बेद मन्त्रते शोभा सचई॥
तामधि हरि सिंहासन धरई। तामहँ हरि अस्थापन करई॥
भूराधा बिरजा त्रिय तीनी। तहां बिठावै आनँद भीनी॥
अष्टकार्णिका पङ्कज माहीं। अष्ट सखी थापै सुतहांहीं।
आठ सखा मनमोहन केरे। बैठावै केशव के नेरे।
दो० षोड़श बत्तिस दल कमल, तहँ जो रचै सुरङ्ग।

षोड़श बत्तिस सखिन कहँ, बैठावै सउमङ्ग॥

छं० शंख चक्र अरबिन्द गदा नन्दक शर शारँग।
कौस्तुभ बंशी क्षेत्र मुसल हल वनमाला सँग॥
नीलाम्बर श्रीवत्स पीत अम्बर खगनायक।
गरुड़अङ्क तालाङ्क सुमति दारुक चितचायक॥
नन्द सुनन्द प्रचण्ड बल चण्ड कुमुद कुमुदाक्षसह।
विष्वक्सेन महाबलहि सविधि थापि पूजै सुतहँ॥

दो० दिगादिगपाल गणेश बिधि, दुर्गा नवग्रह व्यास।
षोड़श मातहि थापिकै, पूजै सहित हुलास॥
आवाहन आसन अरघ, पाद्य स्नान मधुपर्क।
धूप दीप उपवीत पट, भूषण नव श्रुति अर्क॥
गन्ध भोग अक्षत सुमन, बारि आचमन पान।
पुनि दक्षिणा प्रदक्षिणा, बिनै आरती जान॥

बहुरि दण्डवत अस्तुति करई। सुनहु तौन जिमि यह अनुसरई॥
आवाहन महँ पुष्प सुजाना। आसन महँ कुश दोय बखाना॥
पाद्य माहिं दुर्बा अरु श्यामा। विष्णुक्रान्ता धरै ललामा॥
सुन्दर पुष्प अर्घ महँ नावै। पुनि नहान को बारि बनावै॥
चन्दन कुंकुम अगर कपूरा। नाय सुगन्ध करै भरपूरा॥
अमल कमल मधुपर्कहि माहीं। धूप मध्य बहुगन्ध तहांहीं॥
धूप कपूर पीत उपबीता। अम्बर पीताम्बर भरि प्रीता॥
भूषण कनक गन्धमहँ चन्दन। तुलसी सुमन तिलक रोरीगन॥

दो० अक्षत महँ अक्षत रँगे, षटरस साजै भोग।
जलमहँ गङ्गा यमुन जल, धरै हरै भव सोग॥

जातीफल कङ्कोल मिलाई। देइ आचमन आनँद छाई॥

बीड़ा महँ लायची लवङ्गा। कनक दक्षिणा देवै चङ्गा॥
फिरै प्रदक्षिण अस्तुति गावै। गऊ आरती महँ छबि छावै॥
प्रेम लक्षणा भक्ति बढ़ावै। अष्ट अङ्ग महि बीच नवावै॥
द्वादश अक्षर मन्त्र बखानी। शिखा बाँधि शुचि बैठे ज्ञानी॥
धरि उपचार पास सब सुन्दर। तब पूजै हरि जगत पुरन्दर॥
अब उपचार मन्त्र कहँ कहियत। जाके कहे सकलसुख लहियत॥
बेद मन्त्र तेहि जानहु राजा। प्रथमहि आवाहन सुखसाजा॥

दो० गोलोकेश रमेश प्रभु, दामोदर गोबिन्द।
माधव यदुपति रमापति, आसन लेहु मुकुन्द॥

इमिकहि आसन देइ सुजाना। ताकर मन्त्र सुनहु मतिमाना॥
पद्मरागमय उच्च सिंहासन। खचितलसुनियाकोमलआसन॥
हे बैकुण्ठ बिकुण्ठा सुखकर। लीजै करुणा करि आसन बर॥
तब बर पाद्य देइ नर ज्ञानी। तहँ यह सुन्दर मन्त्र बखानी॥
निर्मलजल कञ्चन बरतनमें। हे जगदीश लेहु यह छनमें॥
बिन्दुसरोवर ते मँगवायो। लीजै पाद्य दास यह ल्यायो॥
तब नहान को मन्त्र बखाने। हे यदुनाथ लेहु अस्नाने॥
चन्दन कुमकुम खसते बासित। हे जल आपयोगसुखभासित॥

दो० तब मधुपर्कहि देइ नर, कहि यह मन्त्र अनूप।
मध्य दिवस रबि तापहर, अतिसुन्दर सितरूप॥
बिष्णु लेहु मधुपर्क यह, पीताम्बर जगदीश।
इमि कहि धूपै देहि पुनि, मन्त्र सुनहु नरईश॥

चन्दन लौंग मिल्यो बर बासा। सुखद अमर नरकहँ सुखरासा॥
सद्य बास पुर भरै अनूपा। धूप लेहु द्वारावति भूपा॥
दीप देइ तब सहित बिधाना। तासु मन्त्र सुनिये नरत्राना॥

तमहर ज्ञानरूप सुखदाई । गोघृत सरिस कपूर मिलाई ॥
जगतदीप मम दीपहि लीजै । चारुज्योतिद्युतिदशादिशिभीजै॥
इमि कहि मख उपवीतहि देवै । तहँ यह मन्त्र कहत सुख लेवै ॥
कनकवरण मन्त्रन विधि बन्यो । शुभ सबकाज मध्यअतिगुन्यो ॥
परमरूपकारक तव प्रीता । लीजै यज्ञ यज्ञउपवीता ॥

दो० पीतबरण द्युति झलमलै, निज निर्मित सुखरूप ।
पद्मबरण पीताम्बरहि, लीजै हे यदुभूप ॥

भूषण देइ कहै मनभायो । यह मणि हेम मिलाय बनायो ॥
करिकै कृपा कृपानिधि मोपै । बार बार यह विनती तोपै ॥
जगभूषण यह भूषण लीजै । पढ़ि यह मन्त्र गन्ध तव दीजै ॥
संध्या शशिसम शोभित भायो । कुमकुम केसर अगर मिलायो ॥
जासु गन्ध यह जगत कहीजै । करुणासिन्धु गन्धकहँ लीजै ॥
इमि कहि पुष्प देइ नरपाला । मन्त्र पढ़ै यह लेहु गोपाला ॥
पारिजात तुलसी हरिचन्दन । बर मन्दार जगत आनन्दन ॥
पुष्पकभूषण पुष्पहि लीजै । दास जानि निजकृपा करीजै ॥

दो० अक्षत देवै मन्त्र यह पढ़ै अहो नरपाल ।
मुक्त कीन विधि पूर्व यह, ब्रह्मावर्त रसाल ॥
सींच्यो या कहँ बिष्णु हरि, रक्ष्यो रुद्र अनूप ।
अक्षत अक्षत लीजिये, कहि दै भोग अनूप ॥

सुन्दर रसते सरस बनायो । यशुमतिकियोअतिहिसुखपायो॥
बेदबेद्य नैबेद्यहि लीजै । पढ़िइमि मन्त्र बहुरि जल दीजै॥
गङ्गोत्तरिकर शीतल चारू । कनकपात्रमहँ धस्यो सुधारू ॥
निर्मल बासित श्रीपति ज्ञानी । शारँगपानी लीजै पानी ॥
तब आचमन देइ मन भायो । कहै जाय फल पुष्प मिलायो ॥

अरु कङ्कोल सरिस सरसाना। अब मन लीजै कृपानिधाना॥
राधा श्री बिरजा भूनायक। कहि इमि पान देइ नरलायक॥
जावित्री जायफल सुपारी। लौंग लायची खदिर सुधारी॥
दो० बास सहित श्रम शूलहर, जगत मूल सुखमूल।
प्यारे बात दुकूल धर, लीजै यह ताम्बूल॥
तब दक्षिणा देइ मतिमाना। कहै सुनीजै कृपानिधाना॥
नाकपाल बसुपालन बन्दित। चरण चारु अरबिन्द अनन्दित॥
दक्षिणादिपति दक्षिणानायक। लीजै दक्ष दक्षिणालायक॥
तब प्रदक्षिणा करै सुसोई। सकल तीर्थ ब्रतको फल जोई॥
लहै दान मखको सब सोई। करै प्रदक्षिण जो शुचि होई॥
तब आरती करै हरिदासा। तहां करै यह मन्त्र प्रकासा॥
दीप चारु प्रज्वलित सुमङ्गल। गोघृत रच्यो बनी बाती भल॥
आरत हरण आरती लीजै। इमि कहि बहुरि प्रार्थना कीजै॥
दो० हरिमम सम नाहिं पातकी, तुम सम नाहिं पापारि।
यह बिचारि करिकै करिय, निजइच्छितगिरिधारि॥
नमस्कार तब करै सुजाना। तहां अहै यह मन्त्र महाना॥
नमो अनन्त सहस्रमूर्तये। सहस पाद दृग शीश बाहवे॥
सहस नाम पुरुषाय शास्वते। सहस कोटि युग धारण श्रीपते॥
नमो नमो कहि सुखहि बढ़ावै। हाथ जोरि तब अस्तुति गावै॥
ज्ञान पात्र सदसत पर स्वामी। महत शान्त सदसतफलगामी॥
बिभु प्रभु ब्रह्मदेव ते दुर्गम। सदा सुदामाधीश हरण तम॥
जगदाधार कृष्ण करुणाकर। बन्दे बिश्वनाथ राधाबर॥
इहि बिधान भगवानहि पूजै। मन्त्र चारु निज मुखते कूजै॥
दो० सर्बाङ्गहि पूजै मनुज, हरिकहँ बर बिधि चारु।

तासु मन्त्र सुनिये नृपति, जाते द्रवहि उदारु ॥
छ० प्रणवनमो नारायणाय पुरुषाय बखानै ।
महात्मने सुबिसिद्ध सत्त्व धिष्णा यहि आनै ॥
बहुरि महा हंसाय धीमही मन्तर एहू ।
पढ़िके प्राणायत करै जानहु बुधिगेहू ॥
श्रीधर ऋषिकेश बखानिकै पद्मनाभ दामोदरहि ।
संकर्षण बासुदेव पुनि प्रद्यूमन अनिरुद्ध कहि ॥
बहुरि अधोक्षज पुरुषोत्तम श्रीकृष्णाय नमः ।
पाद गुल्फजानूर कटि उदर पीठ भुजा महं ॥
कन्ध करन नासिक अधर लोचन शिर माहीं ।
पृथक मन्त्र युत पूजयाम कहि पूजै चाहीं ॥
सखिसखाशंख असि चक्र गद पद्मबानधनु हलमुशल ।
बनमाल नीलाम्बर पीतपट श्रीवत्सबेत्र बंशी कुशल ॥
गरुड़ अङ्कतालङ्क सुमति दारुक प्रचण्ड बल ।
चण्ड कुमुद कुमुदाक्ष सुनन्द खगपति मल ॥
बिष्वकसेन ब्यास शिव बिधि दुर्गा दिगपालन ।
बरुण बिनायक नवग्रह षोड़शमात्र रसालन ॥
प्रणव पूर्ब पूजन करै थालीपाक बिधान करि ।
पूजि अगिनि सब साजधरि आहुति देवै प्रेमभल ॥
बासुदेव बसुदेव संकर्षण श्री प्रद्युम्न अनिरुद्ध ।
सात्ववताम्पतये नमः मन्त्र कहै यह शुद्ध ॥
याते करि शत आहुति दे फेरी धरी भोग ।
करि प्रणाम यह मन्त्र कहँ कहै दहै भवरोग ॥
स० ध्यानके योग सदा यहमूरति देखि रहै नहिं कामहि धीरज ।

शेश महेश दिनेश गणेश से धारत जोनितहीं पदकी रज॥
आरत नाशन बिश्वनदीपति पोत समान सुनाम अहीरज।
पूरुष उत्तम बन्दतहौं तुम्हरे दोउ पाद मनो नव नीरज॥

दो० इहि बिधि बन्दि मुकुन्दकहँ, करै आरती भक्त।
लीन्हे बैष्णव मण्डली, परम प्रेम आसक्त॥

घण्टा बीणा झांझ मृदङ्गा। कीर्तन करैं बजावैं सङ्गा॥
नाचहिं जयजयकहि भरि प्रेमा। हरियश कहहिंगहहिं नहिं नेमा॥
हरिहि बन्दि पुनि शय्याघर में। शयनकरावै गुनि निजघर में॥
ऐसे जौन करत है सेवा। रगरहिं नाक नाक के देवा॥
अन्त जात सो सुरभीलोका। योगिनकहँ दुर्लभ जो ओका॥
हरिसेवा बिधान हम भाषा। अब तुमकाहसुनन अभिलाषा॥
बोले उग्रसेन नृप ज्ञानी। सिद्धभयो मैं सुनि तव बानी॥
पद्धति कृष्णचन्द्र की प्यारी। सुनि मैं भयों भक्तिअधिकारी॥

दो० अहो लोक अतिमूढ़ सब, बँधे मोह की पास।
ज्ञान बिरागहि नहिं छुवै, होहिं न गिरिधरदास॥

जगत मोहकारण किमि भयो। कहिय जो मम मन संशय ठयो॥
कृष्ण द्वैपायन तब भाषा। सुनहु जौन तुम मनअभिलाषा॥
जिमि शिशु शीशामहँ मुखलखई। दूजो गुणभरि क्रोध बिलखई॥
तिमि हरिबिम्ब पस्यो माया में। जाब कहै हम बसि काया में॥
तनके गुण ते माया माहीं। बँधा जीव कछु जानौं नाहीं॥
शिशुकर कंकपत्र सम जीवन। रज्जुमाहिं अहिभान बृथामन॥
रज तम सतमय जगत रचाया। मिथ्या सत्य लखहु यह माया॥
मन बिलास यह बिभ्रम राशी। लोलचक्र सम जगत बिनाशी॥

दो० मैं करिहौं अरु करतहौं, मेरो तेरो एह।

सुखी दुखी यह सब बृथा, कहहिं कुमति के गेहु ॥
उग्रसेन बोले हरषाई। कृष्ण लक्ष नहिं देहु बताई ॥
केतेकै बिधि कहहिं मुनीशा। बोले व्यास सुनहु अवनीशा ॥
जन्म मरण सुख दुख भय मोहा। अहंकार व्याधी मद द्रोहा ॥
घट बढ़ देश देश के माहीं। ये सब अहैं ब्रह्ममहँ नाहीं ॥
सो आतमा निरीह सब गामी। सिद्ध अमल गुण आश्रयनामी ॥
आप अकल पर आतम मङ्गल। बिप्रकथित बहुरूप बिश्वभल ॥
सो जागत सोवत जग जबहीं। कोउ न जान सो जानै सबहीं ॥
सबहि लखै सब तेहि कोउ नाहीं। भजिय ताहि सुख धरि मनमाहीं ॥
दो० जिमि नभ पवन हुताशमहि, सब सहेम लखि भूप।
तिमि परगुणते तेहि लखौ, शुद्ध फटिक अनुरूप ॥
लक्षण पद अरु व्यङ्ग स्फोटा। बाक्य अर्थंतर कौ पुनि छोटा ॥
जो अजान बेदहुते अहई। लौकिक मनुज ताहि का कहई ॥
कर्म कहैं करता पुनि कहहीं। कालकहहियोगाहिगुनिकहहीं ॥
केहि बिचार कोउ उर अहलादत। ताकहँ ब्रह्म बेद प्रतिपादत ॥
छुये न जाहि काल गुणि माया। इन्द्री चित बुधि मन न समाया ॥
महत ताहि श्रुति कहत बखानी। बिस्फुलिङ्ग सम सृष्टि समानी ॥
हिरण गर्भ पर तत्त्व बखानै। बासुदेव कोउ कहि सनमानै ॥
सोइ निरूप को रूप बिचारी। बिचरहिं बिगत संग ब्रतधारी ॥
दो० एक इन्दु जलपात्र बहु, बहु अँगार शिखि एक।
परमात्मा तिमि एक सो, तन प्रति भांति अनेक ॥
तम तमाम रबि कहँ लखि होई। गृहकी बस्तु जाय सब जोई ॥
ज्ञान उदय अज्ञान नशाई। परमातमा तब परै दिखाई ॥
जिमि इन्द्री इक कर माहिं करहीं। तिमि मुनि निज निज मत अनुसरहीं ॥

एक अनन्त परम जगदीशा । शाश्वत रूप सुनहु नरईशा ॥
हरि साक्षात परम पुरुषोत्तम । कृष्णचन्द्र प्रभु परिपूरण तम ॥
भक्त हेत कैवल्य प्रदाता । परमानन्द रूप बिज्ञाता ॥
ब्रह्मा तव नहिं पारहि पावैं । बेद भेद नाना बिधि गावैं ॥
सो तुम्हरे घर राजत राजा । तिनकहँ मैं बन्दत सुखसाजा ॥

दो० इमि कहि तिनते लै बिदा, व्यासदेव भगवान ।
देखत यादव यूथके, ह्वैगये अन्तर्धान ॥

हे नृप यह सुख तुमहिं सुनावा । बर बिज्ञान खण्ड मनभावा ॥
कृष्ण भक्त बर्धन अधिकाई । श्रोतन कहँ सब बिधि सुखदाई ॥
गर्गसंहिता गर्ग बनाई । सब दुख हरण चार फलदाई ॥
गऊलोक बृन्दाबन गिरिबर । माधुरि मथुरा द्वारावति बर ॥
बिश्वजीत हलधर बिज्ञाना । पृथक रुचिर नवखण्ड बखाना ॥
जिमि नवखण्ड द्वीप थहकेरे । तिमि हरि खण्ड षष्ठ नवहेरे ॥
चतुर बरगप्रद गरग बखानी । स्वर्ग सिढ़ीसम सब सुखखानी ॥
यथा रतन नव कनक जराये । पहिरत हृदय परम छबि पाये ॥

दो० तथा संहिता चार फल, देत करत सब हेत ।
स्वर्ग बिसर्ग प्रबर्ग प्रद, जानहु नीतिनिकेत ॥

जो यह गर्गसंहिता गावै । परम पुनीत होय फल पावै ॥
इतहि अतिहि सुख तेहि सरसाई । अन्त समय गोलोकहि जाई ॥
बन्ध्या सुनै लालसा करिकै । केवल कृष्ण भक्ति मन धरिकै ॥
थोरेहि काल होहिं गृह छोरा । बिचरहिं करि कलोलदशओरा ॥
रोगी तजै रोगकर शोगा । निर्धन लहै महाधन भोगा ॥
बँध्यो बन्धते भयते भीता । छूटै लहै सकुज मनचीता ॥
लहै न जात गात सुख छावै । जो इहि कातिकके मधि आवै ॥

सो रथाङ्ग बरती नृप होई। पूजित लघु राजनते सोई॥

दो० सिन्धुदेश के तुरग वह, विविध वितुण्ड महान।

तासु द्वार झूमत रहैं, शोभा सरस सुजान॥

कनक शृङ्ग खुर रजत सवच्छा। ताम्रपीठि तम भूषण अच्छा॥

द्वै गो देइ खण्ड प्रति जोई। सकल मनोरथ पावै सोई॥

निष्कारण जो सुनै बिदेहू। कथा यथाविधि सहित सनेहू॥

ताके उर अरबिन्द निवासी। होहिं कृष्ण प्रभु करुणारासी॥

इमि कहि नारद आनँद भये। सबके हृदय व्योम चलिगये॥

मुनि बहुलाश्व कथा यह भारी। भज्यो कृष्णकहँ दृढ़व्रतधारी॥

हे मुनिगण यह तुमकहँ कहा। सुनै पढ़ै तिन सवकछु लहा॥

सुनि मुनि शौनक ऋषिनसमेता। बोलत भये बचन अघजेता॥

दो० धन्य कृतारथ आज हम, तुम्हरे दरशन पाय।

भक्ति लह्यो श्रीकृष्णकी, भ्रम सब गयो नशाय॥

मुनि उर विशद सरोवर हंसा। सब सुखकरन भरन यदुबंसा॥

बिश्वअंश सब बिष्णु प्रशंसा। सुन्दर सूरबंश अवतंसा॥

करते धरणि गिरायो कंसा। तेहि बन्दत हम करि अघध्वंसा॥

इमि कहि तिनते गर्ग मुनीशा। बिदा होतभे महत मुनीशा॥

चतुर्वर्गप्रद स्वर्ग शिरोमनि। भाषि चलतभे चतुर महामुनि॥

गर्गाचल गे गर्गाचारज। तहँहरिचरणध्यानाकियआरज॥

शरद सरोज सरिस रुचिमन्ता। जहँबहुबसहिं शिलीमुखसन्ता॥

कुलिश कञ्ज चिह्नित बर राजैं। झनकझनक नव नूपुर बाजैं॥

दो० ताप निवारण जगतके, अरुण पृष्ठिवर वर्ण।

उर अन्तर ध्यावत भये, राधावर के चर्ण॥

क० करनीसकलसुख हरनीसकलदुख, भरनीसकलरुखसुमति

रसालकी । तरनीसमुद्भव बरनीमुनीनसब, अरनीकृशानुप्रेमपरम बिशालकी ॥ झरनीसुरसबिन्दु घरनीमुकुन्दजूकी, धरनीसुफलरूप जेताकर्मकालकी । नरनीसुघरनी उधरनी बखानीचारु, पाततम तरनी भगति नन्दलालकी ॥

दो० इमि यह प्रोहित संहिता, प्रोहितबर नवरत्न ।
दाम साधु उरधारिहैं, तजिहैं नाहिं सयत्न ॥

छं० तजिहैं नहीं सयत्न चरित गोपालके अनमोल हैं ।
नहिं काव्यको परकार करहिं बिचार बुध सुखको लहैं ॥
पिङ्गल सुनत तनहोत पिङ्गल चहिये उमिर बिरञ्चिकी ।
अमत्यागिगिरिधरदासगिरिधर भजहुयहमतसाञ्चिकी ॥

दो० बेद व्योम ग्रह चन्द्रमा, संवत शशि सुतबार ।
कृष्णपक्ष तिथि कामकी, भादौंमास बिचार ॥
भई समापत संहिता, बल्लभ चरण प्रसाद ।
बैष्णव जन सुनि करहिंगे, उर अतिहीं अहलाद ॥
बल्लभ बल्लभ ब्रज मुकुट, बल्लभ तिनके होत ।
जे यह सुन्दर संहिता, धारण करहिं बहोत ॥
गिरिधर लाल दयाल गुरु, कीन्ही कृपा कृपाल ।
पूरण भयो मनोर्थ मम, उदय हृदय खुशिहाल ॥
जाके सरिता रेतमें, परे अमित ब्रह्मण्ड ।
सोई कृष्ण कीजैकृपा, भो बिज्ञान सुखण्ड ॥

सो० पुस्तक कीन्ह समाप्त, कृष्ण कृष्ण गोबिन्द भजि ।
नवहु खण्ड में व्याप्त, परस प्रेम सब नेम तजि ॥

इति श्रीभाषाप्रकाशेकृष्णाश्रियेगिरिधरदासविरचितेप्रेमपथरचिते
गर्गसंहितायां नवमं विज्ञानखण्डं समाप्तम् ॥ ९ ॥